
ISSN : 0975-8011
बुंदेली
बसंत
२०१९
02/2019
Anshuman

बुन्देली साहित्य, संस्कृति तथा इतिहास को समर्पित-

ISSN-0975-8011

पंजी क्र. MPHIN-17761/12/1/2002-TC

बुन्देली बसन्त

अंक २०, फरवरी २०१९

संरक्षक :

शंकरप्रताप सिंह बुन्देला 'मुन्नाराजा'

राजमहल परिसर, छतरपुर (म.प्र.)

मोबाइल : ०९४२५१४१४५५, ०९९८१५०३०५५

संपादक :

डॉ. बहादुर सिंह परमार

एम.आई.जी.-७, न्यू हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी

पन्ना रोड, छतरपुर (म.प्र.) ४७१००१

मोबाइल : ०९४२५४७४६६२, ७९७४२१७७५६

e-mail : bsparmar1962@gmail.com

सह संपादक :

डॉ. हरिसिंह घोष

घोषयाना, संकटमोचन मार्ग, छतरपुर (म.प्र.)

मोबाइल : ०९४२५१४२०६६

संपादन सहयोग :

शिवभूषण सिंह गौतम

अन्तर्वेद, कमला कॉलोनी, छतरपुर (म.प्र.)

मोबाइल : ९८२६७५६९२९

प्रकाशक:

बुन्देली विकास संस्थान

महल परिसर, छतरपुर (म.प्र.) ४७१००१

★ संपादन एवं प्रबंध पूर्णतया अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

★ **आवरण चित्र :**
अंशुमान सोनी
द्वारा-रामकुमार सोनी
गोवर्धन टाकीज के पास, छतरपुर (म.प्र.)

★ **सहयोग राशि :**
२०० रुपये

★ **मुद्रक :**
सूर्यांश प्रिंटोग्राफर, छतरपुर (म.प्र.)

★ **संगणकीय अक्षर संयोजन :**
संजू दीक्षित
छतरपुर (म.प्र.)

★ बुन्देली बसन्त में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। उनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

★ विवादास्पद मामले केवल छतरपुर न्यायालय के अधीन होंगे।

वार्षिक सदस्यता	- २५० रु. (डाक व्यय सहित)
द्विवार्षिक सदस्यता	- ५०० रु. (डाक व्यय सहित)
पंचवार्षिक सदस्यता	- १००० रु. (डाक व्यय सहित)

जो पाठक बुन्देली बसंत की सदस्यता चाहते हैं। वे बुन्देली विकास संस्थान, बसारी के **केनरा बैंक के खाता क्र.** 1915101001608, **आई.एफ.सी. कोड** CNRB0001915 में राशि जमा कर या चैक द्वारा अग्रिम भुगतान भेज कर सदस्यताले सकते हैं।

अनुक्रमणिका

भाषा, साहित्य और आलोचना

इतिहास, परम्परा और संस्कृति

बुन्देली गद्य

बुन्देली काव्य

अन्य

संपादकीय -

बुन्देलखण्ड एक सांस्कृतिक इकाई है जिसकी भौगोलिक सीमा सामान्यत: यमुना से नर्मदा और चंबल से टोंस नदियों के मध्य भू-भाग को स्वीकारा जाता है। यह भौगोलिक क्षेत्र भूगर्भीय दृष्टि से प्राचीनतम है। इस अंचल में प्राप्त शैलचित्रों तथा अन्य प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि यहाँ आदिकाल से मानव का वास रहा है। इस अंचल की संरचना गिरि-पर्वत-कंदराओं से युक्त वनाच्छादित रही है जहाँ सरिताओं में पवित्र जल प्रवाहित हो जनमन तथा पशु-पक्षियों को प्रमुदित करता रहा है किन्तु विगत कुछ दशकों से बुन्देलखण्ड को राष्ट्रीय परिदृश्य पर इस तरह से प्रस्तुत किया जा रहा है कि यह कंगाल क्षेत्र है, जहाँ केवल गरीबी, जहालत, अशिक्षा तथा अत्याचार का बोलबाला है जबकि यह वास्तविकता नहीं है। लोगों के देखने के अपने-अपने दृष्टिकोण हैं। यह अंचल अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से युक्त प्राकृतिक संसाधनों से लबरेज, अपनी मस्ती में जीने वाला क्षेत्र है। केवल भौतिक संपन्नता आनंद का पैमाना नहीं हो सकता लेकिन उसे ही प्रमुखता देने वालों को मैं अवगत कराना चाहूँगा यह अंचल प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न है, इसमें विकास की अपार संभावनाएँ हैं। इसके संसाधनों का दोहन न होकर असंतुलित हो रहा है जिससे कई समस्याएँ उत्पन्न हो रहीं हैं।

सबसे पहले हम बुन्देलखण्ड में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर विचार करें तो पाते हैं कि यह अंचल अपने आप में प्राकृतिक संसाधनों से भरा पड़ा है। यह देश का इकलौता क्षेत्र हैं जहाँ हीरा की खदानें हैं। यह पन्ना के साथ छतरपुर जिले के दक्षिणी भाग में पाया जाता है। भूगर्भीय सर्वेक्षण में अभी यूरेनियम पाये जाने की संभावना बतायी गई है जबकि ग्रेनाइट तथा डोलोमाइट की खदानों की भरमार है। छतरपुर, महोबा, ललितपुर, झाँसी तथा टीकमगढ़ जिले में उत्तम क्वालिटी का ग्रेनाइट पाया जाता है। छतरपुर जिले की बिजावर तहसील में लौह अयस्क के भण्डार दबे पड़े हैं। इनका खनन स्वतंत्रता पूर्व तक बिजावर नरेश कराते रहे किन्तु आजादी प्राप्त होने पर यह खदान बंद है। इन खनिजों के अतिरिक्त नदियों में रेत भी प्रचुरता से उपलब्ध है। यहाँ के मैदानी इलाकों की मिट्टी काली तथा दोमट है। जो काफी उपजाऊ है किन्तु पहाड़ी तथा पठारी इलाकों में लाल मिट्टी पाई जाती है। बुन्देलखण्ड में केन, बेतवा, धसान, चंबल, उर्मिल, काठन, सुनार, जमड़ार, तरपेड़ जैसी नदियाँ हैं जिनमें भरपूर जल आता है किन्तु इनका सही उपयोग नहीं हो पा रहा है। पूरा बुन्देलखण्ड पहाड़ियों, टौरियों, पर्वतों, घाटियों के बीच वनक्षेत्र में बसा है। पन्ना, टीकमगढ़, सागर, छतरपुर, दमोह के साथ महोबा, चित्रकूट जिलों में वन क्षेत्र पूरी तरह से संरक्षित हैं। इनमें जैव विविधता के साथ पशु-पक्षियों की सैकड़ों प्रजातियाँ अपना आश्रय बनाए हुए हैं। उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों में सक्रिय संसाधन मानव है जो चेतन तथा क्रियाशील है। उपलब्ध-आँकड़ों से बुन्देलखण्ड का मानव संसाधन स्किल्ड न होकर साधारण कोटि का है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर आश्रित है। आवश्यकता से अधिक आश्रितता के साथ रोजगार की तलाश में महानगरों की ओर मजदूरों का प्रवास यहाँ की प्रमुख प्रवृत्ति है। इसके साथ अंचल की भौगोलिक अवस्थिति विशिष्ट है। यह भारत देश के मध्यवर्ती क्षेत्र में है, जहाँ से गुजरे बिना सीधे उत्तर से दक्षिण या पूर्व से पश्चिम नहीं जाया जा सकता है।

भौतिक विकास पर दृष्टिपात करें तो ऐसा नहीं है कि यहाँ विकास नहीं हुआ है। पूरे राष्ट्र के साथ यहाँ भी विश्वास की किरणें आई हैं। हमने सिंचाई का रकबा बढ़ाया है, हीरा खनन परियोजना लगाई है, ग्रेनाइट तथा डोलोमाइट का खनन किया है। शहरों का विकास किया है, शिक्षा व स्वास्थ्य की सुविधाओं

में वृद्धि हुई है। सागर, झाँसी, छतरपुर में विश्वविद्यालय स्थापित किए हैं किन्तु जिस गति से विकास अपेक्षित था, वह नहीं प्राप्त हुआ जिससे हमारे ऊपर पिछड़े होने का टैग लगा दिया जाता है।

बुन्देलखण्ड अंचल में कृषि उपज आधारित वृहद तथा मध्यम दर्जे की औद्योगिक इकाइयों की स्थापनाओं के माध्यम से उपलब्ध कृषि उपज का रूप परिवर्तन कर हम आर्थिक उन्नति कर सकते हैं। उदाहरणार्थ – टमाटर, आलू तथा सोयाबीन, चना आदि से बनने वाली खाद्य सामग्रियों के निर्माण हेतु फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स से कृषकों को उपज का सही मूल्य मिलने के साथ स्थानीय बेरोजगारी घटेगी। वनों से संग्रह करके औषधीय जड़ी-बूटियों का उपयोग करने वाले प्लांट लगना चाहिए। यहाँ से आँवला, हर्र, बेर, बेल तथा महुआ बड़ी मात्रा में बाहर जाता है। इन वस्तुओं के उपयोग आधारित इकाइयों से क्षेत्र को लाभ पहुँचेगा। हीरा खनन पन्ना में होता है और उसको सूरत (गुजरात) में तराशा जाता है। इससे लाखों लोगों को सूरत में रोजगार मिलता है, इसके स्थानीय स्तर पर कटिंग-पालिशिंग यूनिट्स के लगने से विकास की दर बढ़ेगी। यही हाल ग्रेनाइट का है। यहाँ से ग्रेनाइट की सिल्लियाँ अँचल से बाहर जाकर कटती तथा चमकती हैं।

यहाँ उपलबध मानव संसाधन को स्किल्ड करने हेतु औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं के साथ अभियांत्रिकी महाविद्यालयों तथा अन्य तकनीकी प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना अपेक्षित है, जिससे मानव संसाधन का समुचित उपयोग विकास में हो सके। बुन्देलखण्ड की कृषि अभी-भी बहुतायत में मानसून आश्रित है। सिंचाई के संसाधनों का अभाव, सूखा तथा बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से किसान परेशान होता रहता है। भू जलस्तर लगातार नीचे जा रहा है। इसके वृद्धि हेतु स्थानीय स्तर पर लघु जल संरचनाएँ बनाने की जरूरत है। खेत का पानी खेत में तथा गाँव का पानी गाँव में रोकने का प्रयास करना चाहिए जिससे सिंचाई के साथ सूखा आदि से आसानी से निबटा जा सकता है।

पर्यटन ने भी आज उद्योग का रूप ले लिया है। बुन्देलखण्ड में खजुराहो, ओरछा, झाँसी, चित्रकूट, पन्ना, सागर, जटाशंकर, कुण्डेश्वर, दतिया, चित्रकूट, कालिंजर तथा बाँदा जैसे स्थल है, जहाँ पर्यटक आते हैं। इसके साथ पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के साथ कई अभ्यारण्य हैं जहाँ पर्यटक आते हैं। इसके साथ अन्य स्थलों को विकसित करने की आवश्यकता है उदाहरणार्थ छतरपुर जिले का मऊसहानियाँ, पन्ना जिले का अजयगढ़, दमोह जिले का हटा व बाँदकपुर, टीकमगढ़ जिले का गढ़ कुण्डार आदि। यहाँ पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए प्रयास होने चाहिए। जल आधारित पर्यटन भी बाँधों में प्रोत्साहित किए जा सकते हैं। इसके साथ बुन्देलखण्ड के विकास में जो बाधा दृष्टिगत होती है, वह है यहाँ की आलस्य प्रवृत्ति, आपसी ईर्ष्या तथा मस्त मौलापन। लोग कम आमदनी में रहकर संतोषी होकर जी लेतें हैं। इस मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है।

बुन्देली धरा पर सांस्कृतिक संक्रमण के इस दौर में बुन्देली विकास संस्थान श्री शंकर प्रताप सिंह 'मुन्ना राजा' द्वारा बुन्देली उत्सव के माध्यम से ऐसा कार्य किया जा रहा है, जो लोक स्वीकार्य होने के साथ स्तुत्य है। उनके इस प्रयास में हम सब रचनाकार अपनी रचनाओं से सहयोग करते हैं।

हर बार की तरह आपकी रचनात्मक प्रतिक्रिया की अपेक्षा के साथ –

बहादुर सिंह परमार

चिट्ठी मिली अपुन की

बुन्देली बसन्त 2018 का 19 वां अंक प्राप्त हुआ। मैंने प्रथम बार 'बुन्देली बसंत' का ऐतिहासिक सामाजिक, शौर्य, ऊर्जा, शक्ति से पूर्ण, भक्ति भावों से महिमा मण्डित, जागरूकता, विनम्रता, लावण्य से पूरित, बुन्देली भाषा की मनमोहिनी छवि समेटे एक अनूठा कालजयी दस्तावेज पढ़ा है, बुन्देलखण्ड के दार्शनिक, आंचलिक, मंगलमयी स्थानों का दर्शन कराता, विद्वान साहित्यकारों के आलेख, छंद, दोहा, बुन्देली गज़ल अपना अलग सतरंगी परचम लहराते हैं। बुन्देली भाषा लालित्य की लाली लेकर, आकर्षण की आँखों में समा जाती हैं व्यक्ति चाहे वो खड़ी बोली, बृज, अवधी, कोई भाषा का व्यक्ति हो उसे बोलने के लिये मजबूर करती है। अपनी ओर खींचती है। बुन्देली बसंत 02/2018 का यह अंक पठनीय, संग्रहणीय एवं बहुत कुछ सिखाने की गुरूता रखता है। अंक का कलेवर, टेढ़ी मेढ़ी रक्त भरी रेखाओं से जिसमें स्वेत, लालरक्त कणों से बने चित्र में दुल्हन और बेटी का भ्रूण नजर आता है जो अपने आप को दुनियाँ के दरिन्दों से छुपाये है। संवेदना की कोख से निकला मार्मिक चित्र आत्मा को स्पंदित करता है।

बुन्देली शौर्य गाथा का सम्पूर्ण दस्तावेज 'बुन्देली बसंत' किसको कम कहूँ किसको ज्यादा समझ में नहीं आता। विद्वानों और विदुषी डॉ. श्रीमती गायत्री वाजपेयी हो या नरेश कुमार पाठक जी ने पन्ना का जो सर्वेक्षण किया है डॉ. हरिमोहन गुप्ता जी ने कोंच की ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी दी, अतुलनीय है। डॉ. लखनलाल पाल की "रम कल्लो की पतियाँ" मन भा गई। अवध बिहारी श्रीवास्तव "जो पानी दार यहाँ को पानी" जोशीला है। अंततः यही कहूँगी सभी रचनाधर्मी एवं विद्वानों को प्रणाम शत्-शत् नमन। 'बुन्देली बसंत' खिलता रहे, महकता रहे धन धान्य से चहकता रहे, जय बुन्देलखण्ड 'जय बुन्देली बसंत'

आपकी शुभाकाँक्षी

डॉ. माया सिंह 'माया'

1040, राजेन्द्रनगर, बैंक कॉलोनी,

उरई, जिला-जालौन (उ.प्र.)

'बुन्देली बसंत' का नया अंक 2018 भेजने के लिए धन्यवाद। यह पहला अंक है जब इसमें मेरा कोई लेख नहीं है। आयु और दूरी के कारण अनेक व्यवधान आते हैं।

इस अंक के सम्पादकीय में कई सामाजिक समस्याओं का संकेत है- जैसे हमारे गाँव स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी मुख्य धारा से नहीं जुड़ पाये जिससे किसान-मजदूर शहरों के मुखापेक्षी हो गये तथा ग्रामीण उद्योग धंधे चौपट हो गये। रासायनिक खाद और मशीनों ने खेती को बरबाद कर दिया। यही नहीं, सांस्कृतिक क्षरण भी तीव्रता से हो रहा है। नयी-नयी विकृतियाँ फेल रही हैं। पारम्परिक लोक सम्पदा लुप्त हो रही है। फैशन, अकर्मण्यता, श्रम-विमुख आदि दुर्गुण फैल रहे हैं। शासन को, समाज को, और साहित्य की युवा पीढ़ी को इस ओर जागरूक होने की जरूरत है। बुन्देली सम्बन्धी तुम्हारा लेख भी महत्वूपर्ण है जिसमें बुन्देली की वर्तमान स्थिति के साथ बुन्देली की विभिन्न विधाओं के लेखकों और उनकीकृतियों का विवरण दिये हैं। इतनी जानकारी कम लोगों के पास होती है। इससे यह भी पता चलता है कि बुन्देली में पर्याप्त लेखन हो रहा है।

इस अंक की एक विशेषता यह भी है कि इसमें कई ऐसे लोगों पर संस्मरण हैं जो स्थानीय या क्षेत्रीय साधक रहे हैं, जिन्हें अपेक्षित महत्व नहीं मिला। लोग उनसे बाहर परिचित नहीं हैं। रामस्वरूप जी (डॉ. लखनलाल खरे) हसमत छतरपुरी (जगदीश रावत) हरनारायण सिंह 'यार' (नीरज खरे) काशीप्रसाद महतों (सुरेन्द्र शर्मा शिरीष) आदि इसी प्रकार के लेख हैं। वीरसिंह देव (एन.डी. सोनी) तथा धंगदेव (संतोष पटैरिया) पर लेख महत्वपूर्ण हैं।

घनश्याम दास पाण्डेय (डॉ.के.बी.एल. पाण्डेय) कवि ठाकुर उदयशंकर दुबे, बुन्देलखण्ड के दुर्ग-गढ़ी (डॉ. सरोज गुप्ता) पन्ना का पुरातात्विक वैभव (नरेश कुमार पाठक) बुन्देलखण्ड का स्वांग (अभिनन्दन गोइल) दतिया की न्याय व्यवस्था (रामस्वरूप ढेंगुला) दतिया की लेद गायक परम्परा (विनोद मिश्र) बुन्देलखण्ड के इतिहास में कोंच क्षेत्र (हरिमोहन) बुन्देली लोक नाट्य स्वांग (आशुतोष तिवारी) जोधराज कृत हम्मीर रासो (उमेश कुमार गुप्त) आदि ऐसे लेख हैं जिनसे इतिहास और लोकसाहित्य संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी सामने आती है जिनसे आम लोग अनभिज्ञ रहते हैं। डॉ. सरोज गुप्ता में लगभग 120 गढ़ी-दुर्गों की चर्चा के साथ शिवपाल दीन वैद्य रचित ग्रंथ के अंश देकर मौलिक कृति में परिचय कराया है। हरिमोहन गुप्त ने कोंच में इतिहास का सप्रमाण विवरण दिया है। नरेश कुमार पाठक में पन्ना के स्थलों का विशद परिचय दिया है। आशुतोष तिवारी का स्वांग संबंधी लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन सबसे हट कर हरिविषणु अवस्थी का लेख है जिसमें बुन्देलखण्ड के विभिन्न स्थलों पर स्थित नाग प्रतिमाओं और सांस्कृतिक मान्यताओं का सचित्र परिचयात्मक विवरण दिया है। अवस्थी जी प्रायः सचित्र और स प्रमाण शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत करते हैं।

आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल तो ललित निबंध लेखन में सिद्ध हस्त है। वे बुन्देली संस्कृति, लोक परम्परा और संस्कृत के संदर्भों के साथ ऐसा रसायन प्रस्तुत करते हैं कि पाठक उसमें डूब जाता है। मामुलिया संबंधी उनका लेख इसी प्रकार का है उसमें बुन्देली का पूरा लालित्य समाहित है। बुन्देली गद्य-पद्य की अन्य रचनायें भी बुन्देली के सामर्थ्य और जीवन-चिंतन की परिचायक हैं। कहानियों में महेश कटारे, गुप्तेश्वर गुप्त, दया दीक्षित, दुर्गेश दीक्षित आदि की कहानियाँ अधिक प्रमाणित करती हैं वैसे शेष कहानियाँ भी उद्देश्य में सार्थक हैं। दया दीक्षित प्रायः लम्बी कहानियाँ लिखती हैं जबकि लघुकथायें भी अपने छोटे आकार में बहुत कुछ कह देती हैं। कवितायें तो बुन्देली के माधुर्य व्यंग्य और जीवन का राग हैं। बुन्देली में भी गीत, कविताओं के अलावा दोहे, गजलें, लिखी जाने लगी हैं। जिसका प्रमाण इसी अंक में हैं।

- डॉ. गंगाप्रसाद बरसैयाँ

ए.7, फारचून पार्क, जी.3, गुलमोहर, भोपाल-39

'बुन्देली बसंत' का नया अंक 2018 पढ़ा इसके आलेख ज्ञान वर्धक व प्रेरक है। निश्चित ही 'बुन्देली बसंत' लोकसाहित्य, संस्कृति व इतिहास के संरक्षण में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है इस तरह के प्रयास राष्ट्र में सांस्कृतिक एकता को मजबूत करते हैं। हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

- सुरेश जैन *(आई.ए.एस.)*

30, निशात कॉलोनी भोपाल (म.प्र.) 462003

✍ 'बुन्देली बसंत' 2018 अंक प्राप्त हुआ। पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। जितनी मेहनत और मनोयोग से ''बुन्देली बसंत'' का सृजन होता है, उससे कहीं सौगुना अधिक ज्ञान और मानसिक तृप्ति पाठकों को यह दे जाता है।

बुन्देली बसंत के उन्नीसवें अंक में ''भाषा, साहित्य और आलोचना'' खण्ड में श्री उदयशंकर दुबे, डॉ. लखनलाल खरे, श्रीमान् राजकुमार अहिरवार, श्री धीरेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. सरोज गुप्ता और डॉ. बहादुर सिंह परमार सिंह एवं श्री सुरेन्द्र शर्मा ''शिरीष'' जी के आलेख मनन चिन्तन के योग्य हैं। ''इतिहास परम्परा और संस्कृति खण्ड-ज्ञान वर्धक करता है। ''बुन्देली गद्य'' खण्ड में डॉ. डी.आर. वर्मा बैचेन, लखनलाल पाल, डॉ. दया दीक्षित, शकूर मुहम्मद एवं साकेत सुमन जी ने मिलाकर भावविभोर कर दिया। ''बुन्देली काव्य'' खण्ड में डॉ. वर्षा सिंह, फेरन सिंह परिहार, डॉ. मोहन तिवारी, श्रीमान दीनदयाल तिवारी और श्री नवल किशोर सोनी ''मायूस'' जी की रचनाएँ दिल को छू लेती है।

-ओ.पी. रिछारिया

परकोटा, सागर

✍ ''बुन्देली बसंत'' सन् १८ कौ अनोखौं अंक देखो। ई अमोल पोथी के बांचवे पै मालूम परत कै अपुन सब संपादक मंडल जुरकें कितेक मैनत करत। बुन्देली धरती पै न जानें कितने हीरा जनमे उर अपनी चमक दमक बताकें सदां सदां के लानें अमर हो गये। साहित्य के भौत से धूर भरे हीरन की परख करकें डॉ. बहादुर सिंह जू परमार जैसे पारखी जौहरी साबनें तराश के उजागर करो उर उनें अमर बना दओ। ऐसे बुन्देली के हीरा कितेक चमका दये, जा बड़े महत्त की बात है। साहित्य के संगै संगै बुन्देली संस्कृति उर ऊ-संस्कृति की अनमोल बातें जो बिलात जां रई- 'बुन्देली बसंत' की पोथी मूर सँजीवन कौ काम कर रई। लोक उत्सव, पुरातत्व, परम्परायें कलायें उरभौत देत। बुन्देली बातन खाँ खोज कें जा पोथी समाज में एक नई चमक हर सालै देत। बुन्देली प्रेमियन के दिलन में उमंग उर हुलास बड़ाकें उनै चैतन्य करकें नई दिशा दैवे कौ काम अपुन सब जनें करत-जा थोरी बात भविष्य में कौन दिशा व दशा की जरूरत है-जे जनहित के मूल्य 'बुन्देली बसंत' पत्रिका में समजे जा सकत। सार रूप में कओ जा सकत कै बुन्देली लोक संस्कृति उर साहित्य की रक्षा, ऊ में बड़ोत्तरी करकें एक ऐना कौ काम जा पोथी करत आ रई। आगें भी संपादक जू एसीअई मैनत करें उर लोक जीवन में लोक कलयान की गंगा ई पोथी सें बहाउत रे। बुन्देली बड़ै, संस्कृति बचै जा हमाई शुभकामना है।

-डॉ. दयाराम वर्मा 'बेचैन'

स्यावरी, मऊरानीपुर, झाँसी (उ.प्र.)

✍ हमखों मिली पत्रिका नौंनी, उन्नीस साल सलोनी
कहत बुन्देली बसंत है ईंखो, सजी है कौना कौनी
सिंह बहादुर करी संपादित, छपी छतरपुर छौनी
विनोद छपे लंदन के कारन, इक्सठ पेज टकौनी
बातें पढ़ीं सम्पादक जी की, लोक बुन्देली नीकी
कला-साहित्य में रये शुद्धता, कह दई नीकी नीकी
कला-कवि स्वारथ में सन गये करें संस्कृति फीकी
कात विनोद गुलाबी रंग में, लिख दई बातें तीखी
''चिट्ठी मिली अपुन की'' पन्ना, पढ़कें मन भओ टन्ना
हरि, श्रवण गंगा बरसैंया, विरही सीकर, नन्ना
गुणसागर, पुष्पा मोहन ने बैचेन संग दओ धन्ना
रस विनोद सत्तरा को लिख दओ, जैसे चौखों गन्ना

- विनोद मिश्र 'सुरमणि'

संगीत गुरुकुल, मधुकर मार्ग,
पकौरिया महादेव, दतिया (म.प्र.)

✍ खंडन में बुन्देलखण्ड, भाषा में बुन्देली।
कवियन में कवि ईसुरी, पत्रिका में 'बसंत बुन्देली'।।

जौ कछू ठकुर सुहाती या बंदगी नइयाँ सच्ची बात है 'बुन्देली-बसंत' इनकी, उनकी, हम सब की मन भावन पत्रिका है। जो अपनी छमक १९ बरस सें हमें दे रई है। मधुकर, चौमासा, मामुलिया बेतवा-बाणी जैसी पत्रिकान की विरासत समेटें, बुन्देली के गौरव की आज साक्षी बनी है। हम ई के प्रकाशन से प्रारम्भ सें जुड़े हैं औ सबई अंक हमाये बुन्देलखण्ड संग्रहालय एवं अभिलेखागार में संजोये हैं। जिनसे शोध के खोजो व जिज्ञासु लाभ उठा रये हैं। सृजन की डगर में हिचकोले खात आगूँ बाढ़ रई है।

बुन्देली बसंत को २०१८ वाँ अंक मानों शुद्ध रूप सें बुन्देली कौ संक्षिप्त इतिहास है। जी में काव्य और ऊके अनेक रूप, आलेख, अभिलेख, बुन्देली व बुन्देलखण्ड कौ इतिहास, सामाजिक, संस्कार व सरोकारन के अच्छे लेख, बुन्देली कहानियाँ, नाटक, संस्मरण, व्यंग्य से लोकमन को दिशा दई है। लोक-गीत, लोक कथा लोक नाट्य कों बृहद कोश दओ गओ। बुन्देलखण्ड के ठाकुर कवि पर खोजी विद्वान उदय शंकर दुबे नें अच्छी जानकारी दई। परन्तु हमाई खोज सें मिले जेठे बुन्देलखण्ड के 'कुड़ार' के ठाकुर कवि पै विद्वानन की नजर अबै परबौ बाकी है। जदपि 'बुन्देली बसंत' ई तरफ सोई सजग है, जी कौ प्रमान सम्पादक बन्धु डॉ. बहादुर सिंह परमार कौ लिखो लेख बुन्देली लोक भाषा-नईं दिशाएँ नए प्रश्न में मिलत है। जी कौ तन-थोरे में मंथन कर सत की जानकारी लाभकारी, शुभ-लाभ देबे बारी है।

- डॉ. रामनारायण शर्मा

695/3, सिविल लाइन्स,
रानी लक्ष्मीबाई पार्क के सामने, झाँसी (उ.प्र.)

✍ 'बुन्देली बसंत' का संपादन आपके द्वारा बहुत बेहतर ढंग से किया जा रहा है। हर अंक संग्रहणीय एवं शोध पूर्ण होता हैं। मैंने तो अपनी निजी लाइब्रेरी में इसके सभी अंकों को सुरक्षित करके सेट बना कर रखा हुआ है। सफल संपादन हेतु बधाई स्वीकारें। आप बहुत परिश्रम करते है। आपकी बुन्देली साहित्य सेवा एवं आपकी ऊर्जा को शत् नमन है। मुझे आपकी सक्रियता से बहुत प्रेरणा मिलती रहती है।

- राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'

शिवनगर कॉलोनी, टीकमगढ़ (म.प्र.)

✍ 'बुन्देली बसंत' पत्रिका प्राप्त हुई पढ़कर अच्छा लगा यह पत्रिका शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत करकें जहाँ एक ओर नवीन शोध को प्रोत्साहित करती है वहीं दूसरी ओर समकालीन रचनाकारों की बुन्देली रचनाएँ छापकर बुन्देली साहित्य कोश में वृद्धि कर रही है। इसके प्रकाशन से निश्चित तौर से बुन्देली के परिष्कार में सहयोग मिल रहा है।

- डॉ. श्यामबिहारी श्रीवास्तव

अनन्य कॉलोनी, सेंवढ़ा, जिला दतिया (म.प्र.)

फ्रांसिसी यात्री लुइस रासलेट के अनुभव

- राकेश व्यास

लुइस रासलेट द्वारा लिखित पुस्तक 'इंडिआ एंड इट्स नेटिव प्रिन्सेस' सन 1876 में प्रकाशित हुई, जिसमें इस फ्रांसिसी युवक की हिन्दुस्तान-यात्रा का बृहत वर्णन है। तत्कालीन बम्बई (वर्तमान मुम्बई) के समुद्र तट पर 8 जुलाई 1863 को उतरने के बाद वह जो भी रुचिपूर्ण दृश्य और स्मारक देखता उनके रेखाचित्र बनाता था। पर उसे लगा कि यह माध्यम उन दृश्यों के साथ न्याय नहीं कर पा रहा है, जिस प्रकार वह उन्हें देख रहा है और व्यक्त करना चाहता है। लुइस को फोटाग्राफी का शौक हिन्दुस्तान आने के बाद पैदा हुआ, जब उसने पाया कि शाब्दिक वर्णन से कहीं अधिक चित्र प्रभावशाली होते हैं। सन् 1865 में फोटोग्राफी एक नया माध्यम था, उसने इसे सीखने का निर्णय बड़ोदा पहुँचने के बाद लिया। उसने बम्बई से फोटोग्राफी के लिये आवश्यक सभी सामान मंगवाया और इस कला को गम्भीरता से सीखा। उसके द्वारा हिन्दुस्तान में लिये हुए 600 से अधिक मूल छायाचित्र वर्तमान में अत्यन्त दुर्लभ हैं, और संकलन योग्य माने जाते हैं। उसके छायांकन के आधार पर अनेक कलाकारों ने लकड़ी पर उत्कीर्णन कर चित्र बनाये और वे भी यूरोप में बहुत लोकप्रिय हुए। 15 मई 1845 को फ्रांस में जन्मा लुइस रासलेट एक धनाढ्य परिवार का इकलौता वारिस था। मात्र 18 वर्ष की आयु में वह युवक हिन्दुस्तान में छह माह बिताने के इरादे से घर से निकला था पर अंत में पूरे पाँच साल दो महीने बम्बई, बड़ोदा, राजपूताना, अलवर, भरतपुर, आगरा, धौलपुर, ग्वालियर, दतिया, झांसी, छतरपुर, पन्ना, रीवा, भोपाल, दमोह,सागर विदिशा, देहली, अवध, बनारस, बिहार और बंगाल घूमता हुआ 1 सितम्बर 1868 को फ्रांस वापस लौट गया। इस यात्रा में लुइस के साथ उसका एक बेल्जियन मित्र था। लुइस के फ्रांस लौट जाने पर उसका मित्र कलकत्ता में नौकरी करने के लिये रुक गया था। उसके छायाचित्रों और यात्रा वृतान्त ने फ्रांस पूरे यूरोप में बहुत लोकप्रियता प्राप्त की थी।

लुइस रासलेट 28 फरवरी 1867 से 5 मार्च 1867 के बीच छतरपुर, राजनगर और खजुराहो में होली के अवसर पर रहा था। तत्कालीन राजा जगतराज सिंह उस दौरान होली मनाने के लिये छतरपुर के स्थान पर राजनगर में निवास कर रहे थे। जिसके कारण एक दिन छतरपुर रुक कर लुइस भी राजनगर चला गया था उसके द्वारा इन दिनों का रोचक वर्णन किया गया है, जो उस समय के रीति-रिवाज, त्यौहार, मेले और स्थानों की महत्वपूर्ण जानकारी देता है। उसकी यात्रा के कथा सूत्र को हम 21 फरवरी से, जब वह अलीपुरा पहुँचा,के आगे से पकड़ते हैं-

21 फरवरी 1867: ''प्रात: कचनेर से प्रस्थान के बाद हमारा रास्ता कुछ दूरी तक कालपी राज्य के बीच से गुजरा, जो 1806 में बुन्देलखण्ड से अलग हो गया था। यहाँ की उर्वर भूमि का विस्तार यमुना के दाहिने किनारे तक है। हम रानीपुर और मऊ नामक दो कस्बों से गुजरे जो एक-दूसरे से केवल डेढ़ मील की दूरी पर स्थित हैं। यह दोनों कस्बे कपड़ा बनाने और कपड़े की रंगाई के काम के लिये प्रसिद्ध हैं। आगे चलने पर हमने धसान नदी को पार किया, जो कि बेतवा की प्रमुख सहायक नदी है। इस स्थान पर इसकी धारा विस्तृत है और यह उपजाऊ भूमि को सिंचित करती है। धसान के उस पार अलीपुरा जागीर स्थित है, जो कि छतरपुर राज्य के लगी हुई है। अलीपुरा तक के रास्ते में घना जंगल और पहाड़ियां हैं जिन्हें हमने तीन घंटे में पार किया। अलीपुरा एक छोटा सा कस्बा है जो एक पहाड़ी घाटी में बसा हुआ है और उसी पहाड़ी पर एक किला बना हुआ है। अलीपुरा को जागीर का दर्जा प्राप्त है और यहाँ का जागीरदार स्वतंत्र है। वह सीधे इंगलैंड की सरकार के अधिकार क्षेत्र में आता है। अलीपुरा राज्य का क्षेत्रफल 85 वर्गमील और यहां की आबादी 9000 व्यक्ति है। इस राज्य की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए इसकी आय अधिक नहीं होगी। मेरे पास जागीरदार के लिये परिचय पत्र था, पर वे शिकार के लिये गये हुए थे, जहाँ से उनके अगले दिन तक वापस आने की आशा थी। हमारा डेरा कस्बे के पास लगाया गया, जहाँ मरियल से पालतू सुअर और कुत्ते घूम रहे थे। जब हम यहाँ पहुँचे तो पाया कि हमारा सामान ढो रहे पशु बुरी तरह थक चुके थे। इसका कारण यह था कि हमने हिन्दुस्तानी 'कोस' (2 मील) से बुन्देलखंडी 'कोस' (3 मील)को बराबर मान लिया था और हम ने पिछले दो दिनों में 20 मील की जगह 30 मील प्रतिदिन की यात्रा कर ली थी।

हमारे डेरे के पास एक प्राचीन बनावट का मन्दिर था और इसके अतिरिक्त अलीपुरा में कोई दर्शनीय स्थल नहीं था। मालिक की अनुपस्थिति में जागीर के नौकर अवज्ञाकारी होने के कारण हमें भोजन सामग्री प्राप्त करने में कठिनाई हुई और अंत में हमें वह सामग्री दुगने-चौगने दाम देकर खरीदनी पड़ी। हमें लकड़ी भी वजन से खरीदनी पड़ी, जब कि सामान्यत: यात्रियों को लकड़ी मुफ्त दे दी जाती है। अलीपुरा में लकड़ी जागीरदार की मिल्किअत है, जिसके कारण उसके कारिंदे लकड़ी बहुत मँहगी बेचते है''।

22 फरवरी 1867 : अपने थके हुए साथियों को आराम करने के लिये अलीपुरा में छोड़ कर हम लोग नौगाँव के लिये रवाना हो गये। अलीपुरा के पास स्थित नौगांव अंग्रेजों का एक ठिकाना है और हमें बताया गया कि वहाँ पर एक यात्री निवास है। दो घंटे की धुड़सवारी कर के हम लोग नौगाँव पहुँचे जहाँ पर यूरोपीय नमूने के बंगले पेड़ों के झुरमुट के बीच बनाये गये थे। मैंने यात्री निवास के बारे में पूछा तो मुझे एक अर्धनिर्मित भवन दिखाया गया जिसे देख कर मेरी निराशा का अन्दाजा पाठक स्वयं लगा सकते हैं। मैंने सोचा कि ऐसी स्थिति में स्थानीय अंग्रेज एजेंट से सहायता ली जाये जिसके लिये एक परिचय पत्र मुझे कर्नल मीड ने दिया था। दुर्भाग्यवश वह भी उस दिन नौगाँव में नहीं था। हमारा सामान भी शाम तक ही नौगाँव पहुँचने वाला था और इस निर्णय के लिये मैंने अपने आपको खूब कोसा। अब बंगले के परकोटे में स्थित विशाल वृक्ष ही हमारा एकमात्र सहारा था और नाश्ते के लिये हमारे पास केवल कुछ चॉकलेट थे। जब हम अपने सवारों के साथ पेड़ की छाया में आराम कर रहे थे तभी वहाँ से फौजियों की एक टुकड़ी निकली। उन लोगों का ध्यान तो हमारी ओर गया पर हमारी धूल-धूसरित सूरत देख कर वे हमें आवारा बदमाश समझ कर आगे बढ़ गये। बहुत समय नहीं बीता था कि एक बुजुर्ग परिचारक जिसने लाल पगड़ी, रजत कवच और कमरबंद पहने हुए थे, हमारी ओर आता दिखाई दिया। उसने बताया कि फौज के अभियन्ता की पत्नी श्रीमती 'सी' ने हमारी परिस्थिति को भांप लिया है

और वे चाहती हैं कि हम लोग उनके साथ भोजन करें। मैंने इस निमन्त्रण के लिये धन्यवाद प्रेषित किया पर कहा कि हम अपनी धूल-धूलसरित स्थिति में उनके पास कैसे आ सकते हैं? तब उस सभ्य महिला ने हमारे लिये भोजन भिजवा दिया जिसका आनंद हमने पेड़ की छाया में बैठ कर लिया। हमारे परिचारक और सामान लगभग दो बजे तक नौगाँव पहुँच गये। तैयार होकर मैं श्रीमती 'सी' को धन्यवाद देने उनके बंगले पर गया, जहाँ मुझे वह व्यक्ति मिला जिसे मैं आज भी अपना सबसे नजदीकी मित्र मानता हूँ। भलेमानस ने हमारे लिये एक संदेश अलीपुरा भेजा था, जो हमें नहीं मिल पाया था। उसने नौगाँव में हमारे ठहरने के लिये एक विशाल टेंट लगवाया हुआ था जिसमें तीन कमरे थे। वहां हम लोगों ने एक सप्ताह अँग्रेज अफसरों और गणमान्य व्यक्तियों से मिलते हुए बिताया। मेरा मित्र एक अच्छा पुराविशेषज्ञ भी है। उसने मुझे इस क्षेत्र के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देने के साथ-साथ एक ऐसा यात्रा कार्यक्रम बना कर दिया जिससे मैं बुन्देलखण्ड के महत्वपूर्ण स्थान देख सकूं। कर्नल मीड के निर्देशानुसार उसने मुझे आगे की यात्रा के लिये 'खरीते' या परिचय पत्र लिखवा कर दिये जिससे हमारी यात्रा सुखद रही और कहीं भी आदर-सत्कार में कमी नहीं आई।

हमें पहला दरबार नौगाँव के पास छतरपुर में देखना था, पर चूंकि राजा साहब वहाँ नहीं थे और इस कारण उन्होंने हमको अपने पास राजनगर बुलाया था। हमें छतरपुर रुकने के बाद उनके पास पहुँचना था। उनके द्वारा भेजी गई बग्घी हमें नौगाँव छावनी से करीब डेढ़ मील दूर स्थित मऊ से मिलने वाली थी।

28 फरवरी 1867: नौगाँव से हमारा प्रस्थान, आगमन से ठीक विपरीत, बहुत सौहार्द्रपूर्ण था। नौगाँव की आवभगत और सहृदयता हमें सदा याद रहेगी। मऊ में हमें छतरपुर महाराजा द्वारा भेजी गई बग्घी और सवार मिल गये। मऊ सुरम्य पहाड़ियों के बीच बसा हुआ एक सुंदर स्थान है। पहाड़ियाँ पूरी तरह वनाच्छादित हैं और यहां से केन नदी तक का इलाका ऊँचा पठार है। पहाड़ी को काट कर रास्ता बनाया गया है जिसकी अच्छी देखभाल की जाती है। पहाड़ी को पार करके एक झील के तट पर पहुँचते हैं जिसके किनारे पर कई मकबरे बने हुए हैं। यहीं पर प्रसिद्ध बुन्देला राजा छत्रसाल की समाधि है जिसका ऊँचा गुंबद दूर से दिखाई पड़ता है। यहाँ स्थित झील पहाड़ों के ऊपर से बह कर आने वालो पानी को एकत्रित करने के लिये एक ओर मजबूत दीवार (बंद)बना कर तैयार की गई है। इसकी प्राचीनता यहाँ पर पाई गई पुरातन जैन मूर्तियों से सिद्ध होती है।

यहाँ से छतरपुर की दूरी 12 मील (19 किमी) है। यह क्षेत्र पठारी होने के कारण कंटीली झाड़ियों और छोटे पेड़ों के अलावा कुछ भी हरियाली नहीं है। छतरपुर शहर जो कि राज्य की राजधानी भी है, दो नंगी पहाड़ियों के बीच बसा, हुआ एक हरा-भरा उद्यान है। यहाँ की हरियाली और आम के पेड़ों से आच्छादित प्रवेश मार्ग इंग्लैंड के सार्वजनिक उद्यान की याद दिलाते हैं। इसी हरियाली के बीच सैकड़ों मंदिर बने हुए हैं जो न तो कलात्मक है और न ही पुरातन। ये मन्दिर ईंट और चूने के बने हुए हैं। मुझे बताया गया कि हिन्दू और जैन मन्दिरों को मिला कर इनकी संख्या करीब 200 है। हमारी बग्घी नगर के प्रवेश द्वार पर, उस कोठी के सामने रुकी जहां हमें ठहरना था। नौगांव स्थानान्तरण से पहले यह भवन पॉलिटिकल एजेंट का निवास स्थान था। कोठी के द्वार पर परिचारकों की भीड़ थी, जो हमारी सेवा के लिये राजा द्वारा तैनात की गई थी। जैसे ही हम बग्घी से उतरे, हमारे लिये 11 तोपें दाग कर सलामी दी गई। अचानक हुई इस आवाज ने हमें चौंका दिया। हमारे आश्चर्यचकित चेहरे को देख कर मेजबान वकील को लगा कि शायद उनसे कोई भूल हुई हैं और हम नाराज हैं। वह बोला कि आपके लिये निर्धारित तोपों की संख्या का ज्ञान न होने के कारण 11 तोपों की सलामी दी गई है, अब आप जैसा चाहेंगे वैसी ही सलामी दी जायेगी। मेरे बहुत समझाने पर भी कि हमें ऐसे किसी सम्मान की आवश्यकता नहीं है, उसे लगता रहा कि हम बुरा मान गये है।

कोठी को हमारे स्वागत के लिये भलीभांति तैयार किया गया था और स्वादिष्ट अंग्रेजी व्यंजन भोजनकक्ष में हमारे लिये सजा दिये गये थे। वहाँ एक हरकारा हमारे आने की सूचना राजा साहब तक पहुँचाने के लिये खड़ा था। साथ की वह यह भी जानना चाहता था कि हम कब राजा साहब के पास राजनगर पहुँचेंगे। हमें बताया गया कि राजा साहब होली की त्यौहार कराने के लिये बुन्देलखण्ड के अत्यन्त प्राचीन स्थान खजुराहो गये हुए हैं।

1 मार्च 1867: "स्थानीय वकील के साथ हम लोग शहर के दर्शनीय स्थल देखने के लिये गये। यहाँ पर बहुत कुछ दर्शनीय नहीं है और शहर भी बेतरतीब बसा हुआ है। यहां का महल भी एक आधुनिक इमारत है जो किसी इटालिअन विल्ला उपनगरीय भवन और राजपूत महल का सम्मिश्रण दिखाई देता है। छतरपुर का महल कलापूर्ण न होने के बाद भी यहाँ की जलवायु के अनुकूल है। एक ओर महल की दीवार से कुछ पत्थर की सीढ़ियाँ उतर कर झील है, जिसके दूसरे तट पर एक कतिपय प्राचीन बुन्देला महल के अवशेष हैं, जो इस भवन-समूह को सुंदरता प्रदान करता है। इसके बाद हम लोग यहाँ का विद्यालय देखने गये, जहाँ अनेक छात्र पढ़ते हैं और इसका प्रबंधन सुचारु रूप से किया जाता है। महाराजा छत्रसाल द्वारा छतरपुर नगर की स्थापना सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में की गई थी। उनके पिता मुगलों की सत्ता को स्वीकार नहीं करते थे। अन्ततः औरंगजेब ने उनको मारने वाले के लिये भारी इनाम की घोषणा की, जिसके कारण उनकी हत्या हुई। छत्रसाल ने मुगलों से युद्ध की कमान अपने हाथ में ली और धीरे-धीरे मध्य भारत में बुन्देलखण्ड के बृहत क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। राजा बनने के बाद उन्होंने छतरपुर के आस-पास के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र को अपना निवास बनाया, जो उनके छुपने और 'गुरिल्ला लड़ाई' के लिये उपयुक्त था। वीरसिंह जू देव के कदमों पर चलते हुए उन्होंने औरंगजेब की मृत्यु के बाद कमजोर पड़ते हुए मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारी बहादुर शाह से बराबरी के सम्बन्ध बनाये। हालांकि उनकी मृत्यु के बाद राज्य के टुकड़े हो गये और मराठों ने कालपी और सागर पर अधिपत्य कर लिया। धीरे-धीरे यहाँ के बड़े क्षेत्र पर दूसरों का कब्जा हो गया। वर्तमान छतरपुर रियासत में 1200 वर्ग मील का इलाका और 2 से 3 लाख लोगों की आबादी आती है

2 मार्च 1867: हम लोग उसी बग्घी में जो हमें मऊ से लेकर आई थी, आगे की यात्रा के लिये रवाना हुए। छतरपुर से राजा साहब के वर्तमान आवास की दूरी 25 मील (40 किमी) है और यह रास्ता पूरी तरह जंगली है। पथरीली घाटी और पहाड़ियों के बीच बना हुआ यह रास्ता अधिकांश वाहनों के लिए अनुपयुक्त माना जायेगा पर हमारा कोचवान बग्घी को किसी प्रकार पत्थरों से बचा-बचा कर चला रहा था। इस रास्ते में हमें कोई गाँव नहीं मिला पर कहीं-कहीं जंगल के बीच एक-दो झोंपड़ियां अवश्य दिखीं। हमारे गन्तव्य से 5 मील (8 किमी) पहले रास्ता एकदम लुप्त हो गया जिस कारण बग्घी को वहीं छोड़ कर हमें हाथी की सवारी करनी पड़ी। बग्घी के झटकों

के बाद, हाथी की मस्त चाल हमें आरामदायक लग रही थी। राजा साहब का डेरा राजनगर के बाहर एक मैदान में लगा हुआ था। राजनगर एक छोटा सा कस्बा है और हमें दूर से यहाँ के किले की बुर्जों पर लगीं तोपें और सिपाही दिखाई दिये। हमारे राजनगर पहुंचने की सूचना तोप दाग कर दी गई। हमारे टेंट छायादार वृक्षों की नीचे लगाये गये थे। हमारा स्वागत वहाँ उपस्थित एक सरदार और सुनहरी छड़ियां लिये हुए दो चोबदारों ने किया। राजा साहब की ओर से स्वागत के तौर पर, परिचारकों की एक टोली मिठाई, फलों और सिक्कों से भरी थालियां लेकर आई और वह सामग्री मेरे पैरों के पास रख दी। यहाँ की रीति के अनुसार मैंने एक थाली को दाहिने हाथ से छुआ और माथे से लगाया, उसके बाद वह भोज्य सामग्री और सिक्के मेरे साथ आये नौकर-चाकरों में बांट दिये गये। तत्पश्चात हमारे और सरदार के बीच औपचारिक बातें हुईं और वह राजा साहब को हमारे आने की सूचना देने के लिये चले गये।

3 मार्च 1867: राजा साहब भोर होते ही राजनगर से तीन मील दूर स्थित मन्दिरों में होली मनाने के लिये निकल गये। हम लोग भी एक हाथी पर सवार हो कर मेला स्थल के लिये निकल पड़े। रास्ते भर में तीर्थ यात्रियों की भरमार थी, जो अब लगभग समाप्त होने वाले मेले को देखने जा रहे थे। उस भीड़ में मुझे सारे हिन्दुस्तान के लोग देखने को मिले। उनमें उत्तर और मध्य क्षेत्र के ब्राह्मण, गंगा के किनारे के ब्राह्मण, बंगाली, राजपूत और जाट आदि शामिल थे। कुछ तीर्थ यात्री सुदूर दक्षिण से कांवड़े लेकर हरिद्वार की यात्रा पर जा रहे थे। यहाँ पर तीर्थ यात्री अपने पूरे परिवार के साथ यात्रा करते हैं। एक गधा या मरियल सा घोड़ा, बच्चों और बुजुर्गों को ढोता है और महिलायें व युवा गृहस्थी का सामान लेकर चलते हैं। केवल मुख्य तीर्थ यात्री के हाथ में कोई सामान नहीं होता है। जल्दी ही हम लोगों को राजसी डेरा दिखाई दिया, जिसके पास ही हमारे भी ठहरने की व्यवस्था थी। पास ही एक पेड़ की छाया में तीर्थ यात्री मनोरंजन कर रहे थे, जिसके उस पार मन्दिरों के शिखर दिख रहे थे। इसके पहले भी मैंने उदयपुर में मनाये गये त्यौहारों का वर्णन किया है पर वह वर्णन एक सम्पन्न राज्य की राजधानी में मनाई जाने वाली रंगरेलियों का था। उसके विपरीत यहाँ पर हमें ग्रामीण परिवेश में लोक संस्कृति के अनुरूप पारम्परिक रूप से मनाये जाने वाली होली देखने की आशा थी।

होलिका की कहानी का राजपूत परम्परा में जो परिष्कृत रूप देखने को मिलता है, वह यहाँ नहीं है। उदयपुर में होलिका बसन्त की देवी है, जो शरद ऋतु के बाद प्रकृति के पुनर्जागरण का प्रतीक है। वहाँ की प्रचलित कथा के अनुसार होलिका एक राक्षसी है जो शिव के मस्तक से पैदा होकर मेरु पर्वत पर विसंगति पैदा कर देती है। मेरु पर्वत को हम ब्राह्मण धर्म का 'ओलम्पस' भी कह सकते हैं। वह इन्द्र और ब्रह्मा को भी वशीभूत कर लेती है और उनसे उतावली में अनेक दुस्साहसिक काम भी करवा लेती हैं। देवताओं को अपने वशीभूत करके उनकी सारी प्रार्थनाओं को मजाक बनाती है। इसके बाद वह ब्रम्हा से 24 नाम वरदान के रूप में प्राप्त कर लेती है, जैसे त्रिजटा और धौन्धिआ (त्रिजटा और ढूंढी दो राक्षसियाँ हैं जिनको हिन्दू परम्परा में सम्मान प्राप्त है। त्रिजटा के मन्दिर वाराणसी और उज्जैन में है। त्रिजटा को इंडोनेसिया,लाओस,थाईलैंड,कम्बोडिआ आदि देशों में प्रचलित रामकथा में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। ढूंढी की कथा होलिका दहन से मिलती जुलती है। राजा पृथु के राज्य में ढूंढी नामक एक राक्षसी थी जो अबोध बच्चों को मार कर खा जाती थी। उसे वरदान प्राप्त था कि कोई भी मनुष्य, देव या दानव उसे दिन या रात में नहीं मार सकेगा। राजा पृथु के राज पुरोहित ने कहा कि फाल्गुन मास की पूर्णिमा को यदि बच्चे, हाथ में लकड़ियाँ लेकर हल्ला-गुल्ला मचाते हुए ऊधम करें और अन्त में उन लकड़ियों को जलायें और उसके चारों ओर परिक्रमा करें तो ढूंढी नष्ट हो जायेगी) खुशी से पागल होकर होलिका देवताओं को मुक्त कर देती है पर उनसे यह वचन ले लेती है कि प्रतिवर्ष वे उसके नाम से एक रंगरेली भरा त्यौहार मनायेंगे।

यह अनलंकृत कथानक जैन और बुद्ध समुदाय के प्रभाव को कम करने के लिये ब्राह्मणों द्वारा उठाया गया एक प्रयास हो सकता है। जिसके कारण शुद्ध मूल कथा का तोड़-मरोड़ कर उसे यह उच्छृंखल विषय-विलास का रूप दे दिया गया है।

शाम को जब हम मेला स्थल और मन्दिर आदि के दर्शन कर एक देव वन के रास्ते वापस लौट रहे थे तब हमने वे विकट भय-पूर्ण दृश्य देखे। पेड़ों के पीछे से आग की अनगिनत लपटें उठ रहीं थी और उन लपटों के चारों ओर लोगों की भीड़ नाचते-गाते हुए चक्कर लगा रही थी। उनकी चीख-चिल्लाहट को सैकड़ों ढोल, नगाड़ों और ताशों की आवाज दबा दे रही थी। बच्चे और औरतें मैदान के पार होलिका राक्षसी के भजन गाते हुए दौड़ रहे थे। वहाँ हर वह काम हो रहा था जो किसी अधम देवता को प्रसन्न करने के लिये किया जा सकता है। स्थानीय लोगों ने मुझे बताया कि पुराने समय में मेला स्थल के पेड़ों पर रस्सी के फंदों में काँटे लगा कर मदमस्त लोग उनसे लटका करते थे। वे काटे उनकी पीठ की चमड़ी में फंसाये जाते थे, जिनसे उनकी पीठ पर गम्भीर घाव हो जाते थे। जब उनकी पीठ की चमड़ी पूरी तरह कट जाती तो वे लोग जमीन पर गिर पड़ते थे। वे इसे परिक्रमा कहते थे। वर्तमान में छतरपुर के राजा ने यह प्रथा बन्द करवा दी है, पर यह प्रथा अन्य जिलों में अभी भी विद्यमान है।

4 मार्च 1867: आज सुबह राजा साहब ने होली की मिठाई हम लोगों के लिये भेजी, जिसमें लड्डू, पेड़े, बरफी, और केक आदि व्यंजन थे। देखने में मिठाई अत्यंत स्वादिष्ट लग रही थी पर ये व्यंजन मिट्टी-चूने के प्लास्टर से या किसी कड़वे पदार्थ से बने हुए थे। यह प्रथा हमारी अप्रैल फूल की प्रथा जैसी ही है यूरोप में मनाये जाने वाले अप्रैल फूल के दिन की तरह ही यह दिन यहाँ मनाया जाता है। इस दिन हम लोगों की तरह यहाँ पर भी अनेक रहस्यकारक मनो-विनोद आपस में किये जाते हैं, इसमें मुझे कुछ विनोद सर्वाधिक अद्भुत और रुचिपूर्ण लगे, जैसे कि एक चाँदी या सोने के सिक्के के बीच में छेदकर के उसे सड़क के बीच ठोक दिया जाता है। जब कोई राहगीर उस चमकदार सिक्के को उठाने का प्रयास करता है और उठा नहीं पाता हैं तब उसकी भ्रमपूर्ण स्थिति का मजा सड़क के पास ही स्थित दीवार या झाड़ी के पीछे छिप हुए लोग खूब लेते है। इस प्रकार मूर्ख बनने वाला व्यक्ति खिसिया कर रह जाता है।

इन दिनों में मेला स्थल अस्थाई डेरों का एक छोटा सा नगर बन जाता है। झील के दोनों ओर वृक्ष कुंज में दुकानें क्रम से एक कतार में लगाईं जाती हैं। मेले का धार्मिक महत्व होने के साथ ही व्यापारिक महत्व भी है। इस मेले में विभिन्न वस्तुयें, जैसे कि स्थानीय वस्त्र, अंग्रेजी सूत का कपड़ा, गलीचे, बर्तन, जूते, खिलौने,सभी प्रकार के हथियार और कांसे व पीतल का समान बिकने के लिये आता है। हर तरफ त्यौहार के लिये उपयुक्त रंगीन वस्त्रों में सुसज्जित स्त्री-पुरुष और बच्चे जादूगरों, फकीरों और बाजीगरों के खेल देखने के लिये उनके चारों तरफ इकट्ठे हुए दिखाई पड़ते है। वहीं बीच-बीच के खुले स्थान

पर गोल झूले देखे जा सकते है जिनकी हमारे यहाँ के मेलों में भी बहुत मांग रहती है। ऐसे झूले हिन्दुस्तान में प्राचीन काल से लोकप्रिय हैं। पेड़ों के नीचे होलिका की मिट्टी की बनी हुई अनगढ़ मूर्तियाँ रखी रहतीं है, जिनका जिक्र मैं उदयपुर के वर्णन में कर चुका हूँ।

मन्दिरों की सीढ़ियों से उनके द्वार तक लोगों की भारी भीड़ लगी रहती है। वे सभी भगवान की मूर्ति का दर्शन कर के कुछ पैसे मूर्ति के चरणों में चढ़ाते हैं। लोग छज्जों पर इकट्ठे हो कर मन्दिर की दीवारों पर बनी हुई अशोभनीय मूर्तियाँ को देखते है, जिनका विवरण वहां का ब्राह्मण उनकी रुचि अनुसार उन्हें सुनाता है। मेले की ओर आने वाले सभी मार्ग तीर्थ यात्रियों और आस-पास के गांव वालों से भरे रहते है, जो अपना सामान बेचने के लिये यहाँ एकत्रित होते हैं। सम्पूर्ण क्षेत्र भीड़-भाड़ और शोरगुल से भरा रहता है।

दोपहर करीब 3 बजे राज्य का वकील हमें लेने आया, क्योंकि अब राजा साहब हमसे मेला स्थल पर ही मिलने वाले थे। वह अपने साथ 4 हाथी हमारी सवारी के लिये लाया था। राजा साहब की सवारी आज उनकी प्रजा के दर्शन के लिये निकलने वाली थी और राजा साहब अपने मेहमानों को भी उन लोगों को दिखाना चाहते थे। सवारी में सम्मिलित होने से हम मना कैसे कर सकते थे? हम लोग एक हाथी पर सवार हुए और बाकी तीन हाथियों पर अन्य लोग बैठे। ग्वालियर से हमारे साथ आये हुए सवार हमारी बगल में और राज दरबार के चोबदार इस शोभायात्रा के आगे-आगे चलने लगे। भीड़ ने अपने आप हम लोगों के लिये रास्ता छोड़ दिया। सामने से राजा साहब की सवारी आ रही थी। जैसे ही हमारे जुलूस एक दूसरे के पास आये, मेरे हाथी को राजा साहब के हाथी के बगल में लाया गया। छतरपुर के राजा साहब अपनी राजसी पोशाक में स्वर्ण-खचित मखमली साज-सज्जा वाले शानदार होदे में बैठे हुए थे। परस्पर अभिवादन के बाद यूरोपीय शैली में हमने हाथ मिलाये। हमारे हाथी को घुमा कर राजा के हाथी के पीछे लिया गया और अब हम एक शोभायात्रा बन कर मन्दिर की ओर चले।

यह मेरी राजा साहब से पहली भेंट थी जबकि हम कई दिनों से उनके आतिथ्य में थे। वे करीब 21-22 वर्ष के सुदर्शन युवा थे। उनके सुकुमार और प्यारे मुख पर लम्बी काली दाढ़ी थी पर सहृदय आँखों में विषाद की छाया थी। वे सुस्पष्ट हिन्दुस्तानी बोलते हैं। जिससे हम लोगों के बीच मेरी अभी तक की यात्रा के अनुभवों पर विस्तार से बात हुई। फिर उन्होनें अपने राज्य और यहाँ प्रचलित रीति-रिवाजों के बारे में हमें बताया। उन्होंने बताया कि यह मेला उनके राज्य के लिये आय का अच्छा साधन है। लगभग 80,000 तीर्थ यात्री होली के मेले में यहाँ एकत्रित होते हैं। यात्रियों और दुकानदारों से उनके सामान की बिक्री पर जो कर लिया जाता है वह मेरी राय में पर्याप्त होता होगा। उन्होंने यह भी बताया कि आपको इस मेले मे पुरूषों से अधिक स्त्रियाँ दिखीं होगी पर ऐसा है नहीं क्योंकि समाज के अनेक वर्गों के पुरुष होली के समय स्त्रियों की वेशभूषा में रहते है। भीड़ के लिये हमारी उपस्थिति एक अप्रत्याशित आकर्षण थी जिससे वे बारम्बार हमारे हाथी के पास आकर तेज आवाज़ में 'वाह महाराजा' 'वाह साहिब लोग' कह रहे थे। हम लोगों के चतुर्भुज मन्दिर पहुंच जाने पर हमारी बातचीत बीच में रुक गई, क्योंकि राजा साहब आज यहां पूजा करने के लिए पधारे थे। यह मन्दिर विष्णु के चार भुजाओं वाले स्वरूप के कारण चतुर्भुज मन्दिर कहलाता है। मन्दिर के द्वार पर वहां के ब्राह्मण पुजारी ने आशीर्वचन कहे। जिसके प्रतिफल ने मैनें उनको दक्षिणा स्वरूप रुपये दिये। इसके बाद वहाँ उपस्थित नृत्यांगनाओं ने हमारे सामने नृत्य करने की आज्ञा मांगी। वे नारी वेष में पुरुष थे। उन्होंने नारी भाव-भंगिमाओं और क्रियाओं की नकल करते हुए अत्यन्त अशिष्ट गीत गाये।

हमारा जुलूस वापस लौटने तक रात्रि ढलने लगी थी और सारे मैदान में फिर से अलाव जलने लगे थे। साथ ही साथ संगीत और गीतों की लहरियां वातावरण में गूंज रहीं थी। राजा साहब को उनके डेरे पर छोड़ने के बाद मशालचियों ने हमें हमारे डेरे तक छोड़ दिया।

5 मार्च 1867: आज के जुलूस की मुख्य विशेषता वह प्रसंग था, जो पुरातन काल में यूरोप में सुरादेव या बैक्सस के सम्मान में निकाला जाता था। यहां में प्रसंग में एक नशे में चूर स्थूल व्यक्ति को होलिका का साथी बना कर गधे पर बिठा कर घुमाया जा रहा था। उसके मुख पर गेरुआ रंग पोता हुआ था, सिर पर फूल लपेटे हुए थे और उसके गले में विभिन्न वस्तुओं की माला पड़ी हुई थी। जैसे-जैसे जुलूस आगे बढ़ रहा था उसके दो लड़खड़ाते हुए साथी, उसको गधे पर सम्हाल कर बिठाये हुए थे। उसके पीदे एक राजसी छत्र की नकल में , टूटी हुई बांस की टोकरी का छत्र बना कर कुछ लोग चल रहे थे। उसकी सवारी के पीछे-पीछे मदमस्त और अर्ध नग्न आदमियों और औरतों की भीड़ गाते-बजाते और शोर मचाते हुए चल रही थी। वे बीच-बीच में जमीन पर लोटने लगे थे। फूलों से सजे हुए बच्चे मिट्टी की सीटियां बजाते और शोर करते हुए गधे के आगे भाग-दौड कर रहे थे। इस प्रकार सुरादेव की सवारी मेले के चारों ओर घूमी। सवारी पर आवारा लड़कों ने बैंगनी रंग और सड़े फल जैसी अनेक अहानिकारक वस्तुये फेंकीं। अन्तत: यह सवारी मैदान में आकर रुक गई ओर महुआ की शराब से मस्त भीड़ इस झूठे सुरादेव के चारों ओर घूम-घूम कर नाचने-गाने लगी।

इस त्यौहार के उद्गम और मनाये जाने के बारे में कोई विशेष जानकारी तो मैं नहीं जुटा पाया पर इसकी पुरातन ग्रीक,रोमन और फारसी समारोहों से अनोखी साम्यता है। मध्य युग में फ्रान्स और इंग्लैड में मनाये जोन वाले एक भौंडे और पागलों जैसे त्यौहार से भी इसकी साम्यता है। शाम को होलिका की सारी प्रतिमायें, जो इधर-उधर रखीं हुईं थीं, की एक प्रदक्षिणा निकाली गई और सूखी लकड़ियां डाली गईं थी। इस अग्नि के चारों तरफ घूम-घूम कर स्त्रियों ने नाचना आरम्भ कर दिया और पुरुषों में अग्नि के बीच से होलिका के टुकड़े उठाने की होड़ लग गई। यह कार्यक्रम देर रात तक चलता रहा और इसका समापन पैशाचित मदनोत्सव के रूप में हुआ।

6 मार्च 1867: अगले दिन छतरपुर राजय से हमारे प्रस्थान का दिन निश्चित हो जाने के कारण शाम को हमारे सम्मान में दरबार आयोजित किया गया। जब हम दरबार में पहुंचे तब राजा साहब मंच के नीचे अपने दरबारियों के बीच उनसे घिरे हुए बैठे थे। जब हम उनके बगल में बैठ गये तो उन्होंने कुछ दिन और रुकने का आग्रह किया और अगले दिन पहाड़ों पर शिकार के लिये जाने का प्रस्ताव रखा। जब हमने उनसे क्षमा चाहते हुए अवगत कराया कि अगले दिन हम पन्ना के लिये प्रस्थान करना चाहते हैं तो उन्होंने अधिक आग्रह न कर के हमारी आगे की यात्रा का प्रबन्ध किये जाने के आदेश दिये । इसके बाद हमने छतरपुर के मृदुभाषी, आचारवान और सहृदय राजा से विदा ली पर उनके आतिथ्य की यादें सदा हमारे साथ रहेंगी। वे स्वभाव से संकची होने के बाद भी हमारे साथ गत दो दिनों में काफी मिलनसार रहे थे। वे अपने राज्य में अनेक सुधार लाना चाहते थे। जिससे प्रजा का जीवन सुखमय हो जाये और राज्य की भी आर्थिक प्रगति हो। आज के दिन से बारह महीने के

भीतर ही राजा साहब को उनके ही दरबार के प्रतिक्रियावादी समूह ने मरवा डाला था। ताकि उनके दुधमंहे बालक के नाम पर राज्य की रीजेन्सी (प्रतिशासन) पर अधिकार जमा सकें। पर उनकी यह अमानवीय योजना सफल नहीं हो पाई और अंग्रेज प्रशासन ने उन लोगों को दोषी मानते हुए राज्य का प्रतिशासन अपनी फौज के एक अफसर को दे दिया। राजा जगत राज सिंह की मृत्यु के बाद बालक विश्वनाथ सिंह का चौदह माह की अल्पायु में राजतिलक कर दिया गया और ब्रिटिश सरकार ने एक अंग्रेज अफसर को राज्य के संचालन की जिम्मेदारी दे दी। सन् 1878 में रानी को 'रीजेन्ट' बना दिया गया और 1887 में राजा विश्वनाथ सिंह को प्रशासनिक अधिकार दे दिये गये। तत्पश्चात सन् 1894 में उन्हें न्यायिक अधिकार और महाराजा की उपाधि भी दे दी गई थी।

7 मार्च 1867: अपने डेरे से विदा लेने से पहले हम लोगों को राजा साहब की ओर से 'खिल्लत' या भेंट दी गई। भेंट के रूप में महंगे हिन्दुस्तानी दुशाले और हथियार दिये गये थे। राज्य की सीमा तक हमारे साथ जाने के लिये 2 हाथी , ऊँट , घुड़सवार, पैदल सैनिक और परिचारक शामिल थे। यह स्वयं किसी महान राजा की सवारी से कम नहीं था। हम दक्षिण-पूर्व दिशा में आगे बढ़े। इस सम्पन्न मैदानी इलाके के बीच-बीच में जंगली क्षेत्र था, जिसमें पार्श्व में हरी-भरी पहाड़ियों का विस्तार था। इन पहाड़ियों के पीछे पन्ना की घाटी है। हवा शुद्ध और मौसम सुखदायी है। राजगढ़ की तरफ आगे बढ़ने पर प्राकृतिक दृश्य सुंदर से सुंदरतम होता जाता है। राजगढ़ में हम लोगों के लिये सर्व सुविधा युक्त डेरा लगा हुआ था। राजगढ़ छतरपुर और पन्ना राज्यों के बीच का सीमान्त कस्बा है, जहां से केन नदी की दूरी करीब 3 मील (5 किमी) है। राजगढ़ एक पहाड़ी की ढलान पर बसा हुआ है, जहाँ से केन की विस्तृत घाटी को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है पहाड़ी पर पुराना और जीर्ण-शीर्ण किला स्थित है, जो राजगढ़ का एक ससैन्य सीमान्त किले का दर्जा देता है। पहाड़ की चोटी पर स्थित जंगल इतना घना और दुर्गम है कि पहाड़ी चोटियां कस्बे के आबादी वाले स्थान से अदृश्य रहतीं है। पहाड़ी पर 475 सीढियां चढ़ कर एक औषधीय गुणों वाले जल स्रोत है। पहाड़ के ऊपरी भाग में स्थित एक गुफा से निकल कर यह जल, एक छोटे से कुंड में एकत्रित होता रहता है। कुंड का जल पूर्णतः स्पष्ट और पारदर्शी है पर चखने पर इसका स्वाद अच्छा नहीं है। कुंड के मध्य में एक शिवलिंग स्थापित किया हुआ है, जिसके दोनों ओर पार्वती और हनुमान जी की मूर्तियां हैं। गुफा का मुंह वनस्पतियों द्वारा ढंका हुआ है।

यहां से केन की धारा और उसके पार का अनछुआ वन क्षेत्र सुदूर क्षितिज तक फैला हुआ दिखाई देता है और साथ ही दिखाई देते हैं पन्ना नगर के विशाल बुर्ज। यहां पर मोर बहुतायत से है और उनकी व अन्य पशु-पक्षियों की आवाज से वन गुंजायमान रहता है शाम को मैंने एक सवार को पन्ना की सीमा पर स्थित चौकी पर भेज कर अधिकारियों को अपने आने की सूचना प्रेषित की।

इस प्रकार 22 फरवरी से 7 मार्च 1867 तक लुइस रासलेट और उसका साथी छतरपुर राज्य के अतिथि बन कर रहे। उसने यहां के त्यौहार और रीति-रिवाजों का जो वर्णन किया है वह हमें अपनी उन परम्पराओं ओर प्रचलित कथाओं से परिचित करवाता है जिन्हें वर्तमान में विस्मृत कर दिया गया है। अनेक देवी-देवताओं और पूजा पद्धति का हो सकता है उसने सही आंकलन न किया हो पर इसका कारण उसका एक बिलकुल भिन्न संस्कृति से आना है, न की किसी प्रकार का दुर्भाव। इसी प्रकार लोकाचार और लोक कला के बारे में भी अनेक स्थानों पर उसकी टिप्पणियाँ हमारी भावनाओं को आहत कर सकती हैं, पर यह उस युवा यात्री की पृष्ठभूमि के कारण है। पर फिर भी यह वृतान्त इसलिये महत्वपूर्ण है कि डेढ़ सौ साल पहले की कुछ ऐसी परम्पराओं और कथाओं का इसमें उल्लेख है जिन्हें हम वर्तमान मे भूल चुके हैं, जैसे होलिका की उसके द्वारा वर्णित कथा बिलकुल नई है जो उस समय के बुन्देलखण्ड में प्रचलित रही होगी।

– व्यास भवन, नरसिंहगढ़पुरवा
छतरपुर (म.प्र.)
मो. 8088771715

कँदा पै हलधर चलो किसान

– जगत मोहन 'हरि'

खेत जोतन की मन में ठान, कँदा पै हल धर चलो किसान ।

1. भुकभुकें दइ मुरगा नें बाँग, खाट सें तुरतई भरी छलाँग।
उठो उसनींदौ मीड़त आँग, पोतला कंदे से लओ टाँग ।
मैड़ पै पाँचो सीना तान, धरें खेती पै अपनों ध्यान।
खेत जोतन की मन में ठान, कँदा पै हल धर चलो किसान।
2. मूड़ के ऊपर सूरज होत, बैल ढीलत तब लैबे ओत।
भोर सें दिनभर घामौ ढोत, जलत तब ऊके घर में जोत।
पसीना दै धरती खौ दान, असल है जइ ऊकी पहचान।
खेत जोतन की मन में ठान, कँदा पै हल धर चलो किसान।
३. जुँआई धरी कँदन पै पैल, जोत बाँदी डारी फिर शैल ।
मूठ खौ पकर हाँक दय बैल, चलो हल पकरें सूदी गैल।
खोलिया गहें, छेड़ दइ तान, लगो विलबारीं टिप्पे गान।
खेत जोतन की मन में ठान, कँदा पै हल धर चलो किसान।
4. कलेवा चली खेत पै दैन, छबीली ऊकी नवल दुलैन।
कँटीले कजरारे दुइ नैन, मधुर मिसरी से मीठे बैन।
रसीली ओंठन पै मुस्कान, गाल पै तिल कारौ नादान।
खेत जोतन की मन में ठान, कँदा पै हल धर चलों किसान।
5. रहट की बा नौनीं झनकार, निकरबै जीसें जल की धार।
कुँआ सें बना बरा ऊ पार, रहो खेतन में पानी ढ़ार।
हात की दै मीठी थपकान, देत बैलन की मिटा थकान।
खेत जोतन की मन में ठान, कँदा पै हल धर चलो किसान।
6. फिरै खेतन में उपनय पांव, पनइँयन की जी खौं नइं चांव
लगौ जीवन है जी कौ दांव, लेत बइ कौ नइंया कउ नांव
देश की ऊंची करबे शान, पजाबै गेहूँ जुनरी धान।
खेत जोतन की मन में ठोन, कँदा पै हल धर चलो किसान।
7. फसल पक गई कटनें है खेत, धार दइ खुरपी हँसिया रेत।
पेट घरभर कौ भरवे हेत, बार खेती पै जीवन देत।
कबै भओ बूढौ कबै जवान, रहत है उयै कछू नइं भान।
खेत जोतन की मन में ठान, कँदा पै हल धर चलो किसान।

– राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन हा.से. स्कूल
झाँसी (उ.प्र.)
मो. 9956546032

वीर सिंह जू देव कौ न्याय

- उमाशंकर खरे 'उमेश'

पात्र परिचय

महाराज वीर सिंह जू देव - ओरछा राज के राजा
श्री कृपाराम गौड़ - प्रधान मंत्री
आचार्य केशव दास - राज कवि
श्री इंद्रजीत सिंह - वीर सिंह के छोटे भाई (कछुउवा के राजा)
श्री राम प्रसाद - माल गुजार मंत्री
पंचम कुँवरि (कुँ प्रवीर राय की माँ) - रानी
कुँ. प्रवीर राय - राज कुमार
मान सिंह - गुप्तचर
द्वारपाल, नकीब, सैनिक, धीरे, हीरे, होली, अन्य
गायक, पुजारी, मन्दिर प्रबन्धक, खबास
नगर के कुछ श्रेष्ठी जन आदि

दृश्य - 1

(संकेत - प्रातः काल मंगला आरती कौ समय। ओरछा धाम में श्री श्री 1008 श्री राम राजा जू सरकार के मन्दिर कौ प्रांगन। नेपथ्य में वादक गण देव रंजनी या राग प्रभाती की धीमे स्वर में स्वर लहरी बजा रहे हैं। मंच का प्रथम पर्दा (ड्राप) जो दो भागों में विभक्त है। धीरे धीरे खुलता है। मंच पर दूसरा पर्दा जिस पर बड़े अक्षरों में श्री श्री 108 श्री राम राजा सरकार ओरछाधाम लिखा हुआ दिखाई देता है। इसी पर्दे के समीप दो सैनिक अपने-अपने हाथ में बंदूक सम्भाले हुए सावधान की मुद्रा में पर्दे के दांई एवं बाई ओर खड़े है। विंग के एक ओर से 4 महिलायें एवं दूसरे विंग से 4 पुरुष मंच पर धीरे धीरे प्रवेश करते हुए मंच पर दांई एवं बांई ओर खड़े हो जाते है। तभी नेपथ्य से नकीव जोर से कहता है।)

नकीव-सावधान-बुन्देला कुल भूषण-श्री राम राजा सरकार के चरणांनुरागी-प्रजापालक महाराज वीर सिंह जू देव पधार रहे है।.... ऽऽ .... ।

नकीव यह कथन दो बार कहता है। तभी विंग से महाराज वीर सिंह जू देव उनके साथ उनके दो कुँवर एवं महारानियाँ मंच पर प्रवेश करती है। मंच पर खड़े पुरुष एवं सैनिक महाराज के चरणों में झुककर हाथ हिलाकर अभिवादन करते हैं। महारानियाँ महिलाओं के समीप आकर खड़ी हो जाती है। वादक गण "जानिये कृपा निधान भोर भयो अंगना" गीत की प्रस्तुति करते है। तभी मंच का दूसरा पर्दा धीरे धारे खुलता । पर्दे के खुलते ही सभी भक्तगण (दर्शनार्थी) राम राजा सरकार की जय का घोष करते हैं। दोनों सैनिक सरकार को सलामी देते हैं। राम राजा दरबार के दर्शन राम राजा सरकार के सिंहासन के पीछे दो बाल पुजारी चवॅर डुलाते हुए एवं मुख्य पुजारी श्रद्धापूर्वक राम राजा सरकार की आरती करते है। वादक गण श्री राम चन्द्र जी की आरती का मधुर स्वरों में गायन करते हैं। यहाँ केशव द्वारा रचित राम चन्द्रिका में लिखित राम वन्दना का गायन कर सकते हैं। आरती के समापन पर महाराज सहित सभी भक्त गण चरणामृत एवं प्रसाद ग्रहण करते हैं। तत्पश्चात महाराज वीर सिंह देव पास खड़े मन्दिर के प्रबन्धक को सम्बोधित करते हुए कहते हैं।

वीर सिंह - पॉड़े जू महाराज रात कें फागोत्सव कब तक होत रव?

पॉड़े - महाराज रात में तीसरे पार (पहर) तक फगवारे खूब गाउत बजाउत रय। खूब एक दूसरे पर रंग गुलाल डालके होरी खेलत रय।

वीरसिंह - सब फगवारन खों भोग प्रसाद और विदाई ठीक- ठाक दइ गई।

पॉड़े- महाराज की कृपा सें सबई फगवारे यथोचित विदाई पाके विदा भय।

वीर सिंह - (रामदीन खवास से) खवास भैया........?

रामदीन - (महाराज के चरणों मे शिर नवाते हुए) महाराज आज्ञा होय।

वीर सिंह - आज किले में बजजान दो नगड़िया । हमने सुनी की आठ दस साल सें किले में फागइ नई मनाई गई ।

रामदीन- महाराज ने सइ सुनी। बड़े महाराज (राम शाह जू) तीज के दिन इतइ मन्दिर में आके सबइ नगर वासियन के संगे फाग खेल लेबू करें।

वीर सिंह - ऐई से तो हमने सोची आहै। आज किले में सोउ फागोत्सव मना लव जाय। तुमें आज सवरे फगवारन एवं सबई दरबारियन और नगर के सेठ साहूकारन खों सोउ बुलउआ देने।

रामदीन- महाराज के हुकुम कौ पूरी तरा पालन करहों। सबई नगर में बुलउआ पौंचो जात।

वीर सिंह - ठीक है। जय राम राजा की।

दृश्य - 2

(संकेत - रंग मंच पर एक ग्रामीण अपनी खाट पर बैठा अपने हुक्के की चिलम में तम्बाकू भरता हुआ। मंच का पर्दा खुलता है। विंग से दूसरे ग्रामीण धीरे नाम का प्रवेश करते हुए वह कथन करता है।)

धीरे - हीरे भैया - राम -राम

हीरे - राम-राम धीरे भैया। आओ विराजवौ होवे
(संकेत- धीरे उसकी खाट पर बैठ जात है)

धीरे- काय? रात की खुमारी अवै तक नई उतरी आय?

हीरे- खुमारी - मुमारी तौ सब उतर गई। मूढ़ जरूर तनक भारी-भारी सौ है।
धीरे इतनी काय खों पवार लई ती?

हीरे - अब तुमें का बतायं पुजाइ महाराज बोले राम राजा को परसाद आय खूब छानो।

धीरे - तुमें अच्छी मीठी लगी सो तुमने खूब छान लई।
मो सें तौ खुद लगे रय पुजाइ महाराज बोले धीरे आज की भांग में किसमिस बादाम चिरोजी खूब हन के डारी भॉग तौइ में नाम मात्र की आ है। लेकिन भैया भांग तो भांगई होत मैतो तनकई काय न पीलेंव। मोय तौ वा भौत चढ़त। ईसें मैने उनसे हातइ जोर लयते।

(संकेत - हीरे चिलम में तम्बाकू भर कें ऊपै कण्डी की आग रख हुक्का गुड़गुड़ाते हैं फिर धीरे की ओर हुक्का बढ़ाकर देता है)

हीरे - लो हुक्का चल जाय

(संकेत- धीरे हुक्का लेकर तम्बाकू पीता है)

धीरे- राते सो ऊ मगरपुरया नें सीता जू की अच्छी फाग सुनाई।

हीरे - हॉ भैया ऊ की फग सुन कें तौ मोइ डबइयों भर आई ती। जब लखन भैया जानकी जू खों अकेलो वन में छोड़याय ऊ समय सीता जू के विलाप कौ चित्रण ऊ ने बड़ा मार्मिक और करुणा पूर्ण करौ है। कठोर से कठोर ह्रदय भी ऊ चित्रण खों सुनके रो उठे। धीरे आज फागन कौ बुलउआ किले में है।

हीरे - किले में.......?

धीरे - हॉ भैया किले से खबास आव तौ सबके लाने बुलउआ

दैगव।

हीरे- किले में तो आठ- दस साल से फागन कौ बुलउआ नइ भव। राम शाह जू महाराज पैले तो किले में फागें कराउत रय। लेकिन न जाने बाद में उनने किले में फागें करवावौ काय बन्द करवा दओ।

धीरे- भैया राज काज के काम आय जे। अपुन ई बात खों का जाने। अब अपुन देख नइ रय जब सें वीर सिंह जू महाराज गद्दी पै बैठतनइ तौ जनता कौ चौथाई लगान माफकर दव। कितने कुँआ बावरी तला मंदिरन कौ निर्माण करा रय। गरीब मजदूरन खों खूब काम करवे खों मिलन लगौ। राम शाह जू महाराज कौ समय तौ जुद्ध-जुद्ध में बीतौ रव। चार बार तो उनने इनई वीर सिंहजू देव महाराज के विरुद्ध जुद्ध करौ।

धीरे- हीरे भैया ई मे उनकी गलती नइयां अकबर बस्सा उनें जैसौ हुकुम भिजवाउत तौ बैसो उने करने आउत तौ।

हीरे- ई में उनकी गलती नइयां अकबर बास्सा उने जैसो हुकुम भिजवाउत तौ बैसो उने करने आउत तौ।

हीरे- काय भैया कोउ तुम से काय कै तुम कुँआ में गिर परौ तो तुम गिर परौ.........?

धीरे - हीरे भइया जे राज काज कुआउत कछु काम बिबस होके करने आउत।

हीरे- एसौ-कैसौ राज- काज कै हम दूसरन के कय से अपने भइया- वन्दन से जुद्ध करने लगें। इन वीर सिंह जू महाराज कौ बड़प्पन तौ देखौ जब जहाँगीर बास्सा ने राम साह जू खों पकर के बन्दी बनालव तौ इनइ महाराज ने आगरा जाके इने छुड़वाव हतौ। जा बात की जानकारी तो हमें तुमें सबखों हैइ। जे महाराज चाउते तौ राम साह महाराज जिन्दगी भर जेल खाने में डरे रते।

धीरे- फिर भइया-भइया के लाने काय खों होत? अरे कितेकउ लराइ मची रय अन्त में भइया भइया के कामें आउत।

हीरे- फिर जा बात राम साह महाराज खों भी तो सोचे चइय ती।

धीरे- अरे हीरे भैया बड़े लोगन की बड़ी बातें होती है। अपुन उन बातन खों नइ जानत आय हॉ इतेक अवस है जौन दिन से इन महाराज नें ओरछा की गद्दी सवांरी उ दिना सें सारी रियासत की रइयत सुख चैन सें रन लगी न तो अब कोनउ जुद्ध को डर आय न कौनउं आपदा कौ न कौनउं बाहरी आक्रमण कौ डर आय। इन महाराज की जहांगीर बास्सा से अच्छी बन रई।

हीरे- काय भइया? कछुउआ से छोटे महाराज इन्द्रजीत सिंह जू की अबाई भइ कै नई।

धीरे - अरे भैया उने आचार्य जू के बिना कैसे चैन पर सकत? होरी जैसे त्योहार खों बे ओरछा न आवें ऐसौ तो होइ नइ सकत। और अबे प्रवीन जू की रहस तौ इतई हैं।

हीरे - भैया .....? अपने छोटे महाराज खों फांगे सुनवे कौ भौतई सोंकरव।

धीरे- जैसोउ उनको नाव है बैसेउ उनके काम रय। जिते वे वीरता में श्रेष्ठ हैं उतनइ कला प्रेमी भी है। जब वे राम साह जू महाराज की गैर मौजूदगी में सभा में बैठत हते तौ सचमुच उनकी राज सभा इन्द्र जैसी सभा लगवू करी।

हीरे- अरे भैया कानातइ है। यथा राजा तथा पिरजा जैसौ राजा बैसउ दरबार। धीरे भैया। आज अपुन अच्छी खबर ल्याय। इ बहाने छोटे महाराज केइ दरसन हो जै।

धीरे- तौ ठीक है। अब मैं चलरव अपनौ जल्दी आवौ होवै।

हीरे- भैया की बातें। मोय का करने ? तुमाइ भौजाइ तनक हारे गई वा लौटी और मैने दो ठउआ रोटी खाइ और तुमाय ते तमाखूँ पियो।

धीरे - ठीक है तो अब मैं चलौ और फावारे भइयन खों खबर देनै है।

हीरे- ऊ मगरपुरया से अबस कै दइयो। ऊ की फग मोय भौतइं अच्छी लगी ती।

धीरे- वैसे ओइ से आ कैवे जा रव। अच्छा। राम- राम।

हीरे- राम -राम भइया राम -राम

दृश्य - 3

(संकेत - महाराज वीर सिंह जू देव का खास दरबार वीर सिंह देव का खाली राज सिंहासन। सिंहासन के दाई - बाई ओर पड़ी पीठिकाओं पर आचार्य केशव इन्द्रजीत सिंह, कृपाराम गौड़ आदि दरबारी विराजमान हैं। विंग सें रंग मंच पर महाराज वीर सिंह जू देव प्रवेश करते हैं। द्वारपाल तेज ध्वनि में दो बार यह कथन करता है)

द्वारपाल- सावधान! बुन्देला कुलभूषण, राम राजा सरकार के चरणानुरागी, प्रजावत्सल श्री जू देव पधार रहे है ..... ऽऽ.....।

(संकेत- सभी दरबारी खड़े होकर हाथ जोर कर महाराज का अभिवादन कर स्वागत करते हैं। महाराज सभी का अभिवादन स्वीकार करते हुए अपने सिंहासन पर विराजमान होते हैं। सभी दरबारी भी अपनी पीठिकाओं पर विराजमान होते हैं)

वीर सिंह- (आचार्य केशव से) आचार्य जू महाराज। हमने सुनी की अपुन ने ई साल खूब होरी खेली।

आचार्य- श्री जू देव की कृपा होरी तों हर साल जैसेइ खेली। पर अब की बार छोटे महाराज इन्द्रजीत जू से चार - पांच मइना बाद मिलवौ भव ई कारन से होरी कौ उल्लास कछू दूसरोउ रव।

वीर सिंह - हमने भैया इन्द्रजीत जू सौं पैले भी आग्रह करौ तो कै जी प्रकार सें जे बड़े महाराज राम शाह जू कौ राज काज में सहयोग करत रय बैसोउ ओरछा में रैके अवै सवांरत रय।

इन्द्रजीत - महाराज श्री जू देव से सांसी कत है कै हमाव मन तौ सदैव ओरछेइ में रत। कछुउआ की सेवा तौ तनसे आ कररव। फिर कछुउ आखो अपुन ओरछेइ कौ अंग मानो। श्री जू देव की जब आज्ञा हुइये। मैं अपुन के सेवा में तुरत हाजिर होजेंव।

(संकेत- इसी बीच द्वारपाल का प्रवेश)

द्वारपाल- महाराज की जय हो फगवारन कौ पधरावौ हो गव है।

वीर सिंह - फावारे आगय.....?

द्वारपाल - हॉ महाराज

वीर सिंह - तो उन सब जनन खों आदर सहित इतई दरबार में लिवा - ल्याव। दरबारइ में ठुकन दो नगड़िया।

द्वारपाल - जो आज्ञा। (जाने लगता है तभी वीर सिंह उसे टोककर

कहते हैं)

वीर सिंह – तनक और सुने जाव।

द्वारपाल – आज्ञा महाराज।

वीर सिंह – आप सब जनन के स्वागत सत्कार के लानें स्वागत कौ सामान रंग गुलाल इतर जलपान आदि सोउ भिजवा दइयो।

द्वारपाल – जो आज्ञा महाराज

(संकेत– इसी बीच दरबार में फगवारे प्रवेष करते हुए महाराज के चरणों में शिर झुकाकर एक हाथ को नीचे से ऊपर हिलाते हुए) हीरे धीरे आदि महाराज के चरनन में मुजरा पोचे।

वीर सिंह – आव हीरे भैया, आओ धीरे भया। सब जने प्रसन्न रव। भौत दिन में तुमाइ फागें सुनवे कौ मौका मिल रव है।

हीरे – धीरे – महाराज सब राम राजा सरकार की किरपा है। जब उने जैसो करने आउत बैसाउ होत है।

वीर सिंह– अपन सइ कैरय। उनकी मरजी के बगैर तौ पत्ता नइ हिलत आय। हॉं अब का है ठुकन दो नगड़िया।

(संकेत – सब फगवारे गाने को तैयार होते हैं)

राम राजा सरकार, राम राजा सरकार।
नेहा नजर हम पै डारियो।
मोरी सुनलौ पुकार, मोरी सुनलो पुकार।
भव से हमें अब तारियो।
नौनो लगवे दरबार, नौनो लगवे दरवार।
वीर सिंह देव महाराज को। आदि –

(संकेत– ढोलक, नगड़िया, झॉंझ झींका बॉंसुरी वादन से साथ फगवारे फागों की भावपूर्ण मुद्रा में गायन करते हैं। दरवारी गण महाराज के माथे पर गुलाल अबीर लगाते हैं। पिचकारी से रंग फुआर करते हैं। फाग गायन के पश्चात महाराज के खजान्ची कुछ स्वर्ण मुद्रायें महाराज पर न्यौछावर कर फगवारन को यथोचित भेंट प्रदान करते हैं।)

वीर सिंह– धीरे भैया .....? आज तौ अपुन सब जनन ने आनन्द बरसा दव। भौत दिनन में जौ आनन्द मिलौ है।

धीरे– सब महाराज के चरनन की किरपा हैं।

वीर सिंह– राम राजा सरकार की किरपा कव। अपने ई ओरछा राज्य के महाराज रामराजा सरकार हैं। हम सब जनै तो उनइ की पिरजा और सेवक आ हैं। ई राज के जो भी काम होत उनइ की आज्ञा से आ होत। सो उनइ की ओर से जा लटी – पटी भेट परसाद सरूप है सो सब भैया हरों आपुस में बॉंट लियो।

(संकेत– महाराज वीर सिंह खजान्ची की ओर इशारा करते हैं। खजान्ची एक थाल में कुछ मुद्रायें लेकर फगवारन खों भेंट करत है। महाराज वीर सिंह के चरणों में सिर नवाकर भेंट परसाद स्वीकार कर रहें।

वीर सिंह– (आचार्य केशव से) आचार्य जू महाराज। आप सब जनन ने आवे को कष्ट करौ सो हम ऊ के लाने आप सब जनन कौ आभार इ व्यक्त कर सकत अब आज्ञा होय तो दरबार समाप्त करो जाय।

आचार्य– जैसी महाराज की आज्ञा।

(संकेत– सभी दरबारी फगवारे महाराज को सिर नवाकर हाथ जोड़कर राम –राम करते हुए प्रस्थान करते हैं।)

दृश्य – 4

(एक नगर वासी कृषक का खपरैल घर। रात्रि का प्रथम पहर बीतने जारहा है उसी समय कृषक दम्पत्ति आपस में वार्तालाप कर रहे है। घर के पिछवाड़े दो गुप्तचर खड़े उनकी बातों को सुनते हुए। मंच का पर्दा धीरे- धीरे खुलता है।)

पत्नी– काय जू! तुमने एक बात सुनी?

पति– का बात...? पत्नि कितउं चर्चा न करियो।

पति– ऐसी कौन बात आ है...? जी की चर्चा भी नइं करने....?

पत्नि– राजन की बातें आय...?

पति– राजन की ..? तैं गोल –मोल बात काय आ कर रई...? एसी कौन बात आय जो राजा से ताल्लुक रखत।

पत्नि– पैलें जा कव कै हम कितउं ऊबात की चर्चा न करें...।

पति– अच्छा... न करें।

पत्नि– आज कुआ पै पानी भरतन में रमको काकी कैरई ती....।

पति– का कैरई ती....?

पत्नि– बे बोली तुमें हमाव कौल है कोउ से कइयो न हम तुमे आ सुना रय।

पति– हॉं तो रमको काकी का कै रइं ती...?

पत्नि– बे कैरइं ती के अपने महाराज के छोटे कुंवर जू हैं...।

पति– कुंवर प्रवीर राय

पत्नि– अब उनने नाव तो नइ बातव...?

पति– हॉं तो उनने का बात कइ ती?

पत्नि– बोली आज छोटे कुँवर जू लंका बन में शिकार खेलवे गय ते....।

पति– तुम तो बुददू हो अरे राजन के कुँवर शिकार न खेलें तो काय गाडरें चरायं?

पत्नि– तुम पूरी बात तो सुनत नइयॉं बीच में अपनी बात निपोर देत।

पति– हॉं तो छोटै कुँवर जू शिकार खेलवे गये ते सो का होगव...?

पत्नि– लंका वन में जौन महात्मा जू रत ते....?

पति – रत्ते कै रत है ?

पत्नि– पैले मोइ बात सुन लो.. कै तुम अपनी कैलो...।

पति– हॉं... हॉं.... कव जो.. मैं अब बीच में न बोलों...।

पत्नि– उन मातमा जू पै कुँवर जू ने अपने सिकारी कुत्ता उड़छार दय। उन कुत्तन ने मातमा जू खों चीड़- फाड़ डारो और उनकी हत्या कर दई...।

पति– ओ... पनवेसरी आ.. तै का आ बकबे लगी कजन महाराज सुन पैं तो अपुन खों हात्थी की दाय दुवा दें।

पत्नि– कुन हम महाराज से आ कन जारये...।

पति– अरी... भोरी... भीतन के कान होत हैं। कजन कोउ ने सुनलइ और ऊने महाराज से कैदई तो महाराज जिन्दा न छोंड़े।

पत्नि– पूरे नगर भर में तौ चर्चा फैल गई। तुम तौ जानें कितें सोउत रत.....।

पति– मैं तो सोउत रह हों... या जगत रह हों। तैं है बड़ी जान बुजक्कर...। अब कई सो कई अब जा बात मों से निकारी तौ मैं तोई जीव खींच लेंव।

पत्नि- मोय का.... पवा ने.... मैने सुनी सो तुम सें आ कै... आइ।

पति- लो ठीक कै आइ अब चल सो जा। कोउ राजा से कै दे सो खैरियत नइयाँ।

(संकेत - इसी समय एक कोने के पास खड़े काले वस्त्र पहने पुरुष (राजा) छाया के रूप में निकलकर अंधेरे में बढ़ता है। उसे देखकर दूसरा पुरुष कारे वस्त्र धारी (गुप्तचर) उसे देखकर उसका पीछा करता हुआ कहता है)

गुप्तचर- खबरदार! यदि भागने की कोशिश करी तो सिर धड़ से अलग हो जै।

(संकेत- राजा गुप्तचर की चेतावनी सुनकर वहीं खड़ा हो जाता है। गुप्तचर नंगी तलवार लेकर उसकी और झपटता है तभी राजा कहता है)

राजा- कौन...? मान सिंह.......।

गुप्तचर- (राजा की बात सुनकर) यें..... महाराजा

राजा (वीर सिंह देव)- ......हॉं ......।

गुप्तचर- अपुन ई वक्त .... इतै...... ?

वीर सिंह- काय.....?

गुप्तचर- महाराज! मोई सेवा पै इतैक अविश्वास....? कै आपखों गुप्तचरी के लाने कष्ट उठाउने आव ?

वीर सिंह- तुमाई सेवा पै अविश्वास तौ स्वप्न में भी नइ होत... राजा कौ भी तो कछु कर्तव्य होत कै वो प्रजा कै सुख- दुख जाने। फिर तुम तो हमाय सबसे विश्वसनीय गुप्तचर हो।

गुप्तचर- महाराज......।

वीर सिंह- कब.... का.... कहन चाउत?

गुप्तचर- आज्ञा होय.... तौ ऐइ समय उन दोउ पति- पत्नि को सिर काट कें हाजिर कर देव।

वीर सिंह- मान सिंह.... उन दोउ पति- पत्नि ने का अपराध कर दव जी से तुमाय मन में उनके सिर काटवे को विचार आ गव....? अपराध कोउ करे.... और दण्ड कोऊ खों मिले जो तौ न्याय नइयां। नगर की जनता अपने सुख- दुख घरइ में बैठ के आपस में नई कर सकत..?

गुप्तचर- महाराज...। भूल क्षमा करें।

(राजा और गुप्तचर आपस में बातें करते हुए किले के मुख्य द्वार पर पहुँचते हैं दो द्वारपाल महाराज को अभिवादन करते हुए दरवाजा, खोलते है। राजा एवं गुप्तचर किले में प्रविष्ट होते हैं)

वीर सिंह- जाओ.... मान सिंह अब अपने निवास पर आराम करो।

गुप्तचर- (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज....

(दोनों अपने- अपने निवास पर चले जाते हैं)

दृश्य - 5

(संकेत- महाराज वीर सिंह का आम दरबार पूर्ववत है। रंगमंच का पर्दा धीरे- धीरे खुलता है। नेपथ्य से द्वारपाल जोर से दो बार कथन करता है)

द्वारपाल- सावधान...! बुन्देला कुलभूषण महाराज श्री जू देव पधार रहे हैं ....ऽऽ ....।

(संकेत: सभी दरबारी खड़े होकर पूर्ववत महाराज का अभिवादन करते है)

महाराज वीर सिंह- (आचार्य केशव से) आचार्य जू का हाल-चाल हैं। स्वास्थ्य ठीक- ठाक है।

आचार्य- महाराज! रामराजा सरकार की किरपा सें सब खैरियत है।

वीर सिंह - राम राजा सरकार की किरपा सें उनई की छत्र छाया सें तौ अपुन सवजन पल - पुस रय हैं(कुछ रुक कर) .... अब कौन सो ग्रन्थ रचो जा रव है...?

आचार्य- ग्रन्थ तौ महाराज आपइ के सुयश कौ रचो जा रव है। अब राम राज की किरपासे पूरो होवे वाव है।

वीर सिंह- ग्रन्थ कौ शीर्षक का है ..... ?

आचार्य- वीर सिंह देव चरित्र...।

वीर सिंह (मुस्कुराते हुए) वीर सिंह देव चरित्र

आचार्य- हॉं... महाराज...।

वीर सिंह- अपुन खों राम राज सरकार कौ गुन- गान करने है। बेइ अपुन सब के मालिक हैं।

आचार्य- महाराज । अपने ग्रन्थन में लिखो है कै राजा भी भगवान कौ एक रूप होत है ....।

वीर सिंह- जा तो आपकी महानता आय। आप कौ बड़प्पन आय।... अपने ई नगर में आगरा से जहांगीर वास्सा कौ पधारवौ होरव है। जहाँगीर ने अपनी बड़ी मदद करी है। हम चाउत कै उनके स्वागत में ओरछा की ओर से उने कछु लटी- पटी भेंट दइ जाय...।

आचार्य- मैंने महाराज कौ आसय समज लव। अपुन की भावना कौ अवश्य ख्याल रखो जे...।

(संकेत- वीर सिंह लालाराम प्रसाद माल गुजार मंत्री को इंगित करते हुए कहते हैं)

वीर सिंह - लाला जू...।

राम प्रसाद- महाराज हुकुम होय....।

वीर सिंह- माल गुजारी कौ का हिसाब- किताब हैं....?

राम प्रसाद- महाराज...। बड़े महाराज राम साह जू माल गुजारी में दो लाख स्वर्ण मुद्राये छोड़ गयेते चार- पाँच जागीरदारन कौ लगान कौ अंश प्राप्त हो गव है। बाकी जागीरदारन खों लगान कौ अंश भेजवे कौ फरमान जारी कर दव है।

वीर सिंह- लाला जू....। अपने राज्य में भारी असंचित पड़ती की जमीन पड़ी है। अगर ऊ पड़ती की जमीन की सिचाई कौ कछु साधन हो जाय तो राज्य के गरीब किसानन कौ भलो हो जै है और राज्य की मालगुजारी बढ़ जै है। हमाव विचार है कि, आप राज्य के सब पटवारियन खों हुकुम करें कि, उनके हल्का में जौन छोटे बड़े नरवा छोटी- छोटी नदियाँ हैं, उनके बाँध कौन-कौन स्थान पै बन सकत उन स्थान खों चिन्हित करें, ताकि उन स्थान पै बाँध बनवा के उनसे नहरे निकरवा के सिचाई के साधन बनाये जा सकें।

रामप्रसाद - महाराज कौ विचार उत्तम है। अपने राज्य में चन्देली तालाब तौ भौत हैं, पर उन तालाबन के बाँध टूट-फूट गय और वे इतने बड़े भी नइयाँ कै उनसे नहर निकरबाई जा सकें और अपने किसान भैया कुआँ राँट, तरसा सेंई सिचाई करत है। यदि राजय में चार-छै: अच्छे बाँध बनवा दय जाय तो राज्य में सिचाई के साधन बढ़ जैहें।

वीर सिंह- ऐइसें तो मैने अपुन से अपनो विचार आ रखो।

राम प्रसाद- महाराज के हुकुम कौ पालन जल्दी से जल्दी हुइये।

वीर सिंह - (प्रधान मंत्री कृपा रमा गौड़ से) प्रधान जू। राज काज के

रैयत के का हाल चाल हैं। अपनी प्रजा राजी खुशी से तो है?

प्रधान- महाराज। प्रजा में सब बात की खैरियत है। पर... (कहने से रुक जाते हैं)

वीर सिंह - पर.... का.....?

प्रधान- महाराज...। नगर में एक दुखद घटना घट गई है। ऊ घटना से प्रजाजन में बड़ो असन्तोष है....।

वीर सिंह- हम ओइ दुखद घटना के बारे में जानन चाउत । ऊ के बारे में आपने का जानकारी हासिल की....?

प्रधान- महाराज...। घटना कौ ताल्लुक.... (इतना कह रुक जाते हैं)

वीर सिंह - प्रधान जू। आप बात करतन में काय रुक-रुक जा रय। निसंकोच होके हमें घटना की जानकारी बताव। घटना कौ सम्बन्ध का राज परिवार से है।... (कुछ रुककर) प्रधान जू। दोषी चाहे राजपरिवार को होय या पिरजाजन से होय यदि वह दोषी है तो दण्ड कौ भागी अवस हुइये।

(संकेत- महाराज की बात सुनकर सभासद आपस में खुसुर पुसुर करने लगते हैं। इसी बीच द्वारपाल का प्रवेश....)

द्वारपाल- महाराज की जय हो- नगर से आपसे मिलवे बाहर एक प्रतिनिधि मण्डल खड़ौ है।... का आज्ञा है....?

वीर सिंह- प्रतिनिधि मण्डल खों मिलवे की इजाजत है....।

संकेत- (नगर वासी प्रवेश कर महाराज कौ अभिवादन करते है।)

वीर सिंह- आप सब नगर वासियन कौ दरबार में स्वागत है। अपुन सब जनन ने दरबार में आवे कौ कैसो कष्ट करो....? कछु फरयाद लैके आय हो तो निसंकोच निडर होके अपनी बात कर।

(संकेत- सभी नगरजन आपस में एक दूसरे का मुँह ताकते हैं। कुछ खुसुर-फुसुर करते हैं)

एक नगर वासी - महाराज...! लंकावन में एक दुखद घटना घट गई। ओइ घटना कौ नगर वासी महाराज से न्याय चाउत हैं।

वीर सिंह - अपुन का बात कौ न्याय चाउत हैं।

नगरवासी - महाराज! कजन वारी खेत खों खान लगे तौ खेत की कैसे रक्षा हुइये....?

वीर सिंह- (क्रोध की मुद्रा में) जौन वारी खेत खो खान लगे तौ हम ऊ वारी में आग न लगा दें तुम कनातें न कव अपनी बात का कन चाउत ऊ बात कौ जिकर करो...।

नगरवासी - महाराज। ऐसी सुनवे में आई कै लंका वन में चार दिना पैले कुँवर प्रवीरराय ने एक महात्मा पै सिकारी कुत्ता उड़छार दय। उन कुत्तन से ऊ मातमा की हत्या करवा दई।

वीर सिंह- तुमने जा घटना देखी है कै तुम सुनी सुनाई कै रय?

नगर वासी- महाराज! मैंने घटना तो नइ देखी आय। पर सारे नगर में ई घटना की चर्चा हो रइ है।

वीर सिंह- ठीक है! अगरघटना सइ हुइये और कुँवर प्रवीरराय दोषी हुइयें तो उन्हें कड़ौ दण्ड दव जैहे। अब अपुन सब जने अपने-अपने घरैं पधारो। काल दरबार में सब जनन कौ पधारवो होवे। ई बात कौ काल निरनय हुइये।

(संकेत- महाराज वीर सिंह प्रधान मंत्री कृपा राम गौड़ को सम्बोधित करते हुए कहते हैं)

वीर सिंह - प्रधान जू! कल दरबार में कुँवर प्रवीरराय खों बन्दी बनाकर दरबार में पेश करौ जाय। आज के दरबार की करवाई इतइ समाप्त होत है।

दृश्य - 6

(संकेत - रात का प्रथम पहर बीतने जा रहा है। महाराज वीर सिंह जू देव अपनी छोटी रानी पंचम कुँवर के निवास के द्वारा पर पहुँचते हैं। मंच का पर्दा खुलता हैं। नेपथ्य से द्वारपाल आवाज लगाता है।)

द्वारपाल- सावधान...! बुन्देला कुलभूषण, महाराज श्री जू देव पधार रहे हैं....।

(संकेत: विंग से महाराज का मंच पर प्रवेश एक दासी विंग के दूसरे ओर से आकर महाराज का सिर नवाकर अभिवादन करती है)

वीर सिंह- श्यामा! रानी जू से हमाय आवे की सूचना कर दो।

दासी- जा आज्ञा महाराज।

(संकेत - दासी विंग से मंच पर पर्दे के पीछे जाकर कहती है)

(मंच का पर्दा खुलते है रानी अपने पलंग पर विराजमान है)

दासी- महारानी जू! महल में महाराज को पधारवौ हो रव है।

महारानी- महाराज कौ पधारवौ हो रव है?

दासी- हाँ रानी जू...।

(संकेत रानी सिर को साड़ी से ढँकती हुई दासी के साथ द्वार पर आकर महाराज कौ स्वागत करती हुई कहती है)

रानी- महाराज कौ पधारवौ होवे। भौत दिनन में हमाइ सुद लइ...।

वीर सिंह- (आराम कुर्सी पर बैठते हुए) राज- काज के कारन मोय इतेक समय न मिल पारव है। कै हम अपनी रानियन नौ बैठ कै

सुख- दुख की दो बातैं कर सकों...।

रानी- अव महाराज बातें न बनाव। चलौ हात- पाँव धुव जाय और ब्यारी हो जाय।

वीर सिंह - ब्यारी तो आज प्रधान जू के निवास पर हो आई।

रानी- प्रधान जू के घरै....?

वीर सिंह - हाँ

रानी- प्रधान जू के ते का न्योतो हतो....।

वीर सिंह- हाँ...। उनकी पत्नी कौनउं व्रत करत ती आज ऊ विरत कौ पूजन हतौ। उनके इतें सबई दरबारियन को एवं कामदारन कौ न्यौतो हतो से उतइ ब्यारी हो आई।

रानी- महाराज। सांसी आ कैरय कै बातें आ बना रय। हमें तौ ऐसो लगत जैसे महाराज आज कोनउं बात से दुखी होवे।

वीर सिंह - ब्यारी तो हो आई । रई दुखी होबे की बात तो जौ राजधर्म निभावौ बड़ो कठिन है। कछु ऐसी कौन सी घटना घट जाती जीसें निरवरवौ बड़ो कठिन हो जात।

रानी- महाराज। ऐसी कौन सी घटना घट गई जीने आपखों इतनो धर्म संकट में डार दव।

वीर सिंह- अब तुमें का बताय? लंका वन में एक महात्मा रत ते एक दुष्ट मान्स ने उनपै अपने सिकारी कुत्ता उड़छार कै उनकी हत्या करवा डारी।

रानी- (पश्चाताप की मुद्रा में) राम- राम ....! अपने राज में ऐसे कैसे दुष्ट मान्स पैदा हो गय जो ऐसे जघन्य अपराध कर रय। ऊ दुष्ट की बोटी- बोटी नुचवा दई जाय।

वीर सिंह- अगर वह दुष्ट राज परिवार सें ताल्लुक रखत होय तो कैसे दण्ड दव जाय।

रानी- महाराज! वो दुष्ट तो चाय अपनो सगो लरका काय होय। हत्या के दोसी खों तौ बैसउ दण्ड मिले चइये जैसो ऊने अपराध करो है।

वीर सिंह- (कुछ मन में सोचने की मुद्रा में)......

रानी- महाराज.....! ईमें सोच विचार की का बात....? का चिन्ता करवे की बात...? जो जैसो करे तैसो भरे......। चलो अब रात भौत हो गई। आप शयन करें।

दृश्य - 7

(संकेत - महाराज वीर सिंह जू कौ राज दरबार पूर्ववत लगा है सब दरबारी नगर वासी यथा स्थान विराजमान हैं। द्वारपाल जोर से आवाज पूर्ववत करता है)

द्वारपाल- सावधान...! बुन्देला कुलभूषण... राम राजा सरकार के चरणानुरागी ...। न्याय प्रिय प्रजा बत्सल महाराज श्री जू देव पधार रहे हैं।

(संकेत: सभी दरबारी अपने स्थान पर खड़े होकर महाराज का पूर्ववत अभिवादन करते हुए अपने स्थानों पर यथावत बैठते हैं, महाराज वीर सिंह चिन्ता ग्रस्त क्रोध मिश्रित मुद्रा)

वीर सिंह- नगर पाल......?

नगर पाल- महाराज......।

वीर सिंह- अपराधी प्रवीर राय खौ दरबार में पेस करौ जाय।

नगर पाल- जो आज्ञा महाराज......।

(संकेत- नगर पाल ताली बजाकर इसारा करता है। तभी दो सैनिक प्रवीर राय को हथकड़ी डाले हुए दरबार में उपस्थित होते है। प्रवीरराय एवं सैनिक महाराज का यथोचित अभिवादन करते हैं)

वीर सिंह- प्रवीर...! तुमाय ऊपर आरोप लगो कै तुमने लंका वन में एक साधु के ऊपर अपने सिकारी कुत्ता उड़छार के ऊ साधु की कुत्तन से हत्या करवा दई....।

प्रवीर राय- हाँ महाराज....। हमाय ऊपर लगौ जौ आरोप सइ है...। लेकिन...।

वीर सिंह- लेकिन का.....?

प्रवीर राय- ऊ साधू ने हमें लंका वन में सिकार खेलवे से मना करौ तो....।

वीर सिंह- ऊ साधू ने तुमें ठीक मना करौ तो...। तुमे पतौ नइंयां कि लंका वन में सिकार खेलवो मना है....?

प्रवीर राय- महाराज हमें जानकारी नइं हती।

वीर सिंह - अगर तुमें जानकारी नइं हती... और साधू ने तुमें मना करौ तो तुमें उतें सिकार नइ खेलें चइय तौ...। फिर तुमने साधु के ऊपर कुत्ता काय उड़छारे.....?

प्रवीर राय- ऊ साधु के मना करने से हमें क्रोध आ गव। और क्रोध के कारण हमने ऊ पै अपने कुत्ता उड़छार दय ते..। जो अपराध हमसें क्रोध के कारन हो गव है...। ई अपराध पै आप हमें जो दण्ड देव महाराज हम उये स्वीकार करे...।

वीर सिंह- (नगर वासियों से) आप सबइ नगर वासी पंच हौ पंच परमेश्वर कुआउत हैं। अपराधी आप सब जनन के सामने ठाड़ो है। ई खों अपुन जो दण्ड देव.. दरवार ऊ दण्ड को अनुमोदन करे...। ईसे आपइ सब जने सोच विचार के अपराधी खों उचित दण्ड से दण्डित करों।

(संकेत - महाराज वीर सिंह की बात सुनके सबई नगर वासी आपस में एक- दूसरे को मुँह ताकते हुए खुसुर-पुसुर करने लगे)

नगर वासी- महाराज...। हम सब जने चाउत के ई बात कौ न्याय दरबारइ करे...।

वीर सिंह- आप सबइ जने जानत हौ अपराधी हमाव कुँवर आय। ई सें हम चाउत आप सब नगर वासी सोच- विचार के जैसौ न्याय करों आपइ सब जनन के न्याय को निरनय स्वीकार करौ जै ...है।

नगर वासी- हम सब जनन कौ महाराज जोइ विचार भव के श्री जू देव के दरबारइ से न्याय मिलै चइये...।

वीर सिंह- प्रधान जू...।

प्रधान - महाराज ! आज्ञा होय।

वीर सिंह - जे सब नगर वासी ई जघन्य घटना कौ न्याय दरबार सें चाउत...। ई सें आप अपने मंत्री मण्डल से विचार विमर्स कर अपराधी खों उचित दण्ड दैवे को निरनय करें।

(संकेत - महाराज की बात सुनकर सब दरबारी मंत्री गण आपस में खुसुर- पुसुर करते है। फिर प्रधान जू का कथन)

प्रधान - महाराज....। मंत्री मण्डल ने निरनय लव...।

वीर सिंह - का निरनय लव.....।

प्रधान - श्री जू देव के श्री मुख से ही न्याय की बात हो...। कुँवर कौ अपराध तौ बड़ौ है। फिर भी श्री देव उने हिदायत देके छोड़ दे तौ भी महाराज के के निरनय खों सभी स्वीकार करें।

वीर सिंह - प्रधान जू...। अपराधी हमाय कुँवर आँय। हर मताई बाप खों अपनी सन्तान प्यारी होत है... ई सें अपराधी खों जौन दण्ड मिलें चइये न मिल पाय तौ वा बात न्याय की न कुआय। ईसें आपइ सब जने निरनय करें।

प्रधान- महाराज....। ई घटना के न्याय करवे में मंत्री मण्डल अपने खों असमर्थ मानत है ई से श्री जू देवइ न्याय करें...।

वीर सिंह - दुख मिश्रित क्रोध की मुद्रा में । ठीक है। यदि मोय ही न्याय करने है तो आप सब दरबारी मंत्रीगण एवं सब नगर वासी ध्यान से वीर सिंह देव को न्याय सुनो....। कल राजभवन के सामने तीन हात गैरो गड्ढा खोदो जाय। ऊ गड्ढा में अपराधी प्रवीर राय खों खड़ा कर उने गरदन तक माटी से पूर दव जाय।

प्रधान - महाराज ..... जौ.......।

वीर सिंह - (क्रोध) हमें बीच में कोउ न टोकै .....। अपराधी खों गर्दन तक पूर कें बेई भूखे खुंखार सिकारी कुत्ता अपराधी पर उड़छार दय जाँय। इस प्रकार अपराधी को मृत्यु दण्ड की सजा सुनाई जात....।

सभी मंत्री नगर वासी महाराज (क्षमा- क्षमा) कुंवर खों इतनो कठोर दण्ड न दव जाय......।

वीर सिंह- (क्रोध में) नगर पाल.....। कल राजआज्ञा का कठोरता से पालन करो जाय ....।

(संकेत - इस कथन के साथ महाराज वीर सिंह सिंहासन से उठकर सीधे राज भवन चले जाते हैं। धन्य है महाराज वीर सिंह धन्य है उनका न्याय)

- पृथ्वीपुर, जिला-निवाड़ी (म.प.)
मोबा. 9893883776

मस्तानी कौन थी?

- नरेश कुमार पाठक

मस्तानी कौन थी? कहाँ की थी? दूसरे पेशवा बाजीराव के जीवन में उसका प्रवेश कब और किस प्रकार हुआ? इतिहास की यह गुत्थी आज तक कोई सुलझा नहीं सका। उत्तर भारत के इतिहास में मस्तानी का उल्लेख कहीं नहीं मिलता है। मुस्लिम इतिहास लेखक इस संबंध में चुप है। अंग्रेजी लेखक ग्राट डक मस्तानी के नाम से हमें परिचित नहीं कराता है। अपने इतिहास में वह केवल लिखता है कि बाजीराव का पुत्र शमशेर बहादुर यवनी से उत्पन्न हुआ था। अब शोध के लिये आधार रह जाता है दक्षिण की बखरों (ख्यातों) का तथा मस्तानी के संबंध में लिखे गये तत्कालीन पत्रों का उन्हीं के सहारे मस्तानी के जीवन चरित्र का दिग्दर्शन किया जा सकता है।

श्री कृष्णा जी विनायक सोहनी ने अपने पेशव्या ची बखर नामक ख्यात में मस्तानी के संबंध में लिखा है कि शुजाअत खां नामक मुगल सरदार को बाजीराव के छोटे भाई चिमणा जी बल्लाल ने पराजित किया। शुजाअतखा मारा गया और उसकी मस्तानी नामक वेश्या विष खाकर प्राण देने लगी। मराठा सैनिकों ने उसे विष नहीं खाने दिया और चिमणाजी के सामने पेश कर दिया। उन्होने पूछा कि तुम विष खाकर प्राण क्यों त्याग रही थी? मस्तानी ने का मेरी सम्हाल करने बाला चला गया है। अब मैं जीकर क्या करूँगी। श्रीमान उनके जैसा मेरा हाथ पकड़े तो रह सकती हूँ।

किन्तु संयमशील चिमणाजी ने यह बात अस्वीकृत कर दी। और कहा मेरे भाई बाजीराव बुन्देलखण्ड गये है। उनके आने पर तुम्हारा न्याय होगा।

बाजीराव के बुन्देलखण्ड से आने पर चिमणा जी ने मस्तानी के संबंध में उनसे जिक्र किया। बाजीराव ने उसे बुलवाया। वह उनके सम्मुख उपस्थित हो गई। मस्तानी रूप की रानी थी। उसके अंग प्रत्यंग से सौन्दर्य प्रस्फुटित हो रहा था। रोम-रोम से कान्ति बरस रही थी। ''बखर''(ख्यात) में उसकी सुन्दरता का वर्णन करते हुए यह भी लिखा है। कि उसकी त्वचा पारदर्शी थी। जब वह पान का पीक निगलती थी तो उसकी लाली गले में दिखती थी।

उसके पास हीरे माणिकों का भण्डार था। एक लाख कीमती हार वह हमेशा अपने आंचल में बांधे रहती थी। मस्तानी के सामने आते ही उसके रूप पर बाजीराव मोहित हो गये। उन्होंने पूछा तुम्हारा नाम क्या है ? वीणा विनिन्दित स्वर उत्तर आया 'मस्तानी' विमोहित बाजीराव आसक्त हो गये उन्होंने कह दिया तुम मेरे पास रह सकती हो।

चतुर मस्तानी ने बाजीराव की ह्दय की भावनाओं को ताड़ लिया। वह लाड़ से बोली ''महाराज मेरी एक इच्छा है''।
बाजीराव ने कहा वह क्या?

वह बोली ''मुझे जो पुत्र होगा उसे राजपुत्र की तरह मान मिलना चाहिये और राज्य का भाग भी''।

बाजीराव ने उसकी शर्तें स्वीकार की ओर उसे रख लिया।

महाराष्ट्र में प्रचलित एक किंवदन्ती यह भी है कि मस्तानी हिन्दू थी। उसे भगाकर निजाम के राज्य में ले जाया गया और मुस्लिम धर्म की दीक्षा दी गई। वह अद्भुत लावण्यमयी होने से उसे निजाम को भेंट किया गया। मुंगी येवगॉव की सुलह के पश्चात् जब पेशवा बाजीराव निजाम से मिलने गये तब उन्हें संतुष्ट करने के लिये निजाम ने अपने जनान खाने का यह अप्रतिम रत्न (मस्तानी) भेंट किया।

दक्षिण में एक जनश्रुति और भी है कि एक बार बाजीराव कर्नाटक में गये। वहां लड़े गये एक युद्ध में उन्होंने देखा कि एक अत्यन्त सुन्दर रमणी हाथ में तलवार लिये रण मैदान में सैनिकों का संहार कर रही है। बाजीराव ने उधर घोड़ा दौड़ाया और उस रमणी को परास्त करके पूना ले आये।

एक इतिहास संशोधक मस्तानी के संबंध में दूसरा ही विचार रखते है। इस विचार का उल्लेख मराठी के अनेक इतिहासों में भी किया गया है। उनका विचार है कि बुन्देला सरदार महाराजा छत्रसाल पर जब मुहम्मद खांन बंगश ने हमला किया उस समय बाजीराव को महाराजा छत्रसाल ने सहायतार्थ बुलाया। साठ वर्ष पूर्व जिस वीर छत्रसाल ने छत्रपति श्री शिवाजी महाराज से स्वराज्य स्थापना के संबंध मे विचार विमर्श किया था वही वीर छत्रसाल वृद्धावस्था के कारण अब मुहम्मद खांन बंगश से युद्ध करने के लिये असमर्थ हो गया था। राजपूताने में उस समय आपसी फूट का जोर था। छत्रसाल को भरोसा था मराठों का उन दिनों मराठों की शक्ति असीम थी। उसने बाजीराव को पत्र लिखकर निम्न लिख भेजा।

''जो गति ग्राह गजेन्द्र की सो गति भई है आज।
बाजी जात बुन्देल की राखो बाजी लाज।।''

तारीख 13 मार्च 1729 को बाजीराव एक दम छत्रसाल के पास पहुंच गया और बंगस को मार भगाया। महाराजा छत्रसाल इस विजय से बहुत खुश हुए। उन्होंने बाजीराव का खूब सम्मान किया। अपने राज्य के तीन भाग करके एक भाग बाजीराव तथा दो अपने पुत्रों को दिये। साथ ही मस्तानी नामक वेश्या भी उपहार में दी। बाजीराव उसे पूना ले आये।

विन्ध्य प्रदेश मे दो जनश्रुतियां प्रचलित है एक जनश्रुति यह है कि मस्तानी छत्रसाल की पुत्री थी और उसका जन्म एक दासी के कोख से हुआ था जो मुसलमान थी। दूसरी जनश्रुति यह है कि बुन्देल खण्ड की एक गढ़ी पर यासीन खां नामक मुस्लिम सरदार ने अधिकार कर लिया। छत्रसाल ने उस पर प्रत्याक्रमण किया। उनकी विजय हुई और गढ़ी पर फिर उनका आधिपत्य हो गया। जब वह गढ़ी में गये तो उन्होंने देखा एक यवनी मरणोन्मुख अवस्था में पड़ी है और उसके पास खड़ी हे एक छोटी सी बालिका जो माँ-माँ पुकार रही है और रो रही है। छत्रसाल द्रवित हो गये बालिका को उठा लिया। मरणोन्मुख यवनी की ओर देखा। वह जीवन के आन्तिम क्षण गिन रही थी। कातर दृष्टि से महाराज की ओर देखते हुए उसने कहा महाराज यह मेरी बेटी है। इसे संभालना इतना कहकर वह मर गई। महाराजा छत्रसाल उस बालिका को अपने साथ ले आये। बाजीराव जब छत्रसाल की सहायता करने बुन्देल खण्ड में आये तब मस्तानी युवती बन गई थी। बाजीराव को सुयोग्य जानकर छत्रसाल ने उसे उन्हें समर्पित कर दिया।

सुप्रसिद्ध इतिहास संशोधक और लेखक श्री गों.स. सरदेसाई जी ने मस्तानी के संबंध में एक अभूतपूर्व तर्क प्रस्तुत किया है उनका तर्क है कि तत्कालीन उत्तर भारत में नाच गान में निपुण स्त्रियों राजाओं के यहां मन बहलाव के लिये रहती थीं ऐसी स्त्रियों को उनके शैशव से ही नाच गान सिखाने का धंधा अनेक गायक कलाकार किया करते थे और वह नृत्य कला में निपुण हो जाया करती थी तो उन्हें राज दरबार में गाने- नाचने के लिये ले जाते थे। वह युवती किसी राजा या राज कुमार को प्रभावित कर सकी तो वह गायक धन लेकर उसे राजा या राजकुमार को सौंप देता था। मस्तानी भी इसी प्रकार किसी पेशेवर गायक द्वारा बाजीराव को समर्पित की गई थी। वह भी संभव है कि बाजीराव द्वारा बंगश पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में महाराजा छत्रसाल ने दरबार का आयोजन किया होगा। उसमें मस्तानी को किसी पेशेवर गायक ने नाच-गाने के लिये प्रस्तुत किया होगा। उसकी स्वार्णिक सुन्दरता पर रीझकर बाजीराव ने उस पेशेवर गायक से उसे मांग लिया होगा और पूना ले आये होंगे। श्री सरदेसाई जी ने तर्क की पुष्टि में एक पत्र भी प्रकाशित किया है वह इस प्रकार है।

''साहब (बाजीराव) विजय सम्पादन करके स्वदेश आये। हमें भी आनन्द है। इसमें तनिक भी सन्देह हो तो साहब के श्री चरणों की शपथ खाता हूँ। हमारी जैसी चाहिये पूँछ- ताछ नहीं की गई। इधर जोरों की अफवाह है कि लड़की (मस्तानी) हमसे हर ली गई। इस लिये ऐसा न करके दो महिने के लिये भेज दीजिये फिर जल्दी ही भेज दी जावेगी। मैंने श्री चरणों का आश्रय ग्रहण किया है। श्रीमान पाचारण करेंगें सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा''।

इस पत्र का लेखक अज्ञात है फिर भी सन् 1729 में बाजीराव विजय प्राप्त करके पूना लौटे थे। उसी समय का यह पत्र है।

मस्तानी के पूर्वार्ध जीवन की उपरोक्त घटनाओं में कोई तालमेल नहीं है किन्तु सत्य भी इन्हीं घटनाओं मे छिपा पड़ा है। उसे ढूंढ निकलना इतिहासकार का कर्तव्य है। इस कर्तव्य को निभाने के लिये हमें बाजीराव के पूर्वार्ध ओर उन्तरार्ध जीवन का अध्ययन करना होगा।

पेशवा बाजीराव का जन्म सन् 1698 में हुआ। उसे तारीख 17 अप्रैल 1720 को पेशवा पद प्राप्त हुआ। उसकी आयु उस समय बाईस वर्ष की थी। उसका विवाह बारह वर्ष की आयु में ही हो गया था। उसकी धर्म पत्नी का नाम काशीबाई था। वह छत्रपति साहु महाराज के साहूकार महादाजी कृष्णा जोशी की पुत्री थी। तत्कालीन उपलब्ध पत्रों से ज्ञात होता है कि बाजीराव के जीवन में मस्तानी का प्रवेश 1729 में हुआ तब उसे वैवाहिक जीवन को उन्नीस वर्ष हो चुके थे। इतिहास साक्षी है कि अपने वैवाहिक जीवन मे वह सदाचारी और एक पत्नी वृति रहा। चरित्र हीनता का छोटा सा काला धब्बा भी उसके जीवन में ढूंढे नहीं मिलेगा। सामाजिक जीवन में वह कर्मठ ब्राह्मण था और राजनीतिक जीवन में वह विजयी वीर तथा राजनीति का चतुर खिलाड़ी था। उसके जीवन का उत्तरार्ध इतना ही पवित्र और उज्जवल रहा। मस्तानी उसकी प्रेमाराध्या जीवन संगिनी थी। अत: उसे अलग करके देखें तो किसी अन्य स्त्री के संबंध का कोई कलंक उसके जीवन पर लगा हम नहीं देखते। अपने संघर्ष भरे जीवन में उसे इतना अवकाश ही नहीं था कि वह विलासिता के जीवन का उपभोक्ता बने। उसके इस पावन चरित्र को देखते हुए हमें यह लिखने में संकोच नहीं है कि उसने किसी वेश्या को रखैल को अथवा किसी विवाहित स्त्री को अपनी जीवन संगिनी कदापि नहीं बनाया होगा। अत: शुजाअतखां की रखैल वेश्या या निजाम के हरम की बेगम अथवा कर्नाटक की वीर स्त्री की घटनाएं सर्वथा अविश्वसनीय प्रतीत होती है।

अब रह जाती है बुन्देल खण्ड की घटनाएें और सरदेसाई जी अभिनव तर्क दोनों के मंथन से ही सत्य का नवनीत निकल सकता है।

मस्तानी के अंधकार भरे पूर्वार्ध को प्रकाश में लाना है तो उसके उत्तरार्ध जीवन का अध्ययन करना होगा। पेशवा बाजीराव के साथ पूना आने पर ही उसके उत्तरार्ध जीवन का श्री गणेश होता है। उसका वह उत्तरार्ध जीवन का कालखण्ड संघर्षमय होते हुये भी इतना उज्जवल और त्यागमय है कि न तो शब्दों की सीमा में आंका जा सकता है न प्रकट किया जा सकता हैं विवाहित न होते हुए भी विवाहिता पत्नी से अधिक वह पति भक्त थी। मस्तानी और बाजीराव दो जीव थे किन्तु उनका 'शिव' एक था। शरीर दो थे किन्तु प्राण एक थे। मस्तानी के वियोग में उसकी रट लगाते हुए बाजीराव ने तारीख २८ अप्रैल १७४० को प्राण त्याग दिये। जैसे ही मस्तानी को उसकी मृत्यु का समाचार मिला वह एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकी तत्काल उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

ऐसी अलौकिक स्थिति, ऐसा स्वर्गीय प्रेम बाल्य और यौवन के संधिकाल में ही उत्पन्न हो सकता है पनप सकता है। यौवन के मध्य काल में अथवा उसके समाप्ति पर रूप के बाजार में बैठी वेश्या से अनेक पतियों का बरण करने वाली रखैल से ऐसे स्वर्गीय प्रेम का अमर त्याग का संबंध जोड़ना प्रेम ओर त्याग के पावन रूप को कलंकित करना है।

सोलह सत्रह वर्ष की आयु ही बाल्य और यौवन का संधिकाल होता है। इसीकाल में बाजीराव के जीवन में मस्तानी ने प्रवेश किया था इस आयु की मस्तानी इतिहास में हमें बुन्देल खण्ड में ही मिलती है चाहे वह महाराजा छत्रसाल की कन्या हो अथवा किसी पेशेवर गायक की कुमारी शिष्या हो।

सन्दर्भ सूची-

१- श्री नारायण पिताम्बरा ने लिखा है कि बुन्देले और पेशवाओं की राज मैत्री में बाजीरव मस्तानी का प्रसंग इतिहास का जिज्ञासामय अध्याय है जिस पर नये सिरे से विशिष्ट ऐतिहासिक खोज और प्रमाणों के आधार पर प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

२- बहरे ना. के. ''पहिले बाजीराव पेशवे'' पृष्ठ 279

३. मस्तानी पर मराठी एवं हिन्दी में दो उपन्यास प्रकाशित हुये है। मराठी में फुलंगी जिसकी लेखिका हे सौ. नलिनी सहस्त्र बुद्धे हिन्दी मे बाजीराव मस्तानी जिसके लेखक श्री इकबाल बहादुर देवसर है। बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० भगवान दास गुप्त की पुस्तक बाजीराव मस्तानी एवं बांदा के नबाव काफी महत्वपूर्ण है, इन तीनों लेखकों का संबंध पन्ना से रहा होगा।

४. उपरोक्त आलेख जीर्ण-शीर्ण अवस्था में केन्दीय संग्रहालय इंदौर के पूर्व संग्रहाध्यक्ष श्री आर. एस. गर्ग से प्राप्त हुआ।

- 24 रामानुज नगर, रामवाटिका

पीछे सिटी सेन्टर ग्वालियर(म.प्र.)

मो. 98263-41257

बिना बाप कौ बेटा

-डॉ. एम.एल. प्रभाकर

बुदेलखण्ड खों भारत कौ हिरदय कऔ जात। इतै के रैबे बारे पुरानी बातें करकैं गाँव की इज्जत मर्यादा खौं बनांय रत। कजन्त कौनऊँ नें ऊखौं मिटाओ चाव सो उयै खाटौ खानैं परत संगै गल्ती-कसूर मनाउने परत। सबई जनैं बड़े बूढ़न की बात मानते। गाँव में काऊ खौं दुख पीर होय सो पूरौ गाँव इखट्टौ हो जात।

एक गाँव में हल्की नरिया बउत, ऊ के ड्याढैं एक बरिया कौ पुरानौ पेड़ो लगो उतईं गाँव के आदमियन कौ बनाव कच्चौ चौंतरा बनौ। बरिया के पेड़े पै चिरइयां चैंचया रईंती। कुत्ता आपस में लर रयते। उतईं एक आदमी बैठो-बैठो रो रवोतो। दिन डूबे की बेरा हतीं सो आदमी अपने-अपने घरन खौं लौट रयते। वौ आदमियन की निगा बचाकैं असुवा पौंछ रऔ तो। इतनईं में ओई के परोस में रैवे वाई काकी धर कढ़ी। वे रोउत आदमी तायँ देखकैं धुकधुकयानी, फिर ऐंगर गईं तीं चीन कैं बोलीं-काय रे मास्टर तैं इतै काय खों अकेलौ बेठौ, घरै नई जानें, सो ऊने मुड़ी हलाकैं उयै काढ़ दऔ। तन-तन इंदयारौ सौ होन लगो। तनकई देर में दो जनें आपुस में बतकारौ करत चले आ रयते, वे जैसेई बरिया तरे हो कढ़े सो उनैं रोवे-फफकवे की आवाज सुनाई दई, सो वे ऐंगर गये। देंखौ कै जौ तौ सुन्दर मास्टर आय। इतै कायखौं अकेलौ बैठो रो रऔ। उन आदमियन में एक आदमी दूसरे गाँव कौ रिस्तेदार हतो, सो वौ बोलो मास्टर जे तौ दूसरन खौं सिक्छा देत, खुदईं काय रो रये। दूसरौ आदमी गाँव कौ मुखिया हतौ, सो बौ बोलो भइया, जे गर्रानें हते सो अर्रा गये, अब गाँव भरे खौं पतौ है कै इनकी का दुरगत हों रई। अपनी करनी कौ फल तौ भुगतनईं परत। रिस्तेदार बोले भइया का हो गओ, कछु मोय तौ बताव। मुखिया बोले लो सुनौ इनकी कहानी -

बगल के गाँव में धीरे माते रत। उनके पाँच लरका हैं। जिनमें चार लरका बाप-मताई की आज्ञा मानकैं खेती-धन्धौ कर अपने बाल-बच्चे पाल कैं उनैं पढ़ा लिखा रये। पाँचव लरका जेई आयँ, इनकौ नाव सुन्दर है। जे पढ़वे में तनक हुसयार हते सो इण्टर पास कर लऔ तो। इनकौ बियाव हल्केई में हो गऔ तो, सो भगवान ने बाल बच्चे झट्टई लगा दये। माते की मन्सा हती कै जे घरई रैकें घर कौ काम करवैं। इनकौ मन खेती किसानी में नईं लगत तो सो नौकरी के लानें इतै उतै भटकत फिरे, जैसे तैसे मारकूट कैं मास्टर बन गयते। मास्टर बनकैं जे अपने खौं लाट साब समजन लगे। पढ़न लिखन की संगत कौ असरई और होत सो नौनी संगत पाकैं बी.ए. पास कर लओ, ऐई में सुन्दर दो लरकन के बाप हो गये। घरवाली ठेठ गाँवड़े की हती। लट्ठा की धुतियाँ और सेर-सेर भरकी ऐंठी पैरत ती।

सुन्दर नैं जैसईं बी.ए. पास करौ सो आदमियन सैं सूदैं बात नई करत ते। इनकी घरवाई भौतई नौनी सकल सूरत रंग रूप में इनसै अच्छी हती। जे सो ऊ ताईं हेरत तक नईं हते। ऐसईं ऐसें बिलात दिना कढ़ गये। एक दिना स्कूल से आ रयते सो गैलई में मन-मन के लड्डू खाकैं जानें का सोचकै मताई सें आकैं कान लगे तुमने हमाव बियाव हल्के में कर दऔ जीसैं जे बाल बच्चे लग गये, जा उँगटा छाप गँवार घरवाई मिल गई। कजन्त अबै मौय बियाव हो तो पढ़ी लिखी घरवाई संग मन कौ देहज मिलतो उर जा लड़ेर न होती। बड़े सुख सैं जिंदगी कटती। ऐसें मताई तुम दद्दा सैं कै दियौ, मोय दूसरौ बियाव करनैं। मैं जितै जात सो उतईं संगी साथी हँसी करत। सुन्दर की बातें सुनकैं मताई के पाँवन के नैचे की जमीन खिसकन सी लगी। मौं खौं करेजौ आउन लगो। आँखन सैं अँसुवा गिरन लगे। आँखें लाल हो गईं। गुस्सन के मारैं पैलऊँ तौ सुन्दर के मौं में चार चाँटा जमाये, फिर बोली-ठठरी के बँदे, तोई मूँछें बर जाँय, तोय नग-नग में कीरा पर जायँ, तोय कण्डा कढ़ जायँ, सो मोई निगा सैं दूर हो जा नईं तौ आँखें फोरड़ारौं, हाथ-पाँव टोर डारौं, सो परो-परो सरकै। मोय दूद खौं लजा रओ, तैं होत नईं ना मर गओ। मोई फूल सी सोन पुतइया खौं छोड़वे कौ नाव लवौ तौ घर सैं बायरैं काढ़ दें। तैंई घर सैं कढ़ कै मर जा।

एई बीच में धीरे माते एक पंचायत खौं निपटा कै आ रयते, निगत-निगत हार थक गयते, आउतन बोले-मातेन कछू खावे पीवे लियाव भूँखन के माँय मरे जा रओ। रात भर को जगो हौं, बगल के गाँव की पंचायत जैसे तैसें निपटी। आजकल के लरका मन के राजा हो गये। भौत दार में लरका की समज में आई, मातेन बोली-दूसरी पंचायत तौ भौत निपटाउत अपने घर की पंचायत सो निपटत नइयां। माते बोले-का हो गऔ। मातेन बोलीं अपने हल्के लाड़ले लरका से पूँछ लो। मैं कन लगत ती कै इयै डाँटत रऔ सौ तुमनें जब सुनी नइयाँ अब वौ पुरखन की बनाई गैल टोरन चाय रओ। तुमाई मूंछन पै पानी फेर रओ। तुम्हें गाँव असफेर में मौं दिखावे लाख नई छोड़ रओ। माते बोले बताव तौ कछू तुमने तौ अपनौ लाउडस्पीकर चालू करकैं काऊ की सुनतईं नइयां। पैलऊँ तौ तुम चन्द्रमुखी हती अब सो ज्वालामुखी हो कैं मोयी सुनतई नइयां।

मातेन हँसन लगीं, तुमें मसकरीं सुजात,लाड़ले के मन की बातें तौ सुनौ। सब बातै भूलीं जात। माते बोले-पढ़ो लिखो लरका दूसरन खौं ग्यान देत, ऊनै का गल्तीं कर दई, तनक बताव तौ। मातेन बोली-तुमनें ईखौं पढ़ा लिखा कैं साड़ बना दओ। अपने मन को हो गओ। बायरै कढ़कै जानै कौन हवा लग गई। कै रऔ, पढ़ी लिखी बहू के संगै बियाव करवाउनें। माते पंच पंचयातन में जातई हते सो बोले-कात तौ साँसी है। ऊ समय की बात दूसरी हती अब दूसरी बात है काय सैं कै जे बाल बच्चे लग गये उर घर की लक्ष्मी खौं कैसें छोड़ सकत। ईसैं उयै समजा दो लड़कपन की बातें छोड़ कैं बाल बच्चन पै ध्यान देवे, जैसौ वौ सोसत अब कछू नई हो सकत।

कछू दिनन में बात आई गई हो गयी। सुन्दर नैं मन में ठानई लईं तौ कैं पढ़ी लिखी घरवाई के लानें दूसरौ बियाव करनैं, सो घरवाई खौं बात-बात में ताने मारन लगो कभऊँ-कभऊँ तौ मारन पीटन तक लगो, कैऊ तरा सैं परेशान करन लगो, बहू तौ सांसऊ लक्ष्मी हती सब सैन करत रई काऊ सैं कछू नईं कई। सुन्दर खौं तौ दूसरे बियाव कौ भूत सवार हतौ सो नाँय माँय सुनाउन लगो। सबनें समजाव भइया तै मास्टर हो कै कैसी बातें करत। तोये पढ़ी लिखी की जिद्द सवार है सो घरवाई खौं लरकन बिटियन घाँईं घरवाई खौं पढ़ा लिखा ले। सिरकार सब सुबदा दै ई रई सो प्राइवेट फारम भरवा कैं हाईस्कूल पास करवा ले। सबकौ समजावों साँप खौं दूद पियावें घांईं लगौ, सो उल्टौ असर भऔ, होत करत सुन्दर मन में सोसन लगो सूदी उँगइयन सैं घी नईं कढ़त अब सबजनें मोव तमासौ देखवें। घरै आकैं घरवाई सैं बोलौ अपनौ भलौ चाव तौ अन्त घरै चलीं जाव, मोय भरोसैं

न रइयौ। मोय तौ पढ़ी लिखी घरवाई चानें।

घरवाली कन लगी, तुमें को रोकत, खूब करलो दूसरौ बियाव। मैं तो सास ससुर नौं बनी रैंव। खेती किसानी कौ काम करकैं बाल बच्चा पाल कैं पढ़ा लिखा लैंव। सुन्दर बोलो इन बातन सैं काम नईं चलनें। जा बता नौनी तरा सैं जा रई कै नईं। लक्ष्मी बहू टिससैं मिस न होत दिखानी। सुन्दर बोलो कुलच्छन गंवार, तैं का जानत है, अबै लौ तोईं सबरी बातें छिपाय रओ। अब लै सुन अबै मरत फिरै। घरवाई बोली हीरा घूरा में डारे सैं फीकौ नई परत, तुम मोयी का बातें छिपाय रये। बताव मैं तौ सुनों। सुन्दर बोलो जा बात मैं खूब जानत कैं तैं सपने में भी काऊताईं नईं देखत, सांसऊँ की पतब्र्ता है। अकेलें मानत को है। जैसी मैं कैब सो सब जनैं मानें। ई सै फिर कात कै अन्त चली जा, मैं तोय लानें नौनौं घर वर देख कैं बियाव करवा देंव, कछू पइसा टका तोय नाव करवा दैं, नौने बुरये में तोई खबर लयें रैव मोयी बात मानलै अबै कछू नई बिगरौ। घरवाई बोली हम अपनौ धरम खौ भ्रष्ट नईं कर सकत, तुमें जो दिखाय सो करौ, भगवान सब की रच्छा करत।

घर में पति पत्नी की अनबन की बातें कितेकऊ छिपाय पर वे उजागर होई जात। धीरे माते के कानन में पूरी बातें पौंच गईं। उनने सुन्दर खौं खूब समजाव, जब लरका उल्टौ बोलन लगौ कै मैं मरजेंव अकेले ई के संगै नईं रै सकत। माते ने बहू के बापखौ बुलाकै पूरौ किस्सा सुना दवौ। दिन में पंचायत बैठी, सुन्दर खौं बुलाकैं पंचन नैं खूब समजाव, जब वौ मानत नई दिखानौ, तौ बहू को बुलाकै पूंछी गई सो वा बोली, मैं ई उमर से कितै जाँव जे फुवा-फुवा भरे बाल बच्चे की के मौं ताँय हे रें। औ फिर जौ चार मईना कौ गरब लै कैं मैं कितै चली जाँव।

पंचन नैं सुन्दर सैं कई सो सुन्दर ने सोसी, ऐसौ मौका दूसरा नईं मिल सकत, चूकवे में फायदा नइयां। बोलो पंचराजा हौ अब साँसी-साँसी सुन लो मैं पाँच मइना सैं घरै नई रऔ, फिर जौ चार मइना कौ गरब, ई सैं अपन विचार कर लो। जा सो ऐन सोने फूल फूलवै, अकेले मैं अब सो नईं राख सकत। पंचन नैं सोच समज कै बहू के बाप खौं समजाव, बिटिया खौ अपने घरै लै जाव, कछू भी अचीती हो सकत, तुम खुद समजदार हौ।

बिचारौ बाप रोउत डीफत बोलौं पंच राजा तनक न्याय की बात तौ करौ, लरका नें कै दईसो तुम सबने सासी मान लई। तुमाय घरै भी बिटियां हुइयैं। सबकै संगै ऐसो होन लगे तौ जौ घर परवार कैसे चले। राम ने एक आदमी के कय सें सीता पै जौ दोष लगाव तो, अन्त में पछताने आव तौ। भैंस के सींग भैंस खौं भारी नई होत। मोई बिटिया हीरा है। सो देख लिइयो। बहू भी पंचन सैं हाँत जोर कैं बोली, मैं चाँव तो विज्ञान कौ सहारौ लैके दूद कौ दूद पानी कौ पानी कर सकत। अब ऐसे दुष्ट के संगै मैं भी नईं रन चाउत। जौ हमेशा सुहाग की बात करत तौ सो लेवजौ सुहाग ऐई खौ मुबारक होय ऐसें कहते भएं दोई हाँतन की चुरिया फोरन चाईं तो बाप ने रोक दऔ। नईं बेटा जा भारत की नारी आय। सावित्री ने पति के प्रणन की रक्षा करी ती। नीचन के संगै नीच नई होनें आउत चलौ हमाय संगै। तुमें हम अबै भी पढ़ाय लिखॉय संसार में भगवान सबरकौं सहारौ देत।

बिटिया नै बाप की बात मानकैं अपनी किस्मत खौं दोषी मानकैं घर के लगाव हुइयै तौ बेई भगवान निपटारौ करैं। अपन सब जनैं देख लिइयौ पाँव परे। पंचन सें बोली-माये झूँठो अदरोख। कन्त में सांसऊँ की पतब्र्ता हुइऔं तो बतावौं। बाप के घरै जीवन काढ़ दौं, दूसरो घर जियत न बसाँवों। सब जनें मोयी खबर लेयें रइयौ। इत्ती विनती करके पति सुन्दर के पाँवन पै मूँड धरकैं, बाप के संगै मायकैं चली गई। पंचन ने दोई लरका सुन्दर खौं सौंप दये सो वे विचारे मताई के संगे जावे के लाने रोउत रै गये।

इतै सुन्दर ने तुरतई सोचे विचार पूरे करे। पढ़ी लिखी घरवाई के संगै बियाव कर लऔ। कछू दिनन में एक बिटिया भई सोवा सिर्रन भई। पैली घरवाई के लरका बड़े हो गये सो बेई सौतेली मताई खौं गारी देन लगे। बाप बचावे आव सो ओई खौं गारी देन लगे। बाप ने कई कुलचछन के लरका तौ ऑय गारीं न दें तौ का आरती उतारैं। इतनी सुनतई दोई लरकन ने बाप संगै मताई खौं उनकी औखाद बताई सो दोई जनन ने बच के प्रान बचाये। पंचन सैं कई सो सबने अनसुनी कर दई। अब जे अपने करमन कौ फल भोग रये। घरै जात सौ घरवाई लरत लरका मारत हैं। पइसन खौं छुड़ाकै अपनै ऐस कर रये। जौ इँदयारे में घर में घुस जात। भुन्सरा सौकारूँ कढ़ आउत।

बरिया के चबूतरा पै बैठो रिस्तेदार मुखिया खैं बोलौ भइया इनखाँ तौ करमन कौ फल खूब मिल रऔ। ऊ बिचारी पतब्र्ता को का भऔ, ऊकौ तौ कछू दोषई नईं हतौ।

मुखिया बोले वा अपने बाप के संगै मायकैं जाकैं चित्त लगाकें पढ़न लगी। मिडल पास करके ऑगन बॉड़ी में काम करन लगी। हल्के 2 बाल बच्चन खौं संवारन लगी। कछू दिनन में गरब सैं एक बच्चा भव तौ सो उयै नौनी तालीम दैवे खौं स्कूल पौचाउन लगी। बच्चा भी सीधौ सादौ हतो पढ़वे जान लगो सो स्कूल में ऊकै नाव लिखवे के लाने बल्दियत में बाप कौ नाव पूँछो सो ऊने अपनी मताई सैं कई हमाय बाप कौ नाव का है। मताई स्कूल में जाकैं बोली बाप की जांगा हमाव नाव लिखलो, सिरकार ने भी बाप मताई खौं बिरोबर कौ मानौं है। नाव तौ लिख गऔ। सब जनें आश्चर्य में परकैं सोचन लगे। संग के लरकउ कन लये ''बिना बाप कौ बेटा''।

– तहसील कॉलौनी निवाड़ी रोड, पृथ्वीपुर

औगुन तम्बाखू के

– मुक्ता प्रसाद गुप्त 'रत्नेश'

भइया तम्वाखू जिन पिइयो और न जाकों खइयो।
बीड़ी सिगरिट गुटखा को तुम निज मौं नई लगइयो।।
सब दुक्खन की खान जान कें नहीं इन्हें अपनइयो।
इनसें तन की बड़ी हानि है, भूल न इतै चितइयो।।
बीमारी की ये है जननी, सबकों तुमउँ सुनइयौ।।
कैन्सर टी.बी. और अस्थमा होय चित्त पै लइयो।।
बूढ़े बड़े जानकारों की सीख हदय में लइयो।
नइ तौ अस्पताल में भइया करवट बदलत रहियो।
अब काऊ की नई मानियो, तासें पिण्ड छुड़इयो।
जासें सान न बढ़ै तुमाई, पय पी सान बढ़इयो।।
तन पइसा की हानि न हुइये, समझ हिये तुम रहियो।
कवि 'रत्नेश' सुनाये औगुन, उनको सुन जगजइयो

– आलमपुर, भिंड (म.प्र.)

जियत बाप के दंगम्-दंगा

- श्रीमती ब्रजलता मिश्रा

रिस्ते-नातें एक जन्म के नइँ होत जे नाते जनम-जनम के होत हैं। जइसें इनकी डोर ऐसी पक्की होत है, कै झट्टइँ नइं टूटत। ऊसें तौ सब रिस्ते अपँई अपँई जाँगां बड़े होत हैं, पै मताई-बाप कौ रिस्तौ ऐसौ होत है कै जोनों जियत रएँ तौंनों देवतन जैसे दरसन कर लेओ, उनकी सेवा-संभार कर लेओ उर मन-मौखली असीसन की मेवा पा लेओ। उनके मरे पै जा जनम में मताई-बाप फिर नइँ मिलत। हमाए बेदन में "मातृदेवो भव! पितृदेवो भव" जे मन्त्र लिखे हैं। इनके अर्थ हैं कै माता खों देवता मानो। पिता खों देवता मानो। संस्कृत में जइ बात कौ जो सुभाषित है

"सर्व तीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्"।।

अर्थात् माता में सब तीरथ उर पिता में सब देवता विराजमान हैं। जइसें इनकी भरपूर सेवा करें चइये। आज के कलजुगी लरका-बउएँ मताई-बाप खों कछू में नइँ गिनत उनके लॉनें मकान-जमीन, जायदाद, दौलतइ सब कछू है। वे ताल ठोककें कउत हैं कै -

"बाप बड़ौ ना भैया।
सबसें बड़ौ रुपैया।।"

जौंन लरका-बउएँ अपएँ मताई बाप खों बोझा मानकें उनके संगै बुरऔ ब्योहार करत हैं कै थक हार कें बूड़े मताई-बाप भरौ पूरौ परवार छोड़ के वृद्धाश्रम में रैबे चले जात हैं। जौ बड़े दुःख की बात है कै मताई बाप अपइँ छः-सात संत्तानन खों पाल-पोस कें, लिखा-पड़ाके, अपएँ पाँउँन पै ठाँड़े करबे के लायक बनाबे में अपऔ पूरौ जीवन गार देत, बेइ लरका-बउएँ एक मताई-बाप खों उनके बुड़ापे में रोटी नइँ खुवा पाउत। रोजइँ, कलह मचाबे, बारे ऐसे कपूतन के लाने जौ कानात कइ जात है कै -

"सात-पाँच की मताई।
कुत्तन ने चींथे खाई।।"

आज मताई-बाप की मेंनत की कमाई से उने सब हरौई हरौ दिखा रऔ। वे जौ नई समज रए कै हम जों बोरए हैं, बौइ तौ काट हैं। बमूरा (बबूल) बो रए हैं तौ आम कॉसें खाहैं? सन्त कबीर दास जू ने दोहा लिखौ है -

करता था सो क्या किया, अब कर क्यों पछताय?
बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय??

आज हम अपएँ मताई बाप कौ निरादर कर रए हैं, तौ काल हमाए लरका-बउएँ हमाऔ निरादर कर हैं, बुरऔ ब्योहार कर हैं। अब दूर की को कय? दीनदयाल कक्का जौं नों जियत रए, तौनों सब ठीक चलौ अकेले जौन दिना उनकी ऑखें मिची, बइ दिना से घर कौ ढर्रो बदल गऔ। तीनउँ लरका-बउअन ने लीला काकी खों पुटयाकें तीस लाख में मकान बेच दऔ। दस-दस लाख रुपैया लैकें एक लरका ने पन्ना में, एक ने गुना में उर एक ने, जबलपुर में मकान बनवा लऔ। काकी खों अपएँ, गाँव राजापुर सें भौत लगाऔ हतौ। गाँव बारे हर सुख-दुःख में साथ देत हते। अकेलें लरकन ने काकी सें कई के वे चार-चार मईंना एक-एक लरका के घर जाकें रैहें। बेमन से काकी खों उनकी बात मानके उतै जानें परौ। लरकन ने काकी के लाने ऊपर छोटी अटारी रैबे खों दई।

अटारी में पानी से भरो थैला, गड़ई, बाल्टी, सोबे खों एक खाट, कथरी, गेंडुआ (तकिया) ओड़बे खों सुपेती दई। उतै जौइ काकी की गिरस्ती हती। दो-बेरा रूखौ-सूखौ भोजन, उर पैरबे खों बउअन की उतारन मिलत्ती। नाती-पोता स्कूल-कॉलेज पढ़वे चले जात लरका नौकरी पै निकर जात्ते। बउएं टी.वी. उर मोबाइल में मगन रत्तें। लरकन के यार-दोस्त कभउँ संजा के आत्ते सो वे नेचे पौर में बैठकें चले जात्ते। काकी सें मिलबे की कोउ खों चाहना नई हती। वे काकी खों का जानें? काकी बोलबे खों तरस जातीं। काकी कौ जीवन कैदियन जैसौ हो गऔ तौ। ऐसे माहौल में काकी कितेक दिना जीतीं? सो एक दिना बेइ चल बसीं। तीनउँ लरका-बउएँ फूल सिराबे इलाबाबाद लै गए।

रामवती ने अपइँ सास खों कभउँ चैन सें रोटी नइँ खबाई। अस्सी की डुकिरया अपएँ हाँत से माटी के चूल्हे पै लकरियाँ-कण्डा बार कें अपएँ लाने रोटी बनाउती झारा-बुहारी करबौ, बासन-भाड़े मॉजबौ, उन्ना-लत्ता धोबौ-जेसबरे काम अपएँ हाँत से करतती। तौइ रामवती कौनउ अनुआँ लगाकें रोजइं लड़ाई मचाउती। सास खों घर में बने शौचालय में नइ जान देतती। बिचारी सास गड़ई लैकें पछीतें खड़ैरा में जातती। सास के मरबे पै रामवती अपएँ मौं धनाबाई बनकें अपईं तारीफ करतती कै मो बिरोबर सेवा कोउ नइँ कर सकत। मैं तौ सास के फूल इलाहाबाद में गंगा मैया में सिराबे लैके गई ती।

श्याम सुन्दर के बाप को गाँव भरे में नाँव हतौ। बड़ौ भैया पूना में नौकरी करतत्तो। एक दिना हार्ट-फेल होबे सें दद्दा खतम हो गए। श्याम सुन्दर ने बड़े भैया खों खबर दई। बड़े भैया ने टका सौ जुबाब दै दऔ कै रिजर्वेशन नई मिल रवौ सो अबै तौ नईं, तेरइँ पै हम आ पैंहें। तेरइं उर बरसी बड़ी धूम-धाम सें करी। अकेलें गाँव भर ने थूँको कै बाप के मरे पै आखरी दरसन करबे नईं आ पाओ, आराम तलबी का इतेक जरूरी होत है कै बिना रिज़र्वेशन के आइ नइँ सकत?

शिवलाल भौतइ धरम-पुन्न करवे बारे सीधे-सादे-सज्जन हते। एक कारखाने में काम करतते। शास्त्रीय संगीत के गायक उर तबला के अच्छे वादक हते। समाज में अच्छौ मान-सम्मान हतो। उनकौ इकलौतौ बेटा दारू पीकें, गाली-गलौज करकें उनें घर से निकार देततो। परेसान होकें एक दिना कुआ में गिरकें उनने आत्महत्या कर लई। जौन बेटा ने सुख सें रोटी नइं खान दई, उनकी खून-पसीना की कमाई दारू में उड़ाई बौई बेटा इलाहाबाद में त्रिवेणी के संगम में फूल सिराकें आवो और मकान पै शिव-सदन नाँवो कौ पथरा लगवा दवौ।

साँचउँ जौ कॉनात काउ ने ऐसेइ लरका-बउअन के लाने बनाई है कै-

"जियत बाप के दंगम्-दंगा।
मरे हाड़ पौंचाए गंगा।।"

- केशव कुल, 352, नानकगंज, सीपरी बाजार, झांसी
मोबा. 8009224543

नृत्याङ्गन और समराङ्गण की नायिका सुश्री मोतीबाई

– श्रवण सिंह सेंगर

महाराज गंगाधर राव की प्रिय नाट्यशाला की सुन्दर अभिनेत्री सुश्री मोतीबाई का अंग प्रत्यंग मोती समान प्रखर आभा युक्त होने के कारण ही उनका यह नाम प्रसिद्ध हुआ। आकर्षक विशाल नयन नक्श, मोहक, कोयल समान मृदु कण्ठ स्वर तथा अभिनय में प्रवीणता के कारण वे महाराजा की अतिशय कृपा पात्र थीं। हर्षोल्लासमय वातावरण था।

महाराज गंगाधर राव का असामयिक निधन हो गया। नाट्य शाला के प्रदर्शन बंद हो गये।[1] सुश्री मोतीबाई ने नृत्य गायन आदि को त्याग दिया। वे उदास और निराश हो गईं। अपनी मासिक वृत्ति भी अस्वीकार कर दी। यदा कदा बाई साहब को भजन सुना जातीं।

एक दिन बाई साहब ने स्वतः बुलवाया था। सप्रेम कथन किया– 'मोतीबाई.... एक अत्यावश्यक कार्य है. क्या तुम करोगी?' 'श्रीमंत सरकार! आज तक आदेशों का पालन किया और आजन्म करती रहूँगी।' एक क्षण वातावरण में शून्यता व्याप्त हो गई।

'मोती बाई मन में संकोच भाव है ... इस कार्य में कठिनाइयाँ भी आ सकती हैं। ...... श्रीमंत सरकार! यह शरीर और प्राण आप द्वारा ही तो पल्लवित तथा पुष्पित हुये हैं।'

'मोती बाई! यदि मान सम्मान पर भी आँच आने की सम्भावना हो?'[2] मोतीबाई विचार मग्न हो जातीं हैं। ..... कुछ क्षणों के पश्चात् रानी साहब ने कहने का उपक्रम किया ही था ... इसके पूर्व ही मोतीबाई ने उत्तर दिया – "सरकार परिस्थितियाँ कुछ भी हों.... आज्ञा का पालन होगा।" बाई साहब गम्भीर मुद्रा में कहती हैं शत्रु के सम्बंध में गुप्त सूचनायें प्राप्त करना आवश्यक है तथा झाँसी राज्य के हित में परमावश्यक है। इस उद्देश्य से तुम्हें अंगरेजों के अफसरों से सम्पर्क करना होगा।"

"बाई साहब सरकार मेरी समझ में नहीं आया .... यह काम मैं कैसे कर पाऊँगी।" महारानी की ओर प्रश्न दृष्टि से एकटक देखती रह गई? महारानी लक्ष्मीबाई की आँखों से अश्रु झलक आये। आत्मीयता पूर्वक कहा– 'मोतीबाई! मैं ... भी महिला हूँ। महिला रानी अथवा नौकरानी की शुचिता समान होती है ... मुझे यह अनुभूति है ... ।[3]

"सरकार आदेश दें, मुझे कहाँ... किसके पास जाकर ... क्या कार्य सम्पन्न करना होगा।"

"नबाब अली बहादुर के पास जाकर उन्हें .... अपने वशीभूत करके उनके माध्यम से अंग्रेज अफसरों से मिलकर भेद लेना है। मेरे पास यदा कदा अथवा बुलाने पर ही आना है।"

श्रीमंत रघुनाथ राव के निधन के पश्चात जागीर जब्त हो गई। केवल पाँच सौ रूपया मासिक वृत्ति दी जाती थी। अंग्रेजों से मित्रता कर ली थी। बाईसाहब के विरुद्ध कपोल कल्पित सूचनाऐं देना ही अली बहादुर का मुख्य कार्य था। अधिकारियों ने भी उन्हें जागीर बहाल कर देने का प्रलोभन दे रखा था।

नवाब साहब के विश्वसनीय भृत्य पीरू को मोतीबाई ने बुलाया। उसे एक कल्दार इनाम दिया और नवाब साहब से मिलवा देने का आग्रह किया। पीरू ने व्यवस्था की। नवाब साहब को अति प्रसन्नता हुई। मोतीबाई के व्यक्तित्व ने नाट्य शाला के समय से ही उनके दिल में स्थान बना लिया था। पीरू से उन्होंने सकारात्मक उत्तर भेज दिया।

मोतीबाई को देख कर नवाब साहब ने प्रसन्न मुद्रा में कहा– 'कहिये कैसे आना हुआ? मैं क्या मदद कर सकता हूँ?'[4]

'हुजूर आजकल परेशानी बहुत है। आप ही सरकार दूर कर सकते हैं।'

नबाब साहब ने मृदुभाषा में कहा – 'यदि तुम अपनी पेंशन पाना चाहती हो ... तो एक दरख्वास्त दे दो। मैं तुम्हारी सिफारिश अंग्रेज अधिकारी से कर दूँगा।'

'हुजूर सरकार! मैं कुछ नहीं जानती ... आप ही को सब करना है। नवाब साहब को मोतीबाई की समर्पण संलिप्त भाषा तथा नयन मुस्कान ने बाग बाग कर दिया।'

आगामी दिवस नवाब साहब ने झाँसी के मजिस्ट्रेट गॉर्डन साहब के यहाँ दस्तक दी। तथा एकान्त में मोती बाई की तारीफ करते हुये कथन किया– 'वह बड़े काम की औरत है, रानी के सब अन्दर तक के भेद दे सकती है। जरा सा आप उसे लिफ्ट देने का कष्ट करें। मजिस्ट्रेट ने कहा– 'बैल नवाब साहब आप उसे पेश करें ।'[5]

नवाब साहब अपने सुन्दर हाथी पर मजिस्ट्रेट के आवास पर पहुँचे। अर्दली को दो रूपये दिये। तुरन्त बुलावा आ गया। अन्दर पहुँचने पर मजिस्ट्रेट साहब ने नवाब साहब तथा मोतीबाई का वैलकम किया। मोती बाई संकुचित स्थिति में शान्त मुद्रा में खड़ी रहीं। मजिस्ट्रेट साहब ने मोती समान आभा और आकर्षक देह यष्टि युक्त उनके रूप लावण्य से प्रभावित होकर उन्हें आसन ग्रहण करने का संकेत किया।

नवाब साहब ने कहा हुजूर ये मोतीबाई हैं, पहले ही आप से काफी अर्ज कर चुका हूँ। साहब ने मोती बाई से कहा– 'क्या तुम हमारा करमाबरदार है?" ... "जी हजूर .... आपके हुक्म की तलबगार हूँ .... नेक नजर बनाये रहें।'

मि. गॉर्डन ने रानी और ताँत्या के विषय में प्रश्न किये। यज्ञोपवीत के विषय में पूँछताछ की। मोती बाई ने उत्तर विद्वतापूर्ण दिये। उसने पूँछा–"क्या तुम रानी से मिलता है?"

"सरकार दशहरा दिवाली जाती हूँ।" "तुम रानी से मेल बढ़ाओ .... उनका सब बात दो"। "बहुत अच्छा सरकार, जैसी मर्जी ... हुजूर मेरी अर्जी?" हम देखेगा, फिर आर्डर करेगा .... तुम आते रहना है। मोती बाई स्वतः उनके पास जाने लगी। भजन सुनाने के साथ ही प्रगति देने लगी। रानी को पर्याप्त सूचनाऐं प्राप्त होने लगीं।[6]

मोतीबाई महारानी के साथ अन्य महिलाओं की तरह सैन्य अभ्यास अश्वरोहण आदि में भी भाग लेती थी। गुलाम गौस खान की शिष्या थीं। वे तोप संचालन में भी दक्ष थीं। एक विशिष्ट तो तोपखाने की वह प्रभारी थीं। महारानी के महिला ब्रिगेड की प्रमुख नायिकाओं में से एक सुश्री मोतीबाई भी थीं। समस्त सामारिक कार्यों में भी महारानी के आदेशानुसार भाग लेती थीं। भवानी शंकर नामक तोप की वह संचालिका थी।[7]

2 अप्रैल 1858 को ओरछा राजवंश के वंशज कटेरा रियासत के बुन्देला शासक सेनापति सिंह के विश्वासघात के आधार पर अंग्रेज ब्रिगेडियर स्टुअर्ट तथा कर्नल लोथ ने अपनी सेना सहित ओरछागेट से झाँसी नगर में प्रवेश किया। घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया।

सर हयूरोज ने भी अपनी तोपों से आग बरसाना प्रारंभ कर दिया। तोप संचालन की तकनीक में सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ प्रसिद्ध तोपची गुलाम गौस खान की तापों ने भी आग उगलना गोले बरसाना प्रारंभ

कर दिया। तोप संचालन में विशेषज्ञ तथा तोपखाना की महिला ब्रिगेड की नायिका की तोप भावानी शंकर भी आग के गोले बरसा रही थी।[8] इस समय ओरछागेट पर युद्ध हो रहा था। अश्वारोहियों का नेतृत्व खुदाबक्श कर रहे थे।

03 अप्रैल को भी युद्ध हुआ। जीवन शाह चौराहे की ओर से गोले आना प्रारम्भ हो गये। तोप संचालन में विशेषज्ञ गुलाम गौस खान कड़क बिजली एवं सुश्री मोती बाई घनगर्जन तथा महाकाली नामक तोपों का संचालन अपने सामारिक बिन्दु से कर रहे थे।[9] ओरछा गेट की ओर से आई सेना ने अपना प्रमुख लक्ष्य तोपों तथा उनके तोपचियों को बनाया। गोले तोपों की ओर बरसाये जा रहे थे। जीवन शाह चौराहे की ओर से आने वाले गोले भी किले के अन्दर गिर रहे थे। गोलियाँ भी चल रहीं थीं।

घमासान गोलाबारी दोनों ओर से हो रही थी। सैनिकों की गोलियों से महान तोपची गुलाम गौस खान हताहत हुये। गौस साहब की ओर बाई साहब दौड़ कर गईं तब तक देखा कि सुश्री मोतीबाई भी गोली लगने से हताहत हो गईं हैं। सुश्री मोती बाई अन्तिम समय कातर दृष्टि से बाई साहब को एक टक देख रहीं थीं। उनके विवश ओंठ कह रहे थे कि आपको छोड़ कर हम जा रहे हैं। बाई साहब की छवि को अपने अन्तः स्थल में धारण करके नृत्याङ्गण की प्रसिद्धि प्राप्त श्रेष्ठ नार्तिकी तथा समराङ्गण की सफल वीराङ्गना अपनी अन्तिम यात्रा पर 3 अप्रैल 1858 को महाप्रयाण कर गई। अपने महाराज की सेवा में पुनः प्रतिष्ठित हो गई।

महारानी वीराङ्गना लक्ष्मीबाई की सेना के तीन प्रमुख स्तम्भ महान गुलाम गौस खान तथा दक्ष अश्वारोही खुदाबख्श अपने अन्तिम गन्तव्य को जा चुके थे। तीनों पराक्रमी शहीदों की मजारें किले के अन्दर पास ही पास विद्यमान है। जो मूक भाषा में उनके शौर्य गाथा का गुणगान कर रही हैं।

सुश्री मोतीबाई का बाह्य व्यक्तित्व मोतियों से ही दैव ने सजाया संवारा था। उसी प्रकार उनका अन्तःकरण भी स्वच्छ, निर्मल तथा निष्कलुष था। दृष्टि में अर्थ महत्वहीन था। वृत्ति प्राप्त हेतु उन्हें बाई साहब भी न हीं मना पाई थीं।

आज मोतीबाई अपने सहयोगियों सहित झाँसी दुर्ग में चिरनिद्रा में लीन है। उनके आदर्श राष्ट्रप्रेम तथा सदआचरण पीढ़ियों हेतु प्रेरणा के अहं स्रोत हैं।

सन्दर्भ संकेत -

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई-डॉ. वृन्दावनलाल वर्मा-पृष्ठ-13
2. सोना और खून-आचार्य चतुरसेन शास्त्री-सोना और खून (भाग-4)-पृष्ठ-41
3. वही
4. झाँसी की रानी-पृष्ठ-23
5. सोना और खून-पृष्ठ-43
6. झाँसी की रानी-पृष्ठ-33
7. गजेटियर झाँसी-1965-पृष्ठ-348
8. झाँसी की रानी- पृष्ठ 60
9. वही-पृष्ठ-67

- गुरसराय, झाँसी
मो. 9415589841

प्यारौ सौ गाँव

- इन्दुप्रभा खरे 'इंदु'

नदिया किनारे है, प्यारौ सौ गाँव।
सोंधी सी माटी औ पीपर की छाँव ।।
भोर अमरईया पै, चहकै चिरईयाँ।
खेतन की मेंढ़न पै, छिटकी तरैयाँ।।
कोयल की कूक, और कागा की काँव।
सोंधी सी माटी औ, पीपर की छाँव।।
चँन्दन सी माटी औ, अमरत सौ नीर।
सीतल, सुगन्ध मन्द, बहवें समीर।।
खेलें गोपाल लाल, बंशीवट ठाँव।
सोंधी सी माटी औ, पीपर की छाँव।।
कुंज- कुंज लतकन कौ सुन्दर बितान।
बाज रही बाँसुरिया, मोहन अधरान।।
बाज रही पायलिया, राधा के पाँव।
सौंधी सी माटी औ, पीपर की छाँव।।
हल लेकें चल दय है बलदाऊ भैया।
चलदई है संग में, वा चितकवरी गैया।।
खेवेंगे कान्हा अब 'इन्दु' की नाँव।
सौंधी सी माटी औ, पीपर की छाँव।।

- छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9893883776

कठिन करबौ किसानी

- पं. रामगोपाल प्रजापति 'अनजान'

गरमी, बरसा, जाड़ौ नइँ जानी, कठिन करबौ किसानी।
जेठ मईना खपरा पारे, गोबर खाद खेत में डारे,
कण्डा- बिठा ढो धरे सारे, करकें छबाई डारत छानी।
कठिन करबौ किसानी।।
असड़ा बरसौ ऊगी घास, बै रये जुआँर, बाजरा खास,
करकें जड़कारे की आस, घामौ दुफरिया नइँ जानी।
कठिन करबौ किसानी।।
सब घर करत निराइ, गुड़ाई रात डँगेरू रये भगाई
साउन- भादों मन हरसाई, कुआँर में पसीना बयै जैसें पानी।।
कठिन करबौ किसानी।।
पूस- माव की सरदी आई, रातन पानी रये लगाई,
छिड़की खाद यूरिया जाई, फागुन और चैत कटाई करानी।।
कठिन करबौ किसानी।।
ढोबें लाँक सुमिर भगवान, करत मड़ाई लगाकें ध्यान,
गये बैसाक उठें खरयान, घरै धरें कछू बेंच कर्ज चुकानी
कठिन करबौ किसानी।।
गरमी, बरसा, जाड़ौ नइँ जानी, कठिन करबौ किसानी

- 1179 राजेन्द्र नगर, उरई (जालौन) उ.प्र
मो. 9450708750

बुला रई बेतवा बुद्धिजीवियों को

- वीरेन्द्र शर्मा कौशिक

टन............टनन................ टन-टन-टनन ....

रात के दस-साढ़े दस बजे हुइयें .... अबै घण्टी और टन-टना पाउती कै मोरो सीदो हांत फोन के रिसीवर पै जा पोंचो, कान से लगाओ-''काए शर्मा जी। लिख गओ बौ लेख? तुमाए लानें जगा छूटी डरी। जल्दी भेज देव।''

''नई भैया, नई अबै तौ नई लिख पाओ। कछू दिना और लग जैहें। मोरो जुआव सुन वे फिर बोले-

''ठीक है, कछु समय और ले लो, पै ऊ विषय खों छोड़ देव। अपुन कौ-''बुन्देलखण्ड की भागीरथी: वेत्रवती'' हतो। उये बुन्देली में अनूदित कर के भेज दो''।

नई भैया वौ तो छप चुको। हाँ, बुन्देली में दूसरी तराँ उए लिखकें भेजें देत। दो तीन दिनन में। मोरी ई बात खों स्वीकारत भए वे बोले-अच्छा, ठीक है। जल्दई भेज दइयो। बस, फिर का । मोय बुन्देलखण्ड की भागीरथी पर सुकवि साहित्यकार स्व० सेवेकेन्द्र त्रिपाठी की जे पंक्तियों याद हो आई-

''वेत्रवती विदित सुविंध्य गिरि नन्दिनी है,
वेत्रबन पावन की नेत्र निधि अथ में।
पूरव को बहतीं अपूरब करत रब,
विदिशा सों लीन्ही दिशा, उत्तरीय पथ में।।
उभरत श्रृंगन कों पल में करत रेंनु,
जीवन भरति धरनी की कायश्लथ में।
जामुनी धसान को समोद निज गोद आनि,
जान्हुजा सों भेटीं चढ़ि मानुजा के रथ में।।

श्री त्रिपाठी जू ने जैसी सुंदर-सलोनी छवि अपने शब्दन में छलकाई, ऊसी कऊँ और न मिलहै। तौऊ इतै हम अपुन सब जनन खों संस्कृत भाषा-साहित्य के महाकवि बाणभटट द्वारा रचित कादम्बरी कथाकाव्य में लिखी औ निहारी गई शुचिता और सुंदरता कैसी नौनी लग रई कै कछु कई नई जात -

मज्जन मालव विलासनी कुचतट स्फालन,
जर्ज्जरितेर्मि मालवा जलावगाहनावतारित।
जय कुंजरकुमसिन्दूर सन्ध्यायमान,
सलिलया उन्मदकल हंसकुल,
कोलाहल मुखरित कूलया।।

अर्थात् विदिशा के चारों तरफ वऊत वेत्रवती नदी में सपरती विरियां मालव-विलासिनियों के स्फालन यानी हिलने-डुलने से उसकी चूर्णा-विचूर्णा हो रईं लहरों पर उठरई लहरियाँ ऐसी सुषमा बिखरा रई तीं कै कछु कात नई बनत और रक्षकों द्वारा सपरवे के लानें ल्याई गई विजाता स्त्रियों के अग्रभाग में लिपट रये सिन्दूर के बिखर तनई लोलईया लेत लाल आकाश की तरां ऊकौ यानी वेत्रवती कौ पानी लाल हो जात तो सो ऊकी छठा ही भौत निराली हो दिपन लगत ती और ऊ कौ तटीय क्षेत्र उन्मत्त कलहंस मण्डली के कोलाहल से सदा सलौनी-सुहावनी ध्वनि की लय मुखरित होत रात ती। संस्कृत-साहित्य-जगत के महाकवि कालीदास सोऊ अपने काव्य-ग्रंथ मेघदूत में वेत्रवती नदी की छविमय छठा कौ वर्णन इन शब्दन में करत हैं।

''तेषां दिक्षु प्रथित विदिशालक्षणां राजधानीम्
गत्वा सद्यः फलंविकलम् कामुकत्वस्य लब्ध्वा।।
तीरोपान्तस्तनित सुभगं पस्यासि स्वादु यस्मातु,
संभ्रूभंगमुखमिव पयोवेत्रवत्याश्चलोर्मि।।''

हे मेघ, तुम विदिशा नामक राजधानी में पौंच कैं तुरन्तई रमण विलास के सुख में सरावोर हो जै हो, काए सें कै उतै वेत्रवती नदी बै रई। ऊके तट के उपान्त भाग में गर्जनपूर्वक मन-हरण कर कें ऊकौ चंचल तरंग-शाली सुस्वादु जल प्रेयसी के भ्रूभंग मुख के समान पान करहौ।''

''बेतवे तिहारौ जल विमल वसुन्धरा पै,
विंध्यनविन्ध्यवासिन कै शक्ति कै निवास भौ।
'मित्र' की मयूरवन में ओज भरिवें कौं तीव्र,
अमल अनूप तेज पुंज कौ प्रकाश भौ।,
कलित किलोल खग कुल वन बेलिन कौ,
धौकरी, करीलन कै जीवन की आस भौ।
उदित उजास भौ पलासन के फूलन कौ,
फूली शुभ्र सुखद करौंदी कौ सुवास भौ।।''

और सोऊ देख लेव तनक :-

''माँ वेत्रवती। स्वर लहरी से,
मेरी वाणी में भर दे स्वर।
स्वर में भर लय, लय में द्रुतगीत,
द्रुतगीत में विद्युतगीत प्रस्वर।।
तुमने उपजाए वेद व्यास, तुलसी, कबीर, कालीदास।
जिनका जग के कोन, कोन, जगमग, जगमग होता प्रकाश।।
तेरी प्रतिभा से चमक रहा बुन्देल नृपों का अतुल दान।
तेरी प्रतिभा का हृदय धार हरदौल कर गए गरल पान।।
था अमर त्याग नृप मधुकर का, रानी का जय जय रुचि राग।
तेरे तपबल से अवधेश्वर, ओरछा पधारे अवध त्याग।।
इन सिंहवाहिनी लहरों से, यह शैल श्रृंखला चलो तोड़।
मग में स्वदेश के जो कण्टक, उनकी नोंको को चलो मोड़।।
तेरी धारा की प्रवल धार,
रजकण कर दे पथ के पहाड़।
कण्टकाकीर्ण झंकाड़ झाड़,
उनको समूल ही दे उखाड़।।''

इन लैनन (पंक्तियो) में कविवर 'मित्र' ने 'वेत्रवती' नीद कौ महिमामय गुणगान भौतई नौने शब्दन में ऐसौ गुरीरौ करो है कै कछू कई नई जात। ऐसोअई सरस-सुन्दर-सलौनो वर्णन राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त जी सोऊ करत हैं -

''वेत्रवती तीर पर नीर धन्य जिसका,
गंगा सी पुनीत जो सहेली यमुना की है,
किन्तु रखती जो छटा दोनों से निराली है,
जिनमें प्रवाह है , प्रताप और हृद हैं,
काट के पहाड़ मार्ग जिसने बनाये है।
देवगढ़ तुल्य तीर्थ जिसके किनारे है
कहाँ आज वह अतुल ओरछा? हाय! धूलि में धाम मिले।
चुने चुनाये चिन्ह मिले कुछ, सुने-सुनाये नाम मिले।
फिर भी आना व्यर्थ हुआ क्या तुँगारण्य! यहाँ तुझमें?
नेत्ररंजनी वेत्रवती पर हमें हमारे राम मिले?''

न जाने कैसे, कैसे किन, शब्दन में माँ वेत्रवती कौ महिमामण्डन कवियन, लेखकन,ऋषि, मुनियन, राजन-महाराजन आदि ने करो। सम्पादकाचार्य स्व० बनारसी दास चतुर्वेदी ने तौ 15 जनवरी 1941 के मधुकर' पाक्षिक के सम्पादकीय

'वेतवा की पुकार' में लिखो तो - ''माता वेत्रवती के दर्शन हमने

तीन रूपों में किये हैं उसके मायके यानी भोपाल में उद्गम स्थान पर, चिरगाँव के निकट बाँध पर संयत जीवन व्यतीत करते हुए, और फिर ओरछा में अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में। हमें खेद है कि हमीरपुर की तीर्थ यात्रा हम अभी तक नहीं कर सके, जहाँ वेतवा मौसी जमना मैया से मिली है। जब जब हमने वेतवा को देखा है, उसके विचित्र प्रभाव से हम प्रभावित हुए हैं।''

तनक और अगाऊं बे ऐसौ कात – ''पुराने जमाने की जा बात यानी कानिया (कहानी) है। विन्ध्याचल ने सोचो कै हम मेरु या हिमालय पर्वतन की तरां और ऊंचे हो जायें और सूरज कौ चक्कर लगाउन लगें। जा सुनकें सूरज भगवान के कान खड़े हो गए। सो उननें विन्ध्याचल सें साफ नाई कर दई। फिर विन्ध्याचल ने अपनी ऐंड़ में सूरज के नैगर पौंचवे के लाने ऊपर उठवौ शुरू कर दओ। सो बौ उठत-उठत सोचत गओ कै सूरज और चन्दा खों तनकई देर में घेर कें ढकलें। देवतागण घबराये और महर्षि अगस्त्य के नेंगर पौंचे। विन्ध्याचल उनें अपनों गुरू मानत ते। जैसई महर्षि ने विन्ध्याचल से कई देखो, मोये दक्षिण तायें जाने। तुम नेचें उतरो और मोय गैल देव। जब तलक मैं लौटों न तब तलक तुम नेचेंअई बने रइयो। विन्ध्याचल महर्षि अगस्त्य खों अपनो गुरू मानतई हतो सो उनकी अवज्ञा तौ कर न सकत तो। फिर का। न गुरू जी लौटे न बौ ऊँचौ उठ पाओ। नैचई कौ नेचौं रे गओ।

हिन्दी जगत जौ तौ मानतई है कै यत्र-तत्र-सर्वत्र बुन्देलखण्ड भर की माटी 'वेत्रवती' खों उतनौअई पवित्र मानो जात जितनौ भारत भर में गंगा खौं। येई से बुन्देलखण्ड की भागीरथी भी बेत्रवती खों कओ जात हैं। ये ई सें बुन्देलखण्ड की यात्रा पैं आए बंगला भाषा साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्यकार स्व० क्षितिमोहन सेन ने लिखो हतो-''संस्कृत साहित्य में बहुत वार 'वेत्रवती' का नाम पढ़ा है कालिदास की वेत्रवत्याश्चलोर्मि वाली उक्ति ने जाने कितनी बार मन को चंचल बनाओ है। मध्य युग के साहित्य में ओरछा और बुन्देलखण्ड का बहुत उल्लेख है इसलिये इस प्रदेश की ओर स्वाभाविक आकर्षण था। अपूर्व प्राकृतिक सौंदर्य के भीतर से गुजरते हुए हमने देखा कि सड़क के दोनों ओर पेड़-पौधे, जंगलों और जलमय भूमि, नदी-नालों के आस-पास हरी-भरी घास के मैदान हमारे आगे से भागते चले जा रहे हैं। भूमि सोने की फसल उपजाने के योग्य जान पड़ी। मुझे लगा एक समय निश्चय ही बंगाल की तरह इधर भी जरूर वेंत (संस्कृत में वेत्र) पैदा होता होगा, तभी तो इस नदी का नाम 'वेत्रवती' पड़ा है।''

हम पैलई कै आए हैं कि संस्कृत के महाकवि कालिदास ने अपने सुख्यात काव्य-ग्रंथ-'मेघदूत' में भौतई सुन्दर-सरस व्यौरा दओ तो, जिये रीतिकालीन हिन्दी के आचार्य कविवर केशवदास, जो बेतवा की गोद में ही जन्मे, पले-पुसे, बड़े भये, ने अपनी काव्य प्रतिभा को यहीं ओरछा में ही पोषित, पल्लवित और विकसित करो। उनके जे शब्द पढ़कें अपुन सब जनें सोऊ आनन्द रस में डुबकी लगा लेव-

है राजधानी ता दिखन जो विदित विदिसा नाम की।
तहै भोगि हैं सारी कला तू सरस पूरी काम की।।
पी है जबै करि धुनि मधुर जल बेतवन्ती कौ खरौ।
भ्रुव भंग भूखित सुखित-समान तरंग रंजित रस भरौ।।

माँ वेत्रवती बुन्देखण्ड में रहन वारन पै तौ इत्ती रीझी, मोहित है कै कछु कई नई जा सकत। उत्तर प्रदेश के झाँसी, ललितपुर, उरई, जालौन, बांदा, हमीरपुर और मध्यप्रदेश के छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया, दमोह, पन्ना आदि स्थानों के अधिकाधिक बुन्देलखण्ड वासी बेतवा या वेत्रवती नदी खों गंगा माँ की तरां पवित्र और पूज्य मानत औ कहत हैं कै जा हमाए प्रान्त की भागीरथी आय। हम पैलई अपनें एक लेख-''बुन्देलखण्ड की भागीरथी : वेत्रवती'' में लिख आए है ''इतै की नदियन में, जो महत्ता बेतवा खों मिली बा कौनऊ और नदियन खों नई मिली। यदि उसे हम बुन्देलखण्ड की माँ अथवा भागीरथी गंगा कहें, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। बुन्देलखण्ड के प्राकृतिक सौंन्दर्य को ही मातृश्री 'बेत्रवती' ने चार चाँद लगा दिये हैं, तभी तो सुविख्यात पत्रकार एंव लेखक स्वर्गीय बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने लिखा है- ''शान्तिनिकेतन का प्राकृतिक सौंदर्य बुन्देखण्ड की छटा के सामने पानी भरता है।'' ऐसई एक और सुविख्यात कवि-साहित्यकार 'बेतवा' के सरल, सुंदर सुहावने स्वरूप खों इन शब्दन में ऐसें निहार रए। पढ़ लेवः-

''बेत्रवती प्रबल प्रताप कहा तेरौ कहौं,
भोर ही तें सुख के समूह सनवे लगे।
भुजन समेंटि भेंट जामिन पटम्बर में,
आजुरिन मुकत हजार जनिवे लगे।।
तुंगारण्य-तोर तुंग तरल तरंगन सौं,
वीरसिंग जस के वितान तनिवे लगे।
'मित्र' के करन कर केलि कंचना के कन,
कनक कनूका ह्वै कुवेर बनिवे लगे।।''

एक और भी-

''बेतवे तिहारौ जस विमल वसुंधरा पै,
विंध्य विन्ध्वासिन कौं शक्ति कौ निवास भौ।
'मित्र' की मयूरवन में ओज भरिवे कौं तीव्र,
अमल अनूप तेज पुंज कौ प्रकाश भौ।।
कलित किलोल खगकुल बन बैलिन कौ,
धौकरी, करीलन कौं जीवन कौ आस भौ।
उदित उजास भौ पलासन के फूलन कौं,
फूली शुभ्र सुखद करौंदी कौ सुवास भौ।''

– स्व० रामचरण हयारण 'मित्र'

और अन्त में हम सोऊ इतै सुख्यात पत्रकार, सम्पादक, सांसद रहे स्व०पं० बनारसीदास चतुर्वेदी की राय से सहमत होत भये 'बेतवा की पुकार' के जे शब्द दुहरायें चाउत :-

''हाँ, माता बेतवा प्रतीक्षा कर रहीं हैं एक चित्रपट का, वह इन्तजार कर रहीं हैं एक जीवन चरित्र का और उसकी आँखें तलाश कर रही हैं उन साधकों का, जो उसके तट पर धूनी रमा कें उसके वन-उपवनों को तथा पशु-पक्षियों को जीवन प्रदान करें। बेतवा अनेकों कवियों को वाणी प्रदान कर सकती है, लेखकों को सजीव लेखन शक्ति दे सकती है, चित्रकारों को व्यापक कीर्ति और किसी भी फिल्म कम्पनी को धनराशि। उसके तट पर विहार करने वाले स्वणमृगों को गोलियाँ तो बहुतों ने खिलाई हैं पर उनके स्वभाव का अध्ययन कितनों ने करो है?''

वेतवा की यह पुकार है कि उसके तट पर स्थित जनपद या मण्डल पारस्परिक सहयोग से एक महान सांस्कृतिक यज्ञ करें।

वेतवा पुकार रई है उन बुद्धिजीवियन खों, लेखकों, कवियन खों, चित्रकारन,इतिहासकारन खों, जो आगे आयें, उसे देखवें, समझवें ओर लिखवें उसके जीवन चरित्र खों। देखें, स्यात कोऊ सुने, मोरी जा पुकार।

संदर्भ-

1. मधुकर पाक्षिक 15.01०1941, सम्पादक-स्व. बनारसीदास चतुर्वेदी
2. उदय और विकास-स्व. रामचरण हयारण 'मित्र'
3. बुन्देलखण्ड की भागीरथी: वेत्रवती-वीरेन्द्र शर्मा 'कौशिक'
4. विन्ध्य भूमि (त्रैमासिक)-सम्पादक-अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव वर्ष 1951, सूचना विभाग विन्ध्य प्रदेश

– 145, कुरैंचानाका, मऊरानीपुर
पिन 284204 जिला-झांसी (उ०प्र०)
मो. 9793534268

बुन्देलखण्ड की कलात्मक अभिरुचि के ध्वजवाहक ओम शंकर 'असर'

- उमाशंकर तिवारी

विलक्षणता ईश्वरीय देन है। कोई व्यक्ति एक दिशा में अपनी कार्य कुशलता की छाप छोड़ता है, तो कोई अनेक आयामों में विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न होकर उभरता है।

जब मैं भी ओमशंकर 'असर' जी के बारे में सोचता हूं तो यकीनन आश्चर्य में पड़ जाता हूं कि उन्हें किस दिशा में याद करूं। वे कवि हैं, लेखक हैं, चित्रकार हैं, सम्पादक हैं, संगीत प्रेमी हैं, फिल्मविद्या विशेषज्ञ हैं, पट कथा लेखन में अच्छी गति और सूझबूझ रखतें हैं और इधर कई वर्षो से वे सिमट कर गजल को समर्पित हो गए हैं।

लेखक के रूप में वे भारत के कई नाम चीन पत्रों में कालम लिख चुके हैं और आज भी कालम लिख रहे हैं। उनके जीवन का बहुत अहम कारनामा यदि याद किया जाए तो 156 हफ्तों तक प्रसिद्ध साप्ताहिक 'मार्ग दर्शक' में उन्होंने महारानी लक्ष्मी बाई पर ऐतिहासिक कालम 'झांसी क्रान्ति की काशी' लिखा जो अब 1300 पृष्ठों के भारी भरकम ग्रन्थ के रूप में भारत सरकार के सहयोग से उत्तरप्रदेश शासन ने प्रकाशित किया है जिसकी ख्याति भारत के अलावा फ्रान्स, इंग्लैण्ड, जर्मनी, अमरीका, आदि देशों तक पहुँची है। इस महाग्रन्थ की भूमिका भारत में जर्मन राजनयिक रहे श्री रेनर जेरीश ने लिखी है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि श्री जेरोश असर जी के प्रगाढ़ मित्र भी हैं और उनकी लेखन क्षमता के कारण उनके मुरीद हो गये हैं।



ओम शंकर 'असर'

श्री असर के इस शोध ग्रन्थ के विदेशों में अनेक प्रशंसक हैं जिनमें फ्रान्स के भारत में राजदूत रहे श्री आन्द्रे लिविन और उनकी धर्मपत्नी भी हैं। उनकी धर्मपत्नी सुश्री कैथरीन आजकल महारानी लक्ष्मी बाई की जीवनी पर फ्रेन्च में शोध ग्रन्थ लिख रहीं हैं और यह फ्रान्सीसी दम्पति श्री असर के उपरोक्त ग्रन्थ की सूचना अमरीका की एक शोधछात्रा से पाकर श्री असर के घर गत वर्ष पधारे थे और कई घन्टे रुक कर शोधकार्य पर चर्चा करते रहे। श्री रेनर जेरोश स्वयं जर्मन भाषा में महारानी लक्ष्मी बाई पर जीवनी लिख चुके है और वे अपने ग्रन्थ की पाण्डुलिपि लेकर श्री असर से सम्पर्क करने झांसी पधारे थे और कई दिनों तक झांसी में रुककर श्री असर के साथ सन् 1857-58 के युद्ध स्थलों का दौरा करके उन्होंने अपने जर्मन ग्रन्थ को अन्तिम रूप दिया था।

चेकोस्लोवेकिया के राजदूत महामहिम डा. आदोलन स्मेकल भी श्री असर से परिचित थे। वे स्वयं हिन्दी के उच्चकोटि के कवि थे और धारा प्रवाह शुद्ध हिन्दी में ही बातचीत करने के आदी थे। उन्होंने जब चेक फिल्म समारोह दिल्ली में आयोजित किया था तो श्री असर को बतौर जूरी और समीक्षक के रूप में अमंत्रित किया था।

श्री असर इतिहास पुरुष बख्शी बहादुर रैयाराव साहब के प्रपौत्र हैं जो महान बानपुर राज्याधिपति महाराजाधिराज मर्दन सिंह जू देव की सेना के प्रमुख अधिकारी थे। अपने इसी सम्बन्ध के नाते उन्होने इतिहास लेखन पर विशेष ध्यान दिया है और तीन ग्रन्थ लिखे।

1. झांसी क्रान्ति की काशी-(महारानी लक्ष्मी बाई)
2. महारानी लक्ष्मी बाई और उनकी झांसी
3. महाराजाधिराज मर्दन सिंह जू देव -बानपुर

क्रमांक 1. ग्रन्थ धारावाहिक रूप से साप्ताहिक मार्गदर्शक में 156 हफ्तों तक लगातार प्रकाशित होता रहा और इस ग्रन्थ के लेखन का श्री गणेश सन् 1962 में शुरू किया गया था जो सन् 2007 तक चला और धारावाहिक रूप से बाद में प्रकाशित होता रहा।

क्रमांक (2) और(3) ग्रन्थ दैनिक जागरण में लगातार 40 हफ्तों तक धारावाहिक प्रकाशित हुए और यह तीनों कृतियों उ.प्र. शासन द्वारा पुस्तकाकार रूप से सामने आई हैं।

गद्य लेखन के साथ-साथ उनकी कूची भी चलती रही और उनकी चित्रकला का उल्लेख और नमूने बुन्देलखण्ड की चित्रकला पर आधारित शोध ग्रन्थों में डा. शुभेष ने विस्तार से किया है जिस पर उन्हें पी-एच.डी. प्राप्त हुई। यहां यह भी उल्लेख जरूरी है कि फ्रान्स के राजदूत श्री आन्द्रे लिविन जब झांसी श्री असर से मिलने आए तो उनकी पेन्टिंग देखकर उसकी रंगीन छाया प्रतियाँ भी अपने साथ पेरिसले गए हैं ताकि उन पर शोध करते हुए एलबम प्रकाशित की जाए। श्री असर विश्व प्रसिद्ध चित्रकार पिकासो के एकलव्यी शिष्य हैं।

सम्पादक के रूप में वे लम्बे समय तक अंग्रेजी पाक्षिक बैंक समाचार में धाराप्रवाह रूप से वित्तीय विषयों पर लेखन करते रहे हैं। इस दिशा में भारत के प्रख्यात उद्यमी वर्ग के नामचीन व्यक्तियों, राजनीतिज्ञों आदि पर खूब लिखते रहे हैं।

श्री असर ने अपनी शानदार और विनम्र उपलब्धियों का जिक्र शायद ही कभी किया हो मगर फिल्मों के बारे में उनकी सोच और फिक्र का ग्राफ यह है कि विश्व सुन्दरी सुष्मिता सेन जब झांसी को रानी पर फिल्म बनाने के प्रति उत्कृष्ट हुई तो उन्होंने होलीबुड के प्रसिद्ध पटकथा लेखक को झांसी श्री असर के पास विचार विमर्श के लिए भेजा था, सुश्री सेन के पत्र भी उनके पास आए और जब श्री असर बम्बई गए थे तो इसी काम के लिए सेन साहिबा ने अपनी पटकथा टीम को इस प्रोजेक्ट पर विस्तार से जानकारी एकत्र कराने के लिए भेजा था। सुश्री सेन का यह प्रोजेक्ट कई कारणों से पूरा नहीं हो

सका परन्तु गत वर्षों में झांसी की रानी टी.वी धारावाहिक के संवाद पटकथा लेखक और कहानीकार गीतकार श्री मेराज जैदी बराबर झांसी आते रहे और विचार विमर्श करते रहे। श्री जैदी असर जी को अग्रज की भांति मानते है। वे आजकल परशुराम सीरियल के लेखक के रूप में कार्यरत हैं।

श्री असर की काव्ययात्रा के बारे में एक विशेषांक प्रसिद्ध कवि,कथाकार, उपन्यासकार श्री अनवर सुहेल ने पत्रिका 'संकेत' में निकाला है जिसके नामचीन सम्पादक श्री सुहेल साह हैं जिसमें उनकी हिन्दी कविताएं और गजलें शामिल की गई हैं। श्री असर की काव्य प्रतिमा को कुछ झलकियाँ इस आलेख में प्रस्तुत हैं। उनकी पेन्टिस इस लेख में देना सम्भव नहीं है क्योंकि वह उनकी कलात्मक क्षमता इसके लिए विशेष स्थान की अपेक्षा रखती हैं।

कवि के रूप में वे कई वर्ष तक बांदा में रहकर महान कवि श्री केदारनाथ अग्रवाल के परममित्र और सहयोगी रहे हैं। उनकी कविताएं वैचारिक रूप से प्रभाव डालने वाली हैं जिनमें व्यंग्य है, टिप्पणी है, और जदीद सोच विचार की अनछुई स्थियों का चित्रण हुआ है। वे एक गम्भीर स्वभाव के कवि हैं, शायर भी है और व्यंगकार भी। उनकी गीत विधा का एक छंद प्रस्तुत है -

"द्वारा खुले अन्तर के
भागे अंधियारे मन मन्वन्तर के
अहं,रूप,रस,गंध,सभी घटे
मोहपाश ममता बन्धन टूटे
खुलगए पाल उठ गए भार लैगर के
द्वार खुले अन्तर के"

शायद यही छंद उनकी काव्य यात्रा का पहला पड़ाव है। प्रसिद्ध पत्रिका 'संकेत' में उनकी कविताएं संजोई गई हैं जिन्हें साहित्य प्रेमियों ने खूब सराहा है उनकी सोच का कन्टेन्ट और डिक्शन बेहद मौलिक और सिर्फ उन्हीं की रचनाओं में जगमगाता है। वे इस दिशा में अपने ढंग के अकेले कलाकार है। उनकी काव्य प्रतिभ के सम्बन्ध में ये रचनाएं स्वयं पाठक से संवाद करती हैं। लीक से हटकर परिस्थिति की गहराई और विषय वस्तु की व्यंजना को वे बड़ी सादगी से उकेरते हैं। उनकी यही अदा उन्हें अन्य कवियों से अलग खड़ा करती है।

- 925/11, सिविल लाइन,
सेवा राम मिल, झांसी

ददारें

- सुरेन्द्र कुमार नायक

कैवो मुस्किल सुनवो मुस्किल
पढ़वो मुस्किल लिखवो मुस्किल
हम की की का कै देवें
मन की कुनें बता देवें
लोग बैठ मरघट पर
दें ताली ठहाका देवें
वे असुद्ध मंत्र उचारत हैं
हो गओ सुद्ध बोलवो मुस्किल
बरसत पानी बिन मौसम
कैसें रैवें जीवन सम
दीवारन परीं ददारें
बैठे नांग फुलावे फन
कैसें फूल खिलें धरती
अब हो गओ हँसवो मुस्किल
वे फिररये फूले फूले
जो अपई सभ्यता भूले
तन- मन में अपई तानें
चायें रोवे तबा चूले
मौन भलो सब से नींको
है अब साँची कैवो मुस्किल

- प्रताप नगर कोंच, जिला जालौन (उ.प्र.)
मो. 9415769992

हरि की चौकड़ियां

- डॉ. हरिकृष्ण 'हरि'

राधे खबर लेत हर पल की, मोहन के हलचल की।
सखियन खौं अपने संग लै कें, जोर जनाउत बल की।
प्रेम मगन ऐसें हो जातइ, खबर न राखत कल की।
'हरि' भरी छवि राधे के संग, नटवर नंद नबल की।
मोरौ श्याम चराउत गइयाँ, बैठ कदम की छइयाँ।
भोर भयें गउवन के पाछें, जातइ लइयाँ पइयाँ।
ग्वाल बाल सब संगै उनके, गहैं सुदामा बइयाँ।
'हरिकृष्ण' दुवदा में भइया, संजा भई हुवइयाँ।
कैसें करें कौन की बातें, का का की की घातें।
लाज मार तइ बोलत नइयाँ जाने की के नातें।
जेठ मास के दिन अखरत औ चौमासे की रातें।
'हरिकृष्ण' भक्तन बिन भक्ति, संतन बिना जमातें।
होतइ सठ मूरख सें नौनों, समझत नइयाँ जौनों।
मूरख हृदय अचेत रहत है, भोजन जैसें रौनों।
सठ तौ मुखर होत देखे गए, संगत मिली न तौनों।
'हरिकृष्ण' पारस के छूतन लोहा होतइ सौनों।
करना तप की एक कमाई, वेदन ने जौ गाई।
विश्वामित्र, वशिष्ट, इन्द्र भये, जिननें गैल चलाई।
मनु सतरूपा और सगर ने गंगा दई बहाई।
'हरिकृष्ण' हरि जा गंगा में सवरेइ लेव नहाई।
रैनै मर्यादा के वस में, जीवन के रँग रस में।
साजे कर्मन कौ फल साजौ, खाकें आये कसमें।
राम भजन और भक्ति भाव खौ, भरौ अपइ नस नस में।
हरिकृष्ण 'हरि' जन्म सुधर जै रहो न काहू भस में।

- हरि सदन, एकतानगर
उनाव मार्ग, दतिया (म.प्र.)

बुन्देली के 'सुमन' चले गये

– डॉ. कन्हैयालाल वर्मा (बिंदु)

यौवन के दिन गौरव के दिन होते हैं। जीवन के सोलह वर्षों का अपना आनन्द अलग ही होता है। जहाँ उमंगें किलोलें करती हैं। भावनाएँ तरंगायत होकर विचरती हैं। भाव भावविह्वल होकर आँख मिचौनी खेलते हैं। बचपन विदाई की बेला में, यौवन के पदार्पण पर उसका हँस हँस स्वागत करता है। मेरा छतरपुर का सोलह वर्षीय कार्यकाल यौवन सा-मादक अनेकानेक खट्टे-मीठे अनुभवों से लदा-फदा है। यह अनूठा कार्यकाल सांस्कृतिक एवं साहित्यिक नगरी छतरपुर से जुड़ा है। जहाँ मैंने जीवन को कच्चे घड़े सा कड़ी आँचों में पका कर परिपक्त्व किया है। नगर ने मुझे पुचकारा दुलारा ही नहीं सँवारा भी है। रह रह कर अनेकानेक सुधियाँ विह्वल मचलती हैं ठुनकती हैं, किलकती हैं, चहकती हैं, फुदकती हैं और अँगड़ाई मुर्राई लेकर व्यक्त होने को आतुर होकर स्रवित होती हैं।

छतरपुर नगरी महाराज छत्रसाल की वसई हुई 'छत्रपुर है' इसीलिए इसकी गरिमा महिमा उन्हीं के अनुरूप है। बुन्देली संस्कृति अपने उदात्त रूप में चारों ओर अमर बेल सी फैली दिखाई देती है। साहित्यिक परम्परायें कचनार के पुष्पों सी पुष्पित हो भर-भर भरती, सभी को लुभाकर सुवासित करती हैं। गौरव की बात है कि महाराजाओं के संरक्षण में यहाँ पर अनेकानेक विद्वानों ने साहित्य-साधना की है। मिश्रबन्धु, गुलाबराय एम.ए., वियोगि हरि आदि ने अपनी साहित्य-साधना की कर्मस्थली बना कर इसे गौरवान्वित कर स्वयं गौरवान्वित हुए हैं। लोककवि ईसुरी की परम्परा को भलीमाँति निर्वहन कर गंगाधर जू व्यास ने अपनी अलख जगाई है। आधुनिक कवियों में स्व० श्री रामनाथ गुप्त 'हरिदेव', स्व० श्री श्रीनिवास जी शुक्ल, स्व० श्री भैयालाल जी व्यास, स्व० नर्मदा प्रसाद जी गुप्त, स्व.श्री सन्तोष सिंह जी बुन्देला, स्व.श्री शारदा प्रसाद जी उदैनियाँ, स्व. श्री किशोरी लाल अग्रवाल 'लल्ला', स्व. श्री शंकरलाल वर्मा 'ललितेश', स्व.श्री सईद वक्स खैयाम, स्व.श्री हसरत छतरपुरी, श्री नवल किशोर मायूस, श्री सुरेन्द्र शर्मा शिरीष, श्री श्रीप्रकाश पटैरिया, श्री स्वतंत्र प्रभाकर रावत, श्री रतनलाल जी 'रत्नेश', श्री राघवेन्द्र उदैनियाँ स्नेही आदि कवियों को इस नगरी ने अपनी गोदी में बैठाकर पाला पोसा है। सभी विद्वानों ने तन-मन-धन से अपने कर्तव्यों का पालन कर माँ सरस्वती की आराधना कर साहित्य का भण्डार भरा है।

परम पूज्य स्व.पं. उर्मिला प्रसाद शुक्ल पूर्व विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग महाराजा कॉलेज छतरपुर का वात्सल्य पूरित प्रेम का संरक्षण स्व. डॉ. नर्मदा प्रसाद जी बुन्देली के प्रति ललक युक्त प्रेरणा एवं पूर्ण सहयोग मेरे शोध कार्य ''बुन्देली लोक साहित्य एक अनुशीलन'' के पूर्ण होने में मील के पत्थर बने हैं। डॉ. राधा वल्लभ जी ने अपने अनूठे योगदान से उपाधि प्राप्त होने तक जो सहयोग दिया वह अकथनीय है।आज जो मैं हूं उसका श्रेय छतरपुर नगरी की वन्दनीय माटी को जाता है। स्व.श्री नर्मदा प्रसाद गुप्त एवं डॉ. राधा वल्लभ शर्माजी ने अपने अनूठे योगदान से छतरपुर में नये नये आयोजन आयोजित कर शोध के नये नये मार्ग खोले हैं। अनेकानेक नवान्तकों को नई दिशा देकर नये नये पथों पर अग्रसर किया है। उनके नये आयाम छूने की ललक पूरी की है। स्व.श्री जगन्नाथ प्रसाद सुमन आकाशवाणी छतरपुर केन्द्र में बुन्देली उद्घोषक बन कर आए थे। किसान जगत ग्राम सभा कार्यक्रमों में 'जग्गू भईया' नाम से बुन्देली बोलकर बुन्देली मिठास की मिश्री घोलते रहे हैं। उन्होने बुन्देली में रचना कर बुन्देली को नये आयाम दिए हैं।

बुन्देलखण्ड के बंगरा जनपद में तहसील मऊ जिला झांसी में पांच पहाड़ियों की श्रृंखला है। इन्हीं पहाड़ियों की दक्षिणी श्रृंखला के छोर पर कचर कचनेव के पास मोर पहाड़िया स्थित है। इसी मोर पहाड़िया की गोद में बुन्देल खण्ड के अनमोल हीरा-महाराज छत्रसाल का संकट की विकट घड़ियों में जन्म हुआ था। सुनिए

कचर और कचनेव टोरियाँ उपजाये,
छत्रसाल दुश्मन देत दौदरा ढूढत बदल बदल के चाल
करदइया की हरी डरइयाँ बन बैठी ती ढाल
मोर पारिया धन्य हो गई पाकें नोनौ लाल।।

इन्ही पहाड़ियों के उत्तरीय छोर पर पचवारा ग्राम है। पाँच पहाड़ों के कारण इस का नाम पचपारा है। जनमानस में मुख सुख के कारण इस का नाम पचवाओ नऔ नाम हो गया है। इसी पचवाओं ग्राम में 8 जुलाई 1941 को श्री जगन्नाथ सुमन का जन्म स्व. श्री पद्मलाल वैद्य के साधारण परिवार में हुआ था। ग्रामीण अंचल में शिक्षा उपरान्त हिन्दी विषय में एम.ए कर स्कूली शिक्षा में अध्यापक बन शिक्षण का कार्य करने लगे। कुछ समय बाद आकाशवाणी छतरपुर में उद्घोषक के रूप में अपनी सेवाएं देने लगे। इसी समय एक बुन्देली कवि गोष्ठी में मेरी प्रथम मुलाकात उनकी रचनायें सुनने पर हुई। उनकी बुन्देली रचनाएँ इतनी सरल,सटीक तो थी ही साथ ही ठेठ बुन्देली के अर्थ वक्ता युक्त शब्दों से सुसज्जित प्रभाव शालिनी थीं, जिसमें सच्ची बुन्देली नर्तन करती थी। बुन्देली का एक एक बोल भावों को व्यक्त करने में पूर्ण सफल था। प्रेषणीयता अनूठी थी। आज सुमन जी नहीं हैं किन्तु वह गदराया गठीला वदन, नाटे कद की कदकाठी, उन्नत ललाट, कानों के ऊपर सिर के अगल-बगल सुसज्जित बाल, चमकती माथे ऊपर को चाँद, लाल लाल गोल माल गाल, भरा चेहरा, ओठों के ऊपर काली नुकीली मूछें, परिधान में फक्क ऊजरी धोती कुर्ता उन्हे बुन्देली गवरू जुआन बना देता था। पैरों में नागरी जूतियाँ उनकी चाल को ठसकीली बना देती थी। जब वह चलते थे तो धोती के घुटन्टे का दाया छोर हाथ में थमा रहता था और वह मस्ती में मटक मटक चलते थे। उनकी बोली में बुन्देली गुलगुच का मिठास हर एक को अपना बनाने में सक्षम था। वह मृदु भाषी थे। मिलन सार थे, परोपकारी, दूसरों की मदद करने में सदैव ततपर रहते थे। चुपचाप बुन्देली सेवा में लीन रहते थे। गांव के लाल थे। इसीलिए ग्रामीण संस्कृति से माला माल थे, उनकी ग्रामीण रचना इसका प्रमाण है।

कनें का उन गाँउन की बात
सबई कोउ ऊरैबै इतै ललात,
नेह की नदियाँ जितै बहात,

सलौने नौने अनहोनें,
सुहाने जितै लगत ओंने।
सरग से समरे सजे जो रात
कने का उन गाउन की बात।
बगीचा लागे चारउ ओर,
पार पै कूकत हरदऊँ मोर।
धरन में मच रओ मीठौ सोर
सुहानी लगत जितै की भो
बछवा गइयाँ जितै रमात,
कने का उन गाँवन की बात।
गाँव की गोरी सजी धजी,
गगरिया सिर पै मजी-मजी,
आँख कजरा से अँजी-अँजी नैन मुख सजी-सजी।
कमर चलतन में लचकन खात,
कने का उन गाँवन की बात।
किसानी करतई जितै किसान,
फसल में दरसावें मुस्कान।
मिटाबें गा-गा निजी थकान,
महल से उठरये जितै मकान।
नित्य नई सजत जितै सौगात
कनै का उन गाँवन की बात।
प्रगति कौ नइयाँ पाराबार,
संगुन के बँदे हैं बन्दनबार
अथाई पै लागे दरबार,
साफ औ सुथरै हैं घर-दुआर।
मिलन की बेराँ जितै मँहकात,
कनै का उन गाँवन की बात।
नेह कौ समुद्र हिलौरें लेय,
पिरीत की बगिया मन हर लेय,
महक से गली गली वर देय,
सबई कौ एकई हो जाँ धेय।
सुरभि कौं सुमन जितै हरसात,
कने का उन गाँवन की बात।

सुमन जी कविता पाठ करने जहाँ भी जाते थे। उस नगरी की वन्दना इस प्रकार करते थे.......

लाल लाल गालों की गुलाबी लाली की ललनियाँ हो गई
नये नये बुन्देली के नौने भाव मथने की मथनियाँ हो गई। पूनौ की रात
छिटकी चहुँ ओर चौरी चकरी चँदनियाँ हो गई
सुमन छतरपुर नगरी गोरी की नाक की नौनी नथनियाँ हो गई ।

सुमन सटीक व्यंग देने में पूर्णतः सक्षम थे।
समाज में व्याप्त चमचागिरी पर कटु सत्य दरेरा देकर कहते थे। सच कड़ुआ होता है, पर होता है हितकारी। कहा भी है।
''कडुबी औसद के बिना मिटै न तन कौ ताप।''
समाज में व्याप्त बीमारी का इलाज बतलाते हुए सुमन जी खरीखरी, खरीखोटी सभी-सुनाकर समा बाँध देते थे। श्रोता तालियों की गड़गड़ाहट कर आत्म विभोर हो जाता था। इतना ही नहीं सुमन जी राशन और शासन में व्याप्त भ्रष्टाचार पर करारी चोट करते हैं। समाज में ब्याज गरीबी-अमीरी का अंतर दर्शाते हुए कहते हैं जो कल तक मजूरी कर पेट पालते थे नेता बन लाखों के बार नियारे करते हैं। सुनिए -

गगरी में टोंका
आम छू, आम छू, काला बादाम छू
काम छू, दाम छू सारे गोदाम छू
राशन कौ छौका, खा गये डोंका
गगरी में टोंका, मदन ड़िड़ौंका।
चन्दू भइया चन्दा करलो, दिल दिमांक खो ठंडा कर लो,
दो नंबर के करिया धन सें तुमई कछु नव धंधा करलो
तेल तेल बाती ने तांसो, घास-लेट घासी ने चॉपो
शक्कर खों शंकर सुटया गये, गल्ले खों कल्ले गुपया गये,
मिल गऔ मोंका पर गऔ तोंका
गगरी में टोंका, मदन ड़िडौका
बस्त मोल में अन्तर हो गऔ, कछु बाहर कछु अंदर हो गऔ,
सोनौ चाँदी तेज भलौ भओ पै साबुन छू मंतर हो गओ
चीजों के नग जाम हो गये , सबके दूने दाम हो गये,
मूंगफली अब काजू हो रई और आम बादाम हो गये
सोनी के टोका, धोंक बेटा धोंका-
गगरी में टोंका, मदन ड़िडौका
व्यापारी हतयार डार गए, पली पलाई चिड़ी मार गए
फूटे करम फँसे आढ़तिया, पूंजीपति सब मौंज मार गए।
पल्लेदार पलरिया ताने, घर में नईयाँ दोई दानें।
मोड़ी-मोड़ा मइरी खा रये, बीबी दार चाँवर में साने।
राशन कौ लौका चाकर कौ चौका
गगरी में टोंका मदन ड़िडौका
शासन ने अब सला बाँद लई, उत्पादन की लगन साद लई,
कछू परै टैक्सन से पूरौ, बची खुची बे-सरम लांद लई।
भ्रष्टाचार सदन से मिट गऔ उत्पादन कै बीड़ा उठ गओ,
सना कै अनुशासन अड़े गओ, राशन सब बासन से कढ़ गऔ।
धीरज धरौ मिलै जो माँगो, मेनत करौ चेत लो आगों,
देस खों संकट ने घर घेरो सो तन तन भूख प्सास खों टांगो
घल गऔ नौका, सुमन पियो का
गगरी में टोंका, मदन ड़िडौका

सुमन जी बुन्देली माटी के लाल थे। बुन्देली उनके जीवन में रची-पची थी। उनके आचार विचार, पहनावा सबकुछ बुन्देली था। अतः उनकी रचनाओं में बुन्देली कहावतें आसन जमा कर आ बैठी है हाजू हाजू कइये रचनामें ऊंट विलइया लैगई, जीके राज में रइये अकी ऊसी कइये, दुदारू गइया की सई जाती दो लातें आदि बुन्देली मुहावरें, बगुला भगत हँसी ठट्ठा घी की चुपटी आदि यत्र तत्र सर्वत्र विखरे दिखाई देते है। देखिए -

जी के राज में रइये ऊकी ऊसी कइयें
ऊँट बिलइया लैगई, सो हाँजू हॉजू कइये
गाय दुदारू चइये तौ दो लातें भी सइये
तनक चोट के बदले फिर घी की चुपरी खइयै

घपूचन्द्र की जनी कंयै कै सुनलो मोरे सइयाँ
राजनीत में घुसबौ कौनऊ हाँसी ठट्ठा नइयाँ
घुसने होवै कन्त तुमै तौ चमचा बनलो पियारे।
जो कोऊ दिन खों रात कबै तौ तुम चमका दो तारे।
मिला मिला के हऔ में हऔ फिर मन चाऔ पद लइये।
ऊँट विसइया ले गई सो हाँजू हाँजू कइये।
बगुला नेस बदलवौ सीकौ, छतौ और खुद छलवौ सीको,
बड़े बड़ेन में बसबौ सीकौ, मौका परे तौ फँसबौ सीकौ,
रोबौ सीखो, हँसबौ सीकरै भीड़ भाँड़ में ठसवौ सीखो,
शीत थाम औ मेह परै तो सेंग सवेरे सइयें।
ऊंट विसइया लै गई तौ हॉजू हॉजू कइये
हॉजू से खुश है चपरासी, साहब की मिट गई उदासी,
पानी प्यादै पूत बिलासी मालिक की घुरिया है प्यासी।
इमली खों जो आम वतावें अपनी हाँके और हँकाबै।
तुम इमली में आम फरा दो, उने साँय को स्वाद चखादो,
पण्डित मुल्ला औ बाबा जूं सबई करत है हाजू हाजू,
नेता औ अभिनेता हॉजू, क्रेता औ विक्रेता हॉजू,
बडो भजा है ई हॉजू में, हॉजू से मिलतई है काजू।
जोऊ खुआवे घरै टेर के तौ दचेर कै खइये।
ऊंट विलइया लैगई सो हॉजू हॉजू कइये
हॉजू कै के चमके चमचा, बदले उनके ढेला खुमचा,
जो मारत ते मक्खी-मच्छर लगे खरीदन घोड़ा खच्चर,
जो हौजू से अकड़ गये, वेई विचारे पकड़े गये।
सुमन अबई हांजू अपना ले, बेटा बनके पेठा खाले।
विगरो काम सँवर जै सबरौ हॉजू भर कै दईये।
ऊंट विलइया लै गई.....हॉजू हॉजू कइये।

बुन्देली धरती वीर प्रसूतिनी रही है। आल्हा-ऊदल जैसे रण वॉकुरे इसी धरती के लाल थे। धर्मपरायण वीर हरदौल ने सत्य धर्म निर्वहन हेतु प्राणों को न्यौछावर कर दिया था, महारानी लक्ष्मी बाई एंव झलकारी ने देश के हित प्राणों की आहुति दी है। ओरछा के धाम, खजुराहो के मन्दिर यहाँ की धरोहर हैं। केन, वेतवा, धसान यहाँ की जीवनदायिनी सरिताएँ हैं। इन्हीं गरिमामय भावों की अभिव्यक्ति सुमन जी ने 'बुन्देल वैभव' रचना में किया है।-

वीर वॉकुरे बुन्देलन की जा बुन्देली धरती।
रहै सदा उपजाऊ ऐसेई परन न पावै परती।
ईकी रच्छा में वीरन पिरान गमाऐ
कुर्वानी दै दै के अपनी फिरंगी दूर झगाये।
शष्य श्यामसा ई धरती पै नई हरियाली लाने।
हरित क्रान्ति औ श्वेत क्रान्ति की घर-घर जोत जगने।
जन जन खों सुक वैभव देके, कठिन क्लेष है हरती।
जा बुन्देली धरती।
गौरव गरिमा बुन्देलखण्ड की अपने हिए में धारे।
शौर्य पराक्रम और साहस से बैरी खो ललकारे
दुर्ग किले औ गढ़ी बाबरी किस्सा अतीत कौ कैरई।
वेतवती सुखनई धंसान सी इतै पावन नदिया बै रई
जान भले मर जाय इतै पै आनं कमऊ नई मरती।
जा बुन्देली धरती।
दीप शिखा बनके गोरन पै इतै गरजी लक्ष्मी बाई।
मेष बना रानी कौ रन में जूमी ती झलकाई।
आला-ऊदल छत्रसाल की गूँजे घर घर गाथा।
बाला जी औ राम राजा के चरनन टेंके माथा।
बुन्देली माटी की महकन, रोम रोम में भरती।
जा बुन्देली धरती।
दतिया की पीताम्बरा भवानी, सबकी जानी मानी।
ओरछा के हरदौल लला की, हो गई अमर कहानी।
गौरइया के शिव मन्दिर की चन्देली नक्कासी।
दर्शा दई बुन्देल खण्ड खों मानो पावन काशी।
खजुराहो की कला निराली, पर्यटक कौ मन हरती।
जा बुन्देली धरती।
परब समइया तीज त्यौहारे इतै बारऊ मासा आवै।
सावन, दसरऔ और दिवाई, होरी सोऊ मनावैं।
हिन्दू मुस्लिम,सिख ईसाई कौ भाई भाई सौ नातौ।
राष्ट्रीय ऐकता और अखण्डता कौ भाव मिलत है तातौ।
आजादी के स्वर्णिम युग कौ बरनन रज कण करती।
जा बुन्देली धरती।

'सुमन' जी बुन्देली के चतुर चितेरे कवि थे। उनकी रचनाओं में कला पक्ष और भाव पक्ष समभाव रखते हैं। बुन्देली के ठेठ, सटीक अर्थवत्तायुक्त शब्द रचनाओं को सारगर्भित ही नहीं चुटीली बना देते हैं। समाज में जो कुछ उन्होंने देखा भोगा, सहा, जिया उसी की सबल अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं की धरोहर है। सुमन जी जब संचालन करते थे तो कवियों को अपने संचालन कौशल से उत्प्रेरित कर उनका हौसला बढ़ाकर उन्हें प्रोत्साहित करते थे। रचना पढ़ते थे तो झूम-झूम कर श्रोताओं को रस-विभोर कर देते थे। अब मात्र कसक शेष है अभाव है जो खटकता है, मन मसोस अटकता भटकता है। कष्ट देता है। आँखें नम हो जाती हैं हृदय रोता है वाणी आकुल व्याकुल हो विसूरती है, कुछ कहना चाहती है, पर बोल बोलते ही नहीं है सब सूना सूना लगता है। बुन्देली का परिपक्व अनहोना कवि जगन्नाथ प्रसाद सुमन हम सभी को छोड़ कर 24 मार्च 2018 को नश्वर देह त्याग हम सब से दूर बहुत दूर चले गये। बस शेष रह गये उनके संग बिताये पल, उनकी हँसी उनके बोल, उनकी बाते अर्पित है अश्रुपूरित श्रद्धाजली.....

बुन्देली कवियों की कवि गोष्ठी के अमन चले गये। बुन्देली कलियाँ,कुमलाने टेसू चमन चले गये। मदन ड़िडौका, गगरी में टोंका, बुन्देली के सपन चले गये। पन्ना कौ भन्ना बगरा कें जगन्नाथ सुमन चले गये।

- 163 कला निकेतन
नीरजानगर 2, जे.के. रोड भोपाल म.प्र.
मो. 9425079493

स्वातंत्र्योत्तर आंचलिक जाट नेता और कृषक असंतोष

- डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला

यह लेख बुन्देलखन्ड भूभाग के जटवारा क्षेत्र से सम्बन्धित है। इस शोध पत्र में आये गांव कस्बे वर्तमान में मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले की तहसील डबरा - पिछोर दतिया जिले की तहसील भांडेर इंदरगढ़ सेवढ़ा के भाग है। ये गांव कस्बे इतिहास के कालखण्ड में बेहट पिछोर (जिला ग्वालियर) एवं गोहद (जिला भिन्ड) की जाट सत्ता से जुड़े रहे थे। और इन भागों का सम्बन्ध आर्थिक, राजनैतिक, एवं सांस्कृतिक रूप में ब्रजक्षेत्र की जाट सत्ता से इतिहास काल में सतत् रूप से बना रहा था। सन् 1960-80 के दौर में प्रजा समाजवादी पार्टी के झंडे तले भांडेर परगने के भलका ग्राम के किसान जाट नेता स्व0 उदयभानसिंह, कम्मोदसिंह आदि ने गरीबों और किसानों के हितों की रक्षा के लिये अनेक उग्र प्रदर्शन किये थे। इन आन्दोलनों को जनता का व्यापक समर्थन मिला था और इस दौर में जाट नेताओं के समर्थन से संसाद व विधायक भी चुने गये थे।

भलका के किसान जाट नेता और प्रजा समाजवादी पार्टी भलका के प्रसिद्ध नेता उदयभानसिंह का ग्वालियर में अध्ययन के दौरान समाजवादी नेता भीकमचन्द्र जैन, बाबू आतमदास से गहन सम्पर्क हो गया था। इस सम्पर्क के कारण उदयभानसिंह दतिया नगर में आढ़त का व्यवसाय प्रारंभ करते ही दतिया जिले में प्रजा समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य के रूप में उभर कर सामने आये थे। उदयभानसिंह का जन्म सन् 1930 ई0 के लगभग भांडेर परगने के ग्राम भलका में हुआ था उस समय ये भाग ग्वालियर के अंग थे। भलका के ही निवासी इनके चाचा कम्मोदसिंह जाट भी समाजवादी पार्टी के जुझारू किसान नेता थे और उदयभानसिंह से उम्र में बड़े थे। ग्वालियर का भांडेर परगना अब दतिया जिले का अंग बन चुका है। भलका ग्राम के समीपवर्ती जाट आबादी बाले कस्बे इन्दरगढ़, थरेट आदि है। जाट उदयभानसिंह कम्मोदसिंह के पूर्वज राजस्थान के भरतपुर के हर्थींग गांव से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व ग्वालियर के जटवारा के भागों में आये थे और दतिया जिले के भरौली गांव के बाद समकाल के ग्वालियर के सिंधिया राज के गांव भलका में आकर बस गये थे। इस गांव की पटेली इसी जाट परिवार के पास रही थी और इस क्षेत्र के जाट मूलरूप के कृषक रहे थे।

किसान नेता के रूप में उदयभानसिंह की राजनैतिक यात्रा - उदयभानसिंह ने समाजवादी विचाराधारा के अन्तर्गत सन् 1956 से सक्रिय रहकर किसानों की खेतिहर गरीब मजदूरों की भूमिहीनों के हितों के संरक्षण की राजनीति पुरुष की थी। भूमिहीनों को भूमि दिलाने के लिये ग्वालियर दतिया के अनेक गांवों में जाकर उदयभानसिंह ने कई आन्दोलन किये थे। दतिया की पेयजल समस्या की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करने में उन्हें सफ्लता मिली थी। उदयभानसिंह के समकाल के प्रमुख समाजवादी कम्मोदसिंह जाट भलका जाट कोकसिंह, सोबरसिंह, ब्रजेन्द्रसिंह, चन्दनसिंह, दर्शनसिंह, सुल्तानसिंह, हरनामसिंह आदि थरेट सेवढ़ा क्षेत्र रामाधार तिवारी थरेट राजाराम श्रीवास्तव, कन्ठमणी बुधौलिया, तुलसीराम दांगी पूर्व विधायक प्रभूदयाल शर्मा शम्भूदयाल, ब्रजेश, दयाराम नागिल आदि रहे थे। दि0 6. 5. 1953 का एक छपा पर्चा उपलब्ध है इसमें पार्टी के मंत्री के रूप् में उदयभानसिंह का नाम अंकित है। इस पर्चे के प्रारंभ में लिखा है दतिया जिले के किसान चारों तरफ से परेशान हो रहे हैं तहसील मंडी न्याय पंचायतों में उनकी समस्याओं के विषय में इस पर्चे में उठाये गये प्रमुख बिन्दु इस प्रकार है।

1. दतिया मंडी में किसानों की हो रही लूट के बारे में। 2. अभी हाल में हुई नकली डकैती के बारे में। 3. न्याय पंचायतों में हो रही लूट व धांधलबाजी के बारे में। 4. गांवों में सरकारी भवन बन रहे हैं उनकी पोल के बारे में। 5. सेवढ़ा तहसील की धांधलबाजी और रिश्वतखोरी के बारे में।

यह सम्मेलन दतिया जिले की तहसील सेवढ़ा के थरेट कस्बे में हुआ था थरेट कस्बा क्षेत्र के गांवों में जाट किसानों की अच्छी संख्या मौजूद है। पर्चे के अन्त में लिखा है कि सभी किसान भाईयों से निवेदन है कि हजारों की तादाद में इस सम्मेलन में आने का कष्ट करें।

उदयभानसिंह ने किसान नेता के रूप में सन् 1962 का विधानसभा चुनाव प्रजा समाजवादी पार्टी के टिकट पर सेवढ़ा सीट से लड़ा था। लेकिन उदयभानसिंह को इसमें सफलता नहीं मिली थी। सन् 1977 के विधानसभा चुनाव में सेवढ़ा सीट से उदयभानसिंह ने तुलसीदास दांगी एडवोकेट का किसान नेता के रूप में समर्थन कर उन्हें सफ्लता दिलाई थी।

जाटों के गांव भलका में किसान सम्मेलन - मई 1965 ई0 में प्रजा समाजवादी पार्टी का किसान सम्मेलन भलका में हुआ थ। भलका के जाट नेताओं के साथ ग्वालियर के प्रोफेसर मुकुटबिहारी पार्टी के संगठन मंत्री स्वामीशरण उत्तरप्रदेश के समाजवादी नेता प्रोफेसर सहदेवसिंह राजा पंचमसिंह पहाड़गढ़ आदि ने भाग लिया था। इस सम्मेलन के लिये प्रकाशित पर्चे के प्रारंभ में लिखा था ''आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि ग्वालियर जिले के पार्टी कार्यकर्ताओं का एक शिविर दि0 17 मई से 22 मई तक भांडेर परगने के ग्राम भलका में हो रहा है। इस शिविर का उद्घाटन मध्यप्रदेश के सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता और प्रान्तीय पार्टी के अध्यक्ष पं0 श्यामनारायण कश्मीरी करेंगे।'' भलका के जाट नेता उदयभानसिंह के चाचा कम्मोदसिंह ''आजाद'' के तत्वाधान में दि0 18.7.1965 ई0 को एक ऐसा ही किसान सम्मेलन ग्वालियर गिर्द क्षेत्र के गांव बड़ोरी में हुआ था। इस समय छपे पर्चे में लिखा था ''उक्त सम्मेलन में किसानों के साथ किया जा रहे अत्याचार, जबरदस्ती लेहवी वसूल करना, भूमि से बेदखल करना, आवपसी (तालाब आदि) दुचंग वसूल करना, पुलिस जुर्म, रेलवे द्वारा बगैर मुआवजा दिये किसानों से भूमि छीनना, रास्ते बन्द कर देना, उचित स्थानों पर पुल न बनाना तथा रमउआ बांध की भूमि का वहां के किसानों को मुआवजा न देना आदि समस्याओं पर विचार किया जायेगा।'' इस पर्चे में ग्वालियर के कई जाट नेताओं के नाम दिये गये हैं।

उदयभानसिंह की जाट किसान नेता के रूप में सक्रियता – सन् 1968 के दौर में किसान हितैषी जाट नेता उदयभानसिंह की प्रजा समाजवादी पार्टी मे मंत्री के रूप में विशेष सक्रियता देखने में आती है। इस दौर के कई पर्चे उपलब्ध हुये हैं ये पर्चे दतिया जिले के थरेट के समीप के चीना व ग्वालियर जिले के भांडेर परगने के बड़ेरा-सोपान गांव में हुये किसान सम्मेलन के हैं। दि० 5.9.1968के पर्चे में लिखा है "आज ही नहीं वरन् गत कई वर्षो से जिले का भूमिहीन हरिजन एवं आदिवासी शासन से धन एवं रेविन्यू की काबिज कास्त भूमि की मांग करता आ रहा है। किन्तु यह वर्ग निरन्तर ठुकराया गया है दूसरी ओर जबरदस्त् लोगों द्वारा जमीनों पर बलात् अतिक्रमण कर लिया है। जिसकी लाठी उसकी भैंस सत्य सिद्ध हो रहा है।"

एक दूसरे पर्चे में लिखा है "अभी हाल ही में शासन ने आदेश दिये है कि पड़त भूमि हरिजनों में शीघ्र बांट दी जावे किन्तु इस भूमि को पूंजीपति व्यापारी व प्रभावशाली व्यक्ति एवं अन्य धन्धा करने वाले अकृषक ऐन-केन प्रकारेण लेने के षड़यंत्र में व्यस्त हैं तो दूसरी ओर भूमिहीन कृषक मारा-मारा फिर रहा है।" एक अन्य पर्चे में जिसमें उदयभानसिंह के साथ भलका के कम्मोदसिंह जाट का नाम भी लिखा है। इस पर्चे में गांव की पढ़ाई व्यवस्था की ओर ध्यान खींचा गया है। माध्यमिक शाला की हालत खराब है। बच्चों की पढ़ाई लिखाई की ओर कम ध्यान दिया जाता है शासकीय नियम विरुद्ध मिडिल पास हैड मास्टर रखा जाता है।"

दि० 16.4.1978 का एक पर्चा उपलब्ध है इसमें किसानों को अन्नदाता से सम्बोधन किया गया हैं-देश की आबादी का 82 प्रतिशत् भाग किसान और मजदूर है आप के भविष्य से ही देश का उत्थान पतन निर्भर करता है किसानों की दशा सुधारने के लिये यह संगठन सक्रिय है। हिन्द किसान मजदूर पंचायत शाखा के तत्वाधान में विशाल किसान सम्मेलन दि० 16.4.78 दिन रविवार 2 बजे चीना में आयोजित किया जा रहा है।"

इस सम्मेलन में मध्यप्रदेश के तत्कालीन मंत्री रमाशंकरसिंह प्रसिद्ध नेता रघु ठाकुर एवं क्षेत्र के विधायक तुलसीदास दांगी ने भाग लिया था। स्वतंत्रता के बाद के इस दौर में किसान जाट नेता उदयभानसिंह और कम्मोदसिंह निवासी भलका पुरजोर तरीके से ग्राम्य समस्याओं के लिये संघर्ष कर रहे थे।

– कुंजनपुरा, दतिया
मो. 9407588157

***सूचना** – रचनाकारों से निवेदन है कि वे बुन्देली साहित्य, संस्कृति, इतिहास या अन्य समसामयिक विषय पर रचना लिखकर वर्ष में कभी भी भेज सकते है। रचना के चयन आधार उसकी उत्कृष्टता रहती है।*

– संपादक

भूमि बुँदेलन बारी

– डॉ. अवधेश कुमार चन्सौलिया

नौंनी लगै बड़ी अलबेली
भूमि बुँदेलन बारी,
ऊबर खाबर, भूमि बुँदेलन
कहू लाल, कहुँ कारी।
कहुँ पथरा, कहुँ भरका सौहे
गेंदा खिले हजारी,
मड़वा नीचें थपा लगत में
नौनी लगतई गारीं,
बने टोरिया सुंदर मंदिर
फसलें हैं लहरीलीं।
रेलें, सड़कें, नहरें नइयाँ
राह कठिन पथरीली।
पानी- पानीदार हियाँ कौ
निकरै तुरत कटारी।
सिंध बेतवा पहुँच धसान
पुजते कारसदेव मसान।
पनघट चुहल करैं पनहारिन
नेग मागवे लड़ै कहारिन।।
श्रम- सीकार सें लथपथ होकें
नाचैं खूब दिबारी।
कठिन जिंदगी सें जँग जारी
हार- खेत घर सब में नारी।
छप्पन भोग बाजरा, महुआ
खाबैं खूब महेरी लडुआ।
गुड़ गुलगुच अरू लपटा भैया
रसगुल्लन पै भारी।
वीर बुँदेला अक्खड़ - बक्खड़
खरी बोलवे बारे।
बागी तेवर ऐसे खौलें
जो आये सो हारे।
आन बान में सबसें न्यारी
बुँदेलन की नारी।
रानी लक्ष्मी झलकारी ने
गोरन भरम मरोड़ो।
जान बचाकें सरपट भागे
लंदन कों मुँह मोड़ो।
दुर्गावती अबन्तीबाई
सुलगा गई चिनगारी।
छत्रसाल सौ वीर बुँदेला
बूढौ शेर कहावै,
ऐसे वीर सैकरन हो गये।
डुकरा हमें बतावें।
वीर बुँदेले अडिग पहार
कभऊँ न हिम्मत हारी।

– डी.एम 242, दीनदयाल नगर, ग्वालियर (म.प्र.)
मो. 09425187203

बुन्देलखण्ड में सूर्योपासना

– डॉ. महेन्द्र कुमार उपाध्याय

बुन्देलखण्ड उत्रतोदर समचतुर्भुज के रूप् में 23° 24'' – 26° 50'' उत्तरी अक्षांश और 17° 52''– 82° पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थिति है। यमुना इसकी उत्तरी तथा चम्बल उत्तरी- पश्चिमी सीमा का निर्धारण करती है। दक्षिण की ओर इसमें मध्य प्रदेश की जबलपुर तथा सागर कमिशनरियां तथा दक्षिण- पूर्व में बघेलखण्ड तथा मिर्जापुर की पहाड़ियां सम्मिलित हैं। वर्तमान में उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश नामक दो राज्यों में विभक्त इसका भू-भाग समवेत रूप में एक विशिष्ट सांस्कृतिक प्रदेश है।

इस विशिष्ट सांस्कृतिक प्रदेश में सूर्योपासना का प्रमाण विभिन्न कालों में प्राप्त सौर प्रतीकों मंदिरों प्रतिमाओं एवं व्रतोत्सवों के आधार पर प्राप्त कर सके हैं। वैसे तो भारतीय परिप्रेक्ष्य में सूर्योपासना का प्रथम पुरातात्विक प्रमाण नवपाषाण काल से मिलने लगता है। सूर्य सृष्टि के आदि देव हैं। रात-दिन के निर्माता प्रकाश गर्मी जीवन दाता और खाद्य पदार्थो के उत्पादक के रूप में सूर्य उपासित थे।[1] वैदिक साहित्य में उन्हें जीवन शक्ति प्रदायक[2] तथा सर्वरोग विनाशक[3] कहा गया है। ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र[4] का उल्लेख है। तमसो मा ज्योतिर्गमय का संदेश सूर्य से ही अनुप्राणित है। ऋग्वैदिक देव मण्डल में सूर्य को द्युस्थानीय प्रकाशक देवता माना गया।

प्रतिमा निर्माण से पूर्व सूर्योपासना प्रतीकों के माध्यम से होती थी। सौर प्रतीकों में मुख्यत: चक्र अथवा कमल व्यवहृत था। प्रतीक पूजा की दृष्टि से बुन्देलखण्ड के दो मंदिर दतिया जिले में स्थिति उनाव[5] और टीकमगढ़ जिले में स्थित गौरा[6] उल्लेखनीय है। इन दोनों मन्दिरों में सूर्य के प्रतीक चक्र देवरूप में प्रतिष्ठित हैं। उनाव का सूर्य मंदिर बालाजी सूर्यमंदिर के नाम से विख्यात हैं। लोक मान्यता है कि यह उदीयमान सूर्य का मंदिर है। इस सूर्य मंदिर में काले रंग के शिलाखण्ड पर चक्राकार सूर्य यंत्र प्रतिष्ठित है। यह यंत्र पत्थरों तथा ईटों से बने चबूतरे पर इस प्रकार प्रतिष्ठित है कि सूर्य चाहे उत्तरायण हो या दक्षिणायन उनकी प्रथम किरण इस यंत्र पर अभिषेक करती है। यह यंत्र पीतल की चादर से मढ़ा हुआ है। वृत्ताकार यंत्र के किनारे पर 21 छोटे- छोटे त्रिकोण सूर्य की विभिन्न कलाओं के द्योतक हैं। गोरा (टीकमगढ़) के सूर्य मंदिर की सपाट छत ईटों से बनी है। गर्भगृह (जहां सूर्य चक्र प्रतिष्ठित है) चारों ओर से खुला है।

सूर्य का मानवीय या प्रतिमाशास्त्रीय स्वरूप मौर्य-शुंग काल से मिलने लगता है। गुप्तकालीन अभिलेखों से हमें सूर्योपासना की पुष्टि होती है। मन्दसोर अभिलेख (दशपुर-मालवा) से ज्ञात होता है कि तन्तुवाय श्रेणी लाट (नवसारी- भडौच क्षेत्र) से दशपुर मालवा आयी और 437 ई0 या मालव संवत् 494 में एक सूर्य मंदिर का निर्माण किया।[7] इस मंदिर की श्रेष्ठता के सम्बन्ध में उस शिलालेख में कहा गया है कि उस मंदिर के चौड़े व ऊँचे शिखर थे जो पर्वत के समान मालूम पड़ते थे। चन्द्रमा की धवल चांदनी में यह ऊँचा मंदिर नगर में अलग ही चमकता था।[8]

सूर्य प्रतिमा वाले मंदिरों में सर्वप्रथम कालप्रियनाथ सूर्य मंदिर (कालपी) का उल्लेख किया जा सकता है। कालप्रिय उत्तर प्रदेष के जालौन जिले में स्थित एक नगर है। यह यमुना नदी के तट पर स्थित कालप्रिय के सूर्य मंदिर का सन्दर्भ भविष्य पुराण, गरुण पुराण और भवभूति के उत्तर रामचरितम् में मिलता है। कन्नौज राज्य के अन्तर्गत होने के कारण चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसे कन्नौज का सूर्य मंदिर कहा है।[9] यह विशाल मंदिर कई कोस की परिधि में यमुना तट पर एक ऊँचे टीले पर बना था। मंदिर का जो भाग यमुना को जोड़ता था उसे सूर्यघाट कहते थे। मंदिर और प्रतिमाएं ध्वस्त हो गई हैं। इस मंदिर के सूर्यकुण्ड पर कालप्रिय नाथ यात्रा नामक विशाल मेला लगता था। इस मेले की परम्परा अभी भी विद्यमान है।

महोबा के रहिलिया सूर्यमंदिर का निर्माण चन्देल शासक राहिलदेव वर्मन ने ग्रेनाइट के पत्थर से पंचायतन शैली में कराया था। मंदिर के गर्भगृह में सूर्य की स्थानक प्रतिमा तथा उपमंदिरों में शिव गणेश शक्ति एवं विष्णु (पंचदेवों) की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित थी। मंदिर के बाहर 50×50×50 फुट आकार के सूर्यकुण्ड है। मुस्लिम काल में इसकी प्रतिमा खण्डित कर दी गयी थी। मंदिर के भग्नावशेषों के आधार पर इसे नौवीं शताब्दी का स्मारक माना जा सकता है।

खजुराहो का सूर्य मन्दिर 'छत्र का पत्र' नाम से प्रसिद्ध है। यह 87 फीट लम्बा तथा 58 फीट चौड़ा है। गर्भगृह के मुख्य द्वार पर सूर्य की तीन मूर्तियाँ हैं। मंदिर के अन्दर 8 फीट ऊँचा एक विशाल मूर्तिपट है जिसमें एक पुरुष के रूप् में सूर्य की मूर्ति है। यह मूर्ति 5 फीट ऊँची है और उसके दोनों हाथों में कमल पुष्प है। मूर्ति की पीठिका में उसके रथ के सप्ताश्वों की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। इसके अतिरिक्त उसमें और भी छोटी- छोटी मूर्तियां है। जिनमें ब्रह्मा और सरस्वती शिव और पार्वती तथा विष्णु और लक्ष्मी विशेष उल्लेखनीय हैं। राजगोर के चिन्हों तथा कुटिल वर्णो में यात्रियों के नामांकन से प्रतीत होता है कि इस मंदिर का निर्माण 10वीं अथवा 11वीं शताब्दी में हुआ था।

ललितपुर जिले के बुधनीग्राम (महरौनी विकासखण्ड) में 12वीं शती का एक सूर्यमंदिर है। गर्भग्रह में उदीच्यवेशधारी सूर्य की 1.8 मीटर × 0.9 मीटर माप की स्थानक प्रतिमा है। जो ऊँचा किरीट मुकुट कर्णकुण्डल तथा कण्ठहार धारण किए हुए हैं। चोलक तथा उपानह पहने हैं। अलंकृत प्रभामण्डल हैं। प्रवेश द्वार के अधोवर्ती भाग में मकर वाहिनी गंगा तथा कूर्मवाहिनी यमुना अंकित हैं।

मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले के मड़खेरा और ऊमरी नामक स्थान से प्रतीहार कालीन दो सूर्यमंदिर के प्रमाण मिले हैं। मड़खेरा का सूर्य मंदिर पूर्वाभिमुखी है। गर्भगृह में सूर्य की सप्ताश्वरथारूढ़ स्थानक प्रतिमा की ऊँचााई 4 फुट 7 इंच है पीछे प्रभामण्डल है।सिर पर किरीट मुकुट कर्णकुण्डल कण्ठहार और कटिमेखला युक्त है। उमरी का सूर्यमंदिर संयोजना में मड़खेरा का ही पर्याय है।

इसी प्रकार भिण्ड जिले के भरौली का सूर्य मंदिर शिवपुरी जिले के टोंगरा का सूर्य मंदिर और ग्वालियर जिले के आलमपुर का सूर्यमंदिर बुन्देलखण्ड में सूर्योपासना की व्यापकता को प्रमाणित करते हैं।

उक्त सूर्य मंदिर के अतिरिक्त अनेक स्थानों पर सूर्य की रथारूढ़, आसन एवं स्थानक प्रतिमाएं मिली हैं। ललितपुर जिले के वैदपुर (महरौनी विकासखण्ड) में गांव के टीले के पार्श्व में बड़े प्रस्तर फलक पर 1.8 मीटर ऊँची रथारूढ़ सूर्य की विशाल प्रतिमा मिली है। मड़खेरा की सूर्य प्रतिमा उदीचय वेश में लगभग 5 फुट ऊँची है। देव के सिर पर नुकीला टोप, कोट, घुटनों तक उपानह और उनमें ढका हुआ पाजामा, अधोवस्त्र तथा कटि में उदरबंध तथा सामान्य प्रकार के आभूषणों से शोभायमान है। उनके दायें- बायें निक्षुभा व राज्ञी के नाम से उनकी दो पत्नियां प्रदर्शित हैं। इन्हीं के समीप में उनके दो सहायक दण्ड और पिंगल भी दृष्टव्य हैं। चन्देलकालीन सूर्य प्रतिमाएं ललितपुर जनपद के चांदपुर (प्रतिमा संख्या-253- 582) दूधई तथा गूगरवारा ग्राम से प्राप्त हुई हैं।[10] चांदपुर दूधई एवं रानी महल झांसी में संग्रहीत सूर्य की प्रतिमाएँ द्विभुज से लेकर अष्टभुज रूप तक में प्राप्त हैं। इनमें से अधिकांश समभंगी मुद्रा में ही है।

सूर्य मंदिरों एवं प्रतिमाओं के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड के लोक जीवन में भी सूर्योपासना के प्रमाण प्राप्त होते हैं। अनेक लोग प्रत्येक रविवार को सूर्यपूजा एवं व्रत करते हैं। सूर्योपासना का प्रमुख पर्व मकर संक्रान्ति 'बुड़की' नाम से तीन दिनों तक मनाया जाता है। इसमें प्रथम दिन मकर संक्रान्ति के एक दिन पूर्व तिलैयाँ मनाते हैं। इस दिन तेल तथा तिल से बने विविध व्यंजन (पकवान) बनाने और खाने की परम्परा है। दूसरे दिन संक्रान्त मनाते हैं। इस दिन किसी तालाब या नदी या घर-गांव के कुएं पर जाकर शरीर पर तेल मलकर स्नान करने एवं सूर्य पूजा के उपरान्त तिल तथा खिचड़ी दान करने की परम्परा हैं। तीसरे दिन भंवरात मनाई जाती हैं। इस दिन छप्पन प्रकार के पकवान बनाए जाते हैं।

इसके अतिरिक्त माघ माह में अन्तिम रविवार को सूर्योपासना का विशेष लोक पर्व होता है। इसके लिए खुले आंगन या घर के बाहरी चबूतरे पर गोबर से लीप कर उस पर गेंहू के आटा से गोलाकार चौक पूरा जाता है। उसके केन्द्र को आटे से बनी अठवाई (छोटे आकार की पूड़ी) से वृत्ताकार सजाते हैं तथा बीच में गोल कटोरी में खीर रखते हैं। यह रचना सूर्य की तरह बन जाती है। पूजन कर खीर और अठवाई का प्रसाद बांटा जाता है। कहानी कही जाती है।

उपरोक्त तथ्यों के आलोक में हम कह सकते हैं कि बुन्देलखण्ड में सूर्योपासना की पुष्टि मंदिरों- प्रतिमाओं के साथ- साथ लोक जीवन में प्रचलित व्रत और त्यौहारों से होती है। अधुना सूर्य मंदिर और प्रतिमाओं का निर्माण नहीं होता है परन्तु सौर व्रत और त्यौहार ही लोकप्रिय पक्ष हैं जिनके माध्यम से आज भी सूर्योपासना जनजीवन में प्रचलित है।

सन्दर्भ-

1. उपाध्याय डॉ0 महेन्द्र कुमार उत्तर भारतीय सौर मंदिर मिथकों एवं प्रतीकों का अनुशीलन इलाहाबाद 2014 पृ-80
2. ऋग्वेद 8.47.4
3. अथर्ववेद 9.8.22
4. ऋग्वेद 4.5.8.7
5. गुप्त अयोध्या प्रसाद, 'सांस्कृतिक बुन्देलखण्ड', उरई 2004 पृ. 80
6. वही
7. कुमार गुप्त प्रथम और बन्धुवर्मन का मन्दसौर अभिलेख (मालव संवत 493 और 529)
8. उपाध्याय वासुदेव गुप्त साम्राज्य का इतिहास भाग-2 (परिशिष्ट) श्लोक -29 व 30
9. कुमुद अयोध्या प्रसाद, कालप्रिय नाथ सूर्य मंदिर की खोज यात्रा सप्तदल पृ0-144
10. वर्मा डॉ0 महेन्द्र बुन्देलखण्ड की मूर्तिकला दिल्ली 2005 पृ. सं. 148-49

- एसोसिएट प्रोफेसर

इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

ज.रा.वि.वि. चित्रकूट (उ.प्र.)

धूल भरे हैं लाल

- डॉ. कन्हैयालाल वर्मा (बिंदु)

बुन्देली धरती के हम सब धूल भरे है लाल।
संजा करे आरती ईकी, ऊषा मले गुलाल
बाल्मीक औ वियास सरीखे, कविकर हो गये गियानी
रतनावली तुलसी चेताए कर दओ पानी-पानी
सतसई बीच बिहारी भर दये एक गगरी में ताल।
बुन्देली धरती ......

आला ऊदल से चमकौतो चन्देलन कौ पानी
पानूदार मईवी जग में, महुबे की राजधानी
ऊदल की करनी कौ साकौ गाये किरतुआ ताल,
बुन्देली धरती ......

छत्रसाल ने औरंगजेक कौ, कर डारौ मौ कारौ
बाजीराव ने बाजीराखी पाके नेक इसारौ
मस्तानी सी कली सौप दई उमर सोलवी साल
बुन्देली धरती ......

भौजी ने पालौ पोसौ तौ कर आंचर की छाया
लाला लाज राखवे मेटी चन्दन जैसे काया
होनी होके रई अनहोनी, महावली मऔ काल
बुन्देली धरती ......

झांसी रानी-रानी झांसी झांसी भई मरदानी
रानी में झांसी कौ पानी, पानी में कुरबानी
रानी भई तरबार दुधारी झलकारी भई ढाल
बुन्देली धरती ......

चित्रकूट में आन बिराजे लक्ष्मन सीताराम
मोक्ष धरम की शिक्षा दैरये, खजुराहो से धाम
पत्थर ऊपर नचत पुतरियाँ बिन्दु दै-दै ताल
बुन्देली धरती के हम सब धूल धूसरित लाल

- 163 कला निकेतन

नीरजानगर 2,

जे.के. रोड भोपाल म.प्र.

दतिया के दो रत्नों का पत्राचार

(दतिया सांस्कृतिक विरासत को सहेजने वाली नगरी है। विंध्य कोकिल भैयालाल व्यास यहाँ जन्मे विलक्षण कवि नाटककार लोकविद् थे। वे जीवन के उत्तरार्ध में छतरपुर बस गए थे। दूसरी दतिया की विभूति संगीताचार्य व कवि कलाकार महेश कुमार मिश्र रहे। जिनकी सक्रियता वरेण्य रही। वे दोनों विभूतियाँ आज हमारे बीच नहीं है। उनका कृतित्व हमें प्रेरणा देता रहता है। इन दोनों के मध्य लेखकीय संवाद पत्राचार से होता रहता था। कुछ पत्र विंध्यकोकिल भैयालाल व्यास दादा जी ने हमें दिए थे। उसमें एक पत्र अविकल पाठकों की सेवा में है।

- संपादक)

दतिया (म.प्र.)
क्र. ५०१ / दिनांक २४-८-१९७५

श्रद्धेय व्यास जी

सादर नमस्कार- आपका कृपापत्र मिला। आपातकालीन कार्य व्यस्तता दैनिक वर्षाक्रम मानसिक दुश्चिन्ताओं के बावजूद किसी प्रकार से लोगों से सम्पर्क साधा किन्तु दशहरे से सम्बंधित कोई लोकगीत प्राप्त नहीं हुआ। दशहरे के पश्चात् कलश पॉवड़ों के समय का एक गीत मिला था वह पहले ही मैंने भेज दिया था।

दरअसल छोटे या बड़े दशहरे के समय महिलाए गीत गाती अवश्य थीं किन्तु पच्चीस तीस वर्ष का लम्बा समय बीत जाने के कारण उसकाल की अधिकांश महिलाएँ स्वर्गस्थ हो चुकी हैं और नवयुवतियों को तो सिनेमा की तर्जों के अलावा कुछ आता ही नहीं है। अतः बहुत खोज बीन करने पर भी ऐसा कोई गीत प्राप्त नहीं किया जा सका। "आन दशहरा आनके माई पूजन मैं चली हो माय" वालगीत भी किसी की स्मृति में नहीं हैं। यह मैं कुम्हारों काछियों से पूछताछ करके लिख रहा हूँ। क्योंकि मूलतः भजन गाना इन्हीं जातियों का काम है। सवर्णो में इस प्रकार का कोई भजन प्रचलित नहीं है अन्यत्र हो तो हो।

मामुलिया सजाकर ले जाने और सिराकर लौटने के दोनों गीत मैंने पहिले ही लिख भेजे थे। मामुलिया और सुअटा के सम्पूर्ण कार्यविधि सहित 'मध्यप्रदेश सन्देश' के २६ अक्टूबर ७४ के मेरे लेख में प्रकाशित हुए है। यदि आप इस लेख को पढ़ सके तो मेरी समझ में उत्तम रहेगा। तथापि में संक्षेप में पुनः लिखे दे रहा हूँ।

मामुलिया आश्विन मास की कृष्णा अष्टमी से लेकर अमावस तक खेली जाती है। मामुलिया खेलने वाली बालिका अपनी सहेलियों का बुलौआ देकर ऑगन में चौक पूरकर उस पर बेरी की टहनी रखकर उसे हार फूलों आदि से सजाती एवं उसमें गुजिया, पपरिया, ठैंठरा तथा गड़ेरी आदि लटकाती है। फिर मामुलिया को महावर लगाने के बाद एक दूसरे को महावर लगाती है। इसके बाद परिक्रमा देती हुई बालिकाएँ गाती है :-

मामुलियइ के आ गाए लिबउआ

मामुलिया को लेकर वे किसी तालाब पर जाती है। वहा उसे सिराकर लौटती हुई सुअटा के गीत गाती है:- बाँसुरिया रंग बाँसुरी ......। घर के दरबाजे पर आकर कहती है -

चन्दा के आसपास मुतियन की रात।
बिटियाँ खेलें सब सब रात।।
चंदा राम राम लेओ,
सूरज राम राम लेओ, हम घरै चले।।

इसके बाद बुलउआ बाँटा जाता है।

सुअटा आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से लेकर नौरात्रियों तक सुअटा आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से लेकर नौरात्रियों तक खेला जाता है। इसके नित्य के गीत ये है :-

हिमांचल की कुँअर लड़ॉयती नारे सुअटा,
गौराओ बाई न्योरा तोरा नाँयँ।।

इस गीत को गाती हुई बालिकाएँ हिमांचल के स्थान पर बालिकाओं के पिता के और गौराबाई के स्थान पर अपना नाम लेती हुई कच्ची मिटटी के गौर महादेव पर दूब से दूध छिड़कती और सुअटा पर मिटटी की काँयँ रखती जाती है। इसके पश्चात् :-

"कौन सखी-सुरजा बेटी?
अमुक सखी-सुरजा बेटी?"

कहती हुई अपने तथा अपने पिता के नाम लेती है। फिर यह गीत गाती है :-

"अन्तन सन्तन दइहै, गौरा बेटी ?
को बेटी तोये लिबाउन जैहे?"

बुलाउन जैहै? "इत्यादि से आरंभ करके अपनी गोरे की झांई देखो" तक के गीत गाती है। अंत में चिंटीकुण्टी करती हुई "आर गौर पार गौर चंदा स्वरूप गौर" वाला गीत गाती हैं। तत्पश्चात् नहा धोकर माता ढारने के लिए चली जाती है। उनके नित्य के गीत यही है। भसकूं को भी यही गाये जाते है।

भसकूं के बाद बालिकाएं जब ढिरिया मांगने के लिए जाती है तो गाती है।

सात लरी कौ झुमका नारे सुअटा,
धरौ-धरौ मखयाय।
लै लो चंद्रामल मइया मोल खौ, नारे सुअटा,
तुमरी दुलइया बड़ी जोग्ग ।।इत्यादि।।

किसी के दरवाजे पर ढिरिया मांगने के लिए खड़ी हो जाती है तो यह गाती है।

बूझत-बूझत आए हैं, नारे सुअटा
कौन बड़े तेरी पौरे।
पौरन बैठे भइया पौरिया, नारे सुअटा,
खिरकिन बैठे कुतवाल ।।इत्यादि।।

यदि कोई देने से इनकर कर देता है तो :-

"हँड़िया दियो पारौ दियो नारे सुअटा
चमला लियो टटकोर।
अमुक के घर में घुसियो चोर गाकर उसे चिढ़ाती है।

यदि किसी नवविवाहिता का सुअटा उजना होता हो तो लड़कियाँ गाती है।

पीपरिया झक झालरी, नारे सुअटा,
बातरे पटवा दुकान।
बिरजी गौरा बेटी पाट खाँ, नारे सुअटा,
राजा बाबुल पाट भराव।।इत्यादि।।

जबारे की 'सिरउनी' में माता के पवारे या भीमसैनी भजन गाये जाते हैं जिनमें से एक तो मैं पूर्व में ही लिखे चुका हूँ। दूसरा चढ़ाय का भजन यह है –

उमय चलौ मन मेरौ दरस खौं, उमय चलौ मन मेरौ हो माँ।
चुटियन से दल उमय भमानी, कंठन लेत बसेरो हो माँ –
कंठन से दल उमय भमानी, छाती लेत बसेरो हो माँ –
छाती से दल उमय भमानी, करिहाँ लेत बसेरो हो माँ –
करिहाँ से दल उमय भमानी, जागन लेत बसेरो हो माँ –
जागन से दल उमय भमानी, घुटुअन लेत बसेरो हो माँ –
घुटुअन से दल उमय भमानी, पिड़रिन लेत बसेरो हो माँ –
पिड़रिन से दल उमय भमानी, मुरूअन लेत बसेरो हो माँ –
मुरूअन से दल उमय भमानी, तरूअन लेत बसेरो हो माँ –
तरूअन से दल उमय भमानी, मड़ मे लेत बसेरो हो माँ –
तोय सुमिर माई तेरो जस गालउं, चरन छोड़ का जाय हो माँ।

दशहरे के दिन कुछ विशेष कार्यक्रम नहीं होता जब पुरुष वर्ग दशहरा देखकर लौटता है तो माताएं अपने पुत्रों की और पत्नियाँ पतियों की आरती उतारकर उन्हें 'बीरी' खिलाती हैं।

आशा है इतने से आपका काम चल जायेगा। यदि अन्य कोई गीत मिला तो मैं तुरन्त ही लिख भेजूँगा।

अन्य कोई सेवा हो तो लिखें।

– विनीत
महेश कुमार मिश्र

दस - दोहे

– शिवभूषण सिंह गौतम

प्रकृति हमारे लिये है, ईश्वर का उपकार।
फिर क्यों इतना क्रूर है, मानव का व्यौहार।।१।।
मानव जीवन के लिये, प्रकृति सदा अनुकूल।
फिर भी इसका नाशकर, करता रहता भूल।।२।।
प्रभु प्रकाश, जल, वायु सब, देता है बिन मोल।
बिना प्रकृति के सोचिये, जीवन का क्या मोल।।३।।
जल जीवन है, प्राणदा कहलाती है वायु।
दिनकर देता है सदा, जीव जागत को आयु।।४।।
यदि तुम जीना चाहते हो जीवन भरपूर।
रहो प्रकृति की गोद में, मत हो इससे दूर।।५।।
छेड़- छाड़ कर प्रकृति को करते रहे विनिष्ट।
तौ हम अपने आप ही, हो जायेंगे नष्ट।।६।।
जड़ चेतन मिलकर चले जगती का व्यौहार।
एक दूसरे के बिना, सूना सब संसार ।।७।।
जंगल बिन मंगल नहीं, जल बिन सब रस हीन।
प्राण नहीं बिन पवन के, जीवन के जड़ तीन ।।८।।
पंचतत्व हैं प्रकृति के, निर्मित करें शरीर।
छिति जल पावक गगन और मिल कर संग समीर ।।९।।
ये ही पाँचों तत्व हैं, संवर्धन के योग्य।
यदि हम रखना चाहते हैं जीवन आरोग्य।।१०।।

– अन्तर्वेद, कमला कॉलोनी
छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9826756929

खाएँ लेत

– डॉ. राज गोस्वामी

लला खों भौजाई खाएँ लेत।
मामा खों माँई, खाएँ लेत।।
खूब ठनी नन्द – बहू में,
खट- पट खताई खाएँ लेत।।
बाकी मँहगाई खाएँ लेत।
सास खों जमाई खाएँ लेत।
मौढ़ा मिल मताई खाएँ लेत।।
पटती ना दिखें खाइयाँ,
भाई खों भाई खाएँ लेत।।
बाकी मँहगाई खाएँ लेत।
अफसर खों बाई खाएँ लेत।
गरें बँदी टाई खाएँ लेत।।
दफतर की टाईपिस्ट संगें लगी,
बॉस खों बाकी चमचाई खाएँ लेत।।
बाकी महगाई खाएँ लेत।
मेंठ की लड़ाई खाएँ लेत।
खेत की बुवाई खाएँ लेत।।
कोऊ फँसौ झूट माट में,
कोई खों सचाई खाएँ लेत।।
बाकी मँहगाई खाएँ लेत।।
नेता बन कसाई खाएँ लेत।
देस की मलाई खाएँ लेत।।
काऊ खों कोसबौ फलै,
काऊ खों बधाई खाएँ लेत।।
बाकी मँहगाई खाएँ लेत।।
भीतरी बुराई खाएँ लेत।
ऊ की चुगलाई खाएँ लेत।।
वामन से कोऊ परेसान,
कोऊ खों नाई खाएँ लेत।।
बाकी मँहगाई खाएँ लेत।।
रोग खों दवाई खाएँ लेत।
जुरी सब कमाई खाएँ लेत।।
घर- घर की का कहें व्यथा,
लोग खों लुगाई खाएँ लेत।।
बाकी मँहगाई खाएँ लेत।

– श्री सदन, सिविल लाइन्स
दतिया (म.प्र)
मो.92296-88096

कालंजर गढ़ की उत्पत्ति

- विमल कुमार

कालंजर शब्द की उत्पत्ति कालिंजरयति अथवा कालम् + जर्यति से हुई है जिसके तीन अर्थ हैं एक पहाड़ एवं उसका समीपवर्ती क्षेत्र साधुओं की सभा एवं शिव का नाम से है।[1] इसीलिए कालिंजर, कालिजराद्रि या कालिंजर गिरि नाम स्वयं भगवान शिव से उद्भूत बताया गया है जो काल के रूप में प्रतिस्थापित हुए हैं। वेदों में कालंजर एक तपोस्थली के रूप में प्रतिष्ठित हुई है। प्राचीन काल में युगों की गणना के आधार पर भी कालंजर का नाम भिन्न- भिन्न प्रकार से प्राप्त होता है जैसे- सतयुग में 'रत्नकूट' त्रेतायुग में 'महागिरि' तथा द्वापर में 'पिंगुल' इसके नाम थे।[2] पद्मपुराण में आदिखण्ड में कालंजर का नामोल्लेख तुंगकारण्य में स्थित पर्वत के रूप में हुआ है। वायुपुराण[3] एवं ब्रह्माण्डपुराण[4] के अनुसार कालंजर दशार्ण के पूर्व में स्थित है। वामनपुराण में कालंजर का उल्लेख प्रसिद्ध तीर्थस्थल के रूप में हुआ है। वायुपुराण में इसका उल्लेख उत्तम पर्वत के रूप में मिलता है जहाँ शिव भगवान ने काल को जीर्ण (समाप्त) किया इसीलिए इसका नाम भविष्य में कालंजर हुआ।

तत्र कालं जरिष्यामि तदा गिरिवरोत्तमें, तेन।
कालंजरो नाम भविस्यति स पर्वतः।। वायुपुराण २३, २०४

भागवतपुराण के भुवनकोश के वर्णन में बीस पर्वतों की सूची में कालंजर का भी नाम है।[5]

कालंजर दुर्ग के विषय में छत्रसाल के पुत्र जगतराज ने अपने पिता यानि छत्रसाल से कालंजर के उत्पत्ति के विषय में प्रश्न किया तो उन्होंने उत्तर दिया-

यह गिरि सब तीरथ ब्रत बसै सर्व देव सब गेह।
पितर पित्र पति त्रिजगपति सुनि सुतकरहुं सनेह।।
चन्द्राब्रह्म निशि पौटियौ, सुरन स्वप्न दिय आय।
बीस साख लगि राज करि मम गिरि दुर्गबवाय।।
कृत युग मह यह महदगिरि त्रेता पिंगल आय।
स्वर्गारोहण द्वापरहि कलि कालंजर गाय।[6]

इस पर्वत पर सारे तीर्थ एवं देवता निवास करते हैं। चन्द्रब्रह्म को एक रात स्वप्न आया कि यदि इस दुर्ग पर किला अगर बनवाते हो तो २० पीढ़ियाँ तुम्हारी इस पर शासन करती रहेगी। इसके साथ ही तीनों युगों के साथ कलियुग में नामकरण को छत्रसाल से जगतराज के स्पष्ट रूप से समझाया।

बाल्मीकि रामायण में भी कालंजर को एक प्राचीन मठ होने का संकेत प्राप्त होता है। ऐसा उल्लेख है कि श्रीराम की सभा में एक श्वान (कुत्ता) एक ब्राह्मण के सताये जाने के कारण पीड़ित था तो न्याय मांगने श्रीराम के पास आता है उसके कहने पर उन्होंने उस ब्राहाण को कालंजर का मठाधीश बना दिया।[7] इस विवरण से ऐसा लगता है कि रामायण काल में कालंजर शैवमठ के रूप में प्रतिस्थापित हो चुका था।

भीटा[8] के उत्खनन से प्राप्त कालंजर भट्टारकस्य एवं संचानकोट से प्राप्त कालंजर वत लेखांकित मुद्राओं से ज्ञात होता है कि गुप्तकाल में कालंजर पर शैव मठ था। मार्शल ने भी भीटा से प्राप्त मुद्राओं का आकलन कालांजर मठके शैव मंदिर द्वारा प्राप्त अनुसारित किया है।

महाभारत के वनपर्व में ऐसा वर्णन है कि पाण्डव कालंजर नामक तीर्थ गये थे यहां पर देवह्रद नामक तीर्थ में स्नान करने पर सहस्त्र गायों के दान के बराबर पुण्य की प्राप्ति होती है। पद्मपुराण के पातालखण्ड में कालंजर को महानपातकों के विनाश में समर्थ एवं महापापों को संदग्ध करने वाला बतलाया गया है। गरुड़पुराण में कालंजर को सभी प्रकार के पापों से मुक्त कर मोक्ष दिलाने का वर्णन है।[9] कालंजर को अवमुक्त क्षेत्र कहा गया है। अवमुक्त का महात्य मत्स्यपुराण में कालंजर वन, शंकुवन और स्थलेश्वर ये शिव की सन्निधि के कारण ही पवित्र है। अवमुक्त क्षेत्र में भगवान शिव तीनों सन्ध्याओं में स्थित रहते हैं।[10]

भागवत पुराण में कालंजर से सम्बन्धित राजा जड़भरत का विवरण मिलता है जहाँ मानवीय दुर्बलता के कारण अपनी मृत्यु के बाद कालंजर में हिरण की योनि में उन्हें जन्म लेना पड़ा तथा बाद में वैराग्य होने पर अपनी मृगीमाता एवं कालंजर को छोड़कर पुलस्त्य एवं पुलहाश्रम में चले जाने का वृतांत मिलता है।[11] यह कथा कालंजर स्थित मृगधारा नामक स्थान से सम्बधित बतलायी गयी है। पौराणिक साहित्य में कालंजर से सम्बन्धित सात-मृगों का आख्यान मिलता है। मत्स्यपुराण में वर्णित कथानुसार कौशिक ऋषि के सात पुत्र स्वस्प्य क्रोधन, हिंस्त्र, पिशुन, कवि, वाष्दुष्ट एवं पितष्वर्ती थे। ये सभी अपने सद्धर्म एवं पुण्य कर्मो से कालंजर पर्वत पर भगवान शिव के सम्मुख मृगयोनि में उत्पन्न हुए परन्तु इन्हें अपने पूर्वजन्म का स्मरण बना रहा।[12] सम्भवतः इन्हीं का अंकन मृगधारा के निकट चट्टान पर उत्कीर्ण मिलता है। इसके पश्चात इन ऋषि-पुत्रों ने चक्रवाक योनि में जन्म लिया वे ही अब सिद्ध होकर यहाँ निवास करते हैं। यह कथा ब्राहाण, बौद्ध, जैन साहित्यों में सामान्य रूप से मिलता है। हरिवंशपुराण में एक कथा का वर्णन है सतयुगमें सातऋषि यथा- कश्यप, वशिष्ठ, अत्रि, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि एवं भारद्वाज ने अपने गुरु को अप्रसन्न किया था, जिसके शाप के कारण ये दूसरे जन्म में दशार्ण (आधुनिक बुन्देलखण्ड) में सात ब्याघ्र हुए फिर कालंजर में सात हिरण, लंका में ७ शावक, मानसरोवर में हंस और अंत में कुरूक्षेत्र में ब्राहाण हुए तथा अन्तिम समय में मोक्ष को प्राप्त हुए। कालंजर स्थित मृगधारा के निकट की चट्टान पर नाम सहित इन ऋषियों का अंकन मिलता है। ये मृग उन्मुख, नित्य, वित्ररत,

स्तब्धवर्ण, विलोचन, पण्डित, घस्मर और नादि थे।[13]

पुराणों एवं अभिलेखों में कालंजर को शिव एवं शक्ति (काली) से उद्भूत बतलाया गया है। चन्देल शासक धंग के खजुराहो अभिलेख में कालंजर को नीलकण्ठ का अधिवास बतलाया गया है।[14] कालंजर का शिवलिंग स्वयंभू शिवलिंगों को श्रेणी में आता है अभिकागम में स्वंयम् शिव लिंगों का वर्णन ऐसे शिव के रूप में मिलता है जो स्वयमेव उद्भूत होता है। स्वयंभू लिंगों के लिए शास्त्रों मे भारत के ६९ स्थान बतलाये गये है जिनके लिए जीर्णोद्धार की व्यवस्था नहीं है। इन स्थानों का उल्लेख एवं उनके नामों की सूची 'जीर्णेद्धारदशकम्' के भाष्य में निगमाजन देव द्वारा दी गई है जो वामदेव शिवाचार्य के पुत्र थे। इस सूची में कालंजर के नीलकण्ठ का भी वर्णन है। पुरातनकाल से ही कालंजर शक्ति (काली) का भी अधिवास रहा है तथा इसकी गणना १०८ शक्तिपीठों में होती है। पौराणिक साहित्य में वर्णित शक्तिपीठों में कालंजर का नामोल्लेख है। मत्स्यपुराण[15] एवं पद्मपुराण[16] में कालंजर को काली का निवास स्थान माना है। कालंजर के शिव की प्रतिमाओं के साथ बड़ी संख्या में शाक्त प्रतिमाएं प्राप्त हुई है। अत: यह स्पष्ट है कि कालंजर प्राचीन काल में शैव एवं शाक्त का प्रतिष्ठित केन्द्र रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

१. वमन शिवराम आप्टे संस्कृत हिन्दी कोश दिल्ली १९९७ पृष्ठ २७२
२. इम्पीरियल गजेटीयर ऑफ इण्डिया भाग १७ पृ ३१०-११
३. वायुपुराण ७७-९३
४. सुशील कुमार सुल्लेरे अजयगढ़ एवं कालंजर की देवप्रतिमाएँ १९८७ पृष्ठ ८
५. भागवत पुराण ५, १६, २६
६. कवि हरिकेश- जगत् दिग्विजय चरखारी प्रेस संवत १९६० (१९३० ए.डी.)
७. बाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्तसर्ग २, ३९
८. आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, पृष्ठ एनुअल रिपोर्टस १९११, १२ पृष्ठ ४९
९. गरुड़पुराण ८१,१८,१९
१०. मत्स्यपुराण १८१, २६-२७
११. भागवतपुराण ५,८,३०
१२. मत्स्यपुराण २१,२८,२०,१५
१३. सुशील कुमार सुल्लेरे अजयगढ़ एवं कालंजर की देवप्रतिमाएं पृष्ठ १४
१४. एपिग्राफिका इण्डिका भाग १ पेज १२७,१२८
१५. मत्स्यपुराण १३,३२
१६. पद्मपुराण सृष्टिखण्ड १७,१९६

- शोध छात्र
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
मोबा. 9838815474

मो जैसी सुघर धनियां

- राजेश चन्द्र गोस्वामी

बड़े भुरारें मुर्गा बोलें जे जाने कितैकों जातीं
भवो अंदेसौ मोकों कछू खरकसौ तौ नई करयातीं
कबहूँ पूँछ न पाई इनसें नेकई में गुर्रातीं
हमेंऊँ कबहूँ गुस्सा आबै बात बदल मुस्काती
कऊँ गानो गुरिया पूंछौ तौ करिया सी संनातीं
और अँदेसौ पक्कौ होगवो, की मोरो करिया मों करवातीं
सो सोसी मैं ने जाकौ पाछौ कर हों
जा कुटनी कौ सबई रहास जानके रैहों
भुंसारे ईतें बाके पीछे हमहूँ चलदये
न्योरे न्योरे जाय हींस में लुक गये
धुन धुनेई बाने अकेलेंई काट लई कटिया एक गठरिया
बाकी संगिन बासे बोली काय ओजू
तुमाये बे का कछु करबे धरबे के नईयाँ
सो तुमई घर धरें मुड़ीपै
अकेलेइ बनी राती चकरधनियां
कछू न पूछौ बे सबरे सें संजा नो
बिदेरात चौपर तासन नों
और बुराई उनमें कछू नईयाँ
हमई उनसे कछू कात नईयाँ
सुनके उनकी प्रेंम भरी समरपन बानी
काटो तौ मोरें खून नईं, होगओ पानी पानी
सोंहों लख मोय लजानों सौ
बे मुसकानी भर अखियन में पानी
करी परतज्ञा मोनें अब कबहूँ चौपर तास न छू हो
पगन पगन पै साथ तुमाये बनों आसरौ रैहों
अब चार हाथ मिल करहैं घरकी चकमईयाँ
राम सबई कों दिइओं मो जैसी सुघर धनिया

- सुभाष नगर, कोंच, जालौन (उ.प्र.)
पिनकोड- 285205
मो. 9453645764

सूचना : बुन्देलखण्ड अंचल में साहित्य, संस्कृति, इतिहास, लोककलाओं तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करन वालों को बुन्देली विकास संस्थान द्वारा राव बहादुर सिंह बुन्देला स्मृति सम्मान, दिवान प्रतिपाल सिंह स्मृति सम्मान, लोकविद् नर्मदा प्रसाद गुप्त सम्मान, गौरिहार नरेश प्रताप सिंह स्मृति सम्मान तथा स्व. श्री हरगोविन्द हेमल स्मृति सम्मान प्रदान किया जाता है। अत: आप संस्थान के पास उत्कृष्ट कार्य करने वालों की सूचना कार्यलय के पते पर भेजने का कष्ट करें।

- अध्यक्ष, बुन्देली विकास संस्थान

राजरानी

- लक्ष्मी शर्मा

गाँव के प्रधानजू के इते लरका रामशंकर को ब्याओ बड़े धूमधाम सें हो गओ। बरात बिदा हो कें बापस लौटी है। बरात में नाऊ कक्का पंडित दद्दा सबरे रिस्तेदार गाँव के ब्योहारी सबई गये हते। बड़ी अम्मा ने नाउन काकी खें बुला के कही के गाँव में नई बहू के मोचायनें और गाबे बजाबे को बुलौआ सबके घरे दे आओ। सबरे नेंग दस्तूरे भये। लुगाइये खूबई मजा कर रई हतीं सब जनी रामशंकर सें हंसी मसखरी कर रई हतीं।

प्रधानजू के पाँच बेटा हते- रामशंकर, दुर्गाशंकर, मणिशंकर, रेवाशंकर और विष्नूशंकर। प्रधानजू की एक बिटिया हती गंगा। गंगा सबसें बड़ी हती ओ को ब्याओ हो गओ हतो। पाँच भैयों की एक बैन से। ओ के नखरे तो देखबे लाक हते। पूरे घर खों नचा देवें कहूँ ओ के मन को काम ने होवे। ऐसे सब ओ खों खुश राखत हते कहूँ नाराज हो गई तो सबरो धर मूड़ पे उठा ले है। कछू रिस्तेदार बिदा हो गये हते कछू रिस्तेदार महिना दो महिना रुकबे बारे हते।

सबरे नौकर चाकर खों ब्याव के कपड़ा इनाम बांटो जा रओ हतो। बरौनी भौजी अड़ी हतीं के बड़ी अम्मा ने बड़े भैया के ब्याओ में झुमकी देबे कही हती मैं तो झुमकी ले हों रूपैया पैसा ने ले हों, बर्षन बाद इत्ती बड़ी खुशी को औसर आओ है। भैया छोटे से हते जब सें आसा लगी है मैं तो झुमकी ले हों। अबै बात होई रई हती के नाचबे बारे तारीं बजाउत आ गये। नाचबो गाबो शुरू कर दओ। बायरे मेंला जैसों माहौल छा गओ। दस बारा खसुआ हते कछू आदमी के भेष में कछू लुगाइयों के भेंष में तारीं बजा बजा कें नाच रये हते और आशीष बधाई दे रये हते। प्रधान जू ने इक्कीस सौ रूपैया दये पे बे लेबे तैयार ने हते कहे कें हम तो ग्यारा हजारा ले कें जें हें। हमाये कौन और रूजगार है आप सबके भरोसें पलत है। आप तो भागवान हो बहू ले कें आये हो। बड़ी देर में पांच हजार ले कें गये। बड़ी अम्मा बड़बड़ा रई हतीं के जान खा गये कैसे अड़ गये के पांच हजार ले कें जे है। इत्ती बड़ी रकम जैसें इनके धरात होंय।

लरका हरें हंस रये हते के लो दो घंटा नाचे। अरे नाचें का मटके तारीं बजाई और पांच हजार ले गये ई सें तो अच्छो हमई नाच गा लेते बड़ी अम्मा हमें दे देती। बड़ी अम्मा ने फटकारे - चुप्प करो बे ओरें तो खसुआ है नाचवे गाबे बारे।

रातें जोरदार बुलौआ भओ खूब नाच गाना भये और नई बहू को नाम राजरानी धरो गओ। मायके में नई बहू को नाम देवकी हतो इते नओ नाम धरे गओ। सासरे को इत्तो बड़ो परबार कभंउ कभंउ ओ खों घबराट होन लगबे। सबेंरें कलेवा ग्यारा बारा बजे लो होत रहे रोटी एक बजे सें तीन चार बजें नो और रात की ब्यारी दस ग्यारा बजे नो चलबे। कोउ कोउ जल्दी खाबे कोउ देरी सें खावें। स्कूल बारों को अपनो अलग टेम हतो।

बड़ी अम्मा राजरानी के आवे सें बड़ी राहत मना रई हती। गंगा को तो राजरानी पूरो ध्यान राखत हतीं के कहूँ कछू गलती ने हो जाबे। एक बेर गंगा की धोती में धोबी दददा ने दूसरो रंग लगा दओ अब का हती हाय तौबा मचा दई। जब लौ बड़ी अम्मा सें नई साड़ी देबे के लाने मना नई लई। रामशंकर से छोटे भैया दुर्गाशंकर मणिशंकर शहर के कॉलेज में पढ़ाई कर रये हते। उतई छात्रावास में रहत हते।

दुर्गाशंकर को डाक्टरी पढ़ने हती पे ने जा पाये सो वकालत पढ़न लगे। मणि बी. काम कर रये हते। छुट्टियन में घरे आउत हते सो भौजी खों खूबई चिढ़ा चमकाबे सबरे दिना खूबई हँसी मसखरी चलत रहे। राजरानी खों टेरत रहे। और काम बारे बहूरानी को ढूंढबे। खेती को सबरो काम नाज पानी की देखा भाली बड़ी अम्मा करवाउत हती।

दुर्गाशंकर के ब्याओ के लाने रिस्ते आ रये हते। अब बे बकील हो गये हते। मोड़ी घरबारों खों और दुर्गा खों पसन्द आ गई हती। फलदान और गोदभराई को नेग रीतरिवाज सें पूरो हो गओ। ब्याओ की तारीख तै हो गई। ब्याओ की सबरी तैयारी होन लगी। पूरो घर ब्याओ के कामों में लगो रहे। घर के भीतरे के सबरे काम काज राजरानी के जिम्मे। सब कोउ बड़ी अम्मा सें कहें के अब तो बहू आ गई है बड़ी समझदार है सबरो काम संभार लेत है। राजरानी भुन्सारे से काम निपटात-निपटात रात लौ थक कें चूर हो जावे।

दुर्गाशंकर को ब्याओ अच्छे सें निपट गओ। घर में दूसरी बहू आ गई। दुर्गाशंकर को ब्याओ रामशंकर जैसों जोरदार न भओ हतो। आदमी सोई कमती जुरे। पैले बेटा के ब्याओ में जित्ती भीर और ठसक हती उत्ती ने रही। नई बहू को नांव उमा हतो तो बदले नइयां। सब कोउ उमारानी कहन लगें। उमा अबै नई नई हतीं सों कछू समझत ने हतीं। राजरानी सोचे के नई बहू कछू काम करन लगे तो ओ खों तनक आराम मिले। कछू टेम ऐसेंई मायके सासरें आउत जात में निकर गओ।

राजरानी की सबई कोउ बड़ी बड़ाई करबे के बड़ी समझदारी सें सब कछू निभाउत है। कभंउ कोउ खों शिकात को मौका नई रहत। राजरानी सासरे में रच बस गई हती। उमा की कछू तबियत बिगरन लगी सो डाकधर खों दिखाओं पतो परो के उमा गरभ सें है। सबरे घर में खुशी छा गई के उमा के होनबारो है।

बड़ी अम्मा को माथो ठनके के छोटी बहू के पांव भारी हैं और राजरानी के अबै लौ कछू काय न भओ। दई जने नोने हैं फिर का बात है। बड़ी अम्मा राजरानी खों डाकधर नो ल्वा ले गई। डाकघर जॉच करके बोली- ''राजरानी तो स्वस्थ्य हैं टेस्ट करे हैं कछू गड़बड़ी नइयां बहू की तो जॉच हो गई बेटा की सोउ जांच जरूरी है। बड़ी अम्मा ने रामशंकर खो जॉच के लाने भेजे। डाकघर ने जॉच करी टेस्ट करें। दो दिना बाद आवे कही। सबखों चिंता हती का बात है भगवान करे सब कछू ठीक निकरे। रपोट आई बड़ो धक्का लगो के रामशंकर कें बच्चा ने हुइयें । सुन कें प्रधानजू और बड़ी अम्मा दुखी भये और बोले तुम ओरे राजरानी खों जा बात ने बताने ऊखों दुक्ख हुइये के दियो के सब ठीक है।''

बात रफा-दफा हो गई। राजरानी खों आशा हती के अब हो जेहे। एक दिना राजरानी ने रामशंकर सें कही ''जब डाकधर सब ठीक बोल रये हैं तो हमखों मोंड़ी मोंड़ा काय नई हो रये।''

रामशंकर ने समझाओं-''मोंड़ी मोंड़ा तो भगवान की देन हैं जब भगवान की मर्जी सो हो जेहें ओ की मर्जी के बिना तो पत्ता नई हिलत।''

उमा के बच्चा भओ सो राजरानी ने भौतई खुशी सें सबरो काम संभारे। बच्चा खों लाड़ करे लये रहें। प्रधानजू और बड़ी अम्मा के लाने पोता भये की खुशियें घर बायरे छाई हतीं सबई कोउ बधाई दे रये हते। रामशंकर घर के सबरे काम लेन देन बिल जमा करने खेती को लगाान खाद पानी सब को ध्यान राखे। प्रधानजू निस्फिक्र रहें इन सबरी झंझटों सें। मणीशंकर की पढ़ाई हो गई सो बे कालिज में पढ़ान लगे। उनके ब्याओ की तैयारी होन लगी। उमा की जजकी सें निपटे सो ब्याओ की भागदौड़ बाजार की खरीददारी सबरी व्यबस्था होन लगी। मणीशंकर को ब्याओ पास के गॉव में भओ हतो सो ज्यादा परेशानी ने भई।

मणी को ब्याओ हो गओ हतो। सबरे घर में मेहमान भरे हते। सबकों चाय नास्ता हो रओ हतो। गंगा जीजी जाने किते हतीं। उनने कलेबा ने करे हतो। तनक देर में वे आई और भौत जोर सें नाराज होन लगी। बोली– मोरो तो घोर अपमान हो गओ इत्ती बेईज्जती मैं नई सह सकत सबरन ने तो कलेबा कर लओ। मोय पूंछो लौ नइयां। कलेबा नास्ता को काम दुर्गाशंकर की बहू उमा के जिम्मे रहो। उमा अपनी सफाई दे रई हती के बा कमरा तें तस्तरी लगा रई हती और मोंड़ियें दे रई हतीं। गंगा जीजी जाने किते हतीं। सब माफी मांग रई हतीं पे गंगा कायखों माने। कन लगी अरे एक बैन हों चार छै नोई, एक बैन खों नई पूंछ पाती, मान इज्जत नई दे पातीं। मोय नई रहने और अपनो सामान समेटन लगी।''

बड़ी अम्मा राजरानी ने समझाओ मनाओ पे बे कहें– ''मोरी कछू इज्जत नइया मोय जानबूझ के नई दओ।'' सबरे रिस्तेदारों ने प्रधानजू ने समझाओं बड़े मान मनौब्बल के बाद गंगा जीजी रुकीं।

मणीशंकर की बहू को नाम माया हतो। बड़ी अम्मा की तीसरी बहू आ गई हती। उमा को मोंड़ा छोटो हतो सो बे कछू काम ने कर पावें। राजरानी सबरो काम संभारे। प्रधानजू को चौथो लरका शहर में पढ़ रओ हतो। उतई कालेज में ओ को कोई मोंड़ी सें प्यार मोहब्बत को चक्कर चल रओ हतो। बात धीरें धीरें सबरे में फेल गई। रेवाशंकर को जी मोंड़ी सें प्रेम संबंध चल रओ हतो बा दूसरी जात की हती। जा बात सें रेवा डरा रये हते के ब्याओ हुइये बाबूजी और बड़ी अम्मा कंभऊ राजी ने हुइये ई ब्याओ के लाने। जा सोच के दुखी हो जावे।

समय निकरत देर नई लगत। उमा और माया दोई बहुओं की जजकी होन बारी हती। सबखों चिंता हती के राजरानी के अबै लो बच्चा काय नई भओ। जा बात रिस्तेदार सोई सोचें। राजरानी कछू दिनन के लाने मायकें आई। सबखों चिंता राजरानी की गोदी अवै लौ सूनीकाय है। उनने राजरानी सें पूंछी के ''तुमाई जॉच में कछू गड़बड़ी तो नइयां का बात है आखर कहू रामशंकर में तो कछू कमी नइया।'' जब राजरानी सासरे आई तो ओ के दिमाग में जई बात के कैंसें पतो करे रामशंकर के बारे में।

उमा और माया के दिन पूरे हो गये और उमा खों लरका और माया खों बिटिया भई। राजरानी उमा के बड़े लरका खों खूबई लाड़ प्यार करे और अपने पास राखे। राजरानी खों लरका संभारबो जरूरी हतो कायसें उमा अपने छोटे लरका के संग लगी रहे। राजरानी पूरे टेम अपनी देओरनियों क काम काज और घर के कामों में लगी रहे। उमा जब मायकें जान लगी सो अपने बड़े लरका खो सोऊ ले गई। राजरानी खों भौतई दुक्ख भओ जब बा लरका खों ओ के पास सें ले गई।

राजरानी सुख तो अपने भाग में लिखा केंई ने लाई हती। बा सबरे दिना पूरे परबार के कामों में लगी रहे। जैसें कोल्हू को बैल जी की आँखों मे पटटी बांध दई जात है जेसें बो देख ने सके। बैल घानी के चारऊॅ तरपी चक्कर लगात रहत है। उनके घूमवे सें तेल निकरत है। पे राजरानी तो अपनी खुली आंखन से पूरे घर मे चक्कर लगाउत अपनोई तेल निकारत रहत है। जब राजरानी खों अपनी चिंता नइयां तो कोऊ और राजरानी की चिंता फिक्र कायखों कर है।

राजरानी खों खबासन काकी खूब चाहत हतीं और भौत इज्जत करत हतीं। राजरानी ने उनसें कही– ''काकी तुम्हई बताओ मोय बच्चा काय नई हो रओ।''

खबासन काकी सें ने रओ गओ ओ ने कही– ''बड़ी बहू मोरो नाम ने लियो सांची जा आय के डाकधर ने कही है के बड़े भैया में कछू कमी है।''

राजरानी खों जैसें करंट लग गओ। उनने रामशंकर सें कही– ''मोसें जा बात काय छुपायी सबखों पतो मालुम हैं बस मों खों नई पतो।'' राजरानी भौत रोई अपने भाग्य पे। राजरानी ने कही ''मोय बच्चा चाने है हम बच्चा गोद लेहे।'' रामशंकर और बड़ी अम्मा ने समझाओ के घर में तो बच्चा हैं जे कोई दूसरे तो नोई देओरानी के मोंड़ा मोंड़ी। खूब समझाओ सो जा बात ऊ टेम पे टल गई।

शहर की बात घर लौ पहुंची। रेवा प्रेम ब्याओ कर रओ है। जा बात बड़ी अम्मा के कान लौ पौंची, अम्मा भौतई बैचेन भईं। प्रधानजू खों बताओ सो बे सुनतई तमतमा परे। रेवा खों खूबई गारीं दई और कही–''ऐसो नई हो सकत।''

रेवाशंकर घरे आये सो प्रधानजू ने सबरीं बातें पूंछी। रेवा ने कछू सच्ची तो कछू झूठी बता दई। प्रधानजू ने साफकह दई ऐसो नई हो सकत। रेवा खों ओई शहर में नौकरी मिल गई। दोई जनो में इत्ती बात बढ़ गई के रेवाशंकर और किरण ने मंदिर में जा के ब्याओ कर लओ।

बड़ी अम्मा सें काम नई होत हतो सो सबरो काम राजरानी के जिम्मे रहे। उमा बहू के तीसरी जजकी होन बारी हती। बड़ी अम्मा ने उमा सें कही– ''बहू उमा अबकें तुमाये मोंड़ा होय चाये मोंड़ी सो राजरानी खों देने हे बा बायरे को बच्चा काय ले। घर खानदान को रेहे तो अच्छो है। राजरानी को मन बच्चा गोद लेबे को है।'' उमा तैयार हो गई सोची रेहे तो मोरो राजरानी तो पाल है। राजरानी ने खूब कही बायरे को बच्चा ले हैं पे घर के बायरे को मोंड़ा मोंड़ी लेबे कोऊ तैयार ने हतो। राजरानी ने सोची चलो उमा मोय देबे खों तैयार है सो ओई में सुखी हो गई। उमा बहू खें लरका भओ। बड़ी अम्मा ने राजरानी की गोदी में लरका दे दओ और कन लगी– ''बड़ी बहू जो लरका तुमाओं बेटा है अब ई मोंड़ा की तुम मॉ हो।'' राजरानी खों इत्ती खूशी भई जैंसे ओई कें लरका भओ होय। गोदी में लरका खों लेवें सबरी पीरा दुक्ख भूल गई और खुशी सें भर गई।

रेवा के प्रेम ब्याओ सें बड़ी अम्मा खों ऐसों झटका लगे के जो दुक्ख उनखों तोड़ गओं। उनने खाट पकड़ लई और एक दिना अपनो भरो पूरो परबार खों छोड़ के भगवान खों प्यारी हो गई। बड़ी अम्मा को मरबो सबखों झकझोर गओं। प्रधानजू तो जैसें ऐ कदम सें सनाक खा गये। इत्तो बड़ो घर इत्ते आदमी भरे पे बड़ी अम्मा बिन सब तरपी सूनो–सूनो खाली लगे।

प्रधानजू को छोटो लरका विष्णुशंकर को पढ़ाई में मन ने लगे जैसे तैसें बारई पास कर पाओ। बायरे चाय जी सें लड़ आयें। कोऊ की साइकल तोड़ देबे कोऊ को नुकसान कर आवे। घर के और बाहर के ऊ से भौतई परेशान हते। प्रधानजू ने डांटे फटकारे सो कन लगे के हमें घर में नई रने हम घर छोड़ दे है। सब कोऊ परेशान प्रधानजू ने विष्णु खों कांसटेबल को फार्म भरवा कें परीक्षा द्ववा के नौकरी से लगवा दओ और चैन की सांस लई।

प्रधानजू की तबियत गिरतई जा रई हती। बड़ी अम्मा के जाबे के बाद उनको मन उचट गओ हतो। राजरानी को मन तो अपने लरका में लगो रहत हतो। पूरे टेम ओई के संगे लगी रहे। विष्णु जबसें सिपाही भओ सो कंभऊॅ गॉव नई आओ। खूबई खबर भेजी पे ने आओ।

राजरानी को बेटा दीपक पढ़वे में भोतई हुशयार हतो सो राजरानी सुन कें फूली ने समाती। इत्तो हुशयार है ई खों मैं पढ़ा हों। पढ़ाई करवा हों सब कोंऊ देखत रे जेंहें मोरे लरका खो। राजरानी जाने

कित्ते सपने देखे ओर उनखों सांचो करबे के लोने जी तोड़ मेहनत करे। दीपक खों कहूं कौनऊ कमी ने रहे ई को पूरो ध्यान राखे। देओरानी उमा खों राजरानी को पुत्र प्रेम और पुत्र खटकन लगे। बा सोचे दीपक तो मोरो लरका आये राजरानी काय पुत्र सुख में डूबी रहे। उमा जेई गुन ताड़े में रहे के मैं का करों।

प्रधानजू गाँव के स्कूल को मुआयना करन गये। उते से आन के रोटी खाई और आराम करबे पर रये सो फिर परे रे गये। सबरे घर पूरे गाँव में कुहराम मच गओ प्रधानजू नई रये। शहर सें रेवाशंकर और किरन आ गये। प्रधानजू रेवा सें इत्ते नाराज हते के कंभऊ घर में आवे की इजाजत नई दई। सब लरका बहुयें आ गये पे विष्नू नई आओ। तेरहीं हो गई सब चले गये गंगा जीजी दुखी मन सें चली गई अब उनखों मनाबें ने तो बड़ी अम्मा हतीं ने बाबूजी।

देओरानी उमा के मन में भौत दिनन सें कछू सोचविचार चल रओ हतो जोन अब सामने आन लगें उमा ने कही- ''अब मैं शहर में रे हों उते मोंड़ी मोंड़न की पढ़ाई के लाने जाबो जरूरी है।'' राजरानी ने कहीं मणीशंकर है शहर में सो उनको रे कें पढ़ सकत है।'' पे उमा के मन में तो कछू और हतो सो बोली अरे वो कित्तो कर है अपने बच्चों को कर है के इन बच्चों को कर है।'' दुर्गाशंकर ने सोऊ शहर जाकें वकालत करवे को विचार करे और उते जान के मकान को रहबे को सिलसिला जमा लओ।''

उमा अपने बच्चों के संगे राजरानी के बेटा की सोऊ तैयारी कर रई हतीं। पैलऊँ तो राजरानी के समझ में नइ आओ के उमा ओ के दीपक खों सोऊ ले जा रई है। उमा ने दीपक को स्कूल सें सर्टिफिक्रेट निकरवाओ तो समझ में आई के उमा दीपक खों सोऊ अपने संगे ले जा रई है। राजरानी ने उमा खों भौतई समझाओ के दीपक अबे छोटी किलास में इते पढ़लेवें फिर आगें शहर में पढ़ले हे। रामशंकर ने दुर्गा और उमा खों खूबई समझाओ के राजरानी दीपक के बिना ने रह पाहे। अबै दीपक खों इतई रहन दो। साल दो साल बाद देखियो। बहू कन लगीं मोय दीपक की भौत फिकर है इते रहकें का सीख है और का पढ़है कछू नई।''

राजरानी ने सोची के उमा नई मान रई सौ मैं सोऊ दीपके के संगे चली जात हों उतई रे हों। कभंऊ-कभंऊ इते आ जाय करहों। सबने समझाओ के इते घर खेती को देख हैं संभार है। सब कछू बरबाद हो जेहे। रिस्तेदार घर कें नौकर चाकर सब कोऊ उमा और दुर्गाशंकर खों समझावे के ''बड़ी अम्मा प्रधानजू और तुम सबने दीपक खों राजरानी कों सौंप दओ हतो राजरानी ने गोद लओ हैं जो राजरानी को बेटा है। तुमाये दो ठैयां बेटा तो हैं।''

उमा कन लगीं- ''मैं कौन छुड़ा रई हों। पढ़वे के लाने शहर लै जा रहे।'' सब कोऊ ने भौतई समझाओ मिन्नते करीं के राजरानी ने दीपके खों अपनी कोख सें जन्में बच्चा नाई पालो है अपनी औलाद मानत है। इत्तो लाड़ प्यार करत है। दीपक के बिना राजरानी मछरिया सी तड़प है। तुम इती कठोर ने बनो।

लुगाईजनी ही लुगाई को दुक्ख समझ सकत है। पे कंभऊ कंभऊ लुगाई ही लुगाई जनी की दुश्मन होत है राजारानी ने खूबई हांथ पांव जोरे, दीपक खों छोड़ जाबे के लाने। उमा ने तो पेहलऊँ से दीपक खों ले जाबें की ठान लई हती। उमा ने कही- ''चलो तुम सोई चलो, आठ दस दिना रह कें आ जाने।''

सब ओरें राजरानी के संगे शहर पहुंचे। दीपक राजरानी को मां कहत हतो और उमा को चाची। उमा ने चाहत हतीं कें राजरानी इते रहबें कायसे इते रहबे सें मोह बनो रेहे। जा सोच कें उमा राजरानी सें परायें जैसों बेहार करन लगी। राजरानी सोचे जा शहर में आन के एकदम सें बदल गई का दिमाग फिर गओ है उमा ऐसी तो ने हतीं?

राजरानी चाहत हतीं के दीपक ओ के संगे बापस आ जाबे ओ ने दीपक खों जनम से पाले हैं। दीपक खों जी जान सें चाहत हों। दीपक खों खूबई समझाओं मनाओ संगे चलबे के लाने पे उमा ने जाने का का ओ के दिमाग में भर दओ, का पटटी पढ़ाई सो दीपक बोलो ''हम इतई रे हैं गाँव नई जे हें।'' राजरानी टूटे दिल सें लुटी पिटी सी गाँव वापस आ गई।

गाँव आन कें अकेली पूरे घर में डोलत रहे और सोचे के कहूं बाहर के बच्चा खों गोद लओ होतो तो का कोऊ ऐसें छुड़ा ले तो। दीपक के लाने कानूनी लिखा पढ़ी की कंभऊ कोनऊ बात ने भई। भैया-भैया में का लिखा पढ़ी ? जब तक बड़ी अम्मा और बाबूजी रहे तब लौ सब ठीक हतो उनके जातई सब कछू बदल गओ। उमा ने कैसो जार फेंके के सबकों फंस लओ। राजरानी की ऐसी दसा देख कें सबखों दुख होत। सब कहें के जा उमा दूसरी कैकेयी है। जब राजरानी खों बेटा दे दओ तो अब कायखों इत्तो दुक्ख दे रई है। नई देने हतो तो पेहलऊ मना कर देती। राजरानी कोऊ दूसरो बच्चा गोद ले लेती तो आज कोऊ ओ सें छुड़बे तो ने आतो। जाने कित्ती आंस राजरानी दीपक सें लगायें हतीं, खूब पढ़ है, ऊँची नौकरी कर है, राजरानी दीपक को ब्याओ कर है, बहू आहे। जाने कित्ते सपने दीपक के लाने देखत सोचत रहत हती। पे अब तो राजरानी दुक्ख के सागर में डूबी है।

राजरानी की तबियत दीपक के बियोग में बिगड़ गई। राजरानी दीपक की ममता में दिन रात घुलत रहें। उमा ने राजरानी को बुलबाओ। दीपक अब उमा को मां और राजरानी को बड़ी मां कहन लगो। राजरानी कों सुन कें जैसे करंट मार गओ। वो बोली ''काय उमा दीपक कों ऐसो काय सिखे दओ।'' उमा बोली 'अरे का हो गओ जीजी सब मोंड़ा मोंड़ी जैसो कहत हैं सो बो कहन लगों ऐ में का बुराई है।' राजरानी का कहतीं देख कें सुन कें होत रहे।

राजरानी लौट कें घरें आ गई का करतीं? रामशंकर तो अपने आप खां भारे हते पे राजरानी लरका सें बिछुड़वे की पीरा से नई निकर पा रई हतीं। राजरानी खों सब कोऊ का कह कें समझावें। इत्तो बड़ो धोखा खा कें किलप रई हती। राजरानी सोचे के अच्छो हो तो जोन उमा अपने बच्चा खों पेहलऊँ ने देतीं आज इत्ते मोह में तो ने पड़ती। अपनी आत्मा में तो ने बसा लेती। जैसों होतो सो भोगती पे इत्तो बड़ो दुख तो ने भोगती। लरका दओ ओर छुड़ा लओ बेटा ने भओ रूपैया पैसा समान हो गओ। कोऊ का जाने ओ के मन की पीर खों। दीपक कों राजरानी ने पैदा तो ने करे हतो पे जनम सें छाती सें लगा के पाले पोसे हतो रात-रात भर जगत रही। दीपक में ओ की सांसे बसीं हती। शिशु हतो जब से दीपक के लाने राजरानी की ममता उमड़ परी हती, उमा से ज्यादा चाहे, लाड़ करो हतो। लोग कहते देवकी यशोदा की नाईं दीपक को उमा ने जनम दओ और राजरानी ने यशोदा की नाई पाले पोसे हतो अपने कन्हैया खों। पे ऐसो किते भओ?।

राजरानी तो सबरी जिंदगी दूल्हा सजात रही देओरानियों कों लाउत रही और उनकी जजकी करवा कें जी जान सें सेवा करत रहीं, बच्चों को संभारत रही, रात-रात भर जग कें अपनो शरीर के अपनो सुक्ख नई देखें।

राजरानी आज पूरे घर में अकेली अंसुओं में डूबी दीपक में माया मोह में उरझी है ओ में सें निकलई नई पा रई है।

– १०२० शक्ति नगर
गुप्तेश्वर रोड, जबलपुर (म.प्र.)

आस्था और विश्वास की प्रतीक लोक देवियाँ

- विनोद मिश्र सुरमणि

सृष्टि की संरचना से ही शक्ति की उपासना चाहे वह प्राकृतिक स्वरूप से हो या प्रवृत्ति से निर्मित मान्यता के आधार पर सदैव की जा रही है। कारण निराकर स्वरूप में हमने जिस शक्ति को स्वीकारा वह उत्पत्ति और सृजनकर्ता ही हमारे लिए ध्येय बनी। पंचतत्व में से पृथ्वी, अग्नि और वायु स्त्रीत्व का स्वरूप प्रकट करती है। गंगा को मातृत्व भाव स्वीकार कर हमारी श्रद्धा को शक्ति के प्रति आशक्त बन जाना माध्यम बना। विनाश, पतन, धर्महीनता, विपत्तिकाल में सर्वशक्ति देवित्त ने ही निभारा है। सृष्टि की संरचना से लेकर सतयुग त्रेता और द्वापर काल तक देवीय शक्ति को सुर, किन्नर और मानव तक को अपनी जाति संरक्षित बनाये रखने तक अवतरति होना पड़ा है। प्रलय, अकालता, विनाशकरी शक्तिओं के आकृमिक प्रहारों से भी हमें महाशक्तियो ने उभारा है अर्थात देवीय शक्ति ही जीव कल्याण संरक्षक पोषक और पालनकर्ता है।

हमारी भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में देवी उपासना उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना कि जीवन में प्राणवायु। शिव और शक्ति की उपासना आदिकाल से मनुष्य के लिए साधना का मार्ग रहा है। नवरात्रियों में जप-तप, उपासना कर अपने जीवन को कृतार्थ बनाते हैं साथ ही लोक मान्यताओं में व्याप्त उन समस्त माध्यमों को भी अपनी मान्यता प्रदान करते हैं जो निराकार स्वरूप में हमारे बीच उपस्थित रहते हैं। देवी और देवियों को अनेक अवतरित स्वरूप के साथ ६४ जोगनियों को संरक्षण में सदैव प्राप्त रहता है। ज्ञान और भक्ति के आधार पर ज्ञान जहां उपासना पद्यति के सिद्धांतिक माध्यम से आराधना कर यथोगति पाता है। वहीं भक्ति लोकाचार के माध्यम से उसी स्थिति पर पहुंच जाती है यानि लोक आस्था, मान्यता और विश्वास सिद्धांतिक ज्ञान की तुलना में फल प्राप्ति तक शून्य नहीं है।

हमारे सामाजिक और पारिवारिक संस्कारों में लोक का बड़ा महत्व है। उपासना, पूजा, अर्चना ने लोक देवता, लोक देवियों को उसी प्रकार मान्यता के साथ पूजा गया है, जिस प्रकार हमारे धार्मिक आराध्यों को पूजा जाता है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र ऐसी अनेकों परम्पराओं से धनाढ्य रहा हैं।

आज भी मान्यतायें विलुप्त हुई हैं कम नहीं। लोक देवता हो या देवियां पत्थर की छोटी सी सिला से रूप में एक चबूरे पर पधरा कर उन्हें उसी भाव से पूज लेते हैं जैसे किसी वैभवशाली मंदिर में स्थापित विग्रह को। आस्था चाहे व्यापक रूप में हो या साधारण संसाधन के बीच, सदैव से निष्ठा और विश्वास की संलग्नता बनी रहती है। रैदास की कठौटी में ही गंगा प्रवाहित हो जाती है। लोक देवता के चबूतरे की पांच परिक्रमा लगाने से पथरी, कैंसर जैसे असाध्य रोग भी बिना ऑपरेशन, बिना चिकित्सा के ठीक हो जाते हैं। हम विज्ञान को नहीं झुठला सकते पर आस्था और विश्वास को भी नहीं नकार सकते। डोंगे बाबा, रामचेरे, हीरामन, कारसदेव, देवतानी बाबा के सिद्ध चबूतरे पशुओं की बीमारियां को ठीक कर देने वाले जीते जागते उदाहरण हैं। बुन्देला बाबा के चबूतरे पर सिर्फ पत्थर रखकर चले आने से गाय भैंस का छूटा हुआ दूध पुन: देने के उदाहरण मिलते है। कुछ सदी पूर्व अगर जाये तो चिकित्सा और उसकी वैकल्पिक व्यवस्था के यही सब साधन थे। कारसदेव और हीरामन पशुओं के देवता से रूप में पूजे जाते हैं। उनके चबूतरे पर पूजा अर्चन एवं विशेष अवसरों पर 'गोट' गाने की परम्परा आज भी है।

दतिया क्षेत्र की लोक मान्य देवियां:- ऋतुकालीन त्यौहारों एवं मांगलिक कार्यो पर घर परिवार में जिन लोक देवियों को यहां की महिलायें पूजती आ रही है वह किसी जिला या क्षेत्र मात्र तक सीमित नहीं हैं। इतना जरूर है कि लोक भाषा या वार्तालाप या स्थानों से उनके नामों की पहचान अलग अलग की जाती है। कालिका देवी को कालिका, छोटी कालिका, चौमुखी कालिका के नाम से भी जानतें हैं। यहां यह भी सम्भव हुआ कि किसी संबंधित व्यक्ति महिला या पुरुष या विशेष ने अपनी आस्था एवं साधना के जीवट रूप को समर्पित कर दिया और उनका समर्पण और विश्वास से वह स्थान और अधिक जागृत हो गया। कभी-कभी भक्त के नाम से ही देवताओं की पहचान हो जाती है। बैनीबाई की मड़िया या अन्य उदाहरण। बैनी एक वह महिला है जिसने किसी देवी के प्रति समर्पित भाव से उनके चबूतरे का निर्माण कराकर एक मड़िया बना दी। लोग पहचान के लिए कहने लगते हैं कि फलां स्थान बैनीबाई की मड़िया के पास है। कालान्तर में बैनी ही उस स्थान की विश्लेषण बन जाती है।

दतिया क्षेत्र में जिन लोक देवियों को आज मंगल कार्यो में विशेष रूप से पूजा जाता है उनमें कालिका, छोटी कालिका, चौमुखी कालिका, संकटा, आसारानी, आसोमाई, मंसिल देवी, बीजासेन, दशारानी, हुरईयां, चम्पू कालिका, बेटीबाई एवं सत्ती आदि प्रमुख हैं। शादी विवाह के मांगलिक कार्य में बीजासेन संकटा कालिका और हुरईयन का पाटो भरना अनिवार्य परम्परा है। ऐसी व्यवस्था भी रखी गई है कि स्वेच्छा से पाटो वर्ष के किसी भी समय में सुविधानुसार किया जा सकता है। पाटो एक संकल्प है जिस संकल्प को पाटने या पूर्ण करने हेतु अलग-अलग दिन निश्चित किये गये है। संक्षिप्त में अध्ययन करने पर मूलत: ३या ४ देवीयों के पाटे भरे जाने की परम्परा सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में प्रचलित है। पाटो की परम्परा का निर्वहन घर पर ही किया जाता है। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि समाज के वर्गो के आधार पर पूजा अर्चना सुविधा रुचि और भाव से बना ली गई हैं। कालिका एवं मंसिल देवी के चबूतरे जो कि नगर के परकोटे के बाहर बने हुए हैं। पर सामान्य पूजा अर्चना के साथ वली प्रथा भी प्रचलन में है। विशेषकर वर्षाकाल के समय अषाढ़ का महिना इस कार्य हेतु उपयुक्त समझा जाता है। कुछ जाति विशेष के लोग इसे मान्यता दिये हुए हैं।

१ संकटा देवी- संकटों से मुक्ति दिलाने हेतु संकटा मैया को घर-घर में पूजा जाता है। मूलत: शादी विवाह में संकटा की पूजा अनिवार्य होती है इसके लिए शुक्रवार का दिन सर्वमान्य है। पूजा सामग्री में लाल कपड़ा ८ लाल चूड़िया नारियल पान सुपाड़ी सिन्दूर लगता है। प्रसाद के रूप में सूजी का हलवा खीर पूड़ी फल और दही उपयुक्त माने जाते हैं।

संकटा की सुहागिलें: मांगलिक कार्यों के साथ सामान्य समय में भी संकटा का पाटो भरने की परम्परा है जिसमें ८ सुहागिलों को आमंत्रित कर उन्हें टीका, माहौर, सुहाग की सामग्री प्रदान की जाती है। पान के पत्ते पर संकटा की पुतरियां लिखी जाती हैं। पूजन अर्चन उपरांत संकटा देवी की कहानी एक बुजुर्ग महिला सभी स्त्रिओं को सुनाती है। कथा विसर्जन के बाद सभी को प्रसाद स्वरूप भोजन कराये जाते हैं। सभी सुहागिल महिलायें अपने आंचल की छोर से देवी को प्रणाम करती हैं और जिसके लिए पाटों भरा जाता है। उसके सुखमयी जीवन की कामना करती हैं।

२. बीजासेन:- लोक मान्यताओं के आधार पर बीजासेन की पूजा अर्चना करना सुहागिल स्त्री को अनिवार्य माना गया है। इस पूजा में ९ सुहागिलों को आमंत्रित कर पाटो भरा जाता है। जिसमें ९ पुतरियों की आकृति वाली तबिजिया की पूजा कर पाटो भरने वाली वधु को पहनाई जाती है। परम्परा है कि लड़की की शादी में उसके ससुराल पक्ष के लोग बीजासेन की तबिजिया चढ़ाये में देते हैं। बीजासेन आल्हखण्ड में मालखान द्वारा एक घटनाक्रम में मारी गई राजकुमारी की कहानी है। राजकुमारी की अतृप्त आत्मा नरवर की राजकुमारी पर अवतरित हुई जिसका नाम विजेसिन था जो बीजासेन से ध्वनि साम्य होती है। कालान्तर में लोग देवी बीजासेन से रूप में वह श्रद्धा के साथ पूजी जाती हैं। बुन्देली लोकगीत में कहा गया है कि बामी के नीरे कनैर नौ बीजासेन विराजी हों माँ ''वहीं रतिभानु कवि लिखते हैं बीजासेन तविजिया संगे छुटियां मूंगन बाई बीजासेन के पाटे में धर के भीतर उरेन डाला जाता है। एक पटा या चबूतरे पर नौ बुदकियां लगाकर पूड़ियों के नौ ढेर लगाये जाते हैं और ९ सुहागिल स्त्रियों को वह नौ ढेर प्रदान किये जाते हैं।''

३- कालका देवी:- कालका की पूजा पर वर पक्ष के घर नववधु के आगमन पर कालका का पाटो भरने की परम्परा से की जाती है। कालका लोकगाथा शास्त्रानुसार वैश्वानर की पुत्री तथा कश्यप ऋषि की पत्नि की संतान कालकेय नामक दानव था। मान्यता है कि यदि नववधु के लिए कालका का पाटो न भरा जाये तो कालका नाराज हो जाती है और मानसिक तथा शारीरिक रूप से वधु के लिए व्याधियां बढ़ाती हैं। पाटो भरने की परम्परा में विवाह के पश्चात किसी भी शनिवार का पूजन किया जाता है। चार सुहागिल महिलायें आमंत्रित कर उन्हें भोजन कराया जाता है। विवाह में जिस चूल्हे का प्रयोग भोजन प्रसादी के लिए किया जाता है उसी चूल्हे पर सिंदूर से कालका माई का चित्रांकन कर प्रसाद स्वरूप तेल की पूड़ियां, आटे का हलवा लगाया जाता है जिसे आमंत्रित चार सुहागिलों को टीका, माहुर लगाकर कौरा के रूप दिया जाता है।

४- आसोमाई या आसमाई:- ६४ जोगनियों में से अई चार जोगनियों की एक साथ पूजा करने का विधान आसोमाई की पूजा है। जिसमें आसमाई, प्यासमाई, भूखमाई और नींद माई यह चार वृद्ध देवियां हैं। वैशाख कृष्ण पक्ष की द्वितीय को इनका पूजन होता है। घर की ज्येष्ठ महिला व्रत रखती हैं। आटा और गुड़ की आसें बनाकर पूजन करती हैं। जिस स्थल पर पूजा की जाती है वहां गाय के गोबर से लीपकर चौक पूरा जाता है। एक नई गागर पानी में भरकर रखी जाती है जिसपर चंदन से चार पुतरियां बनाई जाती हैं। पूजन उपरांत सात पुओं का छिरका जाता है और किसी पूज्य महिला को भेंट किया जाता है।

आसोमाई की मड़िया, जगह- जगह बनी हैं। दतिया में आसोमाई का चबूतरा और उस पर बनी मड़िया की प्रसिद्ध के कारण गली का नाम भी आसोबाई की गली पड़ गया है।

५- अन्य लोक देवियाँ:- ऊपर उल्लेखित कालका, संकटा, बीजासेन, आसोबाई के बाद दतिया क्षेत्र में सती, दयारानी, हुर्रईया, बेटीराजा, मन्सिल देवी आदि लोक देवियों की पूजा अर्चना उसी भाव से की जाती है जिस भाव से पूर्व में दी गई पूजाओं की चर्चा लेख में की जा चुकी है। मन्सिल देवी तांत्रिक देवी है जिनको शाकाहार एवं मांसाहार दोनों प्रवृत्तियों के लोग पूजा वली एवं समर्पण से करते हैं। दतिया में मन्सिल देवी का स्थान नये ताल के मरघट पर बना हुआ हैं। इसलिए इन्हें मरघटयाऊ भी कहते हैं। मूल पूजा आषाढ़ और भादों में होती है।

लोक में व्याप्त देवियों का पूजन लोगों की अपनी- अपनी आस्था है भक्त के नाम से भी देवियों के नाम पड़ जाते हैं। चम्पूकाल कालका बैनी की मड़िया लौंड़ी सेननार वाली कालका, फूला देविन, राती माई, मरई की माता, आसमानी और गजाजन आदि अनेकों के नाम से इन्हें पूजते हैं। आस्था और विश्वास से वह फलित भी होती हैं। हमें आस्था और लोक मान्यताओं के केन्द्र बिन्दु मानकर सर्वसम्मति से इन आध्यात्मिक प्रतीकों पर शीश झुकाते रहना चाहिए।

- मधुकर शोध संस्थान
पकौड़िया महादेव, दतिया म.प्र.
मो. 9893437616, 9425742748

पढ़ना - लिखना

- रामानन्द यादव 'नन्द'

पोंचा दो स्कूले कई मोरी मानो ।
अब ना अँगूठा कौ रै गवो जमानो।
साहूकार कौ पइसा अमरबेल हो रवो।
देखौ तो मन्टोला सालन बिदो रवो ।

ब्याजई में उनको तिदानो बिलानो।
अब ना अँगूठा कौ रै गवो जमानो ।।
बात जा पते की मन मोरे भर गई ।
मनुवां की मौड़ी पढ़बे निकर गई ।

रमदीना स्कूलै जातन दिखानो।
अब ना अँगूठा कौ रै गवो जमानो ।।
अगर अपनी मोड़ी पढ़न पर सें जाती ।
रामरती जैसी पढ़न लगती पाती।

करियो न ई साले हल्के कौ बहानो ।
अब ना अँगूठा कौ रै गऔ जमानो ।।
ई साले नाँव सबसे पैलें चढ़ाने।
मोड़ी मौड़न खों दम सें पढ़ाने।

अनपढ़ रये सें 'नन्द' जीवन नसानो ।
अब ना अँगूठा कौ रै गओ जमानो ।।

- नन्द भवन, नैगुवां
जिला निवाड़ी (म.प्र.)
मो. 9755554351

डॉ. रामनारायण शर्मा का बुन्देली को योगदान

– डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंयाँ

डॉ० रामनारायण बुन्देलखण्ड के सुपरिचित वरिष्ठ साहित्यकार हैं जिन्होनें हिन्दी और बुन्देली में प्रभूत साहित्य की रचना की है। उनके द्वारा प्रणीत ग्रंथों को देखकर सहसा यह भ्रम होता है कि वे चिकित्साशास्त्र के डॉक्टर है अथवा साहित्य के। मेरा और उनका बहुत पुराना सम्पर्क नहीं था, फिर भी उसे नया नहीं कहा जा सकता। लगभग डेढ़ दो दशक से हम परस्पर निकट से निकटतम होते गये। आना जाना हुआ, जो पारिवारिकता में बदल गया। उसके बाद ही ग्रंथों का आदान- प्रदान प्रारम्भ हुआ। डॉ० शर्मा दम्पत्ति बड़े सहज और आत्मीय स्वभाव के हैं। अतिथि सत्कार में उनका स्नेहिल औदार्य किसी को भी अपना बना लेता है। इस दृष्टि से वे दोनों अनूठे हैं।

कुछ दिन पूर्व मैंने अपने साहित्यिक मित्र डॉ० रमेश खरे का एक लेख पढ़ा जिसमें डॉ० शर्मा के १५२ बुन्देली कहानियों के संग्रह की चर्चा थी। पढ़कर मुझे आश्चर्य हुआ कि उनका यह ग्रंथ मुझे आज तक क्यों प्राप्त नहीं हुआ। मैंने तुरन्त इसका उलाहना डॉ० शर्मा को दिया। उन्होनें स्वीकार किया कि वह यह ग्रंथ मुझे नहीं पहुंचा पाये। कारण भी बताया कि जब उनका यह संग्रह छपा था तब मेरी इतनी निकटता नहीं थी ओर अब वह ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि प्रारम्भ में वे मेरे साहित्यिक प्रदेय से परिचित नहीं थे। मैंने उनसे उक्त कहानी संग्रह उपलब्ध कराने का आग्रह किया तो अत्यल्प समय में ही उन्होंने इस ग्रंथ की फोटोप्रति डाक से मेरे पास भिजवाई साथ ही अपने उपन्यास जयराष्ट्र की भी फोटो प्रति तथा अन्य तीन ग्रंथ भी भेजे। उनकी आत्मीय उदारता का यह ताजा जीवंत प्रमाण है। अन्यथा आज के अहमन्य अनेक साहित्यिक विद्वान इस प्रकार के आग्रहों पर कोई ध्यान नहीं देते।

उनके ग्रंथों के सम्बन्ध में मैं यहाँ संक्षिप्त चर्चा अवश्य करना चाहता हूँ। पहली बात तो यह है कि उनके इन ग्रंथों में संग्रहित-लेखों कहानियों, आदि को पढ़कर मुझे अतीव आनन्द प्राप्त हुआ। अपनी बोली में अपने जीवन व संस्कृति से जुड़ा यह साहित्य सुखद होने के साथ ही ज्ञानवर्द्धक भी है। उनके द्वारा रचित ग्रंथों की सूची देखकर पढ़कर वह बेहिचक कहा जा सकता है, कि जितना बुन्देली साहित्य उन्होंने रचा उतना संभवत: किसी अन्य एक व्यक्ति ने नहीं। मैं अपनी जानकारी के आधार अनुमान से लिख रहा हूँ। उनके ग्रंथों की संख्या लगभग ३० है, जिनमें स्फुट कविताओं से लेकर महाकाव्य, कहानी से लेकर उपन्यास, भाषा साहित्य, शब्दकोश, साहित्यकार कोश, आदि शामिल हैं।

मेरे सामने जो सद्य:प्राप्त ग्रंथ है वे सभी बुन्देली भाषा में है। यहां मैं भाषा और बोली के विवाद में नहीं पड़ना चाहता। उनके ग्रंथ पेज तीन में उनके २१ लेख अथाई की बातें या चौपाल चर्चा की शैली में है। अथाई या चौपालों में ग्रामीणजन एकत्र होकर तमाम विषयों प्रसंगों पर परस्पर चर्चा करते है जिसे बतकाव कहा जा सकता है। इन लेखों में दैनिक जीवन के कार्य व्यवहार, समस्यायें,पर्व-त्यौहार, चुनाव, शिक्षा, शादी-विवाह, महंगाई, खेती-पाती, रोजगार-व्यवसाय, नीति- अनीति आदि अनेक पक्ष अंकित हैं। चर्चा कई बार विषयवद्ध होती है और कई बार असम्बद्ध कहीं से प्रारम्भ और कहीं जाकर अंत पर, निरुद्देश्य नहीं। वे मनोरंजक भी होती है और ज्ञानवर्द्धक भी। यही सब इन लेखों में देखा जा सकता है। डॉ० शर्मा स्वयं लिखते हैं- इस पुस्तक में लोकाचार, विचार, व्यवहार, शिक्षा, खेत, बाजार, जुलूसों की भीड़भाड़, दरकती धरती और मानव मन के रोजमर्रा की बातें आपसी संवादो के माध्यम से उजागर की गई, है जो पेज ३ का ही उद्देश्य है। इसमें तीन पक्ष होते हैं, कहने वाला सुनने वाला और हूँका भरने वाला।

बुन्देलीवार्ता ग्रंथ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्राय: कहा जाता रहा है कि बुन्देली में गद्य का अभाव है या उसमें सभी गद्य विद्याओं के निर्वाह की क्षमता नहीं है। डॉ० शर्मा ने इस ग्रंथ के माध्यम से इन आरोपों को तो झुठलाया ही, यह भी सिद्ध किया कि बुन्देली एक समर्थ भाषा है जिसमें गद्य की सभी विधाओं की अभिव्यक्ति सफलतापूर्ण की जा सकती हैं। ग्रंथ के प्रारम्भ में बुन्देली के ऐतिहासिक विकासकी संक्षिप्त चर्चा है, जिससे उसकी प्राचीनता का बोध होता है। संग्रह में गद्य के विविध रूप संकलित हैं जिनमें आलेख समीक्षा, संस्मरण, श्रद्धांजलि, यात्रा-वृतान्त, पत्र लेखन, रिपोर्ताज, पत्रकार-वार्ता, सम्पादकीय, समाचार-पत्र स्तंभ लेखन, सम्पादक व संयोजक के नाम पत्र, स्तंभ लेखन,नाटक,लीला-नाट्य और कहानियां आदि हैं। इन शीर्षकों से ही बुन्देली भाषा के विविध रूपों और सक्षमता का अनुमान लगाया जा सकता है। प्राय: लेखकगण संग्रहों में श्रद्धांजलि, पत्रलेखन, रिपोर्ताज, सम्पादकीय, पत्रकारवार्ता, आदि को गैर महत्वपूर्ण मानकर स्थान नहीं देते। डॉ० शर्मा ने इन आलेखों को जोड़कर एक ओर बुन्देली में अनुपस्थित गद्य विधाओं की उपस्थिति दर्ज कराई है, साथ ही यह भी स्थापित किया है कि साहित्य में कोई विधा उपेक्षणीय और गैर महत्वपूर्ण नहीं हैं। इससे अपनी भाषा का विस्तार होता है सम्पन्नता बढ़ती है और सृजन के नये आयाम खुलते हैं। इस संग्रह के कई आलेख शोधपूर्ण जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, जैसे रायप्रवीण, झांसी किले की कहानियां, महाराजा छत्रसाल, एकभक्त योद्धा, महानायक ईसुरी, आदि लेख इसी श्रेणी के हैं।

बुन्देली के कथाकार ग्रंथ में चौदह काहनीकारों की कहानियां संकलित हैं जिनमें प्राचीन से लेकर आधुनिक समय के कहानीकारों का प्रतिनिधित्व है। प्रारम्भ में कहानी के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डाला गया है। ये वो कहानियां है जो पूर्व में कहीं प्रकाशित हो चुकी है। संग्रहकर्ता का उद्देश्य है कि समय के साथ कहानियों के बदलते स्वरूप की झलक मिल जाये। (विषयवस्तु भाषाशैली आदि से परिवर्तन स्वाभाविक है)

'जय राष्ट्र' डॉ० शर्मा रचित ऐसा उपन्यास है जो रामकथा से जुड़ा होकर भी कोई ग्रंथ विशेष नहीं है। इसमें कई स्थलों पर लेखक ने नवीन परिवर्तन किया है। उपन्यास के कथानायक राम यहां परब्रह्म परमेश्वर के रूप में न होकर, असाधारण नीति निष्ठ,

महामानव के रूप में है जो देवासुर संग्राम के अधूरे संकल्प को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। मूल उद्देश्य आतंकवादी, हिंसक, राक्षसी, सामंतवादी, शक्ति को समाप्त कर एक निष्कंटक स्वतंत्र राष्ट्र की स्थापना है। एक ऐसा राष्ट्र जिसमें दानवी-शक्ति से मुक्त, चित्रकूट से त्रिकूट तक भयमुक्त-राष्ट्र, के सभी सहभागी बने। इसके लिए वन क्षेत्र में बिखरी बानर भालू, ऋक्ष, शबर, गीध आदि वनवासी शक्ति केन्द्रों को संगठित कर रावण जैसी दुर्दन्तिशक्ति को मारकर निर्मूल करना है। डॉ० शर्मा ने इसमें वनवास गमन, अहिल्या, धनुषयज्ञ, परशुराम-प्रसंग, शबरी- प्रसंग, अगस्त्य ऋषि- सत्संग, सम्बध आदि प्रसंगों को नये रूप में प्रस्तुत किया है। सागर- सम्राट की चर्चा तथा दंडकवन का सूत्र इक्ष्वाकुवंशी दंडक से जोड़ना नयी प्रतीति देते हैं। शंक स्पूजन में भी शक्ति की बजाय राजनीति और युद्धनीति की भावना प्रमुख है। लेखक ने बीच- बीच में सामरिक योजना से सम्बंधित पौराणिक तथ्य भी श्लोकों के माध्यम से प्रस्तुत किये हैं।

'बुन्देली कहानियां' एक बृहद ग्रंथ है, जिसमें विभिन्न प्रकार की छोटी- बड़ी १५२ कहानियां संकलित हैं। इन कहानियों को चार प्रसंगों में रखा गया है। बालकहानी प्रसंग में ३५ कहानियां हैं। इसी प्रकार प्रौढ़ कहानी प्रसंग में ४८, कथा प्रसंग में ५७, और गाथा प्रसंग में १२ गाथायें दी गई हैं। सभी कहानियों के सूत्रलोक-जीवन से सम्बन्धित हैं। ऐसी अनेक कहानियां हैं जो बुन्देलखण्ड के बाहर अन्य अंचलों और भाषाओं में भी प्रचलित हैं। क्षेत्रीय दृष्टि में उनमें थोड़ा बहुत अंतर भी हैं। लोक न कभी सीमित रहा है और न स्थिर। परिवर्तन उसका स्वभाव है। लोक बहुत व्यापक शब्द है जिसमें मनुष्यों के अलावा पशु-पक्षी, प्रकृति, वृक्ष, लता, पहाड़, नदियां, ऋतुयें तथा सभी जीव- जन्तु शामिल हैं। जलचक्र, थलचक्र, नभचक्र सारे जीव, लोक जीवन और कहानियों में भागीदार हैं। बाल कहानियों का उद्देश्य मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्द्धन और मार्ग दर्शन भी है। इनसे बच्चे संस्कारित होते हैं। इन कहानियों को पढ़कर पंचतंत्र की कहानियों की सहसा याद आ जाती है, जिनका उद्देश्य करणीय- अकरणीय का बोध कराना, जानना, जनाना - समझना है।

प्रौढ़ कहानियां बाल कहानियों से कुछ हटकर हैं। उनका उद्देश्य भी पाठकों को सही मार्गदर्शन देना है। उनमें अनुभव, ज्ञान, कल्पना और जनहित भाव आदि समाहित है। कथा- प्रसंग में सामान्य जन हैं- उनसे जुड़े घर- परिवार- समाज के प्रसंग हैं। राजा - रानियों, राजकुमारों, रोचक-रहस्यों, चमत्कारों, झूठ- फरेबों, उपकार- अपकार, हित- अहित, तीज- त्यौहार, व्रतकथा, पूर्व-प्रकृति आदि की कथायें हैं। समाज में प्रचलित मान्यताओं, कथा-प्रसंगों की भी कहानियां है। सभी कहानियां उद्देश्यपरक और उपदेशक हैं। जिनसे जीवन की व्यावहारिक सीख मिलती है। देवी-देवताओं से जुड़ी कहानियां हैं, जिनमें कर्मफल के संकेत निहित हैं।

गाथा प्रसंग की कथायें ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। धार्मिक और पौराणिक गाथायें भी हैं। राजानल, ढोला- मारू, सारंग-भारंगा, अरहिन गाय, कारसदेव, हरदौल, आल्हा, मथुरावली, सारंध्रा, अमानसिंह की गाथायें ऐसी हैं जो महत्वपूर्ण इतिहास-प्रसंगो को कालजयी बनाकर जीवन के लिए दर्पण का कार्य करती हैं। ये गाथायें बुन्देलखण्ड के जन- मन में व्याप्त हैं। ग्रंथों में शामिल होकर वे प्रेरक की भूमिका निर्माता रहेंगी। उपर्युक्त विवेचन से पाठकों को यह बोध भलीभांति होता है कि बुन्देली साहित्य- भण्डार को समृद्ध बनाने में डॉक्टर रामनारायण शर्मा का योगदान अविस्मरणीय और अभिनन्दनीय है। उनकी लेखनी अभी भी निरन्तर गतिशील है।

- ए-7 फारचून पार्क, जी- 3 गुलमोहर
भोपाल म.प्र.

रंग रँगीली राई

- प्रभु श्रीवास्तव 'पीयूष'

बाँकी रंग रँगीलीं राई, देखत आय न राई।
ई ने अपनी कीर्ति पताका दूर दूर फहराई।।
लइनइँ जात बरात राइ बिन होय न गोद भराई ।
इयै ऊथलौ मान न लइयौ भरी भौत गहराई।।
है मिठास 'प्रभु' गजब गुरीरी, ज्यों रस भरी बराई ।

घुँघरू नचनारिन के छमकें, ढोल नगरिया गमकें।।
देखत राइ राई नइँ आबै, रसियन के मन बमकें।
लहर लहर लँहगा लहराबें, घुमत नैन दो दमके।
मानो रुको काल कौ पइया, रै गइ रैन बिलमकें
ईसुरि गंगाधर की फागें, रस बरसा इँ जमके।
रीते रीते लौट आये 'प्रभु', मन रै गवौ मइँ रमके।।

रसिया सब सब रातन जागें, मड़ीं रसीली फागें।
छंदयाऊ उर चौकड़िया के बोल गुरीरे लागें।
बीच बीच में ख्याल कटीले गोला कैसे दागें।
लगत दूर के ढोल सुहाने, तन में सें मन भागें।
चटक चुनरिया में अटकी 'प्रभु' रंग बिरंगीं पागें।।

उनखों घरै राइ नइँ आबै, सपनन राइ दिखाबै।
नचनारी कौ लँहगा उनकी आँखन में लहराबै।
सौत नगरिया की धुन सुनके, मन चंचल हो जाबै।
घर घरनी जल पान रास रँग कछुअइ उनें न भाबै।
रित बसंत 'प्रभु' कंत अंत कउँ को अब धीर धराबै।।

- चित्रांश कालोनी
वर्मा शैल पैट्रोल पंप के पास
टीकमगढ़ (म.प्र.)

भागवत धर्म और बसदेवा सम्प्रदाय

- ओमप्रकाश चौबे

बसदेवा जाति पीढ़ियों से वैष्णव कथाओं के गायन द्वारा समाज को उच्चतम् मानवीय गुणों का संदेश देती रही है। बसदेवा स्थायी आवास वाले किन्तु भ्रमणशील चरित्र गायक हैं। भारतीय संस्कृति के आदर्श-उदात्त और नैतिक चरित्र बसदेवी गायकी के आधार हैं। अभावों भरे जीवन के बावजूद ये सदियों से अपनी गायकी के माध्यम से जनमानस को प्रेरित एवं संस्कारित करते रहे हैं। आज के समय में भी ये अपने पारम्परिक जीवन एवं कर्म में संलग्न हैं। अधिकांश बसदेवा कर्म के प्रति अटूट विश्वास और असीम आस्था के कारण सामाजिक सरोकार का निर्वाह कर रहे हैं।

सामान्य बोलचाल की भाषा में इन्हें वासुदेव, हरबोले, भटरो, वामन और जय गंगान के नाम से जाना जाता है। बसदेवा वासुदेव का देशज शब्द है। कहते हैं कि हरबोले और जयगंगान बसदेवा गायकी की टेक से लिए गये शब्द हैं। गायकी में इन टेकों के इस्तेमाल के कारण बसदेवों को हरबोले और जय गंगान नाम से अभिहित किया जाता है। भटरों भाटगिरी से बना है और बामन कर्मगत विशेषण है। बसदेवा कर्मगत विशेषण है जो बाद में जातिगत संज्ञा के रूप में मान्य हो गया।

एक साक्षात्कार द्वारा विदित हुआ है कि बसदेवा बसुदेव के भजन गाने वाले भाट थे, कालान्तर में बासुदेव के ये भाट बसदेवा कहलाये। बाद में इस समाज के लोगों ने अपनी जातिगत पहचान का लोप कर बसदेवा गायक के रूप में जीवन शुरू किया। इनके आराध्य कृष्ण हुए तथा जन्माष्टमीं इनका मुख्य पर्व हुआ। कृष्ण के अलावा स्थानीय देवी- देवता इनके आराध्य हुए।

बसदेवा समाज के बुजुर्गों से पूछने पर ये अपनी उत्पत्ति वासुदेव से जोड़ते हैं। ये कहते है कि हमारे कुल प्रमुख वासुदेव हैं। हम बसदेवा ब्राहाण हैं। कुछ बसदेवा कहते हैं, कि हम श्रावणी ब्राह्म्ण हैं। इसीलिए हम श्रवण कुमार की गाथा गाते हैं। इनकी उत्पत्ति विषयक पहली बात जो कि वासुदेव से जुड़ी है वह सही प्रतीत नहीं होती क्योंकि कृष्ण के पिता थे, यदुवंश के थे।

रसल और हीरालाल ने लिखा है कि ये अपनी मूल कृष्ण के पिता वासुदेव से जोड़ते हैं अर्थात इनकी जाति और उत्पत्ति के विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। बसदेवा मुख्य रूप से दो प्रकार के हैं गंगापारी और देशावरी। गंगा के उस पार निवास करने वाले बसदेवा गंगापारी होते हैं और शेष देशावरी के नाम से जाने जाते हैं।

मध्यप्रदेश में बसदेवा मुख्य रूप से बघेलखण्ड, बुन्देलखण्ड और छत्तीसगढ़ में हैं। बघेलखण्ड के रीवा, सीधी और सतना। बुन्देलखण्ड के सागर दमोह छतरपुर, हटा, पन्ना और छत्तीसगढ़ के मुख्यत: रायपुर और सरगुजा एवं बस्तर में हैं।

बसदेवों ने अपने स्थायी आवास के लिए पहले गाँवों और कस्बों के उन स्थानों को चुना है जो अलग- थलग और कटा हुआ हो बाद में ये स्थान आबादी के बीच में आ गये हैं फिर भी ये अपने सामान्य जीवन आबादी से कटकर व्यतीत करते हैं। बसदेवों का मुख्य कर्म अभी भी गायकी है किन्तु आजकल यह कर्म बदलते हुए सामाजिक अर्थिक और आध्यात्मिक कारणों से शिथिल हुआ है। जिस तरह से पहले इनको अन्न-धन प्राप्त होता था वैसा वर्तमान में नहीं है। इनके प्रति समाज और व्यक्ति के नजरिये का फर्क है।

आज संचार सुविधाओं के कारण आदमी कृष्ण और मौरध्वज की कथा से आकर्षित नहीं होते। आज गाँवों में भी मनोरंजन के अन्य साधन उपलब्ध हैं। पहले बसदेवों के गाँव बटे होते थे, अलग-अलग क्षेत्र के यजमान इनके होते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं रहा। ये सब ऐसे कारण हैं जिनसे इनकी पारम्परिक गायकी प्रभावित हुई है और इनका झुकाव धीरे- धीरे अन्य व्यवसायों की तरफ हो गया है।

कुछ बुजुर्ग बसदेवा कहते हैं कि हम भोर में अपने निवास से निकलकर गाँवों में घर- घर जाते थे और लोगों को अपना गायन सुनाते थे गृहस्थ हमें बड़ी खुशी से दान देते थे, हम एक घर से दूसरे घर जाते थे और दोपहर के पूर्व ही हम वापस लौट आते थे। बसदेवों का ऐसा मानना है कि दान माँगने का कार्य सिर्फ भोर में ही होता था- "उठो लक्ष्मी दै दे दान के अरे मोरे राम" लेकिन आज की स्थिति विपरीत है। हम अगर किसी के द्वारा भोर में जाये तो लोगों को गुस्सा आता है हमें ही अपमानित होना पड़ता है।

आज बसदेवा गायक भोर में अपने घर से निकलता है और सूर्यास्त के समय वापस लौटता है। बसदेवा कहते हैं कि आज अगर हम ब्रम्हा मुहूर्त में गायन एवं दान हेतु किसी के घर में प्रविष्ट करें तो पहले की तरह सम्मान की बजाय अपमान झेलना होता हैं। आज हमारे समाज में नई पीढ़ी के लोग यह काम नहीं करना चाहते। वे कहते हैं कि इस कर्म से भिक्षुक का बोध होता है।

बसदेवा गायक की साधारण बेषभूषा होती है- धोती- कुर्ता, जाकेट, साफा, तौलिया, कंधे पर झोली लटकाये हाथ में चुटकी, पैजना, करताल लिये होते हैं। ये वाद्य बसदेवा गायकी के पारम्परिक बाद्य हैं।

बसदेवा गायन की शिक्षा, परिवेश के कारण ही मिल जाती है। बालक अपने आस- पास गायन- वादन का वातावरण देखता है तो सचेतन और अवचेतन रूप में वे सभी जानकारियाँ उसे स्वाभाविक रूप में मिलती है जो एक वसदेवा गायक को जानना चाहिये। पहले वह सह- गायन की भूमिका निभाता है कुछ समय बाद वह पारंगत हो जाता है। घर में वह कथा गायन तथा वादन का अभ्यास करता है। बसदेवा गायन की शिक्षा इसी तहर प्राप्त होती है।

बसदेवा मूलत: वैष्णव गायक हैं- कालान्तर में उन्होंने कई तरह के कथा गायन अपना लिये। उनके जीवन और कर्म पर इन कथाओं का यथेष्ठ प्रभाव है। इनके प्रमुख कथा गायन- कृष्णावतार, श्रवण गाथा, राजाकरण की गाथा, मोरध्वज गाथा, हरदौल गाथा, राज हरिश्चन्द्र की गाथा, आदि है। उनके निवास क्षेत्र के अनुसार कथा गायन परिवर्तित होते जाते हैं। कथा गायन के अलावा भजन, जस तथा अन्य लोक गायन भी बसदेवा गायकी में गाये जाते हैं।

बसदेवा गायकी सपाट है- प्रत्येक गीत, एक ही लय में गाया जाता है। इनके कथागायन में आदर्श करूणा, मोह-माया, शोक-दु:ख और त्याग नये- नये अर्थ ग्रहण करते जाते हैं। बसदेवा गायन में गायक तथा श्रोता का मानसिक संबंध गहराता जाता हैं। आस्था, विश्वास लोक मान्यताओं से ये अपने गायन स्थापित करते हैं।

बसदेवा गीत स्तर लहरियाँ बिखेरते हुए जीवन कर्म मुक्ति और मानवता का संदेश देते हैं। लोक जीवन से प्राप्त बेहतर ढंग फिर से लोक को ही समर्पित कर इस ब्रहाण्ड में विलीन हो जाते हैं। इसी में इनकी महत्ता और सम्पूर्णता भी।

इनके गायन की एक खास विशेषता यह है कि ये जिस घर से दान लेते हैं उस व्यक्ति का नाम पूछते हैं कि किनके पुण्य? दान लेने के पश्चात् बसदेवा उसका नाम लेकर गाता है कि अमुक व्यक्ति ने दान दिया हैं।

इस तरह से ये बैष्णव कथाओं से लेकर इतिहास गायक के रूप में जाने जाते हैं।

- श्री राम कॉलोनी
गोपालगंज, सागर (म.प्र.)
मो. ९८९३९३१८८८

लोक साहित्य में पशु महात्म्य

- डॉ. (श्रीमती) गायत्री वाजपेयी

सनातन संस्कृति एवं साहित्य का अध्ययन एवं अन्वेषण करने पर यह ज्ञात होता हैं कि पूर्वकाल से ही यहाँ पशु को धन के रूप में मान्यता दी गई है तथा गोधन, गजधन, बाजिधन, को रत्नत्रयी मानकर पशुधन के संचयन व संवर्द्धन की प्रेरणा दी गई है। क्या वेद क्या लोक सर्वत्र पशु पूजन का विधान किया गया है, उन्हें आदर व सम्मान की दृष्टि से देखा गया है भारत भू पर पाये जाने वाले पशुओं को पवित्रता व उपयोगिता दोनों ही दृष्टि से महत्व है। उदाहरणार्थ जैसे गौ भारतीय समाज में जहाँ अपनी शुचिता के कारण पूजनीय है तो अपने अमृत तुल्य दुग्ध दही घी एवं औषधीय दृष्टि से गो मूत्र के कारण अत्यन्त उपयोगी है। ऐसे ही वृषभ शिव का वाटन होने के कारण पवित्र हैं तो कृषि कार्य में सर्वाधिक उपयोगी है। हाथी और घोड़े तो चतुरगिणी सेना के प्रमुख अंग है, और उनका महत्व सर्वविदित है भारतीय लोक में असाधारण महत्व रखने वाले इन पशुओं को किस रूप में मान्यता प्राप्त है। इस तथ्य का ही उद्घाटन व विश्लेषण इस लेख का उदेश्य है।

<u>गौ-</u> भारतीय संस्कृति में गौ को अत्याधिक महत्व दिया गया है। जो आज भी अक्षुण्ण है। लोक में गौ को माँ का दर्जा दिया गया है ।तथा माँ को जो आदर सम्मान दिया जाता है वही गौ माता को दिया जाता हैं। वैज्ञानिकों ने तो इस तथ्य को और भी पुष्ट कर दिया है कि गौ का दुग्ध मॉ के दुग्ध के समान अमृत तुल्य व ऊर्जावान है। लोक में जो यह मान्यता है कि गाय की पूंछ का झाड़ा देने से बच्चों के सब अनिष्ट दूर हो जाते है। उसके दुग्ध, दधि एवं घृत के अभाव में हमारे कोई भी धार्मिक व मांगलिक कार्य सम्पन्न नहीं होते है। इतना ही नहीं गौ मूत्र और गोबर भी अत्यन्त ही उपयोगी माना गया है उसके द्वारा निर्मित पंचव्य से ही हमारी आन्तरिक व बाहय शुचिता होती है। आयुर्वेद में तो गौ मूत्र को संजीवनी मानते हुए उससे अनेक औषधियाँ बनाई जाती हैं।

कृमिरोग, कुष्ठरोग, एवं प्लीहा आदि अनेक रोगों में गोमूत्र लाभप्रद होता है।

वैदिक ग्रन्थों से लेकर अर्वाचीन ग्रन्थों तक गौ महिमा का बखान निरन्तर होता आया है। ईश्वर ने स्वयं अपने मुख से गौ के महात्म्य को उद्घाटित करते हुए स्वयं को गौ के मध्य अवस्थित बलताया है-

गावो में पुरतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो में परितः सन्तु, गवां मध्ये व साभ्यतम् ।।[1]

अर्थात गायें मेरे आगे हों, गायें मेरे पीछे हो, गायें मेरे चारों तरफ हो, गायों के बीच में ही मैं सदा निवास करूँ।

गौ के अंग प्रत्यंग में तैतीस कोटि देवताओं का निवास है। इस कारण गौ सेवा परम कल्याणकारी है। कई ऐसे प्रमाण भी प्राप्त हुई कि गौ सेवा से निःसंतान दंपति को श्रेष्ठ सन्तति की प्राप्ति हुई है सनातन धर्म में जितने भी अवतार हुए है उनमें सभी ने गौ सेवा का संदेश दिया है, पूर्णावतार श्रीकृष्ण को तो गौ अत्यधिक प्रिय है उनकी गौचरण लीला इसका स्पष्ट प्रमाण है। श्रीकृष्ण के सर्वाधिक प्रिय मास कार्तिक में गोवत्स द्वादशी मनाई जाती है जिसमें गौ एवं वत्स दोनों की पूजा होती है। पुत्रवती महिलाएँ गौ व वत्स की पूजा कर गाय के खुर में हल्दी, चावल लगाती हैं गौ पूंछ को धोकर पीती हैं। ऐसी लोक मान्यता है कि गाय मनुष्य को मृत्यु के पश्चात वैतरणी नदी पार कराती है। इसीलिए मृत्यु शैय्या पर लेते हुए व्यक्ति द्वारा गोदान कराया जाता है। गौ ग्रास देने की परम्परा भी लोक में प्रचलित है। ऐसा माना जाता है कि गाय को ग्रास देना परम पुण्य का कार्य है। प्रत्येक धर्मपरायण नैष्ठिक व्यक्ति गौ ग्रास देना अपना परम कर्तव्य समझता है।

गाय उदारता पवित्रता और सत्यता की प्रतीक मानी गई है। वात्सल्य की तो वह प्रतिमूर्ति है। बुन्देलखण्ड में सुरहिन गऊ की गाथा एक ऐसा कथात्मक गीत है जिसमें हिंसा पर अहिंसा की विजय का उदघोष है। यह गाथा सत्य, कर्म, वचन, एवं निर्भयता के प्रति समर्पण की प्रेरणा देती है। सुरहिन सत्य एवं अहिंसा की प्रतीक है। गीत की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है-

''दिन की उगन किरन की फूटन, सुरहिन वन को जाय हो माँ'',
इकवन चाली सुरहिन दुज वन चाली, तिज वन पौची जाय हो माँ'' ।।

गौ का गोबर अत्यधिक महत्वपूर्ण और उपयोगी है। प्रत्येक धार्मिक एवं मांगलिक अनुष्ठान में गोबर का उपयोग किया जाता है। लोकविश्वास है कि गोबर की उरेन या उरिया डालना शुभ व समृद्धि दायक होता है इसीलिए प्रत्येक मांगलिक अवसर पर गौ गोबर से आँगन लिपाया जाता है, जैसा कि गीत में वर्णित है-

''गइया को गोबर मंगाओं मोरी सजनी।
ढिग दे आँगन लिपाओं महाराज''।।

लोक विश्वास है कि गाय बछड़े की दुग्ध पान कराते हुए यदि मार्ग मे मिल जाये तो अति शुभ होता है।

आधुनिकता के इस युग में भी गौ और उससे प्राप्त पंच गव्य (गौ दुग्ध, गौदधि, गौ घृत, गौ मूत्र एवं गौ गोबर) का विशिष्ट महत्व है। गोबर से अत्यन्त उपयोगी गैस बन रही है तो गौमूत्र से अनेक प्राणदायिनी औषधियाँ निर्मित हो रही है।

<u>वृषभ-</u> वृषभ को भगवान शिव का वाहन होने के कारण पवित्र माना जाता है। प्रत्येक शिव मन्दिर में वृषभ अर्थात नंदी की प्रतिमा शिव प्रतिमा के समक्ष स्थापित रहती है। ऐसी मान्यता है कि शिव जी को प्रजापति ने कई सौ गौ के साथ एक वृषभ (बैल) दिया था जिसे शिव जी ने प्रसन्न होकर अपना वाहन बनाया तथा अपनी ध्वजा को उसी वृषभ के चिन्ह से अंकित कर शोभित किया। इसी से उनका नाम वृष-ध्वज पड़ा तथा देवताओं द्वारा शिव जी पशु पति अर्थात पशुओं के स्वामी स्वीकृत किए गए।

लोक साहित्य में भी वृषभ के रंग रूप एवं आकार प्रकार आदि को लेकर अनेक कहावतें व मान्यताएँ प्रचलित हैं। उदाहरणार्थ बैल खरीदते समय खरीददार को निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-

मुँह का मोट माथ का महुआ, इन्हें देखि जनि भूलो रहुआ-
रत्ती नहीं हराई जोते, बैठि मेंड़ पै पागुर करे।
लम्बे कान और ढील मुतान छोड़ो किसान नहीं जायँ प्रान।

सात दाँत उदन्त को, बैल जो काला होय।
इनको कबहुँ न लीजिए, मुफ्त देई चाहे कोय।।[2]

अर्थात जिस बैल का मुँह मोटा माथा पीला हो वह बैल एक कूँड भूमि नहीं जोतता बल्कि मेंड़ पर बैठकर व्यर्थ जुगाली करता है। लम्बे कान और पेट का चमड़ा लटकने वाले बैल को कतई नहीं खरीदना चाहिए मुफ्त में ही क्यों न मिले क्योंकि ऐसा बैल अशुभ होता है। इसी प्रकार सात दाँत वाला काला रंग का बैल भी नहीं खरीदना चाहिए।

इसी प्रकार लोककवियों द्वारा कुछ ऐसे बैलों को खरीदने का परामर्श दिया है जो रूप रंग व आकार प्रकार में इस तरह हो -

करिया काछी भुबरे कान, इन्हें छाड़ि मति लाजै आन।
छोटा मुँह और ऐंठा कान, यही बैल की है पहिचान।
मियानी बैल बड़ा बलवान, तनिक देर में करिहै ठाड़े कान।
पूंछै मुरया और छोटे कान, ऐसो बैल मे हनती जान।[3]

अर्थात कच्छ काला और झबरे कानों वाला बैल अच्छा होता है। सफेद रंग और दबी पीठ वाला बैल देखते ही ले लेना चाहिए। ऐसे ही छोटे मुँह और ऐठे कान वाला बैल भी अच्छा होता है। मियानी जाति का बैल बड़ा ताकतवर होता है वह भुट कान खड़े कर देता है छोटे कान और गुच्छेदार पूंछ वाला बैल बड़ा मेहनती होता है।

गोपाष्टमी के दिन वृषभ की पूजा होती हे उनके सींग तथा खुर में तेल लगाते है मस्तक पर सिन्दूर का टीका लगाया जाता है व माला पहनाई जाती है। वृषभ दर्शन करना इस दिन अत्यन्त शुभ होता है। ऐसी लोकमान्यता है कि वृषभ का रोना अमंगलसूचक होता है। सूरसागर मे वर्णन मिलता है–

रोवे वृषभ तुरग अरू नाग। स्यार दौस निसि बोले काग।।
कंपै भुव, वर्षा नहिं होई। भयो सोच नृप चित यह जोइ।।[4]

वृषभ को वलीवर्द भी कहा जाता है इसी शब्द से बैल शब्द की उत्पति हुई है।

अश्व- अश्व अर्थात घोड़ा शुभ एवं पवित्र पशु माना गया है। इसमें भी श्याम कर्ण अश्व अत्यन्त शुभ होता है। यज्ञादि कार्यो में इस घोड़े का उपयोग किया जाता है। महाभारत में युधिष्ठिर द्वारा किए गए अश्व मेघ यज्ञ में श्यामकर्ण अश्व का उल्लेख मिलता है। शनि पीड़ा से मुक्ति के निमित काले अश्व की सेवा का विधान बताया गया है। ऐसी लोक मान्यता है कि जिस अश्व की अगली टाँगें सफेद रंग की हो वह अत्यन्त भाग्यशाली होता है। पौराणिक मान्यतानुसार समुद्ध मंथन से प्राप्त चौदह रत्नों में एक रत्न उच्चै: श्रवा अश्व भी था। जिसे इन्द्र ने अपना वाहन बनया था। अश्व शक्ति का प्रतीक है। पाश्चात्य जगत में हार्सपावर को शक्ति का मानक माना गया है। अश्व के विषय में अनेक लोक विश्वास प्रचलित हैं। जैसे जिस स्थान पर घोड़ा होता है वहाॅ उसके मुँह की गज के कारण अनिष्ट कारक आत्माएं प्रवेश नहीं करती है। घोड़े के दर्शन मात्र से बंध्यापन दूर हो जाता है। तथा रोपनी के समय किसी भी घुड़सवार का ईंख के खेत में प्रवेश मंगलकारक होता है। लोक में अश्व पूजा का विधान है। बुन्देलखण्ड में संक्रान्ति के एक दिन पूर्व भरभरात के दिन घोड़ा की पूजा होती है। घोड़ा की पीठ के ऊपर पकवान से भरी कठारी रखी जाती है। तथा यह कहते हुए घोड़ा को चलाया जाता है–

चल चल घोड़ा प्रयागे चल,
अपने नाम के लड्डू खा, ।।

बच्चे आपस मे खेल खेलते समय भी एक- दूसरे को चिढ़ाते हँसाते एवं खिजाते समय गीत गाते है जिसमे घोड़ा का जिक्र करते है।

कहानी सी झूठी बातों सी मीठी।
घरी घरी घास कौ बिसराम जाने सीता राम
शक्कर पारे की लगाम ने घोड़ा घास खों खाय
ने घास घोड़ा खों खाय।

विवाह के अवसर पर ऊवनी गीत गाये जाते है जिसमें घोड़ा के नृत्य करने का वर्णन मिलता है–

नाचत आवे सजन जूके घोड़ला
सो बाजत आवे निशान भले जू।

बुन्देलखण्ड में बालिकाओं का अत्यन्त लोकप्रिय खेल सुअटा है, जिसमें बालिकाएँ नौ दिवसीय अनुष्ठान करती हैं। सुन्दर-सुन्दर चौक पूरती है भाँति-भाँति की अल्पनाएँ बनाती है। नौरता के दिन काँय डालती है एवं गीत गाती हैं जिसमें अपने तीव्रगामी अश्वरोही भाइयों का स्मरण करती हैं–

मोरी पीठ के भैया सूरजमल भैया चन्द्रमल
लीली सी घोड़ी कुदाउत जैहें लाल छड़ी चमकाउत जैहें।
चन्दा सूरज दोउं भैया ठाडे नारे सुअटा पकरै लौंग की डार।
लीली जो बांधी लौंग से नारे सुअटा धरियक घामों बिलमाव।।

लोकमान्यता है कि अनिष्टाकारी एवं दुष्ट आत्माओं से रक्षा हेतु घोड़े की नाल को अपने निवास स्थान के मुख्य द्वारा की चौखट पर कीलों से गाड़ना चाहिए। आगरा स्थित फतेहपुर सीकरी के बुलन्द दरवाजा के विशाल कपाटों पर हजारों की संख्या में घोड़े के नाल जड़े हुए है। घोड़े की नाल के छल्ले भी शनि प्रकोप से रक्षा हेतु धारण किए जाते है। श्वेत अश्व शुक्र का वाहन है।

गदर्भ- गदर्भ अर्थात गधा माँ शीतला देवी का वाहन है। जहाँ भी माँ शीतला देवी के मन्दिर हैं वहाँ गदर्भ की भी मूर्ति स्थापित रहती है। लोकसाहित्य में गदर्भ से संबंधित अनेक लोकविश्वास मिलते है जैसे गदर्भ का बायी ओर बोलना शुभ होता है। किसी यात्रा के समय यदि गदर्भ बायीं ओर बोले तो यह यात्रा की सकुशलता का शुभ संकेत है। वही यदि वह दायी ओर बोले तो अमंगलसूचक है जैसा कि महाकवि सूरदास जी ने सूरसागर की इन पंक्तियों में उल्लिखित किया है–

बाएँ काग दाहिने खर स्वर, व्याकुल घर फिरि आइ।
खन भीतर खन बाहिर आवति, खन आँगन इहि भाँति।।
सूर स्याम कौटेरत जननी नैकु नहिं मन साँति।।[5]

विष्णु पुराण में वणित एक कथानुसार धेनुकासुर ने गदर्भ का रूप धारण कर श्रीकृष्ण एवं बलराम जी को अपमानित किया था।

हस्ति- हस्ति अर्थात हाथी लक्ष्मी जी एवं बृहस्पति जी का वाहन है। आश्विन मास में अष्टमी (कृष्ण पक्ष) के दिन मिट्टी के हाथी की पूजा का विधान है। यह शुभ एवं मंगलकारक पशु माना गया

है। विवाहादि मांगलिक अवसरों पर जो गीत गाये जाते हैं उनमें हस्ति का उल्लेख मिलता है। यथा -

"बाजत आवै राजा राम जी के बाजे घूमत आवै निशान भले जू।
ऊँचे अटा चढ़ देखें उनके बाबुल कितनी आई बरात भले जू।
एक लाख हथिया सवा लख घुड़वा पैदल ओर न छोर भले जू।

बुन्देलखण्ड में बच्चों को अनिष्टकारी दृष्टि से बचाने के लिए हाथी दाँत पहनाया जाता है। हाथी की सूँड का स्पर्श कराना, हाथी पर सवारी कराना, आदि शुभ माना गया है।

हाथी प्रायः काले रंग का ही होता है किन्तु वर्मा में सफेद रंग का हाथी भी पाया जाता है। बौद्ध साहित्य में सफेद हाथी को शुभ मानते हैं इसका कारण है कि बुद्ध के जन्म से पूर्व उनकी माँ को स्वप्न में श्वेत हाथी अपने गर्भ मे प्रविष्ट होते हुए दिखलाई पड़ा था। सम्राट अशोक द्वारा निर्मित स्तम्भों में भी हाथी की प्रतिमा उत्कीर्ण है जिसे शुभ एवं मंगल सूचक माना गया है।

व्याघ्र - संस्कृत में सिंह या शेर को व्याघ्र कहते हैं इसी का अपभ्रंश रूप लोक में बाघ प्रचलित है। माँ दुर्गा का वाहन होने के कारण भारतीय संस्कृति में सिंह का महत्वपूर्ण स्थान है। व्याघ्र चर्म शिव का परिधान है।

व्याघ्र यद्यपि हिंसक पशु है, लेकिन बुन्देली लोकगाथा सुरहिन में सिंह के हृदय परिवर्तन की एक चमत्कारिक कथा मिलती है। इस लोकगाथा में सुरहिन गऊ और सिंह के माध्यम से हिंसा पर अहिंसा की विजय का उद्घोष किया गया है। इस कथा गीत में सुरहिन गऊ का बछड़ा सिंह से मामा का पुनीत संबंध स्थापित करता है परिणाम स्वरूप सिंह की हिंसात्मक वृत्ति विलुप्त हो जाती है। गीत की पक्तियों दृष्टव्य है-

पैलां ममइयां हमइ को भखुलेइ, सो पाछे हमाय मांय हो माँ।
कौन भनेजा तोय सिख बुध दीनी, कौ लागो गुरू कान हो माँ।।
जो कजली वन हेरो भनेजा छुटक चरौ मैदान हो माँ।
सों गऊ आगे सों गऊ पाछे, होइये बगर के सांड हो माँ।।

लोक विश्वास है कि व्याघ्र का नख या हड्डी बालकों को ताबीज में पहनाने से उनकी अनिष्टकारी दृष्टि से रक्षा होती है।

वानर- वानर अर्थात बन्दर भक्त शिरोमणि हनुमान जी के वंशज माने जाते हैं। इस कारण लोक में इनका बड़ा आदर व सम्मान है। मानसकार संतशिरोमणि तुलसीदास ने अपने ग्रन्थ राम चरितमानस में कई स्थलों पर इनका उल्लेख विविध रूपों में किया है। बाल काण्ड में नारद जी के प्रसंग में वर्णन आता है जहाँ नारद जी कुपित हो विष्णु भगवान को यह कहते हुए शाप देते हैं कि जिस रूप (मनुष्य) से आपने मुझे वंचित किया है कालान्तर में आप उसी रूप को धारण करेगे और जो वानर रूप आपने मुझे प्रदान किया है वही वानर संकट के समय आपकी सहायता करेंगे। यथा :-

बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा। सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा।।
कपि आकृति तुम्ह कीन्ह हमारी। करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी।[6]

आज भी अनेक धार्मिक स्थलों पर वानरों के समूह दिखलाई पड़ जाते हैं। अयोध्या, काशी, चित्रकूट, जटाशंकर आदि अनेक दैवीय स्थलों पर वानर सेना मिल जाती है। दर्शनार्थी बड़े प्रेम और भक्तिभाव से इन्हें चना गुड़ खिलाते हैं। वानरों का बध निषिद्ध है। वानरों से संबंधित अनेक लोक विश्वास प्रचलित है जैसे किसी शुभ कार्य के लिए प्रस्थान करते समय यदि वानर दाहिने तरफ दिखलाई पड़े और लौटाते समय बायी ओर दिखलाई पड़े तो शुभ और मंगलदायक होता है। एक लोक मान्यता यह भी है कि घोड़ों का रोग वानरों को संक्रमित हो जाता है। इस कारण पहले लोग अश्वशाला में वानरों को पालते थे। जायसी कृत पदमावत में इस लोकमान्यता का उल्लेख हुआ है।

तुरग रोग हरि माथे जाये।[7]

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मंगलग्रह की शांत हेतु वानरों को चना गुड़ खिलाया जाता है। मंगल ग्रह से संबंधित जो खोज नासा द्वारा की गई है उसमें यह सिद्ध हो गया है कि मंगल ग्रह का रंग ताम्र वर्णी (लाल) है तथा दूर से उनकी आकृति वानर के सृदश है।

मृग - मृग एक अत्यन्त सुन्दर, आकर्षक, मनोहारी एवं नयनाभिराम पवित्रपशु है। यह चन्द्रमा का वाहन है। कदाचित इसीलिए चन्द्रपीड़ा से मुक्ति हेतु ज्योतिष शास्त्र में मृग सेवा का परामर्श दिया गया है। मृग चर्म अत्यंत पवित्र होती है। अतः धार्मिक अनुष्ठानों में मृग चर्म पर आसीन होकर पूजा पाठ करने का विधान है। भगवान शिव का आसन भी मृग चर्म है। यज्ञोपवीत संस्कार के समय बटुक को मृग चर्म की बनी मेखला पहनाई जाती है। साधुसंत अपने साथ मृग चर्म का आसन रखते हैं। मृग का वध निषिद्ध है।

लोकसाहित्य में भी ऐसा संकेत मिलता है कि महाराज दशरथ ने गर्भवती हिरणी का शिकार किया था जिसका दोष उनको लगा था और उन्हें सन्तानहीनता का भीषण कष्ट सहन करना पड़ा था तथा अपने इस कर्म के प्रायश्चित हेतु उन्होंने सोने की हिरणी व चाँदी का मृग शिशु बनवाकर जंगल में छुड़वाया था। तभी उन्हें सन्तान सुख प्राप्त हुआ था। लोकगीत में इस तथ्य का उद्घाटन इन शब्दों में हुआ है। -

राजा हैं जनम के भोगिया ग्यावन हिरनी मारियो महाराज।
सोने की हिरनी गढ़बाव रूपे के गबेलुवा महाराज।
वन वन देव छुड़ाय संतत तौ हुइये महाराज।

लोकसाहित्य में मृग के संबंध में लोकविश्वास प्रचलित हैं कि यदि यात्रा के समय जाते हुए मृग बायें से दाहिने ओर जाता दिखलाई पड़े तो अत्यन्त ही शुभ होता है। यथा

लोआ फिर फिर दरस दिखवे। बायें ते दाहिन मृग आवै।
भड्डर ऋषि यह सगुन बतावे। सगरे काज सिद्ध हो जावै।[8]

मृगों की पंक्ति यदि दाहिनी दिशा की ओर जाती दिखलाई पड़ें तो यह अत्यंत शुभ शकुन है

मृग माला दाहिन दिश आई। मंगल गण जनु दीन्ह दिखाई।[9]

वहीं मृग की पंक्ति यदि बायीं ओर दिखलाई पड़े तो अशुभ सूचक है। यात्रा के समय यदि अकेली हिरनी मिले दो स्यार मिले ग्वाला भैंस पर चढ़ सामने से आ रहा हो और तेली भी मार्ग में मिल जाये तो यात्रा में मृत्यु की सम्भावना होती है। जैसा इन पंक्तियों में दृष्टव्य है।

इकली हिरनी दूजै स्यार, भैंस चढ़ंता पावे ग्वार।

तीन कोस तक मिलि जाय तेली, तौ फिर मौत शीश पर खेली।[10]

मृग को लोग घरों मे पालते भी है। आज भी राजस्थान में विश्नोई समाज के लोग मृग शावक का पालन पोषण पुत्रवत करते है। विगत उज्जैन कुम्भ में भी महाराष्ट्र के एक संत अखाड़े मे आये मृग के संबंध मे कहा जाता है कि वह मृग संतो की धूनी के निकट ही बैठता था तथा आहार के रूप में उसे एक किलोग्राम किशमिश खिलाई जाती थी।

अज - अज या अजापुत्र को बलि हेतु उपयुक्त पशु माना जाता है। लोक मान्यतानुसार माँ दुर्गा को इसकी बलि दी जाती है। इसे एक दुर्बल और निरीह पशु माना गया है।

अज अर्थात् बकरा अग्निदेव का वाहन है। लोक विश्वास है कि यात्रा हेतु प्रस्थान करते समय यदि पाँच भैंस या छह कुत्ते या एक बैल या एक बकरा या तीन गाय या सात हाथी मिल जायें तो यात्रा नहीं करनी चाहिए। यथा -

भैस पाँच, षट स्वान, एक बैल, एक बकरा जान।

तीन गाय, गज सात प्रमान, चलत मिलै मत करौ पयान।[11]

ऐसी भी लोकमान्यता है कि बकरा पालन समृद्धि की वृद्धि में बाधक होता है। एक आरजा प्रस्तुत है जिसमें इस तथ्य की ओर इंगित किया गया है-

विप्र टहलुआ, अजा घन और कन्या कि बाढ़ि।

इतने से धन न घटे, तो करे बड़ेन से शरि।।[12]

मूषक - मूषक अर्थात चूहा गणेश जी का वाहन होने के करण आदरणीय माना गया है। गणेश जी के मन्दिरों में गणेश जी की प्रतिमा के नीचे उनके वाहन मूषक की प्रतिमा अवश्य होती है। कई मन्दिरों में गर्भ गृह से बाहर मूषक की प्रतिमा स्थापित होती है। मध्य प्रदेश के उज्जैन नगर में बड़े गणेश मन्दिर में भगवान गणेश जी की सबसे बड़ी ऊँची प्रतिमा स्थापित है। इसी मन्दिर में उनके वाहन चूहे की भी बड़ी प्रतिमा स्थापित है। भारत में गणेश जी के कई विशाल व भव्य मन्दिर है जहाँ माघ मास की गणेश चतुर्थी को विशाल व भव्य मेला लगता है कई मन्दिरों में तो मूषक रहते भी हैं लेकिन वे न किसी प्रकार का नुकसान करते है। राजस्थान में चूहों का मन्दिर प्रसिद्ध है जहाँ हजारो की संख्या में चूहे है और वहाँ उनकी पूजा की जाती है।

श्वान- श्वान अर्थात् कुत्ता काल भैरव का वाहन है। काल भैरव के मन्दिरों में प्रस्तर खण्ड पर उत्तीर्ण स्वान की मूर्तियाँ मिलती हैं। भैरव देवता का वाहन होने के कारण स्वान की पूजा की जाती है, और इन्हें आदर की दृष्टि से देखा जाता हैं। इन्हें मिष्ठान खिलाया जाता है। काले रंग के श्वान की देखरेख करना, उन्हें खिलाना पिलाना आदि शुभ होता है यह राहु एवं शनि दोषों का शमन भी करता है। सनातन संस्कृति में आज भी घरों में अन्तिम रोटी श्वान के लिए निकाली जाती है। ऐसा का जाता है कि कुत्ते की जीभ में घाव को चाटकर उसे स्वस्थ कर देने की शक्ति होती है। अतः **डॅकवत** आदि रोग हो जाने पर उस स्थान को कुत्ते से चटवाया जाता है। किसी व्यक्ति को अगर कुत्ता काट लेता है तो उसे सात कुँओं में झाकना पड़ता है ऐसी लोकमान्यता है कि इस क्रिया को करने से उसका विष नष्ट हो जाता है।

बुन्देलखण्ड में श्वान को लेकर अनेक लोक विश्वास प्रचलित है जैसे यदि यात्रा के समय श्वान अंग फड़फड़ाने लगे या भूमि पर लोट जावे तो शुभ संकेत नहीं है।

स्वान धुने जो अंग, अथवा लोटे भूमि पै।

तो निज कारज भंग, अति ही असगुन मानिये।।[13]

गमन समय जो स्वान, फर फराय देकान।

सनमुख आवै जो नौ, कहै भड्डरी अशुभ विचार।।[14]

महिष- महिष अर्थात् भैंसा यमराज का वाहन है। यह आकार में मोटा और काले रंग का होता है। इसी कारण मृत्यु के स्वामी यमराज ने इसे अपना वाहन बनाया है। माँ दुर्गा के मन्दिरों में इसकी बलि दी जाती है। लोक मान्यता है कि महिषा सुरमर्दिनी माँ दुर्गा इसकी बलि से प्रसन्न होती हैं। यद्यपि लोक में इसका अधिक आदर सम्मान नही है और न ही यह पवित्र कोटि का पशु है। ऐसा लोक विश्वास है कि शनि पीड़ा के निवारणार्थ महिष को काले चना व उड़द की दाल खिलाना चाहिए।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि वैदिक युग से लेकर आज तक पशु पूजा एवं उनके आदर सम्मान की परम्परा समाज में विद्यमान है। अपनी पवित्रता उपयोगिता एवं सुन्दरता से सम्मोहित करने वाले इन पशुओं का लोक मे अत्यधिक महत्व है।

सन्दर्भ-

1. कल्याण (गौ अंक)गीता प्रेस गोरखपुर पृ 159
2. घाघ और भड्डरी की प्रसिद्ध कहावतें- संग्रहकर्ता पं. राम जी शर्मा पृ०16
3. वही पृ०18,19
4. सूरसागर : सूरदास (पूर्वाद्ध)पद सं 286
5. वही (पूर्वाद्ध)पद सं. 1158
6. रामचरित मानसः तुलसीदास (बालकाण्ड)/36/4
7. पदमावतः मलिक मुहम्मद जायसी
8. घाघ और भड्डरी की प्रसिद्ध कहावतें: संग्रहकर्ता पं. राम जी शर्मा पृ०43
9. वही पृ०43
10. वही पृ०29
11. घाघ और भड्डरी की प्रसिद्ध कहावतें संग्रह कर्ता पं. राम जी शर्मा पृ०28
12. वही पृ०15
13. वही पृ०43
14. वही पृ०45

- श्री कृपा निकेतन आदर्श नगर

हायर सेकेण्डरी स्कूल नं. १ के पीछे

छतरपुर (म.प्र.) 471001

मो. 9425189487

साहब भड़या पानी लै गये

- अजीत श्रीवास्तव (एड.)

साहब भड़या पानी लै गये

चौपाल के चौंतरा पै भारी भीर हती, गाँव के बिलात जनें बैठे बतया रये ते। बैसें तौ वे सबई जने रोजई भीर करबे जुर जात ते आज बातई - बातन में पानी पै बैस होन लगी। रामदीन ने कई ''काहो अब पानी तौ संसार में जैसे नइयाँ पाँच छै बरस सें बरसोई कां है, कुजानै का हो रऔ।''

हल्के कक्का ने समझाओ भइया वैसें देखो जाये तौ दोष हमई औरन कौ आ है। उनकी बात चौधरी मास्साब ने काटी- ''कक्का बिल्कुल सांसी आ कै रये पानी की हमने कभऊँ चिंता ही नई करी, चिंता का ऊखौं कछु समझोइ नइयां।''

''का कै रये मास्साब, पानी तो भगवान कौ आय, बोई बरसात है बोई तरसात है, हम औरन कौ का दोष।''

गुमना के मौड़ा ने कई सौ इखौ जबाब लंबरदार जू नै दवो ''सुनो भइया इम जे पोलीथीन की थैली ला रये बाजार सें, घूरे में ढेर लग जात सो उनै बार देत, ईसें जौन धुआं कड़ रऔ बौ कार्बन डाई क्वाऊत, धुआं अपन जानपइ हैं। ऊपर खौं उड़त सो सीधौ आकाश में जात, ऊनै आकाश में एक छेदो कर दऔ।''

चौधरी जी बीच मैं बोल परे ''सब जनै कान खोल के समझ लेवें जौ आकाश हमाऔ वायु मण्डल आ कैलात, जौन है सो तौन, सूरज की जौन गरमी हमाई धरती पर आत, ऊखौ जेई आ छानत, और गरमी रोके रात। अब ऊ छेदे सें सूदी सूरज भगवान की किरनें आ रई ऐई, सैं पृथ्वी गरम हो गई।''

''वा पृथ्वी गरम होत तबई तौ पानी गिरतचौधरी मास्साब''

''तुमै पतौ है कि पृथ्वी के तीन तरफ सागर- समुद्र आ भरो, और कितनौ पानी बरफ बनों पड़ो है। अरे गरमी सैं बा बरफ पिघल कें समुद्रन में गिर रई सौ वे होरये ठन्डे, पानू ठण्डो भवौं सो उड़ नई रवो भाप बनकैं, ऐई़ से समुद्रन के पानी सै, बादर बनत ते, बेई बादर आ बरसत ते।''

''मास्साब तुमने तो आँखें खोल दईं, पालीथीन की धुकना इतेक नुकसान आ पौचा रऔ।''

''पालीथान अकेले नई गाड़ी कौ डीजल-पेट्रोल कौ धुआ, चमड़े कौ धुआं, बसन कौ धुआं, पटाखन कौ धुआं सब ऊपर जाकै आकाश खौं आ मिटा रऔ और पानी उड़त जा रऔ''

पानी की जा दशा तौ कभऊँ नई भई, सबरे कुआ-कुईयाँ ताल- तला, नारे, नरिया सबई तौ सुखा गये ।

रामदीन ने कई ''जा बात सांसी है कि हम औरन ने पानी कौ ना तौ जोरबे -बचाबे कछु करो ना फालतू बैहबे सें रोको, अब दस- दस मील से पानी आ रवौ। दिन दिन भर लोग पानी- पानी में लगे हैं। गाँव में देखो तौ सबरी काकी- जिजी बैठकैं पानी पैई चरचा कर रई''।

चौपाल पर ई तरा कीं चरचा होई रई ती कि कौनऊ नै कई पुलिस आ रई, उनकौ डिग्गा आ रवौ।

कायहो पुलिस काये खौं गाँव मेंआई, कछु भवो है का?

तबई पुलिस की बड्डी गाड़ी चरचरा कैं ठांडी हो गई, ऊमें सें दो- चार सिपाई उतरे फिर गाँव कौ गुलई खवास उतरो, सब जनन ने पुलिस सें राम -राम करी, चौंतरा पै बैठावो, काऊ ने कौनउ मोड़ा खौं पानी पीबे लाबे इसारो कर दवौ, कछु बीड़ी जलान लगे। उनके लानै, कछु सुपाई तमाखू काटन लगे तबई चीफ साब बोले-

''जौ गुलई खवास भुनसारे सें थाने मै चिल्ला रवतो कि साहब भड़या पानी लै गये सौ वाई की जांच तड़ताल खौं हम औरें आये हैं।''

सबखों अचरज सो भओ। रामदीन ने कई - ''काहो गुलई कबकी बात है कबै पानी की भड़याई हो गई।''

''राते, मैनें औ तुमाई बहू ने रात कैं पानी प्लास्टिक की दो सिसी में धरो ऊखों पौलीथीन में धरो, कपड़ा के छन्ना सैं पुटरिया बनाई, खटिया के तरैं एक हाथ गढ़ा खोदो ऊमें गाढ़ दई, फिर जगा ज्यों की त्यों करी, लीप दओ। ऊपर सैं चकिया कौ पाट लगा दओ ऊपर सै खटिया विछा दई पर रातई में.... ।''

गुलई रौन लगो, अँसुआ आंखन सें छलक आये। चौधरी बोल परे ''अब जान कइये कि बोई खटिया पै सोत रये औ भड़या पानी की भड़याइ कर लै गये।''

''बिल्कुल एसइ भवो कक्का, हम औरन खौं पतौ नई चलो औ खदरा खोद कें भड़या बोतल उठा लै गये।''

''कैसा मूरख है, ई जमाने मैं जब पानी बरसत नईयाँ, कुआँ नदियाँ, तला सूख रये, जमीन में गाढ़ के पानी रखौजा तौ सबरे भड़या जानत का तमाये गाँव में बैंक नईया, अरे मई जमा कर देते। चौकीदार खौ दे देते पानी की रक्षा तक नई कर पात, औ हम औरन खौं दोष देत सिपाही गुस्सा हो गया ।

''आं हां साब रात कैं बिजली चली जात, कटौती चल रई, वोई टैम खतरा हो जात।'' चीफसाब बोले -''अरे पानी नईया तौ बिजली काये सैं बनै पानी सैं तौ पूरौ जगत टिको। और कौनऊँ कौ पानी तो नई चुराओ कौनऊँ नें''।

''साब सांसी कयैं। बोई पानी के संगै मैंने सोने की अंगूठी लुगाई की करदौनी धर दई ती, पर भड़यन न उयै तो छुऔ तक नईया।''

''अरे ई समय पानी ही सबसें कीमत रखत, सोना चांदी हीरा जवारात की खौं चानैं।''

''हओ जू अपन की ठीक मरजी भई-'' हल्के कक्का नें सिपाई की बात हांथ जोर कै मानी ''पै इतेक पानूं गुलई खौं कासै मिलो।''

''जेइतोहम सोच रये, गढ़ा में गाढ़वे पानी खवास खौं कां सें मिलो, काय रे- बतात काये नईयाँ।''

''दद्दा मैं बड़ागाँव न्योते में गवो तो सें उतईं सें चार बोतलैं पानी मसक ल्याओ।'' रामू कक्का कै इतै सौं हाथ जोड़ गुलई खवास बोलो सो सिपाई खुनसा परो।

जौ बड़ागाँव कौ रामू बड़ो पानी बालो हो गवों, ऊके इतै छापो मारने परैं तुम औरन नें बरसात कौ पानी खौं कभऊँ बचावो नइयाँ,कभउँ नदी, नरवा, तला, कुंअन खौ गहरौ तक नई करो, पानी कौ मोलई नई पैचानौ।''

"बा तौ ठीक है, तुम औरें जा बताव गुलई कौ पानी कीनै चुराव हुइयै।" कोऊ नें कई- "खास बात देखी हो तो बताव" सिपाई ने कई। सो गाँव के चौकीदार ने कई कै दो दिना पैलें लबूदे कुम्हार के नन्ना मरे ते पै उनकी लकईयां में इसमशान में चार- छह लोग गये ते, सपरवे लोगन खौं पानी ना हतो।"

"कउँ उनई ने तौ नईं पानी की भड़याई करी" एक सिपाई ने कई तौ लोगन नै मनाकर दवो कि वे ऐसो नई कर सकत-

"देखो पानी की कमी सें सब दूबरे हो रहे हैं कौनऊँ गाँव कौ मोटा तौ नई हो रओ?"

"आं हां साब सबरे चीकड़ उन्ना पैनै घूम रये, कुल्ला खों तक पानी नई बचो, बासन - भाड़े की जगा कागज पत्तलन सें काम चला रये। हां, जो दस- दस मील सें हैण्डपंप चला कैं पांनू ला रये वे जरूर पैलवान हो रये। लोग बाग बिना पानी कौ सादा खाना खा रये और कम खाना खा रये -"बूढ़े हल्के बाढ़ई नै कई।

देखो सब लगां पानी की चोरी हो रई। अखबार टी.वी. सब में पानी की भड़याई की खबरे आ रई काल शहर में तीन मंजिला पर पानी की टंकी बनीती सो भड़या पानी की सटक डाल कैं पानी चुरा ले गये.

"चिरईयाँ, जानवर मर रये साब, काल रेडुआ में खबर हती कै एक खों पानी मिल गवो सो बौ खुसी में पगला गबो, बिरछा, - डांग सब सूख गये साब"- एक लरका ने कई। सो चीफ साब बोल परे- "काल की तौ सुनौ, एक लरका ने अपनी डुकरिया कौ गरौ दबा दवो। पकरो गवो। सो ऊने बतावो कै वा बेर- बेर पानी पियत ती औ वौ भर- भर कें हैरान हो गवो तो।"

राम राम का जमाना आ गऔ चीफ साब ऐसो लग रऔ पुरानौ जमाना लौट रऔ अब हैडपपंन पै लोग लुगाई दोई लैन लगा रऐ पानी नईया सौ अकाल आ पर रऔ.

राम मिलन ने कई सौ ऊकों लरका बोल परो दददा हमाई किताब में लिखो कै सौ में से तीन हिस्सा पानी पीबे लायक है पृथ्वी पर, और पानी ठोस, द्रव्य और गैस रूप में रत है ऊखों कौनऊ नसां नई सकत पै सबने ऊखों पीबे लायक नई रन दऔ

तुम रन दौ छोटू जौ बताओं कि गुलई खवास कै पानी की भड़याई को कर सकत चीफ साब ने पूछो सो सब चुप्पाई साध गये एक सिपाई ने कई- देखो आज काल हमाये इतै जितने रिपोट डर रई सबरीं पानी की भड़याई की डर रई ईसैं सवई सैं निवेदन है कि पानी खौ आप औरन नै जैसे नाश करो है सो आप साब जानतई है अब जो बचो है जो मिलरऔ है ऊखों ही समार कै रखौ, भड़याई हो जात सो हम औरन खौ परेशान करत

"कारे गुलई तोरी काऊ से दुश्मनी ती का"

"आं हा सरकार"

"कौनऊ पै शक हो कौनऊ नै पानी धरती में गाड़तन देखो हो"

"मैकांकै दओ सरकार मैं तो खुदई चक्कर में पडौ हूं को लै जा सकत पानी"

तबई गांव के मास्साब आ गये राम राम पौचे सबई खौ का हो गऔ कछू नई मास्साब गुलई खबास कौ पानी राते भड़या चुरा लै गये.

देखौ हम तौ गांव बारन खों कबसै समझा रये कि नदी, नाले, बांध, तला, कुंये बाबरी नलकूल नहर झील सब साफ रखौ उनमें श्रमदान करकै गैरो कर लो, कोई सुनतई नई हतो अरें पानीदार हते तौ पैलें सोचते किताबन में लिखो है किं पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून पानी नईया तौ कछु नइंया भइया

आप ठीक कैरये मास्साब, लोगन खो पानी कौ मोल समझई नई आत, अरे रामायण में लिखो है छिति, जल, पावक, गगन, समीरा, इनई पांच तत्वन सै सब कुछ बनौ है जल भी येई में शामिल है सबरे जीवजन्तु, हरियाली येई सै तौ है।"

अरे चीफ साब लोगन की आँखन कौ पानी मर गओ है, अब पानी-पानी हो रये अब आ जितै पानीं मिल रऔ उतै सुनतई मौ में इनके पानी आ जात। हम तौ कत वा कहावत है नइयां कि इनखौं ऐसी जगह मारदो जितै पानी तक न होय, सौ बेई हालत में आ गये जे सब"

"मास्साब सांसी कैरये, हम औरन खों तौ चुल्लू भर पानी में डूब मरना चइये, हम औरन की आँखन कौ पानी मर गओ तो सो पानी में रैकें मगर सैं बैर करत रये. । देखौ कौनऊं धरम होय ऊमें मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा , भगवान सैं पैलें पानी कौ काम पैले होत, तब कत भगवान कौं याद करौ, दर्शन करौ, सरकार कतती की बरसात कौ पानी गड्ढ़ा खोद कैं इकट्ठौ करो, नाली नहर सैं तला में डाल लो पै सबकौ खून तौ पानी हो गऔ, अब मजा करौ और भजौ मन चंगा तो कठौती में गंगा।" लम्बरदार ने लम्बौ भाषण सौ दऔ।

"चीप साब हम स्कूल मैं पढ़ात है लेकिन गांव वारन खौ पानी बचाबें हमेसा समझात रये। नल की टौंटी सुधरा लो, पानी ना गिराओ पै कोऊ मानें तब ना। हमने तौ जा भी बताई कै राम ने गंगा के हाथ जोरे, सागर सैं प्रार्थना करी, विष्णु क्षीरसागर में, ब्रह्मा जल के कमल पै औ भोलेशंकर बरफ के कैलाश में रत सब पानी की महत्ता बताबे खों देखो भगवान कत कीखों हैं- भगवान में पाँच अक्षर होत भ सें भुवन माने पृथ्वी, ग सैं गगन माने आकाश, व सैं वायु मतलब हबा फिर बड़े अ कौ डंडा लगो अ सै अग्नि ओर अखीर में न सें नीर मानै पानी।"

"अच्छी बात कई मास्साब नै पर चिंता तौ गुलई के पानी की है कायरे कैसी हती बे पानी की सीसी ढक्कन कौन रंग के हते-" एक सिपाई ने पूँछो, गुलई हाथ जोर कैं ठाड़ो हो गओ. ।

"मराज एक सिसी में नीलो एक में लाल ढकना लगो तो, दोइयन खौं पालीथीन की थैलिया में धरकैं कपड़ा की पुटइया बनाकैं जमीन में गाड़ दओ तो।"

लाल औ नीले ढकना की सीसीं" एक भीर में खड़ो लरका अचानक बोल परो।

"हाँ हाँ बेटा, तुमने देखी का-" सिपाई ने ऊखौं पुटया कै पूछो।

हओ गांव कौ शेरू कुत्ता घूरे में गाड़ रओ तो मड़िया कें पाछे वाले घूरे में

सब खुश हो गये पूरौ हजम्मा मड़िया के पीछे के घूरे में गवो उतै सेरू कुत्ता एक प्लास्टिक की शिशी दांतन से चगलकें पानी पी रये तो। उये भगाकैं घूरे में देखो सो दूसरी बोतल भरी मिल गई, सबरे हँसत रये। भड़या निकलो सो कुत्ता । मामलौ निपट गवो सो सबखों सांती मिली लेकिन पानी पै इतनी चरचा सैं सबरन खौ पानी की महत्ता कौ पतौ जरूर चल गवो।

- राजीव सदन
नायक मुहल्ला टीकमगढ़ (म.प्र.)
फोन नं- 07683244014

पावन प्राकृतिक तीर्थ - अछरूमाता

- राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'

हमाओं बुन्देलखण्ड प्राकृतिक संपदाओं उर तीर्थ क्षेत्रन से भौत संपन्न है । इतै पै एनई पावन तीर्थ स्थान पर प्राकृतिक स्थान है। बुन्देलखण्ड में एक खास बात जा है कै इतै जितैक भी प्राकृतिक स्थान है उन सभइ स्थानन में कोउ न कोउ तीर्थ जरूर हुइये जैसे- चित्रकूट में भगवान राम कों मंदिर छतरपुर जिले जटाशंकर में भगवान भोलेनाथ कौ मंदिर दतिया के रतनगढ़ में प्रसिद्ध रतनगढ़ माता कों मंदिर एवं बल्देवगढ़ में विंध्यवासिनी माता जी कों मंदिर सोनागिरी में पहाड़ पै तनक-तनक से बन्न- बन्न के एक साथ लगभग100जैन मंदिर बने है, उन्नाव बालाजी में नदी के करके सूर्य मंदिर है जबलपुर मे भेड़ाघाट में नर्मदा नदी पै संगमरमर की चट्टान की बीचा भौत नोनो जलप्रताप है। भीमकुंड आदि ऐसइ बिलात प्राकृतिक स्थान है।

ऐसई बुन्देलखण्ड के टीकमगढ़ जिले में एक भौत नोनो तीर्थ इस्तान है अछरूमाता। इतै पै एक प्राकृतिक कुण्ड में से अपने आप पानी निकलता है उर इ कुंण्ड को पानी कभउ नई सूखत है। जो तीर्थ बुन्देलखण्ड के टीकमगढ़ जिला मुख्यालय सें टीकमगढ़-पृथ्वीपुर गैल पै 40 किमी. की दूरी पै स्थित है सन् 1907 में प्रकाशित गजेटियर में सोउ इ इस्थान कौ उल्लेख करो गओ है। अब से लगभग 72 वरस पैला झाँसी सें 3-4 जनन की एक मित्र मण्डली अछरूमाता के दर्शन करवे के लाने आयी हती। इ जात्रा कौ वर्णन करत भए श्री वीर ने लिखौ है कै सर्वप्रथम हम लोग एक पहाड़ी पर चढ़े। ऊपर पहुँचकर एक युवक ने एक पत्थर को हिलाया तो उसमें से जोर की आवाज निकली। फिर उसकी धूल को मस्तक पर लगाते हुए उसने बताया कि मंदिरों में जैसे घण्टा होता है वैसे ही यहाँ पत्थर है। यात्री लोग इसे बजाकर अपने आने की सूचना देते हैं। हम लोगों ने भी उसे हिलाया और पहले जैसी आवाज हुई।

इसके पश्चात् हम लोग चोटी पर पहुँचे। वहाँ मिट्टी के दो घर बने हुए है और एक मंदिर के पास एक जगह पत्थरों से घिरा हुआ एक छोटा सा घेरा था। अनेकों नये- पुराने झंडे वहाँ फहरा रहे थे। यहाँ आकर मेरे मन में उत्सुकता उत्पन्न हुई उस कुण्ड को देखने की जिसके बारे में एक विस्मयजनक बात सुनता रहता था। मैला सा पानी उसमें भरा था। हम लोगों ने भेंट चढ़ाकर प्रसाद माँगा और पण्डा जी ने हमारी ओर से विनती की। पहले पहल तो पानी में कुछ बुलबुल आये तदानन्तर अपने आप आप ऊपर आकर प्रसाद तैरने लगा। किसी को गिरी मिली किसी को जबा गेहूँ देवल और किसी को मलीदा। हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

इतने ऊँचे स्थल पर कहीं भी पानी नहीं है पर इस कुण्ड में पानी आ गया। इस पानी के ऊपर तरह- तरह का प्रसाद अपने आप कैसे तैरने लगता है पास खड़े लोगों से मैंने इसका भेद पूछा तो एक ने कहा भैया जी जगदम्बा महामाई को प्रभाव आय।

ई कुण्ड की गैराई के विषय में बिलात किंवदंतियाँ प्रसिद्ध है। कओ जात है कै एक दार एक राज्य कर्मचारी ने हमें अपनौ भालौ डारो हतो तो वो भालो तीन मील दूर पै वीर सागर के तला में निकरौ हतो। अछरूमाता के सम्बन्ध में भौतइ तरां की कथाएँ प्रचलित है। कछू जनन कौ कैवो है कै अनेक महिलाओं को माता बनवे कौ सौभाग्य इनई माता जू की कृपा से प्राप्त भओ है।

इ इस्थान कौ अछरू माता नाँव पड़वे की एक जनश्रुति है कै दक्ष प्रजापति के यज्ञ में जब कुपित होकै सती जू ने अग्नि कुण्ड में अपनी स्वयं की आहुति दयी तो भगवान शंकर सती जी के अधजरे शरीर कों अपने कंदां पै धरकै निकरे। हते तो कई जात है कै सतीजी के अँसुवाँ इतई गिरे हते। उ अंसुउन सेइ कुण्ड कौ जनम भऔ उर अँसुवाँ शब्द सेइ मुख सुख की प्रवृत्ति शिकार होकै असरू उर फिर असरू से बिगड़कै अछरू हो गऔ। पन जा बात गले नइं उतरत कि अधजरी देह से अश्रुपात होना तो कोनउ भी दशा में संभव नइयाँ कजन की दार शंकर जू की इ दुख की घड़ी में अश्रुपात होवो बताओ गओ है तो कछू अंशों में विचार करो जा सकत तो।

अछरूमाता कौ नाँव पड़ने के कारण कौ उल्लेख करत भए टीकमगढ़ के जनवा डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी ने लिखौ है कै अछरूमाता कौ नाँव अछरू यादव नाँव के एक चरवाहे की खोज के कारण भओ हैं ऐसी लोक किंवदंती है कै अछरू नाँव कौ एक बरेदी (चरवाहा) प्राचीन काल में इतै के घन जंगल में टौरियाऊ चट्टानी जगां पै बैठकै ढोर चराओं करततो। जितै वो बैठौ हतो, उतई पै एक कुण्ड हतो उतेकइ रओ बल्कि जो कछू वो डारतो उ के विपरीत उये कछू भोग प्रसाद मिल जाततो। अछरू ने इये देवी माता कौ चमत्कार ठर सिद्धि मानौ। उके बाद में उतै के भक्त जनन ने इय अछरू की माता अथवा अछरूमाता नाँव दऔ। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में जो सिद्ध क्षेत्र अछरूमाता के नाँव से प्रसिद्ध है।

इतै एक खास बात जा है कै इतै कुण्ड कों पानी परसाद के रूप में दओ जात है जिसे भौतई बुरई बसांद सोउ आत है पै फिर भी भक्तजन माता कौ परसाद मान कै पियत है उर अबै तक कोउ उ पानी को नहा कै बीमार नई परौ है बल्कि कुण्ड कौ पानी माता की कृपा सें दवा कौ काम करत है। जेई कारण है कै इतै की प्रसिद्धी एनई है। सब माता की कृपा मानत है। तबई तौ जो एक बुन्देलखण्ड कौ एक पावन तीर्थ बन गओ है।

प्राचीनकाल में केवल इतै जलकुण्ड के कारण ही अछरूमाता नाँव मान्यता प्राप्त रओ। परंतु अबै अछरूमाता एक सिद्ध क्षेत्र के रूप में विकसित हो गऔ है। कुण्ड पै एक सुंदर आधुनिक मंदिरमय सभा मण्डप, गर्भगृह एवं खुली प्रदक्षिणा कौ निर्माण हो गऔ है। गर्भ में संगमरमर की देवी की दर्शनीय प्रतिमा प्रतिष्ठित है। विशाल परिक्षेत्र में शिव मंदिर, हनुमान मंदिर नौ देवियों की मूर्तियाँ बनी है। श्रद्धालुअन कौं ठहरावे के लाने कैउ धर्मशालाएँ विशाल पक्के प्रांगणों कौ फर्शीकरण करके टीन शेड लगादय गये हैं क्षेत्र के विशाल अलंकृत प्रवेश द्वारा जलापूर्ति के लिए कुआँ उर नल की व्यवस्था है। एक बड़ौ सौ प्रवेश द्वारा सोउ बन गओ उतई पै नारियल फोरवे के लाने उर नारियल फोर के भीतर मंदिर में ले जाके परसाद चड़ाउत है। गेट के बाहरे केऊ समाज के लोगन ने अनी-अनी धर्मशालाएँ बना लयी है। जीमें निःशुल्क रैवे की व्यवस्था है। उतई पे उ समाज के लोग टीका पटा करत है।

इतै पै नौ देवियन के समय मेला लगत है लाखों लोग अछरूमाता के दरसन करवें आत है उन मन्नत माँगत हैं। अपनी मनोकामना पूरी होवे में नाच गाने के साथ फिर के आकै अपनी हाजिरी लगाउत हैं। इतै पै कजन की दार सच्चे मनसे जनानी मन्नत माँगे तो उसी सुनी गोद भर जात है सैकड़ों की गोद माता जी की कृपा सें भरी है। इतै पे आके माता के सामू मोड़ा-मोडी दिखाउत उर पसंद करत है रिश्ता पक्कौ कर है उर गरीब जने इतई पै अने बच्चन कौं व्याब करत है। दिवारी के समय पै कैउ मोनिया माता के दरवाजा में आक इतई पे अपनो मौन तोरत है।

ई तरां सें आज अछरूमाता एक पावन उर परसिद्ध तीर्थ इस्तान हैं। इतै पै सैकड़ों जने रोजउ दरसन करने आत है।

- संपादक आकांक्षा पत्रिका
जिला महामंत्री अ.भा.बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद्
शिवनगर कॉलोनी, टीकमगढ़
मो. 9893520965

फगुना बेईमान

– अभिनंदन गोइल

मनीसियन ने आदमी की इहलोक कौ परलोक सुखी बनावे धरम, अरथ, काम औ मोक्ष जे चार पुरसारथ बताए हैं, इनमें काम पुरसारथ जीवन में रस घोरबे कौ काम करत है। ऐई सें हर तरा की कला पनपत है। सूदी बात तौ जा है कै काम पुरसारथ आदमी में ''कलात्मक चेतना'' जगावे औ उए बढ़ावे बारौ कर्म है। जेऊ जीव धारियन में प्रेम औ हुलास प्रगटाउत है।

हमाए देस में बसंत उत्सव सोऊ काम पुरसारथ की धारना लएँ पुरातन काल से मनाऔ जा रऔ। ईसवी सन् की पैली सदी में वात्स्यायन ऋ षि ने जनी-मान्स के भोग-विलास सम्बन्धन पै ''कामसूत्र'' नाव कौ सास्त्र रचो तो। सास्त्र के पैले अध्याय में बंसत उत्सव मनावे कौ भौत नीकौ बरनन करो गऔ है। ऊ काल में जौ उत्सव तीन चरनन में मनाऔ जात तो। पैलो चरन धरती पै बसंत के उतरवे कौ मानो है, जिये वात्स्यायन ने सुवसंतक नाव दऔ तो। ई युग में इये अपन बसंत पंचमी के नाव से मनाउत हैं। वात्स्यायन के काल में बस्ती-बस्ती कामदेव के दिवाले हते और उनकी पूजा होत ती। सुवसंतक आवे पै आदमी प्रेम, मेल-मिलाप नचबे-गाबे और मौज-मस्ती के रंग में डूब जात तो। प्रकृति सोऊ नई दुलैया सी, फूलन सें संजी, मौरआए आमन की मदभरी गंध फैलाउत भई ई, आनंद खों कैऊ गुनौ कर देत ती। सो सुवसंतक खों जीवन में प्रेम थापित करवे वारौ औसर मानो जात तो।

हौलें-हौलें बाताबरन में ठंडक कम होत जात, कुनकुनी उरैंया अब घामें में बदलन लगत ऐसे में ई उत्सव कौ दूसरौ चरन शुरूँ होत तो, जिये वात्स्यायन ने उदकच्छवेडिका नाव दऔ तौ। ई उत्सव में कौऊ दिना लौं जनी- मान्स झुण्ड के झुण्ड जुरकें एक-दूसरे खों पिचकारियन से सुगंधित जल डार-डार के भिंझौउत ते, लगत तो जैसें प्रेम की फुहार बरस रई होए।

अब लौं उनारी की फलिंयाँ कनूकन सें भरकें पकन लगती। नाज की इन हरीं- हरीं कोंसन खों भूँज के होरा खावे को आनंद सोऊ निरालौ है। सबसें पैलें फसल की नई बाले मिल जुर के अग्नि देवता खों भेंट करवे के उत्सव कौ नाव वात्स्यायन ने अम्यूष खादिका दऔ तौ। नाज कौ होरा अम्यूष कहाउत तो। होरा करबे खावे कौ उत्सव आगें जाकें होरी औ आज के जुग में होली कहाउन लगी।

ब्रज की होरी तौ भगवान कृष्ण के जुग सेंई नामी रई है। इते बसंत पाँचे सें चैत वदी पांचे(रंग पंचमी) लों होरी मनाई जात। ई बीचाँ बिना नागा ब्रज के सबई दिवालन में भगवान कृष्ण के संगै अबीर, रंग और गुलाल सें होरी खेली जात।

मथरा कौ द्वारकाधीश मंदिर, जनम भूम मंदिर और वृन्दावन कौ बाँकें बिहारी मंदिर तौ भौतई हुलास से होरी मनाउत है। दिवालन में चंग बजाकें रास गाए और नचे जात। होरी खेलबें सें। ई होरी के पैलें लड्डुअन की होरी सोऊ होत। लोग- लुगाई एक दूजे पै लड्डुआ फैंक कें मारत तौ कैऊ मंदिरन में पुजारी भक्तन पै लड्डुआ बरसाउत।

बरसाने की लट्ठमार होरी तौ देस का विदेसन लौं एक जानी जात है। जा फागुन सुदी नौवीं खों मनाई जात। बरसाने गाँव से राधा-किसन जू की प्रेम कथाएँ जुरी हैं। ई दिना नंदगाँव के हुरयारे झुण्ड के झुण्ड राधिका जू के गाँव होरी खेलवे जात हैं। जे हुरयारे, नचत- गाउत और रंग-गुलाल उड़ाउत भए बरसाने पौंचते जितै औरतें लठियन से उनकी ठुकाई करतीं। ई मौका पै किसन जू से होरी खेलवे गोपियन खों भौउत बाठ हेरने परत ती तौ किसन जू के पौचबें पै वे खुंसया के उन पै और उनके संगै आए ग्वालन पे लट्ठ बरसाउत तीं।

सबई लोक परम्परन में होरी और वसन्त उत्सव के अपने-अपने रंग रए हैं। बुन्देलखण्ड में सोऊ होरी कौ आनंद पुराने जमाने से चलो आऔ। रियासतन के जमाने की होरी नामी हती। पैलें तौ बसंत पाँचे के दिना सरसुती मैया खौं पूज कें बुन्देलखण्ड कौ आदमी राग-रंग में डूबन लगत तो। गाँव- गाँव राई नचीं जातती। राई तौ अनूठौ लोक नृत्य है। जब नगड़िया की अरटिदार तान कानन के दरवज्जे खोल देत, ढुलकिया की ढुलक पै जोर की थापे घलतीं, ढपली के संगे झांझ-मजीरन की झंकारे गूंज उठतती, ऐसे में बेड़नी(नर्तकी) अपनौ आठकली कौ घेरदार घांघरौ पैरे औ फूल टँकी चुनरिया से भारी लामौ घूँघट घालें फिरकनी लेत ती तौ देखवे वारन के तन में तरंगे उठन लगततीं और फाग की तान सें हिये में रस- रंग की बाढ़ सी आ जात ती। मशाल के उजयारे में जौ नाच रात-रत भर होत तो, जी में कोसन दूर कौ आदमी खिंचो चलो आउत तो। जे बेड़नियाँ मुरकी, बैठकी, फिरकी, चितौन, उड़न, छू जैसी कैऊ नचबे की कलाकारी दिखा कें चित्त लूट लेत तीं। ढोलकिया सोऊ अपने करतब सें मान्सन कौ मन मो लेत ती। नाच के संगे ढुलक और झांझ- मजीरन के उतार-चढ़ाव में जब गवैया गा उठत तो, तौ आदमन कौ तन-मन फरकत तो। हल्के से छंद पै घंटन राई होत रत ती। बानगी देखियौ-

(1) फगना बेईमान
तन-मन में अगन लगावे।......

(2) जी भर खेललो फाग
बापस न आहे जुआनी।.........

(3) हँस कर लो किलोल
जाने कबै मर जाने.............

बुंदेली के लोक कवि ईसुरी, गंगाधर ब्यास और ख्यालीराम की रचीं फांगें सोऊ राई नाच कौ आनंद बढ़ाउत रई हैं। राई तौ होतई ती, दूसरे लोक नृत्य सोऊ फागुन में होत ते।

जब ओड़छा रियासत की राजधानी टीकमगढ़ हो गई ती, तौ सौऊ होरी बड़े हुलास सें मनत रई। फाग के दिना राजा के हुकम सें बाजार भर में दुकानदार अपने-अपने ड्राम, नादें औ बड़े-बड़े भौंड़े पानी से भरबा देत ते। रियासत के कारिंदे उन में कैऊ तरा के रंग घोर जात ते। पाछें सामंत, प्यादे और नामी प्रजानन रत ते। बड़ी-बड़ी पिचकारियन से राजा, जनी औ मान्सन खों रंगन सै भिंजेउत ते तौ प्रजानन उने सोऊ सराबोर कर देत ते। आँगे-आँगे ढोल मजीरन संगै बेड़नीं नचत जात तीं। प्रजाजन दो दिना तक बेजाँ रंग- गुलाल से खेलत ते, नचत गाउत ते औ भंग घोंटते ते। रंग पंचमी कछू- कछू दिवालन में मनाई जात ती। जौ सिलसिलौ देस की स्वतत्रंता लौं ई रियासत में बनौ रऔ।

कछू कऔ.......। अब तौ आधुनकीकरण, ग्लोबलाइजेसन, पर्यावरण जैसी बड़ी- बड़ी बातन के तरें हमाई लोक पम्परायें कुचर गई हैं। तोऊ होरी जैसे त्योहार समाज खौं जोरबे, प्रेम खो निखार और मेहनत को फल पाकें संतोष करन कौ संदेसी देतई रैहें।

– बाजार जैन मंदिर मार्ग
टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 9424923622

अटकन में अटकौ

- डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन'

बुन्देल खंडी भाषा कौ भौत तरा कौ साहित्य है। बुन्देली के जानकार सब जानत। ई बुन्देली भाषा में अटका सोउ एक तरा कौ पेंता फूटे। जे अटका पड़न ना तौ कम अपड़न ना उर कम पढ़े लिखे बूड़े पुरानन ना अबै भी मिल जात। जिन खोजा तिन पाइयाँ बारी बात झूठीं नइयां। अटका की छोटी बैन बतउअल किसा है। दिमाक की साजी कसरत करवे करावे के लानें जे अटका उर बतउअल किसा भौत मजेदार है। इनमें मजे की बात जा है कै इन अटकन खाँ उर इन पुरानी बतउअल किसन खां कीनें कवै बनाओ ईकौ अतौ पतौ कछू नइयां। अकेले जा पक्की बात है कै जे अटका उर बतउअल किसा बड़े ज्ञानवान लोगन की बनाई हैं जिनखां निनवारवे में दाँतन पसीना आजात।

तौ मैंने समाज में सें कछू अटका बटोरे। बटोर कें अपुन सब बुन्देली प्रेमियन खां परोस रओ सो अपुन उनकौ स्वाद लेब उर अटकन में अटकौ, नांय मांय ना सटकौ स्वाद लेव उर अटकन में अटकौ, नांय मांय ना सटकौ, अटका है हटकौ पारे सें होय ना खटकौ। अटकन में अटका रये विरथां नई भटका रये। अटकन कौ तारौ पोंचा रये। कुची अपुन से मँगा रये। तौ देखौ अटका

अटका-1

खनकीं चुरियाँ रिपटो पाँव। अब बैठो छैला कौ दाव।।

अटका-2

काम करा लओ घर जैसौ। फार विदै दओ हर कैसौ।।

अटका-3

तुमाइ मताइ ने करो बौ। तुमने करौ जौ। बताब अब

हम का करे ? जवाव में -आ जा मोरे ई पै।।

अटका-4

छै गोड़े तीन मूंड। जी में सें एक पूंछ ढूंड़।।

अटका-5

दस गौड़े दस हाँत हैं, पाँच शीस जी चार।

ज्ञानी अर्थ लगाय कें, कै दो वेद विचार।।

अटका-६

दोउ तरफ सें मौत हमारी। खसम करन गई बैन तुमारी।।

अटका-७

दस नख तौ धरनी चले, ऊपर चलें पचास।

तीन लोक की संपदा, धरें कंदन पै जात।।

अटका-८

हरि बोले हरि ने सुनी, हरि गये हरि के पास।

वे हरि तौ हरि में गये, जे हरि भये उदास।।

अटका-९

सारंग ने सारंग गहो, सारंग बोलो आय।

जो सारंग सारंग कहै, सारंग मुख सें जाय।।

अटका- १०

जबसे परी तबसें उठीअई नइयां।

अटका-११

सपर लओ, खोर लओ कर लई चुटिया।

भोजन करने होय तौ कर लो नातर पैरत है धुतिया।

अटका- १२

को जाने कब की डरी, बीत गये जुग चार।

चरन छुये सै उठ गई कर सोरउ सिंगार।।

अटका-१३

बिना जीव पैरौ लगो, घुसन न पावै चोर।

बा चोरी कैसें भई, तीन लोक में शोर।।

अटका-१४

गगन बसत पंछी नहीं, दूध देत नहिं गाय।

तीन नेत्र शंकर नहीं अर्थ देव समझाय।।

अटका-१५

जीखां बनाई ऊनें देखई ना पाई। जीने बनाई ऊके कामें ना आई।।

अटका- १६

वर मांगत वर पे गई, वर पाओ तत्काल।

वर पाये वे वर भई , पंडित करौ विचार ।।

अटका-१७

बारा गोड़े तेरा मूड़। जीमेंसें दो पूछें ढूँड़।

अटका- १८

लम्मी पूँछ लमदंता, लंक विडारन होय।

रामायन में है नहीं, हनुमान ना सोय।।

अटका-१९

समदिन कड़ गई पक्खा फोर- समदी रै गये दाँत निपोर।।

अटका- २०

माते जावें जात जात में, मातेन जाती सात जात में।

अटका-२१

श्री कौ अनुज विष्णु कौ सारौ, पंडित ईकौ अर्थ विचारौ।

अटका-२२

संगै भई तीं वैनई बैनें फिर भये ते भइया।

उनके ऊपर बाप भये, फिर भई ती मइया।

अटका-२३

एक डार तीन झूला- चीन लो अपने अपने दूला।

अटका-२४

ना तुमनें पूँछी ना हमनै बताई। मईं की बात मई रई आई।।

ई तरा से बुन्देली के अटका उर बतउअल किसन कौ अपार भंडार समाज में बिखरो डरो। इनमें वेदन की पुरानन की बातें भी हैं। सामाजिक ज्ञान की बाते हैं। ज्ञान बढावे बाई तमाम तरां की बातें हैं। बानगी के रूप में थोरी सी झलकी दई। इनकौ मतलब समाज के कैऊ जानकार ना हुइयें। गुनके चिठिया में लिखकें लेखक ना पौंचावे की किरपा अपुन जरूर करें।

- ग्राम व पोस्ट स्यावरी
वाया- मऊरानीपुर (झाँसी) उ.प्र.
मो. 9794419115

कौन जिम्मेदार है बुन्देलखण्ड में बेरोजगारी के लिये

- हरगोविन्द तिवारी

प्राचीन काल में बुदेलखण्ड जैजाक भुक्ति, चेदि, जुझौति प्रदेश, दशार्ण विंध्यइलाखण्ड इत्यादि विभिन्न नामों से जाना जाता रहा है। इतिहासकारों का यह मानना है कि बुंदेलखण्ड का वास्तविक नाम विंध्यइलाखण्ड है और उसका यह नाम विंध्याचल की तराई में बसने के कारण पड़ा । हमारे लिए यह बड़े गौरव की बात है कि गिरिराज विंध्याचल पर्वत भारतीय वन्य प्रकृति का वयोवृद्ध पितामह है और भारतीय इतिहास में गिरिराज विंध्याचल की बहुत महत्ता है जिससे हमारा बुदेलखंड गौरवान्वित है। इतिहासवेत्ताओं का यह भी मानना है कि जबसे बुन्देला क्षत्रियों ने इस क्षेत्र को अपनाया है तभी से यह बुंदेलखंड कहलाने लगा। और बुंदेलखंड के रूप में इसकी स्थापना विक्रम संवत् 1288 के आसपास की है। इसके क्षेत्रफल के निर्धारण में उत्तर व दक्षिण में क्रमशः यमुना एवं नर्मदा, तथा पूर्व व पश्चिम में क्रमशः टौंस एवं चम्बल नदियों की धारायें प्रवाहित हो रही हैं। तदानुसार प्राचीन बुंदेलखण्ड की सीमाओं के क्षेत्रान्तर्गत सागर, छतरपुर, टीकमगढ़, पन्ना, सतना, दमोह, नरसिंहपुर, बालाघाट, सिवनी, जबलपुर, मंडला, छिंदवाड़ा, होशंगाबाद, बैतूल, रायसेन, बिदिशा, गुना, ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना, दतिया, बांदा, हमीरपुर, जालौन, ललितपुर, एवं झांसी इत्यादि नगरीय स्थल सम्मिलित रहे हैं। किंतु अब वर्तमान में बुंदेलखंड क्षेत्र में कुछ बदलाव हो गया है। क्योकि प्राचीन बुंदेलखण्ड अब उत्तर प्रदेश एवं मध्यप्रदेश के रूप में अलग- अलग दो प्रांतों में विभाजित हो चुका है। ऐसी दशा में आज हमारा बुंदेलखंड सौतैलेपन का शिकार होकर उपेक्षित एवं पिछड़ा हुआ प्रतीत हो रहा है। जबकि प्राचीन काल में हमारा बुंदेलखण्ड अनेकानेक मूल्यवान वन्य एवं खनिज संपदाओं का उत्पादक एवं उद्यमी रहा है जिससे यहाँ के लोगों को पर्याप्त रोजगार प्राप्त होता रहा है।

प्राचीन काल से ही हमारा बुंदेलखण्ड कृषि एवं मजदूरी के साथ- साथ अन्य तरह - तरह के व्यवसायों पर आश्रित चला आ रहा है। जिसमें कृषि एवं मजदूरी के अलावा पशुपालन सहित दूध, घी, मक्खन, पनीर का व्यवसाय, रेशम और हाथकरघा उद्योग, कारीगरों द्वारा कलात्मक वस्तुओं के निर्माण का कार्य, स्टील एवं ऐल्युमिनियम का सामान बनाने का कार्य, सोने, चांदी एवं गिलट व धातु का सामान बनाने वाले सुनारों का कार्य, तांबे, पीतल व काँसै का सामान बनाने वाले तमेरों का कार्य, लोहे का सामान बनाने वाले लुहारों का कार्य,लकड़ी का सामान बनाने वाले बढ़ई का कार्य, मकान बनाने वाले लड़ियों और मिस्त्री का कार्य, मिट्टी के वर्तन का सामान बनाने वाले कुम्हारों का कार्य, सन के रस्सा एवं अन्य सामान बनाने वाले बुनकारों का कार्य, कपास की रूई बनाने वाले बैनों का कार्य, कपड़ो को रंगने वाले रंगरेजों का कार्य, कांच, चूड़ी इत्यादि कचेरों का कार्य, बांस के वर्तन व अन्य सामान बनाने का बसोरों का कार्य, कपड़ो की सिलाई करना दर्जियों का कार्य, बाल बनाना नाई का कार्य, कपड़ों की धुलाई करना धोबियों का कार्य, जूते बनाना चमारों का कार्य, सफाई करना मेहतरों का कार्य, दुकानदारी करना वैश्यों का कार्य, पशुपालन एवं गौ पालने का ग्वालों का कार्य, भेड़, बकरियाँ पालना गड़रियों का कार्य, तेल बनाना तेलियों का कार्य, पान के बरेजे लगाना पंसारियों का कार्य, पूजा पाठ एवं अध्ययनाध्यापन ब्राह्मणों और पंडितों का कार्य, राज पाठ चलाना और लोगों की रक्षा करना क्षत्रियों का कार्य, इसके अलावा तेल, साबुन बनाने का कार्य, एवं रंग,चूना, कलई और रेत, मुरम, मिट्टी का कार्य ईटें बनाने का कार्य, लाख, मैन, मैपर, गाद, खैर, महुआ, अचार, तेंदू, हर्र, बहेरा, आंवला, इत्यादि वनोपजों सहित जलाऊ एवं इमारती लकड़ियों का कार्य, तथा दरी, कम्बल, कालीन, जरी की कारीगरी का कार्य, कपड़ा बनाने का कार्य, छपाई, बुनाई, कढ़ाई, शक्कर, हड्डी, चमड़े का कार्य, जड़ी बूटियों सहित आयुर्वेदिक दवाओं का कार्य, चम्पा, चमेली, गेंदा, गुलाब इत्यादि फूलों के बगीचा लगाना बागवानों का कार्य, काछियों द्वारा कछवारे लगाकर विभिन्न प्रकार के फल-फूलों तथा गोभी, पतीता, बिही, नीबू, आम, जामुन, इत्यादि के उत्पादन का कार्य, इसके अलावा खेल का सामान व खिलौने बनाने का कार्य, पतंग बनाने का कार्य इत्यादि- इत्यादि अनेक छोटे- बड़े रोजगार के साधन हमारे बुन्देलखंड में प्राचीन काल से ही विद्यमान रहे हैं। इसी के साथ- साथ विभिन्न प्रकार की मजदूरी के कार्य सहित बीड़ी बनाने की मजदूरी का कार्यो भी हमारे बुंदेलखंड में प्रचुर मात्रा में होता आ रहा है जिससे लोगों की रोजमर्रा की जरूरतों की पूर्ति होती रही है।

फिर प्रजातांत्रिक शासन रूपी आधुनिक युग में कुछ समय तक हमारे बुदेलखंड में मजदूरी के कामों में बीड़ी बनाने के कार्य में अत्याधिक गिरावट नजर आ रही है। क्योंकि अब बीड़ी के स्थान पर विभिन्न प्रकार के तम्बाकू युक्त गुटखों का उत्पादन तथा उपयोग प्रचलन में आ गया है। इसी के साथ- साथ लोगों के द्वारा मजदूरी के क्षेत्र में किये जाने वाले विभिन्न कार्य भी अब मशीनों के द्वारा होने लगे हैं, जिससे लोगों के हाथों से काम चला गया है और अब अधिकांश लोग बेरोजगार हो रहे है। जिससे लोगों को अब मजदूरी के काम की तलाश में यहाँ से बाहर दूर- दूर स्थित महानगरों की ओर पलायन करने को मजबूर होना पड़ रहा है। इतना ही नहीं बल्कि पढ़े - लिखे लोगों की यानि कि शिक्षित बेरोजगारों की संख्या भी यहाँ दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। क्योंकि इस ओर सरकार द्वारा अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। बल्कि इस दिशा में सरकार द्वारा प्रलोभनकारी नीतियाँअपनाई जाकर कुछ विपरीत कदम ही उठाये जा रहे। जैसे कि सरकारी नौकारियों में नियुक्ति हेतु अलग- अलग वर्गो के लोगों को विशेष छूट एवं आरक्षण की सुविधा देने के साथ- साथ, जो लोग पहले से सरकारी नौकरियों में नियुक्त हैं उनके रिटायर होने की आयु सीमा में वृद्धि कर शिक्षित बेरोजगारों के साथ खिलवाड़ की जा रही है। इसी के साथ-साथ सरकार द्वारा वर्तमान में जनहित व जन कल्याण के नाम पर अनगिनत प्रलोभनकारी योजनायें चलाई जा रही हैं। मगर फिर भी जनहित व जन कल्याण के नाम पर उपलब्धि नगण्य ही प्रतीत हो रही है। क्योंकि सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ पाने की लालसा ने लोगों को निकम्मा बना दिया

है। चूंकि सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ बटोरने के अलावा आदमी अब कुछ और काम करना ही नहीं चाहता है। इसलिए उसकी इस प्रवृत्ति को निर्मित करने का दायित्व सरकार पर ही जा रहा है। अर्थात लोगों के निकम्मेपन की प्रवृत्ति को जन्म देने वाली हमारी सरकार ही है। यदि सरकार लोगों की खुशहाली चाहती तो उसके द्वारा ऐसे रचनात्मक कार्य जनहित एवं जन कल्याण के लिये संचालित करवाये जाते जिनसे कि लोगों को रोजगार मिलता, और रोजगार, प्राप्त करके लोग अपने- अपने परिवार की जरूरतों की पूर्ति हेतु आर्थिक रूप से सदृढ़ स्थिति निर्मित करने में सक्षम होते। मगर सरकार द्वारा ऐसा कुछ नहीं किया जा रहा है जिससे हमारे बुंदेलखण्ड में बेरोजगारी बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में सवाल यह उठता है कि आखिर कौन जिम्मेदार है बुंदेलखंड की बेरोजगारी के लिये? तो इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से हम यह कह सकते हैं कि इसका उत्तरदायित्व भी सीधा सरकार पर ही जाता है। क्योंकि किसी भी देश की अच्छी या बुरी स्थिति के लिये वहाँ की सरकार ही जिम्मेदार होती है।

अत: सरकार को चाहिए कि उसके द्वारा चलाई जा रही प्रलोभनकारी नीतियों और योजनाओं के स्थान पर कुछ ऐसे ठोस एवं रचनात्मक कार्य करवाये जावें जिनसे कि लोगों को रोजगार प्राप्त हो सके। अर्थात् सभी वर्गो के शिक्षित बेरोजगारों को समानता की दृष्टि से सरकारी नौकरियों में भर्ती का अवसर शासन के द्वारा दिया जाना चाहिए। इस हेतु शासन के अधीनस्थ कार्यरत विभिन्न विभागों में आज भी कर्मचारियों की भारी कमी नजर आ रही है। अत: सरकार को चाहिए कि शासन के अधीनस्थ कार्यरत विभिन्न विभागों में वांछित कर्मचारियों के रिक्त पदों की पूर्ति हेतु भर्ती अभियान चलाया जाकर शिक्षित बेरोजगारों को रोजगार प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया जावे। इसी के साथ- साथ बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अनेक स्थानों पर विभिन्न खनिज भंडार व वनोपजें उपलब्ध हैं जिनके संबंध में कारखानों की स्थापना करवाई जाकर बुदेलखण्ड क्षेत्र के लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाया जा सकता है। जैसे कि सागर संभाग में सागर, छतरपुर, दमोह, टीकमगढ़ जिलों के ठीक बीचोंबीच स्थित सागर जिले की शाहगढ़ तहसील के अंतर्गत कई ग्रामों में लोहा, अभ्रक, काली ग्रेंनाईट एवं साफ्ट स्टोन के भंडार तो हैं ही इसी के साथ साथ इन ग्रामों में वनोपज भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है। अत: इनसे संबंधित उत्पादों के कारखानों की स्थापना करवाई जाकर लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाया जा सकता है। इतना ही नहीं बल्कि यहाँ के हीरापुर गाँव में रॉक फॉसफेट के कारखाने की स्थापना की माँग वर्षों पूर्व से की जाती रही है, मगर अभी तक यहाँ उपरोक्त कारखाने की स्थापना नहीं हो सकी है। यदि सरकार द्वारा यहाँ रॉक के कारखाने की स्थापना करवाई जाती है तो निश्चित रूप से बुंदेलखंड क्षेत्र के सागर, छतरपुर, दमोह व टीकमगढ़ इत्यादि स्थानों के लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। इसके अलावा बुंदेलखंड के अटा, नाराहट, धौर्रा, जाखलौन, बण्डा, मोहन्द्रा इत्यादि स्थानों पर पत्थर की खदानें होने के साथ- साथ मड़ावरा में तांबे का विपुल भंडार है तथा बुंदेलखण्ड के सागर संभाग में ही पन्ना क्षेत्र सहित छतरपुर जिले की बकस्वाहा तहसील में बहुमूल्य जवाहरात, हीरा, मोती, पन्ना, माणिक, इत्यादि का भारी खनिज भंडार है। अत: सरकार यहाँ इनसे संबंधित खनन के कार्य को अपने हाथ में लेकर लोगों को रोजगार प्रदान करने के साथ- साथ भारी लाभ अर्जित कर सकती है। इतना ही नहीं बल्कि हमारे बुन्देलखण्ड क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर कई प्रकार की वनोपज सहित नाना प्राकर के खनिज भंडार उपलब्ध हैं, जिनसे संबंधित उत्पादों के कारखानों की स्थापना सरकार द्वारा विभिन्न स्थानों पर करवाई जाकर बुंदेलखण्ड की बेरोजगारी की समस्या को हल किया जा सकता है।

- इंदिरा प्रियदर्शिनी, वार्ड, तिवारी मुहल्ला
शाहगढ़, जिला- सागर, मध्यप्रदेश
मो. 9993370274

नौनों हतो बुन्देली भोजन

- गया प्रसाद वर्मा 'मधुरेश'

नौनों हतो बुन्देली भोजन, कछु कही न जात।
देशी चना चबैना छोड़े, अन्न विदेसी खात।।
भौत नौनी खातन लगै, वो महुअन की डुबरी।
कुदई बाजरा जुड़इ थुली, खा गये थरिया भरी।।
बनत हती बुन्देली लपसी, नौन मिर्च गुर डारी।
बइमें रोटी मीड़ कैं खातन लगतइ प्यारी।।
चाँवरन डार मठा को गोरस, बड़े चाव सें खाबें।
लुचई मीड़ सन्नायटे में, अनगिनती सटकाबें।।
कभऊँ फरा तौ कभऊँ बरा, घी - शक्कर में साने।
भाजी भुर्रा भटा कौ भरता, कभऊं भूल न पाने।।
कड़ी बरी और दार में, जब मीड़े फुलका माड़े।
देखो जा जंक- फूड ने अब, सबरे खेल बिगाड़े।।
जुड़इ बाजरा की रोटी खो, मीड़ महेरी खाई।
कंडन सेंक पनपतु गकरियाँ खातन भौत सुहाई।।
हारै लैं जात रये चैंतुआ, नौन मिर्च गुर डारो।
कछु न पूँछो भइया सतुआ लगे लुचइ सें प्यारो।।
जोनों हमने चटनी रोटी, मठा महेरी खाई।
तोनों जा तन में बीमारी एकऊ न घुस पाई।।
आज तौ चाय ब्रेडपकोड़ा जमकर खातई लोग।
तभई तौ अब उनके तन में लग गये हैं सो रोग।।
देखो तो सबई भूल गये घर की दूध सिमइयां।
मैंगी चाऊमीन के बिना पेट भरत है नइयाँ।।
हाय डिब्बाबन्द भोजनखों कररये लोग पसन्द।
चर्बी फूली चढ़ो मुटापा छिन गये सब आनन्द।।
तभी तो दिन दूनी बढ़ रयी गैस कब्ज बीमारी।
अब तो बी पी और सुगर ने बुरी दशा कर डारी।।
'मधुरेश' हाय की की खाँ का हम समझाबें।
आज तो लोग खड़े सड़क पै रोज विरयानी खाबें।।

- 43 जे.डी.ए.कालोनी नई बस्ती, झांसी (यूपी)

लोकनायक हरदौल का भावबोध एवं सौन्दर्य

- डॉ. कामिनी

हिन्दी में महाकाव्य की परम्परा संस्कृत से आई। पद्मावत्, रामचरित मानस, कामायनी, साकेत, कृष्णायन, एवं बुद्धचरित तक इस परम्परा के मील स्तम्भ हैं। इसी श्रृंखला में डॉ. एम. एल. प्रभाकर का ''लोकदेवता हरदौल'' महाकाव्य एक भाव पूर्ण रचना है। इसमें महानायक बुन्देला हरदौल के उदान्त चरित्र को उद्घाटित करना रचनाकार का मूल उददेश्य है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर हरदौल के जीवन के विविध प्रसंग हैं। जो 41 सर्गो (अध्यायों) में विभाजित हैं।

यह महाकाव्य हिन्दी और बुंदेली के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. एम.एल प्रभाकर द्वारा रचित है। कवि की अपनी मौलिक काव्य शक्ति ने महाकाव्य को जीवंतता प्रदान की है। युग की चिंताओं से कवि जुड़ा हुआ है। कवि की संवेदना व्यापक है। ओरछा के महाराज वीरसिंह देव की तृतीय महारानी के पुत्र थे हरदौल। इनका जन्म दतिया में हुआ था। विपुलता का विपुल श्रृंगार है हरदौल की गाथा।

बुंदेलखण्ड के हृदय द्वार है कुँ हरदौल।
बुन्देली भू के तिलक बने वीर हरदौल।
उनके पौरुष को कहो, कौन सकेगा तौल।।
गाँव- गाँव में आज भी लोक देवता कहॉय।
नेंवता देंय सकल जन, लाला कह बुलवांय।।

हरदौलदेव में बचपन से ही उन सभी गुणों और आचरणों की विद्यमानता थी, जो एक महान व्यक्तित्व में पाई जाती हैं। हरदौल का बालवर्णन मोहक है-

अधर अरुन दतियॉ सुघर सुंदर गोल कपोल।
शुक सी नीकी नासिका, कुंडल करत किलोल।।

कवि का भाषा पर पूरा अधिकार है। ऐतिहासिक तथ्यों की कवि प्रभाकर ने कल्पना के साथ रोचकता प्रदान की है। हरदौल को ये संस्कार अपने माता- पिता से मिले थे। वे एक कुशल योद्धा एवं सेनानायक, देश, धर्म, संस्कृति तथा नारीत्व रक्षा में बलिदान हो जाने वाले प्रतापी महानायक हैं। जो मुगलों को पराजित करते हैं -

शाहजहाँ सुनकर हुआ अधिकाधिक भयभीत।
हुआ भरोसा कुंवर से, वह न सकेगा जीत।।

कवि ने लोकनायक हरदौल के श्रेष्ठ प्रसंगों को कथा में समावेशित कर नूतनता प्रदान की हैं। घटनायें कथा को गति देती है और महाकाव्य की कसौटी पर खरी उतरती हैं। इस कृति में नारी सम्मान, शौर्य, पवित्र प्रेम, विश्वास और चरित्र निर्माण का संदेश रचनाकार ने हरदौल के चरित्र द्वारा दिया है, जिससे युवक-युवतियों में कर्तव्यनिष्ठा, सत्य, न्याय, स्वधर्म तथा अखंड देशभक्ति का संचार हो सके।

भारत के हृदयप्रदेश बुंदेलखंड का ऐतिहासिक वर्णन है। महाराज मधुकर शाह की धार्मिकता है। गणेश कुंवरि की महत्ता है। मधुकर शाह वंशविटप हैं। माता गुमान कुँवरि की सीख है। वीरसिंह का विषाद है। चम्पावती की ममता हैं। युद्ध वर्णन के साथ- साथ समाधि की दुल्हन नगीना का प्रणय है। हरदौल के विवाह प्रसंग के बाद पत्नी हिमांचल कुंवरि सम्भाष्य अद्वितीय है। दोनों के मन्तव्य अद्भुत हैं। हरदौल के पुत्र विजय सिंह का जन्म। सबसे मार्मिक प्रसंग हरदौल का विषपान है। झुझारसिंह का पश्चाताप और भाभी माँ चम्पावती के भावों की अभिव्यक्ति तथा हिमांचल कुँवरि का विलाप हिलाकर रख देता है-

थाल लाय चम्पा रुदन, तन मन रही झुराय,
मन मुँह निकसहिं बैन किमि, आँसू रही बहाय।
लगता है इस दृश्य से पूरा जहॉं हिल गया -
चम्पा भई अधीर हिय, हिचकी निकसहि बैन।
जहर नाहिं जेबहिं कुंवर मुझे मार नृप चैन।।

जुझार सिंह की ईर्ष्या और और पत्नी पर अविश्वास का परिणाम मृत्यु में बदल गया। यह महानायक हरदौल का सर्वोत्कृष्ट बलिदान था। जानी- मानी कथा किंतु कवि की कलम का कौशल, प्रस्तुतीकरण और संप्रेषणीयता ने कृति को सुंदर बना दिया है।

भावबोध और सौंदर्य निरूपण में महाकाव्य बेजोड़ है। नये तर्क हैं। घटनायें प्रभावपूर्ण हैं। कथानक सर्गबद्ध हैं। पात्र योजना ऐतिहासिक और नायक लोक प्रसिद्ध। भाषा में प्रवाह, सरलता और सहजता है।

भोली भाली अधिक लाड़ली बोलहिं वचन अमोले भोले।

कवि को अपनी माटी और लोक के प्रति अटूट आस्था है। बुंदेली और खड़ी बोली का मिश्रण है। गुमान कुंवरि माता का संदेश अनमोल और समसामयिक है-

समर भूमि में तुम बैरी से डटकर हरदम लोहा लेना।।
दुस्साहस फिर कभी करे ना अस शिक्षा दुश्मन को देना।।

'हरदौल मंतव्य' मे बुंदेलों की ठसक उद्घाटित हुई है-

बुंदेले है हम प्रिये, सहज कठोर स्वभाव।
सुहृद् सुरक्षा हेतु हम , बदले प्रिये प्रभाव।।

भावपक्ष के साथ-साथ कलापक्ष का सुंदर संयोजन है। लोक आस्था प्रमुख है। इस आस्था की सुगंध सदैव युगों-युगों तक सुवासित होती रहेगी।

जनश्रुतियों ने कवि की संवेदना को जगाया और इस महाकाव्य का निर्माण हुआ। वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है। चित्रमयता, प्रतीक और बिम्बों के साथ- साथ भावों का उद्वेग है। हरदौल घर- घर के आराध्य बन गये। लोकदेवता बनकर घर-घर में पुजने लगे।

हरदौल के चरित्र का यह आख्यान महाकाव्य बन गया प्रासंगिक हो गया। हमारी पहचान ओर विरासत बन गया। हरदौल हम- सबके गौरव हैं। अनंतकाल तक उनकी जीवंत स्मृति लोक में बनी रहेगी। इस यात्रा पुरुष ने लोकहित के लिये स्वयं को बलिदान कर दिया। उनका यह रूप लोकहित का सारथी है। युग की आश्वस्ति है। भारतीय संस्कृति और लोक मूल्य की आत्म आश्चर्य जनक है। 'मरे भात देने का प्रसंग हरदौल, अर्चना बन गये, पूजा, बन गये मंगल गीत बन गये।'

यूँ तो हरदौल के चरित्र पर विद्वानों द्वारा बहुत लिखा गया है किंतु महाकाव्य के रूप में कवि प्रभाकर का प्रयास स्तुत्य है। यह ओजस्वी आख्यान सबकी प्रेरणा बने और कवि का सृजन और श्रम सार्थक हो। अनेक जिज्ञासाओं का समाधान है यह महाकाव्य अपनी निजता और महत्ता के कारण इस अमरकृति का पाठकों द्वारा हदय से स्वागत किया जायेगा ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। इति शुमम्।

- नाजिर की बगिया, सेंवढ़ा जिला दतिया
मो. 9893878713

है। चूंकि सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ बटोरने के अलावा आदमी अब कुछ और काम करना ही नहीं चाहता है। इसलिए उसकी इस प्रवृत्ति को निर्मित करने का दायित्व सरकार पर ही जा रहा है। अर्थात लोगों के निकम्मेपन की प्रवृत्ति को जन्म देने वाली हमारी सरकार ही है। यदि सरकार लोगों की खुशहाली चाहती तो उसके द्वारा ऐसे रचनात्मक कार्य जनहित एवं जन कल्याण के लिये संचालित करवाये जाते जिनसे कि लोगों को रोजगार मिलता, और रोजगार, प्राप्त करके लोग अपने- अपने परिवार की जरूरतों की पूर्ति हेतु आर्थिक रूप से सदृढ़ स्थिति निर्मित करने में सक्षम होते। मगर सरकार द्वारा ऐसा कुछ नहीं किया जा रहा है जिससे हमारे बुंदेलखण्ड में बेरोजगारी बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में सवाल यह उठता है कि आखिर कौन जिम्मेदार है बुंदेलखंड की बेरोजगारी के लिये? तो इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से हम यह कह सकते हैं कि इसका उत्तरदायित्व भी सीधा सरकार पर ही जाता है। क्योंकि किसी भी देश की अच्छी या बुरी स्थिति के लिये वहाँ की सरकार ही जिम्मेदार होती है।

अत: सरकार को चाहिए कि उसके द्वारा चलाई जा रही प्रलोभनकारी नीतियों और योजनाओं के स्थान पर कुछ ऐसे ठोस एवं रचनात्मक कार्य करवाये जावें जिनसे कि लोगों को रोजगार प्राप्त हो सके। अर्थात् सभी वर्गो के शिक्षित बेरोजगारों को समानता की दृष्टि से सरकारी नौकरियों में भर्ती का अवसर शासन के द्वारा दिया जाना चाहिए। इस हेतु शासन के अधीनस्थ कार्यरत विभिन्न विभागों में आज भी कर्मचारियों की भारी कमी नजर आ रही है। अत: सरकार को चाहिए कि शासन के अधीनस्थ कार्यरत विभिन्न विभागों में वांछित कर्मचारियों के रिक्त पदों की पूर्ति हेतु भर्ती अभियान चलाया जाकर शिक्षित बेरोजगारों को रोजगार प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया जावे। इसी के साथ- साथ बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अनेक स्थानों पर विभिन्न खनिज भंडार व वनोपजें उपलब्ध हैं जिनके संबंध में कारखानों की स्थापना करवाई जाकर बुदेलखण्ड क्षेत्र के लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाया जा सकता है। जैसे कि सागर संभाग में सागर, छतरपुर, दमोह, टीकमगढ़ जिलों के ठीक बीचोंबीच स्थित सागर जिले की शाहगढ़ तहसील के अंतर्गत कई ग्रामों में लोहा, अभ्रक, काली ग्रेनाईट एवं साफ्ट स्टोन के भंडार तो हैं ही इसी के साथ साथ इन ग्रामों में वनोपज भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है। अत: इनसे संबंधित उत्पादों के कारखानों की स्थापना करवाई जाकर लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाया जा सकता है। इतना ही नहीं बल्कि यहाँ के हीरापुर गाँव में रॉक फॉसफेट के कारखाने की स्थापना की माँग वर्षों पूर्व से की जाती रही है, मगर अभी तक यहाँ उपरोक्त कारखाने की स्थापना नहीं हो सकी है। यदि सरकार द्वारा यहाँ रॉक के कारखाने की स्थापना करवाई जाती है तो निश्चित रूप से बुंदेलखंड क्षेत्र के सागर, छतरपुर, दमोह व टीकमगढ़ इत्यादि स्थानों के लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। इसके अलावा बुंदेलखंड के अटा, नाराहट, धौर्रा, जाखलौन, बण्डा, मोहन्द्रा इत्यादि स्थानों पर पत्थर की खदानें होने के साथ- साथ मड़ावरा में तांबे का विपुल भंडार है तथा बुंदेलखण्ड के सागर संभाग में ही पन्ना क्षेत्र सहित छतरपुर जिले की बकस्वाहा तहसील में बहुमूल्य जवाहरात, हीरा, मोती, पन्ना, माणिक, इत्यादि का भारी खनिज भंडार है। अत: सरकार यहाँ इनसे संबंधित खनन के कार्य को अपने हाथ में लेकर लोगों को रोजगार प्रदान करने के साथ- साथ भारी लाभ अर्जित कर सकती है। इतना ही नहीं बल्कि हमारे बुन्देलखण्ड क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर कई प्रकार की वनोपज सहित नाना प्राकर के खनिज भंडार उपलब्ध हैं, जिनसे संबंधित उत्पादों के कारखानों की स्थापना सरकार द्वारा विभिन्न स्थानों पर करवाई जाकर बुंदेलखण्ड की बेरोजगारी की समस्या को हल किया जा सकता है।

– इंदिरा प्रियदर्शिनी, वार्ड, तिवारी मुहल्ला
शाहगढ़, जिला- सागर, मध्यप्रदेश
मो. 9993370274

नौनों हतो बुन्देली भोजन

– गया प्रसाद वर्मा 'मधुरेश'

नौनों हतो बुन्देली भोजन, कछु कही न जात।
देशी चना चबैना छोड़े, अन्न विदेसी खात।।
भौत नौनी खातन लगै, वो महुअन की डुबरी।
कुदई बाजरा जुड़इ थुली, खा गये थरिया भरी।।
बनत हती बुन्देली लपसी, नौन मिर्च गुर डारी।
बइमें रोटी मीड़ कैं खातन लगतइ प्यारी।।
चाँवरन डार मठा को गोरस, बड़े चाव सें खाबें।
लुचई मीड़ सन्नायटे में, अनगिनती सटकाबें।।
कभऊँ फरा तौ कभऊँ बरा, घी – शक्कर में साने।
भाजी भुर्रा भटा कौ भरता, कभऊं भूल न पाने।।
कड़ी बरी और दार में, जब मीड़े फुलका माड़े।
देखो जा जंक- फूड ने अब, सबरे खेल बिगाड़े।।
जुड़इ बाजरा की रोटी खो, मीड़ महेरी खाई।
कंडन सेंक पनपतु गकरियाँ खातन भौत सुहाई।।
हारै लैं जात रये चैंतुआ, नौन मिर्च गुर डारो।
कछु न पूँछो भइया सतुआ लगे लुचइ सें प्यारो।।
जोनों हमने चटनी रोटी, मठा महेरी खाई।
तोनों जा तन में बीमारी एकऊ न घुस पाई।।
आज तौ चाय ब्रेडपकोड़ा जमकर खातई लोग।
तभई तौ अब उनके तन में लग गये हैं सो रोग।।
देखो तो सबई भूल गये घर की दूध सिमइयां।
मैंगी चाऊमीन के बिना पेट भरत है नइयाँ।।
हाय डिब्बाबन्द भोजनखों कररये लोग पसन्द।
चर्बी फूली चढ़ो मुटापा छिन गये सब आनन्द।।
तभी तो दिन दूनी बढ़ रयी गैस कब्ज बीमारी।
अब तो बी पी और सुगर ने बुरी दशा कर डारी।।
'मधुरेश' हाय की की खाँ का हम समझाबें।
आज तो लोग खड़े सड़क पै रोज विरयानी खावें।।

– 43 जे.डी.ए.कालोनी नई बस्ती, झांसी (यूपी)

समीक्षा -

लोकनायक हरदौल का भावबोध एवं सौन्दर्य

- डॉ. कामिनी

हिन्दी में महाकाव्य की परम्परा संस्कृत से आई। पद्मावत्, रामचरित मानस, कामायनी, साकेत, कृष्णायन एवं बुद्धचरित तक इस परम्परा के मील स्तम्भ हैं। इसी श्रृंखला में डॉ. एम. एल. प्रभाकर का ''लोकदेवता हरदौल'' महाकाव्य एक भाव पूर्ण रचना है। इसमें महानायक बुन्देला हरदौल के उदान्त चरित्र को उद्घाटित करना रचनाकार का मूल उददेश्य है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर हरदौल के जीवन के विविध प्रसंग हैं। जो 41 सर्गो (अध्यायों)में विभाजित हैं।

यह महाकाव्य हिन्दी और बुंदेली के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. एम.एल प्रभाकर द्वारा रचित है। कवि की अपनी मौलिक काव्य शक्ति ने महाकाव्य को जीवंतता प्रदान की है। युग की चिंताओं से कवि जुड़ा हुआ है। कवि की संवेदना व्यापक है। ओरछा के महाराज वीरसिंह देव की तृतीय महारानी के पुत्र थे हरदौल। इनका जन्म दतिया में हुआ था। विपुलता का विपुल श्रृंगार है हरदौल की गाथा।
बुदेलखण्ड के हृदय द्वार है कुँ हरदौल।
बुन्देली भू के तिलक बने वीर हरदौल।
उनके पौरुष को कहो, कौन सकेगा तौल।।
गाँव- गाँव में आज भी लोक देवता कहॉय।
नेंवता देंय सकल जन, लाला कह बुलवांय।।

हरदौलदेव में बचपन से ही उन सभी गुणों और आचरणों की विद्यमानता थी, जो एक महान व्यक्तित्व में पाई जाती हैं। हरदौल का बालवर्णन मोहक है-
अधर अरुन दतियॉ सुघर सुंदर गोल कपोल।
शुक सी नीकी नासिका, कुंडल करत किलोल।।

कवि का भाषा पर पूरा अधिकार है। ऐतिहासिक तथ्यों की कवि प्रभाकर ने कल्पना के साथ रोचकता प्रदान की है। हरदौल को ये संस्कार अपने माता- पिता से मिले थे। वे एक कुशल योद्धा एवं सेनानायक, देश, धर्म, संस्कृति तथा नारीत्व रक्षा में बलिदान हो जाने वाले प्रतापी महानायक हैं। जो मुगलों को पराजित करते हैं -
शाहजहाँ सुनकर हुआ अधिकाधिक भयभीत।
हुआ भरोसा कुंवर से, वह न सकेगा जीत।।

कवि ने लोकनायक हरदौल के श्रेष्ठ प्रसंगों को कथा में समावेशित कर नूतनता प्रदान की हैं। घटनायें कथा को गति देती है और महाकाव्य की कसौटी पर खरी उतरती हैं। इस कृति में नारी सम्मान, शौर्य, पवित्र प्रेम, विश्वास और चरित्र निर्माण का संदेश रचनाकार ने हरदौल के चरित्र द्वारा दिया है, जिससे युवक-युवतियों में कर्तव्यनिष्ठा, सत्य, न्याय, स्वधर्म तथा अखंड देशभक्ति का संचार हो सके।

भारत के हृदयप्रदेश बुंदेलखंड का ऐतिहासिक वर्णन है। महाराज मधुकर शाह की धार्मिकता है। गणेश कुंवरि की महत्ता है। मधुकर शाह वंशविटप हैं। माता गुमान कुँवरि की सीख है। वीरसिंह का विषाद है। चम्पावती की ममता हैं। युद्ध वर्णन के साथ- साथ समाधि की दुल्हन नगीना का प्रणय है। हरदौल के विवाह प्रसंग के बाद पत्नी हिमांचल कुंवरि सम्भाष्य अद्वितीय है। दोनों के मन्तव्य अद्भुत हैं। हरदौल के पुत्र विजय सिंह का जन्म। सबसे मार्मिक प्रसंग हरदौल का विषपान है। जुझारसिंह का पश्चाताप और भाभी माँ चम्पावती के भावों की अभिव्यक्ति तथा हिमांचल कुँवरि का विलाप हिलाकर रख देता है-

थाल लाय चम्पा रुदन, तन मन रही झुराय,
मन मुँह निकसहिं बैन किमि, आँसू रही बहाय।
लगता है इस दृश्य से पूरा जहाँ हिल गया -
चम्पा भई अधीर हिय, हिचकी निकसहि बैन।
जहर नाहिं जेबहिं कुंवर मुझे मार नृप चैन।।

जुझार सिंह की ईर्ष्या और और पत्नी पर अविश्वास का परिणाम मृत्यु में बदल गया। यह महानायक हरदौल का सर्वोत्कृष्ट बलिदान था। जानी- मानी कथा किंतु कवि की कलम का कौशल, प्रस्तुतीकरण और संप्रेषणीयता ने कृति को सुंदर बना दिया है।

भावबोध और सौंदर्य निरूपण में महाकाव्य बेजोड़ है। नये तर्क हैं। घटनायें प्रभावपूर्ण हैं। कथानक सर्गबद्ध हैं। पात्र योजना ऐतिहासिक और नायक लोक प्रसिद्ध। भाषा में प्रवाह, सरलता और सहजता है।

भोली भाली अधिक लाड़ली बोलहिं वचन अमोले भोले।

कवि को अपनी माटी और लोक के प्रति अटूट आस्था है। बुंदेली और खड़ी बोली का मिश्रण है। गुमान कुंवरि माता का संदेश अनमोल और समसामयिक है-
समर भूमि में तुम बैरी से डटकर हरदम लोहा लेना।।
दुस्साहस फिर कभी करे ना अस शिक्षा दुश्मन को देना।।
'हरदौल मंतव्य' मे बुंदेलों की ठसक उद्घाटित हुई है-
बुंदेले है हम प्रिये, सहज कठोर स्वभाव।
सुहृद् सुरक्षा हेतु हम , बदले प्रिये प्रभाव।।

भावपक्ष के साथ-साथ कलापक्ष का सुंदर संयोजन है। लोक आस्था प्रमुख है। इस आस्था की सुगंध सदैव युगों-युगों तक सुवासित होती रहेगी।

जनश्रुतियों ने कवि की संवेदना को जगाया और इस महाकाव्य का निर्माण हुआ। वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है। चित्रमयता, प्रतीक और बिम्बों के साथ- साथ भावों का उद्वेग है। हरदौल घर- घर के आराध्य बन गये। लोकदेवता बनकर घर-घर में पुजने लगे।

हरदौल के चरित्र का यह आख्यान महाकाव्य बन गया प्रासंगिक हो गया। हमारी पहचान ओर विरासत बन गया। हरदौल हम- सबके गौरव हैं। अनंतकाल तक उनकी जीवंत स्मृति लोक में बनी रहेगी। इस यात्रा पुरुष ने लोकहित के लिये स्वयं को बलिदान कर दिया। उनका यह रूप लोकहित का सारथी है। युग की आश्वस्ति है। भारतीय संस्कृति और लोक मूल्य की आत्म आश्चर्य जनक है। 'मरे भात देने का प्रसंग हरदौल, अर्चना बन गये, पूजा, बन गये मंगल गीत बन गये।'

यूँ तो हरदौल के चरित्र पर विद्वानों द्वारा बहुत लिखा गया है किंतु महाकाव्य के रूप में कवि प्रभाकर का प्रयास स्तुत्य है। यह ओजस्वी आख्यान सबकी प्रेरणा बने और कवि का सृजन और श्रम सार्थक हो। अनेक जिज्ञासाओं का समाधान है यह महाकाव्य अपनी निजता और महत्ता के कारण इस अमरकृति का पाठकों द्वारा हदय से स्वागत किया जायेगा ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। इति शुमम्।

- नाजिर की बगिया, सेंवढ़ा जिला दतिया
मो. 9893878713

तुलसी की चौकड़ियाँ.....?

- डॉ. वीरेन्द्र निर्झर

भगवान श्री राम की भक्ति में स्नात तथा उनके पावन चरित्र को लोक में परिव्याप्त करने में तुलसीदास नाम के बुन्देलखंड में अनेक रचनाकार हुए हैं। 'रामचरितमानस' के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास का नाम तो अग्रगण्य है ही। कहते हैं तुलसीदास के काल में ही एक और तुलसीदास नाम के महात्मा काशी में निवास करते थे। तुलसीदास या तुलसी की छाप से विख्यात अनेक रचनाएँ उनकी लिखी हुई हैं। डॉ. किशोरी लाल गुप्त ने उनके संबंध में काफी कुछ प्रकाश डाला है और उन्हें बुंदेलखंड का निवासी बताया है।

'बुन्देलखण्ड के रचनाकार' पुस्तक में डॉ. रामनारायण शर्मा ने राजपुर दतिया के एक तुलसीदास का परिचय दिया है। इनके लिए अनुश्रुति है कि-"हाले-फूले हम फिरैं होत हमारो ब्याव, तुलसी गाय-बजाय कैं देत काठ में पाँव" रचना इन्हीं तुलसीदास की है। डॉ. शर्मा ने ज्ञान दीपिका में प्राप्त दोहे के आधार पर इसका रचनाकाल 1831 वि. तथा रचनाकार का समय 18 वीं शदी माना है। प्राप्त दोहा निम्न प्रकार है

संवत सोरा सै गये इकतिस अधिक विचार।
सुकल पच्छ आसाढ़ की, दोज पुन्न गुरूवार।।[१]

संवत् सोरा सै गए इकतिस अधिक के आधार पर ज्ञानदीपिका का रचनाकाल 1631 वि. सुनिश्चित है। इस दृष्टि से रचनाकार का जन्म समय 1610 वि. से पूर्व होना चाहिए। यह समय तुलसीदास (गोस्वामी) के समय से मेल खाता है। कुछ लोग राजपुर वाले तुलसीदास को झांसी के किसी मठ का महन्त भी मानते हैं किन्तु हो सकता है अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में ये तुलसीदास भी काशी में ही निवास कर रहे हों।

इन तुलसीदास द्वारा रचित चार ग्रंथों के नाम हैं।।[२]

1. ज्ञान दीपिका- इसमें धर्म, ज्ञान, स्वरूप, आदि के साथ ही हरिनाम की महिमा का वर्णन हुआ है।
2. पदावली रामायण- राम के चरितामृत को लेकर सात काण्डों में पदों की रचना की गई है तथा सम्पूर्ण रामकथा का संक्षेप में वर्णन है।
3. बारहमासी- यह ग्रंथ भी रामकथा से संबंधित है।
4. हनुमान सप्तक- इसे संकट मोचन सप्तक भी कहते हैं। यह छोटा ग्रंथ है।

पदावली रामायण में लोकानुभूति के अनेक मार्मिक प्रसंग दृष्टव्य हैं। रामविवाह गीत में बुंदेलखंड की गारी गायन परम्परा की दो पंक्तियाँ देखें

तुम्हें गारी कह दीजै दूल्हा रामलला
× × ×
तुम नैनन हू तें टरत न टारे
तुम प्रीतम प्रान हमारे।

बनवासी स्त्रियों द्वारा वनगमन समय सीता से उनका परिचय लेने संबंधी एक पद देखें-

पूछत ग्राम वधू मृदुवानी।
सुन्दर श्यामल और मनोहर ये तुम्हरे को आइ सयानी
को तुम कौन दिशा तैं आए किहि पुर बसत सुमंगल खानी।
चलत पयादे पादत्रान बिन राजहंस किय कहौं बखानी।
ये दोउ वीर अवधपति सुत, मैं विदेह तनया जग जानी।
तुलसीदास सुमति जान कुमति बस, राज समय बन दीन्हे उ रानी।[३]

मुझे तुलसीदास रचित रामकथा से जुड़े कुछ फाग गीत मिले हैं। ये फाग गीत टीकमगढ़ में संकलित हुए हैं तथा चौकड़िया छन्द में हैं। डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त ने चौकड़िया और खड़ी फागों का जन्म उन्नीसवीं शती के अंतिम चरण में माना है।[४] अतएव फागकार तुलसीदास का काल उन्नीसवीं या बीसवीं शताब्दी होना चाहिए। डॉ० रामनारायण शर्मा ने बीसवीं शताब्दी के एक तुलसीदास हयारण का उल्लेख किया है , जिनका जन्मस्थान झाँसी (उ.प्र.) है, किन्तु इनकी काव्य विधा घनाक्षरी और गीत है।[५]

'बुंदेली का फाग साहित्य' शोध ग्रंथ में तुलसीदास नाम के किसी फागकार या रचनाकार का उल्लेख देखने को नहीं मिला और न बुंदेलखंडी फड़ साहित्य पुस्तक में ही ऐसे किसी फागकार का नाम समाहित है। किन्तु फड़ साहित्य की पुस्तक में पृ०240 पर सैर गायकों के अंतर्गत तुलसीदास पाठक का नाम दिया गया है। डॉ० गनेशीलाल बुधौलिया ने इसमें इनका कोई परिचय नहीं दिया। कई फागकार अच्छे सैर लेखक और गायक भी हुए हैं। हो सकता है तुलसीदास की छाप वाली चौकड़ियाँ इन्ही तुलसीदास द्वारा रचित हों। खोज का विषय है। जो भी हो राम चरित से संबंधित ये चौकड़ियाँ बुंदेली भाषा को उपकृत करती हैं। चौकड़ियाँ प्रस्तुत हैं-

काँ गओ हनूमान अलबेला, रामचन्द्र कौ चेला।
खेंचत दंड भभूत भुजन पर, लंका लड़त अकेला।
दई किलकार कूद भवसागर, कोऊ न संग सहेला।
तुलसीदास भजौ भगवानै, उर फूलन कौ सेला।।

जिदना रघुवर बान गहैंगे, कईयक सूर मरैंगे।
कुंभकरन अरु मेघनाद से, जोधा कोप करैगें।
इततें तीर राम दल घालै, लंका कलस हलैंगे।
तुलसीदास भजौ भगवानै, रावन दर्प हरैंगे।।

जो मैं हुकम राम कौ पाऊँ, सीता खोज लगाऊँ।
सात समुन्दर चुरूअन पी लऊँ, जो कबौं धूर उड़ाऊँ।
सोने की गढ़ लंक बनी है, सो सब खोद बुआऊँ।
तुलसीदास भजो भगवानै, समुदँन कीच मचाऊँ।।

पूछें भरत बतादो माई, कहाँ गये रघुराई।
कहँ गई जनकसुता महरानी, कहँ गये लछमन भाई।
कहँ गये अवध नरेस, अवध जो सूनी पाई।
तुलसीदास भजौ भगवानै, कहा रची रघुराई।।

बालम उजरे बाग तुम्हारे, फेर करत रखावारे।
बँदरा एक बाग में आओ, जड़ स्यों पेड़ उखारे।
बड़े बड़े झाड़ हते बिरछन के, लगत हते अँदयारे।
तुलसीदास भजौ भगवानै, गरब करो सो हारे।।

लछमन सीता कौन हरी रे, ऐसी मौन धरी रे।
गेर भवन रामा फिर आये, सूनी डरी मढ़ी रे।।
कै हर लै गओ लंकावारो, कै बन भूल गई रे।
तुलसी सोस भयो ईसुर खों, बिपत में बिपत परी रे।।

लंकै सीता के पत आये, हनूमान लै आये।
नौ छोनी दल पदम अठारा, बंदर रीछ लै आये।।
बीस भुजा दस सिर रावन के, पल में काट गिराये।
तुलसीदास भजौ भगवानै, मेघनाद मरवाये।।

सोचैं रामचन्द्र जू मन में, कौन लड़ै ई रन में।
मेघनाद ने सकती मारी, लछमन जू के तन में।
भरी समाज मूरछा आई, गिरे पछार धरन में।
तुलसीदास भजौ भगवानै, रावन मारौ छन में।।

सोभा का बरनौ वा दिन की, दसरथ नँद नंदन की।
जब दोइ कुँवर बगीचन आए, बरसा भई फूलन की।
आगै हाँती चलै इंद्र कौ, पीछूँ फौज तुलसीदास
तुलसीदास भजौ भगवोने जोड़ी राम लखन की।।

भगवान राम (विष्णु) के चरण कमलों से निकली माँ गंगा के स्तवन में दो छन्द-

मन में भजौ सिया रघुराई, जेई बड़ी चतुराई।
जिनके पग सें गंगा निकरी, छुअत अधम तर जाई।
गरभ माँज की खबर जो राखें, गुरू ने मंत्र द्रिढ़ाई।
तुलसीदास भजौ भगवाने, पारंगत हो जाई।।

तुमकौं जै जै गंगा माई, हौ संतन सुखदाई।
मैया तुम तौ अधम उधारन, छुवत अधम तर जाई।
ब्रह्म लोक में लई भगीरथ, संकर सीस चढ़ाई।
तुलसीदास भजौ भगवानै, पारंगति हो जाई।।

तुलसीदास की प्राप्त चौकड़ियें में एक चौकड़िया का मात्रा विधान 16-15 की यति गति पर निर्मित हुआ है। चौकड़िया देखें- यह खड़ी फाग का नमूना है

समझा रही मँदोदर सुनौ पिया, कैसें मान है मोरो जिया।
जीते न जायँ अजय रघुराई, जनक सभा में हारो हिया।
खर दूसन त्रिसरा कौ मारो, बाल कों एकई बान किया।
तुलसीदस मूढ़ मत रावन, ना काहू कौ कैना किया।।

संदर्भ ग्रंथ-

1. बुंदेली के रचनाकार ग्रंथ-डॉ. रामनारायण शर्मा, पृ०103
2. वही, पृ०104
3. वही, पृ० 104
4. बुन्देली फागकाव्य एक मूल्यांकन-डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त (लेख)पृ०28
5. बुन्देली के रचनाकार ग्रंथ-डॉ. रामनारायण शर्मा पृ० 337
6. बुंदेलीखंडी फड़ साहित्य-डॉ. गनेशीलाल बुधौलिया पृ०240
7. फागें चौकड़याऊ-संग्रह कर्ता-उदय शंकर शील

- न्यू इंदिरा कॉलोनी,
पार्ट-बी, बुरहानपुर (म.प्र.)
मो. 9425957297

मोरी बिटिया

- ओ.पी. रिछारिया ''शिशु''

जा मोरी बिटिया कर है
इक दिन जग उजियारो
सुन लो सब जा बाप मताई।
पैलाँ बिटिया करें- पढाई।।
अठरा-ऊपर करो सगाई।
कच्ची माटी - बारी उमरिया।।
पैलाँ इये सँमारो।
जा मोरी बिटिया कर है।
एक दिन जग उजियारो।।
विधना नें जो खेल रचाओ
लरका बिटिया एक बनाओ
अब तो मानस धरम निभाओ।
भेद- भाव को, विध्न डार हो
कैसे हुइऐ नँदारो।
जा मोरी बिटिया कर है
एक दिन जग उजियारो।।
चेत जाओ सब- करौ उपाय जो।
धन- दौलत और-दान-दायजो।
त्याग देव सब,- होऐ चाय जो।
सो कन्या दान से, भारी का है।।
सोचो- तनक- बिचारो।
जा मोरी बिटिया कर है।।
एक दिन जग उजियारो।

वतन पै अपने मिटवे वाली।
कबउ है दुर्गा कबउँ वा काली।
भारत की है शान - निराली
चाँदी की लोलैयाँ लागे
सोने की- भुनसारो।
जा मोरी बिटिया कर है
इस दिन जग उजियारो।।

- रिछारिया घाट, परकोटा, सागर
मो. 9755811972

तालवेहट जनपद के हनुमान एवं शिव मन्दिर

– आचार्य डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त

'संस्कार और संस्कृति' स्थान विशेष की विशिष्ट पहचान होते हैं। भारत देश की पहचान 'वसुधैव कुटुम्बकम्' या 'विश्वबन्धुत्व' से इस धरा धाम पर अपना पावन उन्मेष विखेरती आई है। इसी प्रकार इस देश के सहस्राधिक ग्राम, जनपद एवं नगर अपने सांस्कृतिक सौहार्द्र तथा मानवीय जीवन मूल्यों के संरक्षण से इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर अपनी शोभन छबीली छटा से अनवरत अपनी प्रदीप्ति से पुण्य प्राप्त है। उत्तरप्रदेश के ललितपुर जिला का एक प्यारा सा मनोरम कस्बा जो प्रकृति की पवित्र अङ्क में अपने अनुपमेय अस्तित्व को सँजोये हुये है, अपने राष्ट्रभक्ति के गौरव से अपनी प्रभूत गरिमा को अभिव्यक्त करता है। यहाँ की सुशोभन संस्कृति सत्य शिव और सौन्दर्य की संस्कृति है। यहाँ के सुसंस्कृत निवासी सत् चित और आनन्द की त्रयी से ओतप्रोत हैं। इस सबका आधार श्रीराम की कृपा प्राप्त हनुमान् तथा सदा एक रस रहने वाले जगत् कल्याणकर्ता समता के देव शिवजी की शुभ मूर्तियों का प्रतिष्ठापन है। इस छोटी सी पावन नगरी 'ताल वेहट' में इन देवों के महिमामय विग्रह के विषय में यहाँ संक्षेप में परिचय देने का उपक्रम दृष्टव्य है।

महान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी राजा मर्दनसिंह के शौर्य से प्रदीप्त तालवेहट जनपद, जिला ललितपुर (उत्तरप्रदेश)का एक महत्वपूर्ण अङ्ग है। यशस्विता प्राप्त परम धार्मिक इस लघुनगर की पहचान यहाँ सुस्थित अनेकानेक मन्दिरों तथा विशाल तालाब से है। लगभग तीन किलो मीटर लम्बे और एक किलोमीटर चौड़े इस तालाब में सदैव भरपूर निर्मल जल हिलोरें लेता है। इसी के नाम पर इस पुर का नाम 'तालवेहट' प्रसिद्ध हुआ। तालवेहट का सुदृढ़ किला भी पुरातत्व की दृष्टि से अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। लगभग तीन किलो मीटर लम्बाई लिये हुये यह किला अपनी सुशोभन प्राचारों अनेकानेक कक्षों उत्कृष्ट शिल्प युक्त गुप्त एवं प्रच्छन्न सुरङ्गों तथा तृषापूर्ति हेतु अविरल जलधारा से आज भी सुरम्यता एवं आकर्षण का केन्द्र है। तालवेहट की सुषमा और आभा यहाँ की प्राकृतिक पावनता से पूर्णतया सम्पन्न है। यहाँ के किला की मान्यता आज भी परम प्रभावी है। इस किला की निर्मिति की दास्तान अचम्भित करने वाली है। कल या यान्त्रिकी व्यवस्था विहीन पन्द्रह सोलहवीं शताब्दी में ऐसे अद्भुत स्थापत्य का अभेद्य निर्माण किसी अलौकिक अदृश्य शक्ति के बिना सम्भव नहीं। अथवा यों कहें कि अकथ तपस्या के पुण्य के बिना यह असम्भव कार्य है। इस किला के पश्चिम में आज नागर वस्ती है जिसमे सभी वर्ग, वर्ण एवं सम्प्रदाय के अधिकांशत: अधीत या पढ़े लिखे लोग निवास करते है। यह पूरा नगर पर्यावरणीय दृष्टि से पवित्र एवं स्वच्छ प्रदृष्ट है।

तालवेहट नगर हनुमान एवं शिवमन्दिरों की बहुलता का प्रस्थान है। तालाब के पश्चिम किनारे अनेकानेक हनुमान एवं शिवमन्दिर हैं। बाहर कोट पर तालाब किनारे ही पहले हनुमान मन्दिर तथा इस के समीपस्थ ही हजारिया महादेव की लुभाविनी प्रभावी मूर्ति विद्यमान है। यह मूर्ति मन्दिर के भीतर ही विराजमान है। इस मूर्ति से लगभग सौ मीटर के फासले पर एक शिवालय में शिवजी सहित उनका पूरा परिवार विद्यमान है। यह बड़ा सिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिर के समीप में ही अंगद और हनुमान जी की मड़िया है। इन दोनों मन्दिरों तथा मड़ियों से लगा हुआ लम्बा चौड़ा चबूतरा तालाब में उतरने को सीढ़ियाँ तथा कई गुर्जा बने हुये हैं। इस पूरे परिसर की पवित्रता में एवं पुण्य अर्जन की दृष्टि से वर्ष में यहाँ एक बार मेला का भी समायोजन होता है। ताल वेहट के इस तालाब की लम्बाई पर्याप्त है। इसके उत्तर पश्चिम मे तालाब के किनारे ही एक और हजारिया महादेव की दिव्यमूर्ति है। प्राण-प्रतिष्ठित होने से यह शिवमूर्ति भी दर्शकों तथा अर्चना पूजा करने वालों को परम प्रभावित करती है।

तालवेहट मन्दिर-वाहुल्य नगर है। श्री हनुमान जी के यहाँ पर शताधिक मन्दिर दृष्टिव्य हैं। ध्रुवकुटी के हनुमान, लंका के हनुमान, अंजनी के हनुमान बार कोट के हनुमान, स्टेशन रोड के हनुमान, अगरिया हनुमान, खेर वारा के हनुमान आदि हनुमान-विग्रह तथा उनके मन्दिर यहाँ मनोरम रूप में दर्शनीय हैं। इन मन्दिरों में विराजमान रामभक्त हनुमान की मूर्तियाँ प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न होने से सिद्ध भी हैं। अन्त: करण-विशुद्ध व्यक्ति इन हनुमत मूर्तियों के समक्ष प्रत्यक्ष होकर इनके दर्शन से अविलम्ब लाभान्वित होता है। भारतीय वाड्मय में चौदह विद्यायें प्रतिष्ठित हैं। यथोल्लेख है कि

पुराण, न्यायमीमांसा धर्मशास्त्रङ्‌ गमिश्रिता:।
वेदा: स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश।। (पास्कर समृति)

अर्थात, पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र छद्व वेदाङ्ग (व्याकरण, कल्प, निरुक्त, शिक्षा, ज्योतिष और छन्द)तथा चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्व वेद) ये चौदह विद्यास्थान हैं। उपर्युक्त सभी विद्याओं एवं विद्यास्थानों का योग क्षेम अध्यात्म विद्या से होता है। यथोक्त है कि –

प्रदीप: सर्वविद्यानामुपाय: सर्वकर्मणाम्
आक्षय: सर्वधर्माणांशश्वदान्वी क्षिकी मता।।

कौटिलीय अर्थशास्त्र 1-2-1

अर्थात् आन्तीक्षिकी विद्या समस्त विद्याओं का दीपक, सबकार्यों की सधिका एवं सब प्रकार के वैदिक तथा लौकिक धर्मों की अक्षय स्वरूपा है।

अस्तु, आन्वीक्षिकी या अध्यात्म विद्या षड्विकारों से मुक्तकर षड्सम्पत्तियों की प्रदात्री बनकर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। इस अध्यात्म से ही व्यक्ति अपने इष्ट से सान्निध्य प्राप्त करने में सक्षम होता है। पुनश्च माया-मुक्त होकर आत्मदर्शन से परमानन्द प्राप्त करता है।

हनुमान् जी और शिवजी इस कलह पूर्ण कलिकाल को काटने के लिये सर्वशक्तिमान् हैं। ॐ हनुमते नम: और ॐ नम: शिवाय ये सरल सुबोध मंत्र इन सिद्ध प्रसिद्ध देवों के सान्निध्य के लिये पर्याप्त हैं। इन देवों का सच्चिदानन्द रूप दर्शन उक्त मंत्रों से सहज हो जाता है।

निष्कर्ष यह है कि 'परम अलौकिक शक्ति' श्रीमद्‌भगवद् गीता के अनुसार विविध देवों के माध्यम से अपनी पूजा स्वीकार कर व्यक्ति की अभीष्ट सिद्धि करती है। यथोल्लेख है कि –

''येऽप्यन्य देवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विता:।

सीताराम खरे की रचनाएँ

– सीताराम खरे 'चातक'

बुन्देली-गज़ल

ओठ तुमाए जैसें फूल की पखुरियाँ।
खुलत- लगत जैसें खिल रईं कलिया।।
तरसा रईं डूबा खाबे को
गड़ा परीं गालन की पुखरियाँ।।ओठ तुमाए।।
होत लाल छूतई गाजर सीं।
लरम- गरम तेरी पतरी उँगरियाँ।।ओठ तुमाए।।
बदरई - सी चंदा नों लग रई।
रिरफ-रिरक गालन पै लटुरियाँ।।ओठ तुमाए।।
छोके मठा घाई तिलयानों जीरौ।
नोनी है चातक तेरी नेंन पुतरियाँ।।ओठ तुमाए।।

बदरिया बरस रई

फेरी दै रए है बड़े - बड़े ताल-तलैया सिमिट गईं।
नदिया की तेज भई धार, बदरिया बरस रई।।
ऐसी खुशी छाई गुन अपने सब भूले।
काँटिन से भरे भए बँमूरउ तौ फूले।।
ढरकोंना ढरके पहारनाँ बदरिया बरस रई।।
धरती की थरिया में हरयाली नाँ दई।
पटियाँ -सी परी रेत, नदिया की काँ गई।।
पानी सें दबे दोई किनार।।बदरिया बरस रई।।
गहरी खूबई बह रईं नदयाँ।
परत खरेल उचक रईं नरियाँ।।
जैसें छोटिन के बड़िन के विचार।।बदरिया बरस रई।।
बागन में कोइलिया कुहू-कुहू बोल रई।
पुरबैया हबा संग झूम-झूम डोल रई।।
पतन पै मेल फुआर।।बरदिया बरस रई।।
माँदी से हात रचें मोंड़ी जुर पैलें।
जुरमिल कें रोजई चपेटा जा खेले।।
बेंन- भैया कौ आरवो त्यौहार।।बदरिया बरस रई।।

चौकड़ियाँ

1. घूँघट दएँ धोती पतरी कौ,लखतइ लगतई नीकौ।
रेत चढौ जल दिखा रऔ ज्यों, नदिया कम गहरी कौ।।
अँखियाँ चिलकें ऊपर करतन, तन जैसें मछरी कौ।
'चातक' पूरौ रूप दिखा गऔ बनी ठनी सुघरी को।।
2. बूंदा धरतन में मुस्काबें मन कों खुदई रिझाबै।
तकता दुखी होत कै का भवो हम कों दूर हटावै।।
बड़े भाग बूंदा के कइएं माथे पै चढ़ जाबै।
'चातक' भाग बिगर गऔ ऐंनई हमें न तनक छुआबै।।
3. काऊ दिन बाँसन पै लद जैहौ, देखत तब का कै हौ।
बड़ी ठसक है जिन घरकिन की, कछू नई कै पैहौ।।
बिछे कांस पै सूदे होकें, सुतई से कस जै हौ।
'चातक' घरकेई काढ़े फिर हैं, किये उरानो दैहौ।।
4. जौतन पानी कौ बरबूला, काये में तें भूला।
रच- रच हड़ौ महल कोठी जे, धन दौलत में फूला।।
आने तरेंई चढ़ा लो कितनोऊँ मिचकी दै-दै भूला।
'चातक' नेकई में मिट जैहै धूरा सौ घरघूला।।

– भाण्डेर(दतिया) म.प्र.
सम्पर्क- 9630171884

– पृष्ठ ५६ का शेष ....

तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधि पूर्वकम्।।''
श्रीमद्भगवद्गीता – 9-23

श्री शिवजी और श्री हनुमान जी दोनों ही स्वयं महान् भक्त एवं महातपस्वी हैं और उनका मानना भी है कि परमात्मतत्त्व का स्मरण न करना ही व्यक्ति के लिये विपत्ति का कारण है। यथा प्रदृष्ट है कि –

''कह हनुमंत विपति प्रभु सोई। जब तब सुमिरन भजन न होई।।''
रामचरितमानस – 5-31-3

तालवेहट, जिला ललितपुर (उ.प्र.) में श्री हनुमान् और श्री शिवजी के तप: पूत विग्रह दर्शनीय तो निश्चित रूप से हैं, साथ ही सद्बुद्धि-प्रेरक तथा सन्मार्ग प्रदर्शक भी है। वस्तुत: इन्हीं सिद्ध मूर्तियों से यह 'तालवेहट' कस्बा एक सुतीर्थ के रूप में अखिल बुन्देलखण्ड में अपनी छबीली छाप बनाये हुये है। इसे बुन्देलखण्ड का गौरव कहें, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। बुन्देलखण्ड का इस पवित्र भूमि का दर्शन और यहाँ विराजित हनुमान् जी और श्रीशिव-दर्शन मानव मात्र एवं प्राणि मात्र के योग क्षेय का कारक हैं। ऐसा पूर्ण विश्वास है।

– श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता भवन,
उद्योगविभाग के पास, सिविल लाइन्स, दतिया (म.प्र.) 475661
मो. 9826249448

बुन्देली - गज़ल

– दिव्य यादव

उठत भोर गलयारें कक्का
बैठे कुर्सी डारें कक्का
आबरन खों जुआ खिलाबें
अधिक ब्याज के मारें कक्का
जियै पंच ना सुलझा पावें
लैकें लाँच निबारें कक्का
जीनें दैदय नँइ लै पाये
बैठे लाख डकारें कक्का
मो पे कहबें रहौ प्रेंम से
पाँछे सें हुलकारें कक्का
देख सकें ना बनत का उकी
बनते काम बिगारें कक्का
निकरत देखें नई नबेली
खाँसी बिना खकारें कक्का
बड़े-बड़े नेतन सें अपनी
'दिव्य' गोट बैठारें कक्का।

– 799-ए कोंच तिराहा एट, जालौन, उ.प्र.
मो. 9450295164

बुन्देलखण्ड के लुप्त होते आँचलिक खेल

- रवि शंकर पाठक

मनुष्य इस संसार में ईश्वर की अनुपम कृति है जो 'उत्तम सुख निरोगीकाया' अथवा 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निवास करता है' जैसी स्वास्थ्यपरक सार्थक उक्तियों के मर्म को अपने ह्रदय में संजोए आदिकाल से ही शारीरिक एंव मानसिक स्वस्थता के प्रति सदैव सजग एवं समर्पित रहा है। जिसके लिए वह देश, काल और परिस्थिति के अनुसार उपलब्ध संसाधनों का दैनिक जीवन में अवकाश के समय व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से उपयोग एवं प्रयोग करता आया हैं।

बुन्देलखण्ड के ग्रामीण अंचलों में रहने वाले हमारे पूर्वज मनोरंजन, शारीरिक स्वस्थता एवं थकान मिटाने के लिए अनेक खेल खेलते आए हैं,क्योंकि बिना किसी भेदभाव के लोगों को एकता के सूत्र में बाँधना खेलों की मूलभावना होती हैं पूर्वकाल के कुछ खेल तो आज भी ग्रामीण जनजीवन में प्रचलित है किन्तु बहुत से लुप्त हो गए हैं या लुप्तप्राय हैं। उनमेंसे कुछ इस प्रकार हैं-

रेंचकुआ- पैनी नोंक वाली एक मोटी सी लकड़ी को धरती पर गाड़कर बीच में गड्ढा की गई कुछ धनुषाकार मोटी लकड़ी को गड़ी लकड़ी की नोंक में फँसा दिया जाता है। तथा गड़ी हुई भौंरा लकड़ी के दोनों ओर दो पतली लम्बी लकड़ियों को ऊपर की लकड़ी के दोनों सिरों पर बाँधकर कुछ नीचे इस उद्देश्य से लटकाया जाता है ताकि दोनों सिरों पर बैठने वाले बच्चे उन पर पैर रख लें एवं गिरने के भय से मुक्त रहें। बच्चे लत्ती मारकर यथाशक्ति गोल-गोल घूमकर रेंचकुआ अर्थात् 'पुष्पिन' का जी भरकर आनंद लेते हैं।

छुबा-छुबउअल- ग्रामीण अंचलों में यह खेल जल,थल एवं नभ में खेलने का प्रचलन पाया जाता है। पानी का छुबा खेलने के लिए तैराकी जानने वाले बच्चे विशाल और गहरे जल स्त्रोत की कगार से मुंगरिया,कुसिया,मुंडकस, चित्त, फद्द आदि पद्धतियों से जल में कूंदकर अपने साथी तैराकों के साथ कभी डूबकर,कभी उतराकर तो कभी उड़न खटोला तैरकर परस्पर छूने का प्रयास करते हैं तो कभी दाम देने वाला खिलाड़ी दूसरों को छूने का प्रयत्न करता है जिससे शारीरिक व्यायाम व मनोरंजन हो जाता है जमीन पर लड़के-लड़कियाँ दोनों अपने सजातीय साथियों के साथ यह खेल खेलते है। दाम देने वाला अपने अन्य साथियों को दौड़कर छूने का प्रयास करता है। वह जिसे छू लेता है।, दाम उस पर चढ़ जाता है इस खेल का तीसरा रूप पेड़ पर चढ़कर 'छिलो डंडा' अर्थात् सिलो डंडा खेलने के रूप में देखने को मिलता है।

अटकन-चटकन - यह बुन्देलखण्ड के ग्रामीण बच्चों को अतिप्रिय लगने वाला खेल है। बच्चे अपने घर की बखरी, पोंर, दुगई या दोरे के चोंतरा पर बैठकर गोलाकार घेरा बनाने के बाद जमीन पर अपने हाथों के पंजों की अँगुली लगाकर पंजों को कुछ ऊपर उठाते हैं। एक बच्चा अपने हाथ की तर्जनी अँगुली को एक-एक पंजे पर स्पर्श कराता है और बार-बार सभी के पंजों पर अँगुली रखता हुआ गीत गाता है- 'अटकन, चटकन, दही चटोकन, बाबा ल्याए आँवरीं-चाँवरी, एक कटोरा फूटो, सास-बहू ने लूटो, सास कें भओ लरका, बिछा दे माई पलका, इसके साथ ही दोनों पक्षों में हास्य-विनोद हेतु प्रश्नोत्तर होने लगते हैं- जो घोड़ा काँको, बंबई कौ, काए खों आओ, पानी पीबे, हमें नई पिबाउने, राजा से गोली घलवा दैवी, पट्ट घोड़ा पानी पी जा। गीत का शब्द जिसके पंजे पर समाप्त होता है वह हथेली निकाल ली जाती है। इस प्रकार एक-एक करके सभी पंजे निकाल लिए जाते हैं। बुन्देली के ज्ञाता इस खेल व गीत का संबंध सीता स्वयंवर से जोड़ते है।

इक्की-दुक्की - यह मुख्यत: लड़कियों का खेल है। लड़कियाँ साफ सुथरी समतल धरती पर गौरा मिट्टी से दो लम्बी और दो छोटी सिरो-रेखाएं खींचकर एक वर्गाकृति बनाकर उसे बीच में रेखा डाल कर दो भागों में विभाजित करने के बाद पाँच आड़ी रेखाएं डालती हैं, जिससे मूल वर्गाकृति बारह उप वर्गाकृतियों में बँट जाती है। खेलने वाले मिट्टी अथवा पतले पत्थर की गपई को उल्टे खड़े होकर घरों में फेंकते हैं। जिस घरे में गवई गिरती है वह फेंकने वाले खिलाड़ी का व्यक्तिगत विश्राम घरा बन जाता है, किन्तु वह दूसरे के लिए कष्टकारी हो जाता है। क्योंकि जब वह अपनी 'गपई' सीधे होकर घरों में डालता है तो उसे एक टाँग से उचक-उचक कर गपई वाले घरे को, तो कभी दूसरे के विश्राम घरे को भी एक पैर से छलाँग लगाकर पार करना पड़ता है। यदि खिलाड़ी का पैर पराए घरों में या रेखाओं पर पड़ जाता है तो उसको 'जलन' मानकर खेल से बाहर कर दिया जाता है।

रकत-भदूना- यह खेल मूलत: छोटे बच्चों का है, जो कि बहुत ही सरल है। एक दल के बच्चे अपनी मुट्ठियों में धूलभरकर गोपनीय स्थानों पर छोटे-छोटे अनगिनत ढेर अर्थात् रकत-भदूना रखते हैं और दूसरे दल को उन्हें खोजकर गिनने के लिए कहते हैं। पूरे गिनजाते हैं तो कोई बात नहीं। किन्तु शेष रह गए रकत भदूनों की गिनती के बराबर विपक्षी खिलाड़ियों को घूंसे भी खाने पड़ते व हार माननी पड़ती है। खेलते समय बच्चे तेज गति से दौड़ते हुए यह लघुगीत गाते जाते हैं-'रकत भदूना ढिल्ली डोर, पड़वा छूटो लम्मी डोर'। इस खेल से बच्चों में गणना संबंधी ज्ञान का सरलतम ढंग से विकास हो जाता है तथा अपनी प्रतिभा का परिचय देने के सुअवसर मिलते हैं।

लीपापोती- इस खेल में बच्चे घेरा में बैठकर अपने हाथों के पंजे पट्ट रखकर एक के ऊपर एक करके धरती में रखते है। तब तक बच्चा अपने पंजे को सबसे ऊपर रखे पंजे पर रगड़ कर कहता है - 'लीपापोती जनि करिया, दिया दिखाई दै दइयो।' और ऊपर के पंजें में चोंटिया लेते हुए कहता है - 'चींटा लओ कै चिंटिया।' यदि अन्य बच्चों द्वारा 'चिंटिया' कहा जाता है तो धीरे से 'चौंटिया' लेकर और यदि 'चींटा' कहा जाता है तो जोर से 'चोंटिया' लेकर पंजे अलग किए जाते है इस प्रकार सभी पंजों की लीपा-पोती हो जाने पर खेल समाप्त हो जाता है। इसे लड़के-लड़कियाँ अलग-अलग खेलते हैं।

इत्तन-इतन पानी - यह लड़कियों का खेल है। इसमें पाँच सात लड़कियाँ एक-दूसरे के हाथों को मजबूती से पकड़कर एक घेरा बनाती हैं। घेरा के बीच में खेल का नेतृत्व करने वाली लड़की अपने शरीर के विभिन्न अंगों को स्पर्श कर भाव-भंगिमाएँ दिखाती हुई कहती है 'इत्तन इत्तन पानी' उत्तर मिलता है -''घोर घोर रानी '' और घेरा वाली लड़कियाँ ऊपर-नीचे हाथ हिलाने लगती हैं।

कंचा - यह चिरंगा या काँच की गोली भी कहलाते हैं। यह मुख्यत: लड़कों का खेल है। दो या दो से अधिक लड़के मिलकर कई प्रकार से कंचा खेलते हैं। जैसे- कुइयापार, टिहुनी घिट्टा, टुका आदि। कुइया पार में बच्चों द्वारा दाव में लगाए गए चिरंगों का एक खिलाड़ी मुट्ठी में भरकर 'कुइया' की ओर पारते समय ध्यान रखता है कि कंचा ज्यादा मात्रा में कुइया या गुच्ची में पिल जाएँ। इसके बाद खिलाड़ी 'लड़का' से अन्य साथी द्वारा संकेत किए कंचे में चोट मारता है । निशाना सही

बैठने पर वह सभी कंचे जीत जाता है। निशाना सही न लगने पर दूसरा खिलाड़ी शेष चिरंगों को पारता है। खेल का यह क्रम लगातार चलता रहता है। यदि पूर्व के खिलाड़ी एक भी कंचा न जीत पाएँ, तो अंतिम खिलाड़ी के जीतने पर कहा जाता है – 'मीला दोला कछू न पावै, कच्ची ढाई उठावै।' टिहुनी घिट्टा में खिलाड़ी अपने चालू हाथ की मध्यिका या तर्जनी से कंचा लगाकर बल पूर्वक दूसरे खिलाड़ी के कंचे में चोट मारकर कुइया से दूर ले जाकर उसे पिदने के लिए छोड़ देता है। तब पिद्दी खिलाड़ी अपनी कोहनी से कंचे को मारता हुआ कुइया में पिलाने का प्रयास करता है और कई बार तो उसकी कोहनी से खून भी निकलने लगता है। कुइया में कंचा पिल जाने पर पिद्दी बरी होकर किसी को भी पिदा सकता है क्योंकि खेल के नियम तो सभी पर समान रूप से लागू होते हैं।

थाई-थाई थप्पी – यह छोटे बच्चों का खेल है। एक बच्चा दूसरे के पंजे को पकड़कर उसकी हथेली में अपने पंजे से धीरे-धीरे थपकी मारकर सभी दर्शकों का मनोरंजन करते हुए गीत गाता है। थाई-थाई थप्पी गइया ब्यानी बच्छी, नॉव धराओ गणेश, इसके बाद एक-एक अंगुली को पकड़कर कहता है – जा मताई की, जा बाप की, जा बैनकी, जा भईया की। फिर अपनी दो अँगुलियों को उसकी बाँह पर चला कर काँख की ओर ले जाते हुए कहता है – 'डूँड़ा बैला आओ है, और गुदगुदाते हुए कहता है' गुलूगूलू के, गुलूगुलू के और सभी जी भरकर हँसते हुए लोटपोट हो जाते हैं।

तेली के तमोली के – घर के बुजुर्ग फुरसत के समय अपने छोटे बच्चों के साथ खेलकर आनंद लेने के साथ उनके प्रति अपना स्नेह प्रकट करते हैं। घर का कोई सदस्य धरती पर चित्त लेटकर या खटिया पर लेटकर छोटे बच्चे को अपने पैरों के पंजों पर बैठाकर बारम्बार ऊपर नीचे करता है। जिससे समय कटता, मनोरंजन होता और बच्चे का भय दूर होने के साथ ही झुलाने वाले के पैरों की अच्छी कसरत भी हो जाती है जिससे पेट के अनेक विकार भी मिट जाते हैं। यह खेल खेलते समय एक गीत भी गाया जाता है – तेली के तमोली के, पन्द्रह पसेरी के, उड़ गए तीतर, बस गए मोर, सरी डुकरियाँ लै गए चोर, चोरन के घर खेती भई, सरी डुकरिया मोटी भई, मन-मन पीसै, मन-मन खााय, बड़े गुरू सें जूजन जाय, राजन की बेटी कौ ब्याव भओ, रमतूला बजो, धूतू-धूतू, धूतू-धूतू।

चइयाँ-मइयाँ – यह छोटी लड़कियों का प्रिय खेल है। यह खेल घर की बखरी में या मैदान में खेला जाता है। लड़कियाँ अपनी सखियों के साथ गोल-गोल घूमकर एक ही स्थान पर चक्कर लगाती व कहती हैं -'चइयाँ-मइयाँ', गोल-मिठइयाँ राजन के घर में कोऊ नइयाँ।

इन खेलों के अलावा चपेटा, बग्गा गोली, किलकाँटा, धैलाभरी घेंटी, रस्सीकूद, घरघोला, पुतरा-पुतरियाँ, चकरी, भौंरा, हूलकटार, ओदवोद, फाँग बिलइया, पाईडड़ा, कबड्डी, चौपर, ब्याव कौ बाबा लगड़ी, नक्का-दुआ, घोड़ा दिवान साही, गिलीडंडा, नौरता, आलो-बालो, घूंसा घाई, पोसम्पा जैसे अनेक खेल ग्रामीण लोगों द्वारा खेले जाते थे किन्तु आधुनिक खेलों के प्रचलन से वे प्रायः लुप्त हो रहे हैं, जिन्हें बचाने के लिए केवल यही कहना उचित होगा, 'आओ रे लरकौ खेलिए कुआ में ढकेलिए, कुआ में की टाठी, बोल मोरी काकी, आ गओ कक्का दै गओ धमक्का, रोउन लगी काकी हँसन लगो कक्का।'

– ग्राम मलपुरा, पो. धमौरा
जिला-छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9754747865

दो कविताएँ

– सुधा रावत 'क्षमा'

(1) मटका - मटकी

मटका- मटकी मुड़िया पै धरौ,
मटका-मटकी न करौ फिर गोरी।
मटका- मटकी में मगन जो भई,
मटका छलकै मटकी गिरै तोरी।
हैं भाग्ग बड़े मटका- मटकी के,
जिने शीश धरै वृषभानु किशोरी।
नंद के लाल ने फोर दये
मटका- मटकी में भई बरजोरी।
छींके पै धरी मटकी में सें मोहन,
माखन खायें करैं दइ चोरी।
मटका- मटकी में गिरी मटकी
सब ग्वाल भिड़े दई की भई होरी।।

(मटका- मटकी द्वि अर्थी शब्द है एक मटका- मटकी का अर्थ है पानी भरने वाले गगरा गगरी और दूसरे का आशय मटकने अथवा नृत्य करने से हैं।।)

(2) बतियाँ

बतियाँ न बनाओ बरौ बतियाँ
बतियों- बतियों में समइया न काड़ौ।
बतियाँ जो बरैं तौ बरैं बतियाँ
बतियाँ बर दूर करें इँधयारौ।
बतियाँ बर कैं बनने बतियाँ।
बेसन अजवान औ नौन निकारौ।
बतियाँ न बने तौ बनें बतियाँ
बतियों- बतियों में न बात बिगारौ।
बतियों- बतियों में कड़ीं बतियाँ
बतियों- बतियों में बड़ी बतियाँ।
बतियों- बतियों में रिसाय गईं,
बतियों- बतियों में मनी सखियाँ।
यूँ बैठ बहू न करौ ररियाँ,
अम्मा की तेज भईं बतियाँ
सखियाँ- सखियाँ जुर बैठ गईं
बतियाँ न बने, बन हैं बतियाँ।।

(बतियाँ शब्द के तीन अर्थ निकल रहे हैं। एक बतियाँ यानी बातें दूसरी बतियाँ मतलब दिया में उजयारने बाली बाती और तीसरी बतियाँ यानी नमकीन सेव जिन्हें बुन्देल खण्ड में बतियाँ कहते हैं वेसन के द्वारा ये हाथ से बनाई जाती है। इस रचना में बरैं शब्द के भी दो अर्थ निकल रहें है। एक बरै का अर्थ है जलना (उजरना) और दूसरे बरै का मतलब है बरना यानी बनाना।)

– एफ-7 गीत बगले फेस 2, दुर्गेश विहार
जे.के.रोड, भोपाल (म.प्र.)

बुन्देलखंड का गौरवशाली दस्तावेज है बुंदेली बसंत

- आचार्य भगवत दुबे

बुंदेली विकास संस्थान के संरक्षक एवं बुदेलखड की लोक संस्कृति के प्रति आस्थावान आदरणीय श्री मुन्नाराजा के उदार सहयोग एवं आशीर्वाद से बसारी में प्रतिवर्ष होने वाले बुंदेली उत्सव पर आधारित एक विशाल स्मारिका डॉ बहादुर सिंह परमार बड़ी आकर्षक साजसज्जा के साथ प्रकाशित करते हैं विगत वर्ष इस पत्रिका को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नईदिल्ली से हिन्दी क्षेत्र के मान्य रिसर्च जनरल की सूची क्रमांक 106 पर जनरल क्रमांकम् ४५६७२ से बुंदेली बसंत को अधिमान्यता मिलना अत्यंत गौरव की बात है। इस पत्रिका में हिन्दी एवं बुंदेली के मूर्धन्य विद्वानों के शोधपरक आलेख सम्मिलित किये जाते है जिनमें बुन्देली शौर्य गाथाओं, क्षेत्र की ऐतिहासिक इमारतों, किलों मंदिरों, लोक संस्कृति एवं बुन्देली की महत्ता का प्रतिपादन करने वाली गद्य एवं पद्य की रोचक एवं ज्ञान वर्धक रचनाओं का समावेश रहना है। बुदेलखण्ड की लोक संस्कृति एवं बुंदेली के मर्मज्ञ डॉ. बहादुर सिंह परमार इस पत्रिका के यशस्वी संपादक हैं।

बुंदेली बसंत २०१८ का १९ वाँ समीक्ष्य अंक मेरे समक्ष है जिसका मैने बड़े मनोयोग से आद्योपान्त अध्ययन किया है। अपनी संपादकीय में डॉ. परमार ने बुंदेलखड की लोक मान्यताओं आचार विचारों तीज त्यौहारों एवं परंपराओं से समृद्ध बुन्देलखण्ड के ग्राम्य जीवन की चर्चा की है तथा लोक सरोकारों से कट रही युवा पीढ़ी की उदासीनता एवं शहरी चकाचौंध के प्रति बढ़ते रुझान के प्रति आपने गहरी चिन्ता व्यक्त की है।

डॉ. के.बी.एल. पान्डेय ने आचार्य घनश्याम दास पाण्डेय के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं साहित्यिक अवदान पर खोज पूर्ण प्रकाश डाला है। अपने समय के सभी साहित्यकारों श्री मैथिलीशरण गुप्त, मुंशी अजमेरी सनेही जी एवं गंगाधर व्यास आदि से आचार्य घनश्याम दास पाण्डेय का सतत संपर्क रहा है। आपने प्रचुर मात्रा में स्तरीय छान्दस साहित्य का सृजन किया है किन्तु वे प्रकाशन के प्रति उदासीन ही रहे है। राष्ट्रभक्त समाज सुधारक के रूप में उनकी चर्चा अधिक हुई है। डॉ के.बी.एल.पाण्डेय जी ने उनके कवित्त एवं सवैये खोज-खोजकर ज्ञान वर्धक आलेख प्रस्तुत किया है।

डॉ. गायत्री बाजपेयी ने बुन्देली क्षेत्र के सौन्दर्य प्रसाधनों की चर्चा संस्कृत ग्रन्थों के श्लोकों द्वारा आलेख को सार्थक बनाया है।

डॉ. लखनलाल खरे ने उरई निवासी स्व. राम स्वरूप खरे के विपुल साहित्य सृजन की चर्चा की है ।

डॉ. कन्हैयालाल वर्मा बिन्दु ने शब्द शक्तियों की चर्चा करते हुए बुंदेली भाषा के दुहरे एवं जोड़ीदार शब्दों की गहन पड़ताल की है। श्री नरेश कुमार पाठक ने पन्ना (पद्मावती) नगर के पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्ता का प्रतिपादन करते हुए दर्शनीय स्थलों यथा जुगलकिशोर जी का मंदिर, दिगंबर जैन मंदिर, महामति प्राणनाथ मंदिर, बल्देव जी का मंदिर, विन्ध्यवासिनी का काँच-मंदिर, मकबरों छतरियों आदि की विस्तार से प्रामाणिक जानकारी दी है।

सुधा रावत 'क्षमा' का नाटक 'कमजोर हातन कौ बल' बहुत अच्छा एवं प्रशंसनीय है। इसमें पुरुष प्रधान समाज द्वारा स्त्रियों पर अत्याचार, घरेलू हिंसा एवं दहेज प्रथा जैसी बुराइयों की चर्चा करते हुए, महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे कार्यों एवं योजना की जानकारी विभिन्न पात्रों के कथोपकथनों एंव सार्थक संवादों द्वारा दी गई है।

श्री श्रवण सिंह सेंगर की कहानी अपने- पराये की पृष्ठ-भूमि, साठ-सत्तर वर्ष पुरानी सामाजिक व्यवस्था पर आधारित है। जब पुरोहितों एवं खवासों के माध्यम से शादी विवाह तय कराये जाते थे, दहेज लेने एवं पुत्री जनने पर बहुओं को खरी- खोटी सुनाकर प्रताड़ित करने तथा पुत्र प्राप्ति के लिए पति के दूसरे विवाह कराने जैसी कुरीतियाँ समाज में व्याप्त थी। इस कहानी में राजू लक्ष्मी के स्वाभिमान एवं स्वावलंबन का शिक्षा प्रद संदेश प्रशंसनीय है।

श्री एन.डी.सोनी द्वारा ओरछा नरेश श्री वीरसिंह देव (द्वितीय)को एक प्रगतिशील शासक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जो एक रचनाशील सृजन धर्मी, हिन्दी के प्रबल समर्थक, खेलकूद को बढ़ावा देने वाले, समाज सुधारक विचारक के रूप में उनका गौरव- गान किया गया है। श्री बृन्दावन लाल वर्मा एवं श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के लेखों का उल्लेख करते हुए बड़ी शोधपरक एवं ज्ञान- वर्धक प्रस्तुति दी गई है। डॉ. सरोज गुप्ता ने बुंदेलखंड के दुर्ग ,गढ़ तथा बरौठा के गढ़ी, बन्दों की शोधपरक जानकारी बहुत विस्तार से दी है। डॉ. वीरेन्द्र निर्झर ने लोक सहित्य में स्वास्थ्य विषयक रचनाओं की चर्चा अनेक उद्धरणों द्वारा की है।

यथा- रात में सतुआ करै बिआरी
घाघ मरे तिनकी महतारी

आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल ने 'आसमान की मामुलिया' नामक ललित निबन्ध में किरचियन (तरइयों) की छवि-छटाँ का मनोहारी चित्रण किया है।

डॉ. नीरज खरे ने बुन्देली कवि स्व. श्री हरनारायण सिंह 'यार' को उनकी जन्म-शताब्दि पर स्मरण करते हुए उनके साहित्यिक अवदान को सम्मानपूर्वक रेखांकित किया है। आप ने लिखा है कि ठेठ बुंदेली की सहज मिठास और सौंधेपन की महक 'यार' जी की काव्य रचनाओं में सर्वत्र उपलब्ध है।

डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय सरल की कृति 'सरल बुंदेली शब्द कोष' की समीक्षा करते हुए श्रीमती प्रमोद पाठक ने भाषायी विज्ञान को समझने में सहायक निरूपित किया है। श्री साकेत सुमन चतुर्वेदी की लघु कथा 'मरजाद' महिलाओं के साथ होती अभद्रता एवं बड़े-बूढ़ों की उपेक्षा के साथ ही नारी की जागरूकता एवं महिला सशक्तिकरण के उदाहरण प्रस्तुत करती है।

बुन्देली बसंत का काव्य पक्ष भी चुटीला, रसीला, व्यंग्य परक एवं यथार्थ बोधी है। इनमें प्रमुख रूप से श्री दीनदयाल तिवारी, ग्यासी राम गुप्त 'अटल', श्री शिवाजी चौहान, रामानन्द पाठक 'नन्द', नवल किशोर सोनी 'मायूस' डॉ हरिकृष्ण 'हरि', डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया, स्वंतत्र प्रभाकर रावत, डॉ. लालजी सहाय श्रीवास्तव 'लाल' पं. डी.पी.शुक्ल 'सरस', इन्द्रपाल सिंह परिहार, अश्विनी चतुर्वेदी, पन्नालाल असर, लक्ष्मीप्रसाद गुप्त किंकर, डॉ. गौरी शंकर उपाध्याय, रतिभानु तिवारी 'कंज', दिव्य यादव, डॉ. वर्षा सिंह, डॉ. राघवेन्द्र उदैनिया, दुर्गाप्रसाद श्रीवास, शिवभूषण सिंह गौतम, फेरन सिंह परिहार डॉ. मोहन तिवारी डॉ. प्रेमलता नीलम, डॉ. राज गोस्वामी, श्री अवध बिहारी श्रीवास्तव आदि की काव्य प्रस्तुतियां भी बुंदेली बसंत को रोचक, पठनीय एवं संग्रहणीय बनाती हैं।

- महामंत्री कादम्बरी
पिसन हारी-मढ़िया के पास, जबलपुर

किशोर कवि कृत बारामासी

- उदय शंकर दुबे

बुन्देलखण्ड की चरखारी रियासत का हिन्दी साहित्य के स्टेजन प्रकाशन, प्रचार - प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महाराज छत्रसाल के पुत्र जगतराज के आश्रित कवि हरिकेश ने जगतराज दिग्विजय ग्रंथ की रचना की जो एक काव्येतिहास ग्रंथ है। आचार्य प्रताप साहि, भोजराज, मानकवि, आचार्य मोहन लाल मिश्र जैसे कवि चरखारी राज्य की ही देन है। चरखारी के राजा विजय बहादुर विक्रमाजीत स्वयं एक अच्छे कवि थे। इनका शासन काल संवत् 1833 संवत् 1886 वि. (सन् 1776- 1833 ई.) तक था कवि किशोर इन्हीं के आश्रित थे। एक हस्तालिखित पाण्डुलिपि में किशोर कवि की रचना बारामासी भी लिपिबद्ध है। लेखक को यह प्रति आचार्य प्रताप साहि के वंशज श्री कन्हैया लाल जी से प्राप्त हुई। इस पाण्डुलिपि में लिपिबद्ध ग्रंथों का नाम इस प्रकार है

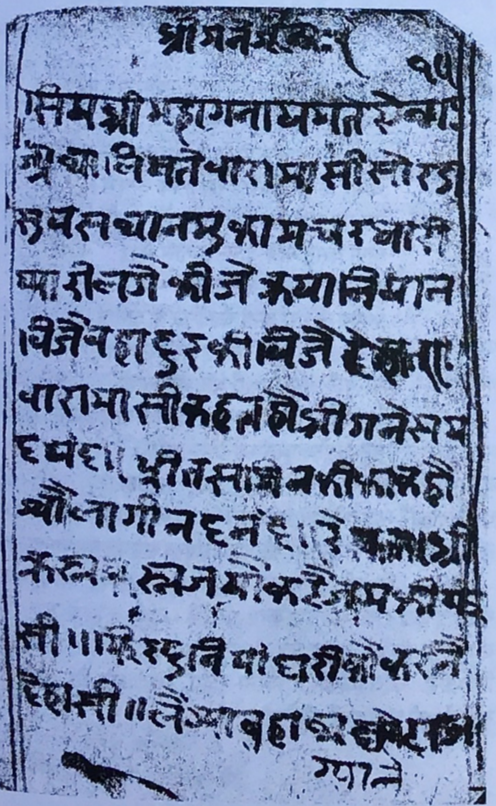
1. बारामासी-रचानाकार अज्ञात, पत्र-5 अपूर्ण, लिपिकाल संवत् 1896
2. बारामासी - किशोर कवि, पत्र 9, पूर्ण, लिपिकाल - संवत् 194(?)
3. सनेह सागर- बख्शी हंस राज, पत्र 29,पूर्ण
4. वसुदेव मोचनी लीला, अज्ञात पत्र,-11 पूर्ण, लिपिकाल संवत्- 1871
5. दान लीला- भरत दास, पत्र- 6 लिपिकाल- अज्ञात
6. भक्त विरदावली- अम्मर दास, पत्र - 6 पूर्ण, लिपि काल आज्ञात
7. ग्यान चौतीसी, पत्र-2 लिपिकाल- अज्ञात

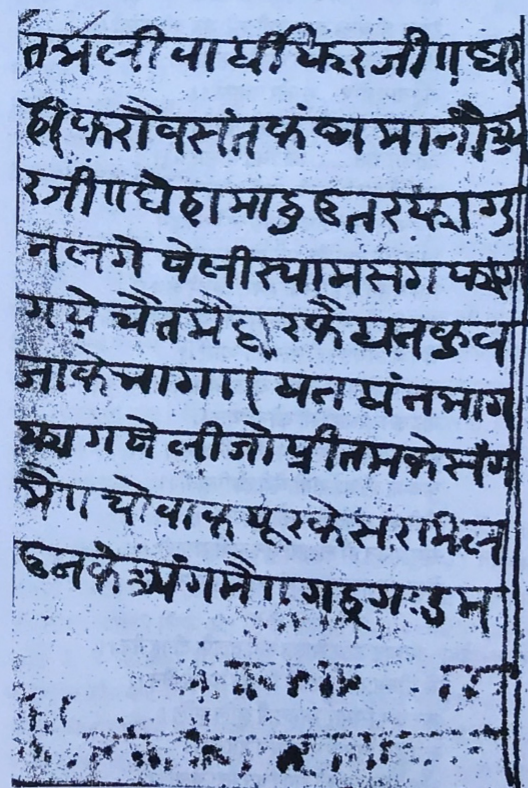
एक ही जिल्द में उपयुक्त ग्रंथ आबद्ध हैं, लिपिकार ने बख्सी हंसराज कृत सनेह सागर लिखने के बाद उनके द्वारा रचित अखती लीला को अलग लिखा है। किशोर कवि कृत बारामासी का लिपिकाल संवत् 194 लिखा है जब कि संवत् 1894 होना चाहिये था। लिपिकर्ता आठ (८) संख्या लिखना भूल गया।

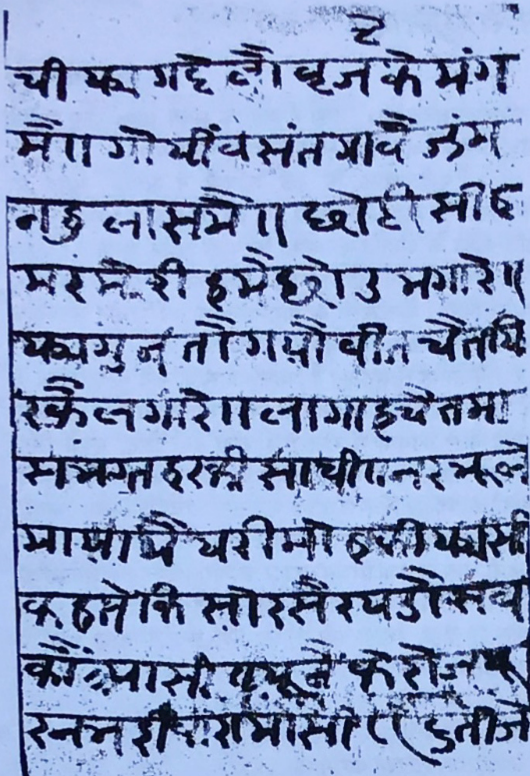
बुन्देलखण्ड के कई कवियों न समय- समय पर बारामासा और बारामासी नाम से ग्रंथों की रचना की है। केशव दास ने कवि-प्रिया के अंतर्गत बारामासा का सुंदर वर्णन किया है। केशव रचित बारामासा छंदों को अलग कर चित्रकारों ने भावपूर्ण चित्रों का निर्माण किया। केशवदास के बारामासा पर बने प्राचीन मनमोहक चित्र श्री अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' मंडपम् राठ रोड- उरई (जालौन उ.प्र.) के संग्रह में सुरक्षित हैं। केशव दास के बाद बुन्देलखण्ड के कई कवियों ने बारामासा और बारामासी की रचना की। बारामासी लिखने वाले कवियों में खेत सिंह राजा देवी सिंह, पृथ्वी सिंह, रसनिधि, बोधा, पजन कुँवरि आदि हैं। दृष्टव्य हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण खण्ड - 2 नागरी प्रचारिणी सभा- काशी, पृष्ठ संवत् 2029 वि.१ इसी परंपरा के किशोर कवि हैं। उन्होंनें चरखारी राज्य के राजा विजय बहादुर के शासनकाल में बारामासी की रचना की इस ग्रंथ की प्रतिलिपि जैतपुर में तैयार की गई थी। कवि किशोर ने दोहा, रेखता सोरठा और सैर छंद में सरल भाषा में बारामासी की रचना की है। ग्रंथ का आदि मध्य और अंत प्रस्तुत है

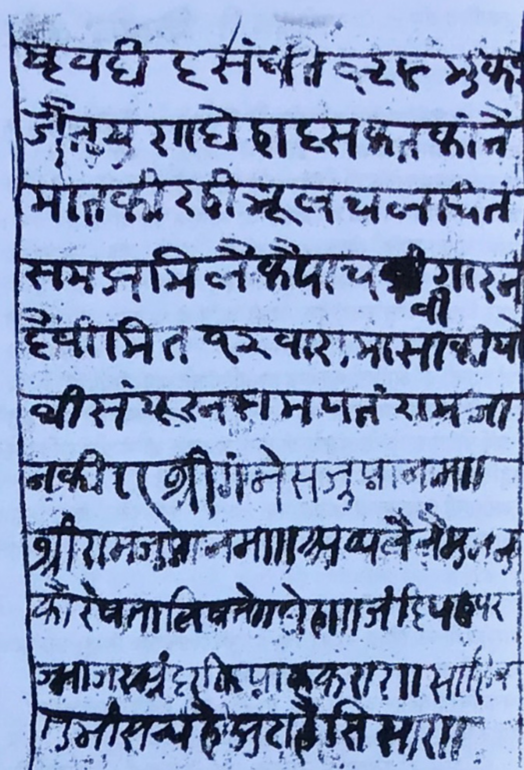
आदि- श्री गनेजू नमः
सिघ श्री महा गनाय पतऐ नमः
अथा लिषते वारामासी

सोरठा- सुवस बान मुकाम चरखारी प्यारी लगै।
कीजे कृपानिधान विजय बहादुर की विजै।।









दोहा- बारामासी कहत हौं ।
श्री गनेस पद वंद ।।
प्रीत सषिन की का कहौ लौ लागी नद नंद ।।
रेषता श्री क्रस्न क्रस्न जपौ कटै जम की फांसी ।।
फिर दुनियादारी कौ करनै दै हासी ।।
लै ग्याव हॉथ... म जोर नवासी ।।
निज राम नाम सैर सैर वारामासी ।।
ततवीर रीत ...... ओ चित मै आइयै ।।
सबसौ प्रनाम करकै माथौ नवाइये । ।
गुन चीन सुगर होइ अगरल्ल मिलाइये
निज राम नाम सैर सार पढ़ सुनाइये ।।

दोहा- रित बसंत में हो सबी हमसें बिछरे कंथ ।।
सब विरहा के बस भए सुर नर मुन जन संत ।।
चैत्र में अचेत रही तलफत प्यारी ।।
श्रीकुंज बिहारी नै मेरी सुरत बिसारी ।।
नाहक गिरधारी सौं कीनो प्यार ।।
हर छाय रहे द्वारका में मौज निधार ।।
कुबजा तौ भई रानी चेरी हौ पिरानी ।।
जैसे की संगत तैसे कौ सुहानी ।।
समुझाउत हौ ललता सुन सषी सयानी ।।
विन नंदलाल राधा कुंजन में दिमानी ।।

× × × ×

मध्य-दोहा-आसाढ़ उतर साउन लगे तलफै दौनह नैन ।।
जे प्रीतम संग छलती तिनके मन मे चैन ।।
कर कर सिंगार साउन मै झुलि झुलि ।
हरी हरी भूम मेघ पचरंग दुहुला ।।
सुभ सषियन कौ राग चित मेरा झूला ।।
जे झुलती प्रीतम संग दिल जिनका फूला ।।
राधे जू ऊधौ षौ देत उरानौ ।।
घन छाए द्वारका मै नेह छोड़ परानौ ।।
अंतरजामी सौ कौन करा बहानौ ।।
मन मोहन बिन साउन हमको न सुहानौ ।।

× × × ×

अंत-दोहा- माहु उतर फागुन लगे खेली स्याम संग फाग ।
गये चैत मै द्वारकै धन कुबजा के भाग ।।
धन- धन भाग फाग बेली जो प्रीतम के संग मै
चोबा, कपूर, केसर मिल उनके अंग मै ।।
गह गड्डु मची फाग देषौ वृज के मग मै ।
गोपी बसंत गावै जु मन हुलास मै ।।
छोटी सी उमर मेरी हमै छौड भगा रे
फागुन तौ गयौ बीत चैत फिर कै लगा रे ।।
लागा ई चैत मास भग्त हर की साधी ।।
नर भूले माया मै धरी मोह की फासी
कहते किसोर सैर पडौ (पढ़ौ) सबकौ आसी ।।
पूनै कै रोज पूरन भई वारामासी ।।

दुती जेष्ट वदी ६ संवत १९८ मुकाम जैतपुर ।। दोहा ।।
दसकत कानै मात की रही भूल चल चित्र । समझ मिलै कै बाचबी गार न दैवी मित्र । १२ वारामासी की पोथी संपूरन समपंत राम जानकी ।।

प्रति की लिखावट कहीं- कहीं अस्पष्ट है। मूल पाठ यथावत् रखने का प्रयास किया गया है। अन्य कवियों द्वारा रचित वारामासी ग्रंथों में प्रमुख रूप से दोहा, सवैया, कवित्त छंदों का प्रयोग मिलता है। कवि किशोर ने सोरठा-दोहा, रेखता और सैर को चुना है। यही उनकी वारामासी की विशेषता है।

- साहित्य कुटीर, कठारी बाजार
पो. खमरिया, जिला-भदोही (उ.प्र.)

एक यक्ष प्रश्न -

कैसे हो पूर्वजों का साहित्यिक श्राद्ध? ...

- पं. गुण सागर शर्मा 'सत्यार्थी'

यदि हमें आंचलिक लोक भाषाओं में, यथा अपनी बुन्देली आदिक बोलियों की आयु जानने की जिज्ञासा है तो हमें निश्चय ही मानव जीवन के इतिहास में झांकना होगा। यह तभी संभव होगा जब हम भू- गर्भ शास्त्रियों की दृष्टि से पृथ्वी का इतिहास देखेंगे। अस्तु-

भू- गर्भ- विद्या कि अनुसार पृथ्वी और अन्य ग्रह पहले वायु रूपी थे, फिर द्रव्य रूपी बने और फिर दृढ़ हुए। किसी समय पृथ्वी के बीच में दृढ़ता थी और चारों ओर पानी था। यही भाग जल में कहीं-कहीं ऊपर आकर थल बन गया और उसमें अनेक प्रकार के जन्तुओं से मनुष्य विकसित हुए। भारत वर्ष का दक्षिणी भाग जल के ऊपर जिस काल में आया, उसको कैम्बियन काल कहते है। भू- गर्भ शास्त्रियों ने युगों के तीन भाग किये हैं। कैम्ब्रियन काल पहले युग का भाग है। मोटे हिसाब से कैम्ब्रियन काल को लगभग चालीस सा पैतालीस करोड़ वर्ष पहले का कह सकते हैं। उस काल में पृथ्वी के कुछ भाग के ऊपर आये और उनमें कई पृथ्वी के बीच की ज्वाला व अन्य कारणों से फिर से जल के ऊपर आने के बाद फिर जल के नीचे नहीं गया। इसलिए यह कहा जाता है कि बुन्देलखण्ड की जमीन कैम्ब्रियन काल से जल के ऊपर थल के रूप में बनी हुई है।

बुन्देलखण्ड की तहदार चट्टानों को भू-गर्भ-शास्त्रियों ने बुन्देलखण्ड नीस (या मीस) ना दिया है। ये चट्टानें बहुत भारी हैं और जैसा कहा जा चुका है कैम्ब्रियन काल अर्थात् सबसे पुराने समय की हैं। (पं. बनारसी दास चतुर्वेदी द्वारा संपादित पाक्षिक पत्र-वर्ष-3, अंक 17-18 जून 1943 पृष्ठ 403-410 पर प्रकाशित श्यामाचरण राय के आलेख से)

इन शोधपूर्ण उद्धरणों से ज्ञात होता है कि बुन्देलखण्ड की धरती सर्वाधिक पुरानी है, यदि मानव भी यहीं विकसित हुआ जिसने बोलना सीखा और उसकी बोली भी अपेक्षाकृत सर्वाधिक पुरानी है। यह बात दूसरी है कि आदि मानव द्वारा प्राकृत रूप में बोली गई और विकसित यह आदि भाषा देश काल परिस्थितियों में अपने नाम भी समय समय रही, जिसे आज वर्तमान में हम बुन्देलखण्डी या बुन्देली नाम से पहचान रहे हैं। पर नाम बदलने से उसको प्राचीनकाल होने से नकारा नहीं जा सकता है।

आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल प्रणीत्- बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्ति कोश नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ की भूमिका स्वरूप आमुख शीर्षक से महर्षि अगस्त्य वैदिक संस्थानम् भोपाल मध्यप्रदेश के अध्यक्ष पं. प्रभुदयाल मिश्र ने लिखा है। श्री मिश्र जी के उस आलेख का यह उद्धरण उल्लेखनीय है।

इन दिनों वैदिक संस्कृत की समझ में सहायक तत्कालीन लोक जीवन और व्यवहार के उस पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन में एक विचारक वर्ग गम्भीरता पूर्वक संलग्न है। विगत अनेक वर्षो तक पुरा चिन्तन से जुड़े श्री भगवान सिंह के ऋग्वेद संबंधी अनेक आलेख इस दृष्टि को दिशा देते रहे हैं। श्री भगवान सिंह जी भाषा शास्त्रीय अध्ययन परम्परा को सर्वार्थी एक नया आयाम देते हैं। सितम्बर 2012 के नया ज्ञानोदय के अंक में उन्होंने इस दिशा से संबन्धित तीन सूत्र इस प्रकार दिये हैं -

1.हमारी लोक भाषाएँ संस्कृत से नहीं निकली हैं। वे तो वैदिक भाषा से भी पुरानी हैं।

2. वे संस्कृत से अधिक समृद्ध हैं।

3. सभी बोलियाँ अनगिनत बोलियों के विपाक से बनी हैं।

श्री भगवान सिंह जी की स्थापना है कि वेदों के काल में पहुँचने के लिए वेदों की भाषा को उसके मूल में पहचानना अवश्यक है। इसके लिए एक तो संस्कृत भाषा का मार्ग है और एक मार्ग जन-भाषा का। विद्वान विचारक के मत में जन- भाषा के अध्ययन के द्वारा हम वेद की भाषा ही नहीं वेद के मूल तक भी पहुँच सकते हैं।

इस उद्धरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हमारी लोकभाषाएें जिनमें बुन्देली जो सर्वाधिक पुरानी यानि कैम्ब्रियन काल के समय की है वह संस्कृत से नहीं निकली वह तो वेदों की भाषा से भी अधिक समृद्ध है। ऐसी स्थिति में यह गा बजा कर कहना कि संस्कृत की बिटिया है जा ब्रज की परम सहेली। सर्वथा असंगत ही है। जब कि संस्कृत स्वर्ग से अवतरित देव भाषा नहीं है। उसके पूर्व प्राकृत भाषाओं अथवा अपभ्रंश का उल्लेख मिलता है। कालान्तर में पाणनि ने उनमें से एक प्राकृत भाषा को सु-संस्कृत किया तो वह अभिजात्य श्रेणी में प्रतिष्ठापित होकर देव भाषा कही गई। इन प्राकृत भाषाओं को ही लोक में व्यवहत होने के कारण लोक भाषाएँ नाम मिला। श्री श्यामाचरण राय के उद्धरण स्पष्ट कह रहे हैं कि जिसे मोटे हिसाब से चालीस या पैतालीस करोड़ वर्ष पुरानी कह सकते हैं।

जब संस्कृत पाणनि का स्पर्श पाकर अभिजात्य ठीक ऐसे हो गई जैसे पारस का स्पर्श पाकर लौह भी स्वर्ण हो जाता है। इसीलिए साहित्य भी अभिजात्य भाषा में ही रचा गया। लोक भाषाएँ प्राय: मौखिक परम्परा में पीढ़ी- दर- पीढ़ी लोक साहित्य के दम पर अपना अस्तित्व समानान्तर बनाए रहीं। बुन्देली की उप बोली बनाफरी में प्रख्यात लोक गायक जगनिक का आल्हा स्वयं ही मौखिक रूप में ही विस्तारित हुआ है। जगनिक द्वारा वह कहीं लिपिबद्ध नहीं मिलता है। वह अभिजात्य साहित्य की श्रेणी में नहीं आता, वह तो विशुद्ध लोक साहित्य है। फिर बुन्देलखण्ड में उसके लिए लोकोक्ति भी प्रसिद्ध है।

आल्हा कौ का गाइये? सुघर लवार चाहिए।

निश्चय की मात्र संस्कृत को अभिजात्य वर्ग काव्य हेतु उपयुक्त मानता था। आंचलिक लोक भाषाएं तो मात्र लोक साहित्य की मौखिक परम्परा में सिमट कर सीमित थी। परन्तु लोक की तुलना में अभिजात्य वर्ग भी अधिक न था। बहु संख्या के फल स्वरूप लोक की फल स्वरूप लोक साहित्य भी समानान्तर स्तर पर प्रचुर मात्रा में गाया- बजाया गया। लोकगीत, लोकगाथाओं के अतिरिक्त लोक कथाएँ लोकोक्तियाँ भी पर्याप्त मात्रा में हैं। लेकिन राज दरबारों में काव्य भाषा एक मात्र संस्कृत रूप में कीलित थी।

15वीं शताब्दी में ग्वालियर के तोमर राज वंश में राजा डूँगरेन्द्र सिंह तोमर हुए हैं (शासन काल 1425-1459) जिनके दरवारी राजकवि विष्णुदास ने सर्व प्रथम इस मिथक को तोड़ा कि अभिजात्य साहित्य सिर्फ और सिर्फ संस्कृत में ही सम्भव हैं उन्होनें 1435 ई. मे सर्वप्रथम संस्कृत से इतर भाषा में एक महाकाव्य- महाभारत की रचना की। उस समय तो उनकी काव्य भाषा को मात्र- भाखा अथवा ग्वालेरी कहा गया। हिन्दी, ब्रजभाषा, अवधी जैसे शब्दों ने तब जन्म नहीं लिया था। सूर की काव्य भाषा को ब्रजभाषा नाम

दीर्घ काल बाद समीक्षकों ने दिया, स्वयं सूर ने नहीं, ना ही जायसी ने अपनी भाषा को अवधी कहा। केशव ने अवश्य कह दिया कि-

भाखा बोल न जानहि, जिनके कुल के दास,
भाखा कवि भौ मन्द मति, तिहि, कुल केसौ दास।

तात्पर्य यही कि संस्कृत का एक मात्र वर्चस्व उस समय छाया हुआ था। और सूर, तुलसी, केशव, कबीर... आदि से शताधिक वर्ष पूर्व सर्वप्रथम विष्णुदास ने यह क्रान्तिकारी पहला कदम आगे बढ़ाया। उनके महाभारत को विद्वानों ने एक स्वर में हिन्दी का पहला कदम आगे बढाया। उनके महाभारत को विद्वानों ने एक स्वर में हिन्दी का पहला महाकाव्य कहा। जबकि उस समय तक हिन्दी शब्द का जन्म भी नहीं हुआ था।

जिस महाकाव्य को आज विद्वानों ने हिन्दी का पहला महाकाव्य निरूपित किया है। आइये उसमें विष्णुदास की काव्य भाषा को भी देखें, कि इसमें हिन्दी का स्वरूप क्या और कैसा है? अतएव 1435 में विष्णुदास द्वारा रचित महाकाव्य महाभारत के पितामह पर्व से कुछ पंक्तियाँ-

सर की सेज परयौ गंगेऊ, जै जै कालु करें सब देऊ।
अछरि कौतिकु करहिं बिवाना, कौरो बीर सबै बिलखाना।।
चरन पिछाहैं पूरब सीसू, परयौ पितामाह धरनी दीसू।
सौरि, सुपेती, गेडू ल्याए, ते गंगेउ उसीसें द्वाये।।
जान्यौ भाउ पंथ बरबीरा, सीसु उठायौ बेध्यौ तीरा।
जब गंगेउ पियासौ जान्यौ, बान मारि तिहि काढ्यौ पान्यौ।।
दछिन भानु न मीचु बुलाबै, लहें मीचु जब उत्तर आबै।
बहुत जतन करि राख्यौ सोई, काहु सरिसु न जूझै कौई।।

यह बानगी है विष्णुदास की काव्य भाषा की, जो संस्कृत काव्य परंपरा के बाद अभिजात्य साहित्य हेतु भाषा में काव्य परंपरा की गंगोत्री है। आज हिन्दी के पुरोधा एवं पक्षकार इसे हिन्दी का पहला महाकाव्य बता रहे हैं। जिन्होंने ही हिन्दी साहित्य का काल विभाजन भी किया है। यथा प्राचीनकाल, मध्यकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, और आधुनिक काल इत्यादि। इस छोटे से उद्धरण की पंक्तियों को पढ़कर बताएँ कि यह हिन्दी के कौन से काल का प्रतिनिधित्व कर रही है? जबकि आज वर्तमान में बुन्देली का जो स्वरूप हमारे समक्ष है, वह बेशक यथावत इन पंक्तियों में झलक रहा है। यथा बुन्देली की प्रकृति में तालव्य श के स्थान पर दन्त स और व के स्थान पर ब का उच्चारण होना एवं बुन्देली के शब्द भी- बिलखना, सुपेती, गेंडू उसीसे, पख्यौ, पिछाहैं ल्याए इत्यादि इत्यादि।

आश्चर्य इस बात का है कि फिर भी विद्वान यह मान रहे है कि बुन्देली पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत एक बोली के रूप में समाहित है। जबकि हिन्दी शब्द के जन्म से पहले जो भाषा हम विष्णुदास में देख रहे हैं वह तो बुन्देली ही है। जिसे आप हिन्दी का पहला महाकाव्य निरूपित कर रहे है अर्थात् वह अमुक प्रकार से बुन्देली से ही प्रभावित है। तब बुन्देली के अन्तर्गत एक बोली कैसे ले? जबकि बुन्देली ने ही हिन्दी को अभिजात्य साहित्य लिखना सिखाया। हाथ कंगन को आरसी क्या? प्रमाण आपके समक्ष है।

बुन्देली में एक कहावत प्रसिद्ध है, कि दूबरे और दो अषाढ़। यही कहावत आज बुन्देली की फजीहत करा रही है। बुन्देली की प्राचीनता और भाषा रूप में सर्वप्रथम महाकाव्य देने वाली समर्थ, सक्षम और एक समृद्ध साहित्यिक भाषा को आज विद्वत वर्ग बुन्देली की सभी विशेषताओं को नजरअन्दाज करते हुए उसे कल की पैदाइश हिन्दी, जिसकी आयु को अभी पूरे दो सौ वर्ष नहीं हुए है उसके मातहत मात्र एक बोली मान बैठा है। उनकी हठधर्मी तो देखा, जब आपकी हिन्दी स्वयं भी अस्तित्व में नहीं आई थी, तब बुन्देली अभिजात्य साहित्य में महाकाव्य दे रही थी और आप कहते हैं कि वह हिन्दी के अन्तर्गत एक बोली है। ऐसा मानकर हम पहले ही बुन्देली के साथ अन्याय कर रहे थे। मानो किसी अगड़ी जाति के प्रतिष्ठित व्यक्ति को पिछड़ी जाति की कतार में समाहित करके उसे हेय बना दिया। इससे बुन्देली की फजीहत ही हुई जो हमारे लिए बेहद लज्जाजनक है।

बुन्देली की फजीहत का दूसरा कारण स्वयं हम ही है। हमने न बुन्देली को समझने की कोशिस की न उसके खून को पहचाना। उसके इतिहास-भूगोल को जाने बगैर अनपढ़ ग्रामीणों द्वारा तोड़ मरोड़ कर बोली जाने वाली शब्दावली को ही लिपिबद्ध करके स्वयं को बुन्देली का महा पण्डित मान बैठे। ऐसी फूहड़ और भदेसपूर्ण तुकबन्दी को सर्कस के जोकर की भाँति उछल कूद कर अभिनय करके स्वयं बुन्देली का शीर्ष हस्ताक्षर स्वयं भू हो गए। बुन्देली को भाषा रूप में समझे बगैर यह बुन्देली के प्रति हमारी दीवानगी ही बुन्देली की फजीहत करा रही है और हम यह भ्रम पाल रहे है कि बुन्देली के क्षेत्र में हमने ही सिर्फ अब तक सब कुछ किया है।

अब हमसे पूछा जाए कि माना कि आप ही बुन्देली के शीर्ष हस्ताक्षर हैं और बुन्देली भाषा- साहित्य के क्षेत्र में सिर्फ और सिर्फ आपने ही सब कुछ किया है। राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बुन्देली के नाम पर जोर शोर से ढोल बजाए हैं। लेकिन आपने या आपके साथियों ने विष्णुदास की परम्परा में बुन्देली के अभिजात्य साहित्य की कितनी क्या वृद्धि की है? कितने महाकाव्य अब तक बुन्देली में आए हैं और खण्ड काव्य कितने लिखे गए है? या फिर मात्र कवि सम्मेलनों की बाजारवादी तथा कथित बुन्देली कविता की दम पर आप स्वयं-भू बुन्देली के शीर्ष हस्ताक्षर के रूप में शिगूफे बाजी से ढोल पीटे जा रहे हैं। अब तो साहित्य के क्षेत्र में और भी अनेक विधाएँ हैं जिनमें लिखकर बुन्देली को भी अभिजात्य साहित्य में आप समृद्ध कर सकते थे। रेडियो ने भी तो वार्ता है रूपक के तो अनेक प्रकार है जैसे-संगीत रूपक, समन्बित रूपक, रूपक भी रेडियो के लिए बुन्देली में सफल लिख सकते थे। रेडियो पर नाटक के आलेख लिखे जा सकते है झलकियाँ है गीत नाट्य भी महत्वपूर्ण विधा है। इतर भाषा से बुन्देली में अनूदित साहित्य की भी अपेक्षा है। और भी अनेक विधाएँ है जिनमें लिखकर बुन्देली को समृद्ध किया होता।

हम केवल ढोल बजाने में जरूर बहुत आगे हैं। न तो बुन्देली को भाषायी संस्कार देकर उसका साहित्यिक स्वरूप निखारने में किंचित रुचि है और न अभिजात्य साहित्य लिखकर बुन्देली को समृद्ध करने में। मात्र मंच की बाजीगरी करके शीर्षस्थ हस्ताक्षर होने का दम भर रहे हैं। आज बुन्देली के पूर्वज साहित्यकारों की आत्मा स्वर्ग में आँसू वहा रही होगी कि हमारे उत्तराधिकारी ऐसे कपूत निकले जिन्हें बुन्देली को हमसे भी और आगे पहुँचाना था, क्योंकि उनके पास लिखने हेतु आज ढेर सारी विधाएँ हैं। लेकिन वे न तो केवल बुन्देली की अपितु हमारी भी फजीहत करा रहे हैं। इस दुर्भाग्य पर पूर्वज आँसू ही बहा कर रह गए होगें। क्या हम अपने पूर्वजों का साहित्यिक श्राद्ध ऐसे करेंगे? यही यक्ष प्रश्न है।

- कुण्डेश्वर
जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 8120288372

बुन्देली दोहे

- मन मोहन पाण्डेय

आचार - शास्त्र

गैस बने यदि पेट में, भोजन के पश्चात ।
घूँट घँट पानी पियौ, सुखी होयगौ गात ।।
भोजन के पश्चात जो, थौरौ सौ गुर खाय ।
भोजन पचबै पेट में, मर्दानगी बढ़ाय ।।
कच्चौ दूद पिवाय दो, नीबू रस के संग ।
बबासीर मस्से मिटैं खूनी आदी अंग ।।
मुख चाकी में सब कछू ऐन पीस कै खाय ।
गुलूकोज बन जात है, रक्त बनें सुखपाय ।।
बूढ़ौ चाय जवान हो, उठवै प्रात: काल ।
सौ चक्कर छत पै करै, स्वस्थ होय हर हाल ।।
रोगी हो मधु मेह कौ, एक निबौरी खाय ।
बछिया की पेशाब कों, तोला भर पी जाय।।
बड़े बड़े जो रोग हैं, धीर धीरे जाँय ।
खान पान अच्छौ रहै, रोग नहीं ठहराँय ।।
नित प्रति मालिश कीजिये, गीली सूखी होय ।
रक्त चाप घट जायगौ, नींद भूख सई होय ।।
नींद नहीं आती अगर, जपो इष्ट कौ नाम ।
निद्रा आवै प्रभु मिले, एक पंथ दो काम ।।
सोंठ मिर्च पीपर मिला, त्रिकुटी लेव बनाय ।
शहद मिलाकर चाटिये बहत नाक थम जाय ।।
खिचड़ी ऊँची चीज है, पाचक उर स्वादिष्ट ।
दाल-भात पचता नहीं है अत्यंत गरिष्ट ।।
रसगुल्ला सें गुर भलौ, रखै पेट को ठीक ।
मर्दाना ताकत बढ़ै, आयुर्वेदी सीख ।।
मूत्रदाह का दर्द हो , पीली हो पेशाब ।
गुलूकोज जल में पियौ, ठीक होयगौ आव ।।
मित भोजन सत भोजन, मन भावै सौ खाय ।
नहीं जरूरत वैद की गाँठ बाँदलो भाय ।।
करीप्रीत मोबाइल सें, रीत बनी अनरीत ।
करते ऐसी इष्टसों, होती ना भयदीत ।।
आयु बढ़ै बलभी बढ़ै, अच्छा लो आहार ।
अधिक अन्न नहि खाइयो, वरना होगी हार ।।
दर्द निवारक औषधी, ऐलोपैथिक होत ।
असर डालती हृदय पर, रोग दूर नहिं होत ।।
मंजन घर कौ कीजिये - उबटन तन पर डार ।
सुन्दर स्वस्थ शरीर हो मालिश तेल सँवार ।।
दिया प्रकृति ने तन तुम्हें करो प्रकृतिका संग ।
वस्तु प्राकृतिक ग्रहण कर सबल रखो सब अंग ।।
नहीं जरूरत दवा की, नींद लेव भरपूर ।
ठंडे छीटा आँख में, मारौ बढ़वै नूर ।।
चौमासे में नीबुआ खाबै मय अजवान ।
जड़कारे में आम उर ओंरा ग्रीष्म खान ।।

सीख

बुझ जायेगी आग जब, फिर घी का क्या काम ।
वर्ष अठारह बीस में, है विवाह शुभ काम ।।
लड़का नौकर चाहिये, धरती बीघा बीस ।
टका नहीं है पास में, भलौ करेंगे ईस ।।
लड़का नौकर हो न हो, देखो जाय चरित्र ।
दुश्चरित्र मिट जायेगा, फूलेगा सचारित्र ।।
लड़का नौकर है बड़ा किन्तु शराबी होय ।
क्या वह सुख दे पायेगा, सुता मरेगी रोय ।।
जोड़ा अच्छा हो अगर, फौरन करो विवाह ।
होगा सफल भविष्य में, सही मिलेगी राह ।।
लड़का है नौकर मगर है शरीर कमजोर ।
लड़की कभी न ब्याहिये पाप कर्म यह घोर ।।
गहनगुरिया सड़ियाँ देती हैं सम्मान ।
अगर हुआ निर्वल पती जीवन नर्क समान ।।
छोटा बच्चा जिस तरह , करे मिठाई चाह ।
निर्बल पति की भामनी, तके सबल की राह ।।
सुंदर- योग्य मिले पति, सारे वैभव व्यर्थ ।
जोड़ा बढ़िया हो अगर, जीवन बीते सार्थ ।।

बुंदेली - श्रृंगार

दोहा- कभी हरित परिधान है कभी पीत परिधान ।
नित नव रँग गोरी सजे शोभा रती समान ।।१।।
सजती हौ किसके लिए क्या निजपति के कान ।
अथवा अपने लिये ही आत्म प्रंशसा काज ।।२।।
सुन्दरता का भक्त मैं निरख निरख कृत कृत्य ।
ऐसी ही सजती रहो मैं निरखूँ छवि नित्य ।।३।।
सिन्दूरी साड़ी रहे कंचुकिरंग सिंन्दूर ।।४।।
टॉप्स कान के अधर के रँग भी हों सिंदूर ।
गोरी काया छरहरी भौहें काम कमान ।।५।।
लम्बा मुख चंचल नयन सुन्दर-सुन्दर कान ।
रूप मिला धन भी मिला सुन्दर मिला मकान।।६।।
बच्चे भी सुन्दर मिले सुन्दर पति मतिमान ।
अपना अपना भाग्य है किसको दें हम दोष ।।७।।
पूर्व जन्म अनुसार फल मिला यही संतोष
छंद- मन में छवि बस गई तुमारी जुल्फें कारी कारी ।।८।।
गोरी मुइयाँ कारी जुल्के नागन की उनहारी ।
यैसौ लगत राहु ने ग्रस लओ पूनौ चंद उजारी ।।९।।
लगत घटा के बीच चन्द्रमा हँस हँस खो निहारी ।
लम्मी लम्मी पतरी काया रंग बिरंगी सारी ।।१०।।
माहुर लगो गुलाबी पाँउन हँसी लगत अति प्यारी ।
जीने नाम घरो रजनी ऊ पंडत की बलहारी ।।११।।

- मऊ चुंगी नाका, टीकमगढ़ (म.प्र.)

नारी कौ चरित्र

- डॉ. दुर्गेश दीक्षित

रमसाँई भइया गाँव के अच्छे खाते पीते भले आदमी हते। उन्ने अपनी मैंनत के बल पै अपनी गिरस्ती जोरी ती। पूरौ परवार दिन रात मैनत कर करकै खूब रुपइया कमाऊत तो। उनके घर में जित्ते खाबे बारे ते उत्तई करबे वारे हते। सूदौ सादौ खाबो पीबो उर औढ़वों। पूरौ परवार कमाऊत तो सौ रुपइया रोज उर खर्च हतो पचास रुपइया कौ। हराँ हराँ परवार कौ दालुदुर दूर होन लगो, उर गाँव के अच्छे खासे लोगन में गिनती होन लगी। फटे पुराने उन्ना पैर कैं मजूरी करें उर सबके संगै रूखौ खाकैं सुख की नींद सोऊत ते। ना ऊधो कौ लैंने उर ना माधो कौ दैने। बड़ों सुखी जीवन हतो उन औरन कौ। गनेश पुरा के अच्छे आदमियँन में गिनती हती रमसाँई की। अकेलैं उनकी घरवारी चाल-चलन उर लच्छनन की भौतई अच्छी हती रामगढ़वारी मैदा बाई। उयै दुनिया के ऐल फदालन सैं कोनऊँ मतलब नई हतो। अपने काम सैं काम उर बाल बच्चन खौं समय पै भोजन। कोनऊ जान बुजक्कर ने ऊकौ नाँव सोस समज कैं साँसौ धरो तो। जैसो नाँव हतो ऊसइ रूप रंग।

एक दिना रमसाँई खौ कोनऊ काम सें आन गाँव जाने परो। उर घरैं अकेली रै गई मैदाबाई। उर उदनई पर गओ बरा-बरसात कौ त्यौहार। उदनाँ तनक सज धज कै सिंग्गार करकैं अच्छी रंगीन सारी पैरकैं, हाँत में पूजा कौ थार लैकैं गाँव में हुन कड़ी। अच्छे उन्नन उर गाने गुस्ते सैं उनकी सोबा चौगुनी बढ़ गईती। देखबे बारन की नियत में बट्टो होन लगो तो। पैलऊ पैल ऊपै गाँव के मुखिया की नजर परी, देखतनई उनें झमा सौ आगओ। तनक समर कै देखौ सोऊ जान गये कै अरे जा तौ रमसाई की घरवारी मैदावाई आय। आज उनकी समज में आई कै पैरे ओढ़े सैं औरत की सुन्दरता में चार चाँद लग जात। मुखिया जी बोले कैं कायरी रामगढ़ वारी तैं कितैआं जा रई सज धजकैं। लाला साब का अपुन खौं पतोनइयाँ आज बरा बरसात तौ है। हम बरिया कौ पूजन करबे आ जा रये। काय रमसाँई भइया कितै गये। दायजू साव, वे तौ अपने भानैज की पक्कयात में रामगढ़ गये हैं। काल तक लौटकैं आ पैय। तो ठीक है व्याई म्याई करकैं हम रात कै आ जैंय। सुनतनई मैंदा बाई तनक मुस्क्याकें आँगै खौं चल दई। तनकई आँगे चली कि इतेकई में गैल में गाँव के किलेदार साव मिल गये। दूर सें देखतनई समज गये कै जा तौ रमसाँई की घरवारी मैदा आय। पैरे ओढ़े सैं तौ इन्द्र कैसी परी लग रई। उनपै ऊके रूप कौ जादू चढ़ गओ उर बोले कै अरे ओ रामगढ़ बारी कितै आ जा रई"। उनें देखतनई मैंदा ने तनक घूँघट घाल कैं कई कै आज बरा बरसात है सो बरिया पूजन आ जा रये। बिलात दिना सैं रमसाँई भइया नई दिखाने।

ककाजू वे तौ आन गाँव चले गये। कबनौ लौटने? अब का कै सकत दो तीन दिना लग सकत। कछू हुक्का पानी कौ इंतजाम है घर में। काय नइयाँ आप औरन की कृपा सैं राम कौ दओ सब कछू है घर में। अरे कछू होय चाय नई होय तुम तौ हौ। घर में। हओ मालक हम तो सेवा खौं तैयारई ठाँढ़े। तौ हम दिन बूढ़ें तुमाये इतै आ रये। अच्छी बात है अबाई होय मालक जो कछू बनै सो सेवा खुशामद करें अपुन की। इतनी कैकैं घूँघट में हुन हेरत चली गई मैदाबाई। इतेकई में किलेदार साव की लेंड़ी तर हो गई उर दिन बूड़े की बाट हेरन लगे। तनकई आगें चली कैं गैल में पटवारी कक्का मिल गये। छमक छमक इन्द्र कैसी परी चली जा रइ ती रामगढ़वारी। उने देखतनइँ गैलोर ढाँड़े होकें रैजात ते पटवारी तनक देन नौ तौ ठगे से ठाँढ़े रै गये। बड़ी देर में पैचान पाये कै जातौ रमसाँई की घरवारी मैदावाई आय। अरे देखतमें तौ जा रैन कैसी पुतरिया लग रई। लिंगा जाकै बोले कैं अरे हमने तौ तुमें चीनई नई पाव। तनक घूँघट सरका कै मैदाबाई बोली कैं तुम हमें कायखौं चीनों। आसौ सूका पर गई फसल अच्छी नइया सो अच्छन अच्छन की चिनारें मिट गईं। हम औरन की तौ कोनऊ गिनतिअई नइयाँ। अरे गिनती काय नइयाँ। हमाई नजर में तौ तुमाई सोरा आना गिनती है। का आजकल रमसाँई घरैं नइयाँ। लाला वे तौ आन गाँव गये हैं। अच्छी बात है तौ रातै हम तुमाये इतै आ रये।

अवाई होय, जो कछू रूखौ सूकौ बनें सो सेवा में हाजर करें। इत्ती कैकैं मुस्क्यात आगे खौं डगया गई। दोई घर नईं नक पाई ती कै बखरी के दौरें कुर्सी पै बैठे गाँव के सेठ घंसू साव दिखा परे। उनें दूरई सैं देखतनई घूँघट घाल लओ उर आगे कौं जान लगीं। देखतनई साव कका ठगे से रै गये। जा सोसन लगे कै जौ हूर कैसो चैनुवा गाँव में कीकी बहू आ गई। तनक लिंगा जाकै देखो सोऊ समज गये कै अरे जा तौ रामगढ़ वारी आय। ढकी मुदी अच्छी सारी उर गानौ गुस्तौ पैरैं कैसी नौनी लगरई। ईके सामै तौ सेठानी तक फीकी पर जैंय। उनें अचम्भें में देख कैं मैंदा तनक ठाँढ़ी होकें रै गई उर कन लगी कै साव जू का अपुन पैचान नई पाये। पैचान तौ लवो रमसईं तो दिखानइ नइयाँ सावजू वे एक न्योते करबे आन गाँव चले गये, का कछू काम है उनसें काम का काम तौ तुमसै आ है। अपुन कैसी बातें करत हमतौ सेवा खौं हाजरई ठाँढ़े। तुमाओ करजा दैने उर तुमारई बस्ती में रनें। अपुन सै कटकै काँ जासकत। तौ हम आज तुमाये इतै रात कैं आ रये। हओ हमतौ तैयारइ ठाँढें। इत्ती कैकैं तनक मुस्क्यात सूदी बरिया पूजन चली गईं। बड़ी भक्तिभाव सैं बरगद देवता कौ पूजन करो उर अपनें अमर ऐवात कौ बरदान माँगकैं हाली फूली घरैं चली गई।

घरैं आरामसैं व्याई म्याई करकैं पर रई उर मौड़ी मौड़न खौं खोआ पियाकैं सोआ दओ। उर पौर के किवारन की साँकर लगाकैं पर रई। आठई नई बज पाये ते कैं उने पौंर के किवार भड़कबे कौ ऐरौं सुना परो। मैंदा सब समज गई उर जाकैं किवार खोल दये उर बाँयरे ठाँढ़े दिखानें मुखिया जू। उनें सिसरयानौ सौ देखकैं मैदा बाई कन लगी कैं भीतरैं चलवौ होय मुखिया जू इतै बायरैं काय खौं आ ठाँढ़े। कछू नई पैलाँ जातौ बताव कै आज रमसाँई खौ तो नई लौटनें। अब कछू कै नई सकत मुखिया जू। चलो भीतरें तौ चलो इतै बायरैं गैलारे कछू भलो बुरओ सोसन लगें। तनक मन मसोस कैं भीतरैं चले गये। तनक बैठई नई पाये ते कैं इतकई में किवार भड़कबे की अवाज सुना परी। सुनतनई मुखिया जू के प्रान थर्रा गये। उर मैंदाबाई सैं कन लगे कै पनमेंसुरी हम तुमाये पाँव परत उर हाहा करत। हमाई लाज तुमारई हाँत में है। अब बताव हम कितै दुकबें। कुजाने बायरे कोआ आ गओ। मुखियाँ जू अपुन चिन्ता नई करो। देखौ जे घर के चाराई कोंनन

में चार बड़ी बड़ी कठिया धरी हैं तुम चुप चाप पूरब के कोने की कुठियाँ में घुसकैं बैठ जाव, उर हम उयै ढाँकें देत। जा बात मुखिया जू के गरें उतर गई उर वे कुठियाँ में गुढ़या कैं बैठ गये। तब उनके प्रानन में प्रान आपाये। उर मैंदाबाई गई उर पौर की साँकर खोली उर देखो कै बायरै किलेदार साव ठाँढ़े ते। देखतनई उनसै राम राम करी उर कन लगी कैं चलबौं होय भीतरैं। किलेदार साव तनक भीतरै बैठई पाये ते कैं इतेकई में पौंर के किवार भड़कबे की अवाज सुनापरी।

सुनतनई किलेदार साब अकबका गये उर कन लगे कै आज तौ भौत फजीहत भई। लगत कै रमसइयाँ लौट कैं आ गओ। वताव अब कितै दुकत, वेइज्जती उर लट्टामारी होने। मैंदाबाई के गोड़न पै गिर कैं कन लगे कैं हमने जे कान पकरे हम कबहुँ तुमाई तरपै बुरई नियत सैं नई हेरैं। अबकी दारै तुम हमें माफ कर दो। कितऊँ दुकबे की जगा बतादो। मैंदाबाई कन लगी कै वा जौन कोने में कुठिया है ऊमें घुसकैं बैठ जाव उर हम ऊपर सैं उयै ढाँकें देत। किलेदार की सबरी ठसक बिला गई उर वे ऊ कुठिया में गुडमुड़या कैं बैठ गये।

मैंदा ने जाकैं जइसै पौर के किवार खेले सोऊ वायरै पटवारी कक्का ठाँढ़े दिखाने। किवार खुलतनई पटवारी साव भीतरै जाकैं खटिया पै विराज गये। उनें बैठतनई झेलनई हो पाव पानीयई नई पी पाव तो इतेकई में पौर के किवार भड़कबे की आवाज सुना परी। सुनतनई पटवारी कक्का के सटननारे छूट गये। उन्नें जानी कैं रमसइयाँ आन गाँव सै लौटकैं आ गओ, अब उयै हमाई कुरदच्छना कर दैने। गाँव भर में करिया मौं हो जाने। जब बताव कियै मौं दिखाँय हम। पटवारी की दशा देख कैं मैदाबाई खौं दया आ गई उर कन लगी कै देखौ तुमऊँ कोने की कुठिया में घुस जाव। पटवारी दौरकें कुठिया में घुस गये। रामगढ़ वारी मैंदा ने पौर के किवार खोले उर उतै साव कक्का ठाढ़े दिखाने। मैदा बोली कै चलवौ होय भीतरैं। वे तौ जा चाउतई हते। बड़े मजे सैं भीतरै पौंच गये। दो चार प्रेम की बातें होई नई पाई तीं कै इतेकई में पौर के किवार भड़कबे की अवाज सुना परी। सुनतनई साव कक्का के प्रान कड़ गये उर अकबका कैं नाँय माँय हेरन लगे उर मैंदाबाई सैं बोले कै हमने तुमाव सबरऊ करजा माफ करो अबकी दार तुम हमाई इज्जत बचादो। अब हम कबहुँ इतै आबेकौ नाँव नई लैंय। इत्ती कैकैं वे अँसुआ पोंछत ऊके गोडनपै गिर परे। मैंदाबाई ने कई कै जाव ऊ कोने की कुठिया में बैठ जाव। लगत कै वे आन गाँव सैं लौट कैं आ गये हैं। मैंदा ने किवार खोले तौ रमसाँई ठाँढ़े दिखाने। हारे थके उर भूके प्यासे हते सो खापी कै और ये कोठा में सो गये।

उर उतै वे चारई जनें चारई कुठियँनमें पिड़े पिड़े घबड़ा रये ते। भुन्सराँ कौ पार हो गवो, कुकरां बोलन लगे उर उननने सोसी कैं अब भुन्सराँ बड़ी वेइज्जती होने। ईसैं इँदयारे में इतै सैं कड़ चलें। अबै रमसइयाँ घुरटि दै रवो है। हराँ कै मुखियाजू कुठिया में हुन ढूँक कैं मैंदाबाई सैं विनती करन लगे कै आज हमें कड़ जान दो अब हम कबहु इतै आबे कौ नाँव नई लैंय। मैंदाबाई ने उनें बायरै काड़ो उर वे कान पकरकैं उर माफी माँग कैं चले गये। तनक देर में किलेदार साव कुलबुलान लगे। मैंदाने उने बायरै काड़ो वे असुआ पोंछत मैंदा के गोल्डन पै गिरकैं थराई विनती करकैं मौंगे चाले बायरै कड़ गये। अब पटवारी की बारी आई वे मई कुठिया में हुन गुर फोरन लगे, चिकनी चुपड़ी बाते करकैं बायरै कड़ आये। मैंदाबाई के सामने कान पकर कैं ठाँढ़े हो गये उर कन लगे कैं तुम आज सैं हमाई धरम की बैन हौं। जोलौ जियैं तुमावो ऐसान नई भूलें। मैंदाबाई उनें दोरे नौ पौचा आई। वे हराँ हराँ पाँव दबाँकै कड़ गये। अब रै गये ते अकेले साव कका। उन्नें रमसाई कौ भौतई व्याज खाव तो। मैंदा ने उनकी कुठिया के लिंगा जाकै कई कै कओ अब का करो जाय तुमाये संगै। वे अबई जगबे वारे हैं उर वे तुमाई सोंठ सी फोरें देत। वे मई हुन कपन लगे उर बोले कै तुम हमें कड़ जानदो हम तुमें चार हजार रूपइया पौंचा दैय। इत्ती कैकै वे मौगे चाले मूँढ़ निओरा कैं बायरैं क़ड़ गये।

देखौ जौ मैंदाबाई की चतुराई कौ खेल हतो कै ऊकी इज्जत बच गई उर हरामियँन खौ दण्ड मिल गओ। वे चारई जनें एक दूसरे के कुकर्मन खौं तौ जानई गये ते। अकेलै काँसेकौ सुर काँसई में बनो रओ। वे चारई जनें एक दूसरे खौ मौ दिखाबे में सरम खान लगे। उर उदनई सैं उन औरन ने कुकरम ना करबे की कसम खा लई ती। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी।

– कुण्डेश्वर (टीकमगढ़ म.प्र.)

बाल मजदूरी

– सरोजा शिल्पी

लिख पाये नईं एक भी अक्षर सिलेट में।
मजदूरी मिली बचपन खौं इतै भेंट में।।
मजबूरी की चक्की में दिन– रात पिसे हैं।
चन्दन की मुठिया सें जे रोज घिसे हैं।
दो रोटीं नईं डार पाये तौई पेट में।
लिख पाये नई एक भी अक्षर सिलेट में।।
स्कूल की कक्षा में कभ हूँ बैठ पाये ना।
का– का है कितावन में कभहूँ देख पाये ना।
पिस गई है बालपन की मस्ती चपेट में।
लिख पाये नईं एक भी अक्षर सिलेट में।
गड्ढा कभहूँ भरे कहूँ खोदे पहाड़ हैं।
पीटे हैं कभहूँ लोहा कहूँ काटे झाड़ हैं।
कहूँ घिस गये है भाग धोउत कप– पिलेट में।
लिख– पाये नईं एक भी अक्षर सिलेट में।
दिन– रात करी मेहनत पै चैन न मिलो।
अँसुआ भरे नैनन में एक सपन न खिलो।
बचपन शिकार भवो है जग के आखेट में।
लिख पाये नईं एक भी अक्षर सिलट में।
ओड़ौ है गगन रोज रई है धरती बिछौना।
दो कथरियन कौ रोज रओ है इने रोना।
बचपन और जवानी गुजारी नैत– नैत में।
लिख पाये नईं एक भी अक्षर सिलेट में।
मजदूरी मिली बचपन खौ इतै भेंट में।।

– एफ 7, गीत बंगले, फेस–2 दुर्गेश बिहार
जे.के.रोड भोपाल (म.प्र.)
मो. 9977825997

बुन्देली लोकगाथाओं एवं गीतों में ऋतु वर्णन

- डॉ. सीमा तिवारी

भारतीय लोक मानस की अभिव्यक्ति का माध्यम हमें परम्परा से प्राप्त होता है। वैदिक युग में भी शुभ अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों के रूप में ये गाथायें उपलब्ध थीं। पुराणों में सुवर्ण की गाथा इसके उदाहरण है। वास्तव में वेद, पुराण, इतिहास, आख्यान तथा बृाह्म्ण ग्रथों में यत्र-तत्र लोक गाथाओं का इतिहास प्राप्त होता है।[1]

प्रत्येक उत्सव एवं यज्ञों के आरंभ में देव गाथा, वीर गाथा तथा अन्य कथाओं का गायन एवं श्रवण होता था। इस प्रकार लोकगाथायें भारतीय मानुष के प्रारंभ से ही उसके उद्योग के कारण संग-संग निर्मित एवं विकसित होती रही है।[2]

इस प्रकार गाथा एक तरह से भारतीय मानुष के इतिहास का पाठ्य है जिनमें आदमी के सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आध्यात्मिक, इतिहास के विकास की रेखा का अध्ययन किया जा सकता है।[3]

लोक गाथाओं का वृतान्त मात्र भूत न होकर वर्तमान से संवाद कर रहा होता है तथा भविष्य की झाँकी उपस्थित कर रहा होता है। ये गाथायें संस्कृति और सभ्यता की परिचायक हैं।

गाथाओं में ऋतु वर्णन परम्परागत रूप से अपनाया जाता है। बसन्त में प्रकृति वर्णन, पावस का सौन्दर्य, काले मेघ देखकर मयूर का प्रसन्न होना, लताओं का वृक्ष से लिपटकर बढ़ना और बादलों के बीच चपला की चमक। वर्षा ऋतु की समाप्ति के साथ शरद का आगमन। इस प्रकार गाथाओं में ऋतु वर्णन सम्बन्धी कई प्रसंग वर्णित हुए है यथा-

असढ़ा तो उतरे अरे सहुआ लगे हो, दूब भई हरयाय,
वीरन लुबौवा आये नहीं मैने चूनर धरी है रंगाय।
सहुवा लागे अरे कछू ले दियो हो लंहगा लाम झुलाम,
फरिया तो लेदे अर रेशम पाटकी जेमें लिखे पपीरा मोर।[4]

असाढ़ के उतरते ही श्रावण लग गया चारों और दूब की हरियाली है। एक बहिन अपने भाई के आगमन की प्रतीक्षा कर रही है।

श्रावण का सुहावना माह आ रहा है, प्रीतम मुझे एक बड़ा सा घाघरा तथा चूनर लादो जिसमें मोर पपीहा लिखे हों। धादू भगत की गाथा में ऋतु वर्णन-

कातक मास धरम के मईना,खेलो मोरी सुरहन गाय माँ,
घर-घर गोदन पूजे मोरी माई, जाई धरम की राह माँ।
मौन चरावे मौनियां, घर आँगना ने सुहाय माँ,
अगन मास आगन रित आई, हर के उठ गये नेत माँ।
पूस मास तोरी होय न सेवा, माव महत्तम होय माँ,
फागुन में हर होरी खेलें, आगे सिंगा दहाय माँ,
जब ढुर लागे चैत महिना, कन्या नेउत जुबास माँ,
भर बैसाख कोहलिया बोले, बैठे ढुड़का होय माँ।
जेठा मास तपत गये माई, छाउत गये असाढ़ माँ,
साहुन भदवां क्वांर जब लागे, धादू धनुष सजोय माँ।[5]

धादू की गाथा में बारहो महीनों की विशेषताओं के साथ वर्णन किया गया है कार्तिक से लेकर क्वांर मास तक का अर्थात् 'बारामासा' का वर्णन है।

रैया की गाथा में कैसा सजीव ऋतु वर्णन है-

घरर-घरर नदिया बहे गोरी धन पनियां खाँ जाँय,
घिरी रे बदरिया फुहर चली, आ गई बेरन बरसात,
भादों में पंछी घर छोड़े नहीं, बनजारे बन जिन जाँय,
सूनी मड़ैया मोहे डर लागे, गरजत घन आधी रात।।[6]

नायिका पानी भरने जा रही है उसके जाते समय बादल घिर आये और मूसलाधार वारिस होने लगी। भादों के मास में तो पक्षी भी अपना बसेरा नहीं छोड़ते।

बौरीगौरी गढ़ की लड़ाई -

लागो महीना अब सावन को, तिरियाँ करें मंगलाचार,
कोउ-कोउ तिरियाँ झूला-झूले, कोनऊ गावे राग मल्हार,
सबकी बिटियां घर आई नैहर माँ, मोरी छाय रही ससुरार।[7]

चंद्रावली अपनी ससुराल में है श्रावण मास में स्त्रियाँ जँहां-तँहां मंगल गीत गाती हैं। रानी मल्हना सोचती है कि श्रावण में तो सब बेटियां अपने मायके जाती हैं लेकिन मेरी बेटी ससुराल में ही है।

बहिनि बदरिया तुमको सुमरों, कौधा वीरन की बलि जाँय,
झमकि बरसियों मोरे महलन में, कंथा आज रैन रहि जाँय।[8]

सावन की बदली को समदुख भागिनी बहिन के रूप में और बिजली की चमक को दर्पीले भाई के रूप में रक्षार्थ पुकारा गया है। कौध को कौधा कहकर उसे पुरूषत्व प्रदान किया गया हैं।

बसंत ऋतु-

दिन ललित बसंती आन लगे, हरे पात पियरान लगे,
घटन लगी सजनी अब रजनी, रवि के रथ ठहरान लगें।
उड़न लगे चहुँओर पताका, पीरे पट फहरान लगे,
बोलत मोर और कोकला कूकै, आमन मोर दिखान लगे,
गंगाधर ऐसे में मोहन किन, सौतन के कान लगे।

उक्त पंक्तियों में बसंत ऋतु का वर्णन हुआ है। लोक कवि ने शिष्ट ऋतु के वर्णन में बसंत की विशेषतायें स्पष्ट की हैं। एक अन्य लोककवि की रचना-

सावन गरजे, भादों बरसे पवन चले पुरवाई,
कौना बिरछ तर भीजत हुइयें राम लखन दोउ भाई।

माता कौशिल्या को अपने पुत्रों की याद आती है- श्रावण में पानी अधिक बरसता है। भाद्र मास में तो घन गर्जना के साथ वृष्टि होती है ऐसे समय मेरे पुत्र पता नहीं किसी वृक्ष की छाँव में खड़े हुए होंगे, वे भीग गये होंगे।

ढुर लगे असाढ़ खबर ने लई हरि मोरी,
दादुर बोले पपीरा बोले, मधुवन बोली मोर,
श्याम-श्याम कह टेरियों, चित है मोरी ओर।

कृष्ण प्रवासी है आसाढ़ का महीना लग गया उन्होंने हमारी सुधि न ली। इस समय दादुर बोलते हैं, पपीहा पीव-पीव की रट लगाता है तथा मधुवन में मोर बोलते हैं। हम कृष्ण की रट लगाये हैं, लेकिन वे नहीं आये।

एक अन्य बारामासा-

असाढ़ मास जब लागे सजनी, चहुँ दिस बादर छाये।
मोरा बोले पपीरा बोले, दादुर वचन सुहाये।

क्वांर मास की छुटक चाँदनी, बाढ़े सोच हमारे।
घर होते नैनन भर देखते, अउतन कंठ जुड़ाते।
फागुन मास फरारे महीना, सब सखि खेलें होरी।
जगन्नाथ की वारामासी, गावै नंदकिशारी।

उक्त वारामासी में असाढ़ से फाल्गुन तक का वर्णन एवं उस ऋतु में विरहिणी पर होने वाली प्रतिक्रिया का वर्णन है।

अब रित आई बसंत बहारन, पान फूल पतझारन,
तपसी कुटी कंदरन माहीं, गई बैराग बिगारन।
हारन द्वंद्व पहरान अगरन, धाम धवल जल धारन।
चाहत हति प्रीत प्यारे की, हा-हा करत हजारन।

बसंत ऋतु के आगमन पर वन, पर्वत, खेत-खलिहान, नदी और धवल धामों में सर्वत्र बसंत बहार फैली है। कन्दराओं में निवास करने वाले साधु पर भी बसंत का प्रभाव दिखता है।

एक बारामासी में ऋतु चित्रण देखिये-

कन्हैया बिना कौन हरे मोरी पीरा,
असाढ़ मास घन गरजन लागे।
सहुना गिहर गम्भीरा, भादों में नभ बिजली चमके।
जो मन धरत न धीरा, कुँवार मास में बोनी हुइये।
जो तन धरत न धीरा पूस मास में ठंड जो व्यापे।
माव में हलत शरीरा, फागुन में हरि होरी खेलें।
कौन पे छिटकें नीरा, चैत मास की खरी दुपरियाँ।
व्याकुल होत शरीरा।।
मैया माय भुवन में बादर ऊनये हो माँ।
मैया उमड़-उमड़ घन गरज रहे हो माँ।
अरे बिजली दमकत जाय.......
अरे कौन दिशा बदला भये हो माँ।
अरे कहाँ बरस गये मेव.....
पूरव दिशा बदला भये हो माँ।
अरे पच्छम बरस गये मेव....
मैया कौना की भीजी रंग चूनरी हो माँ।
अरे कौना की पचरंग पाग....
मोरी मैया की भींजी रंग चूरनी हो माँ।
अरे लंगड़े की पचरंग पाग.....
मैया कैसे के सूकी रंग चूनरी हो माँ।
अरे कैसे पचरंग पाग....
मैया लहरों सूकी रंग चूनरी हो माँ।
अरे लपटन पचरंग पाग....
मैया सुमर-सुमर जस गाईये हो माँ।
अरे चरन लाग सुक पाँय भुवन में।
बादल ऊनये हो माँ.......

उक्त जस गीत में वर्षा ऋतु का वर्णन हुआ है। बादल अचानक घिर आये और गर्जना के साथ बरसने लगे।

किस दिशा से बादल हुए तथा कहाँ बरस रहे हैं। पूर्व से बादल आये और पश्चिम में बरसने लगे।
वारिस की अधिकता से किसकी चूनर भीग गई, किसकी पाग भींगी?
दुर्गा देवी की चूनर तथा लंगुरे की पाग भीगी।
भीगे वस्त्र कैसे सुखाये गये?

हवा के झोंकों से माता की साड़ी तथा लहरों से लंगुरे की पाग सूखी। हम भक्तगण माता का स्मरण करके उनके जस गायन कर रहे हैं। हमें उनके चरणों में ही सुख की प्राप्ति होती हैं।

सन्दर्भः-

१. एतरेय ब्राह्मण ७/१८
२. विंटर नित्ज हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर पृ. ३११
३. लोक संस्कृति और इतिहास-बद्रीनारायण पृ. ६१
४. आल्हा की साखी-परम्परागत
५. धान्दू की गाथा- ओमप्रकाश चौबे चौमासा आख्यान विशेषांक अंक २० पृ.८४
६. रैया की गाथा-नंदकिशोर तिवारी एवं ओम. चौबे चौमासा अंक ५०
७. बौरीगढ़ की लड़ाई (आल्हा खण्ड)
८. आल्हा की साखी-लाखन का गौना-मटरूलाल अत्तार

- गुरूफर्श, बरिया घाट वार्ड, सागर (म.प्र.)
फो. 9617627904

घुसन लगो जड़कारौ

- पं. रतिभानु तिवारी 'कंज'

छपरा के खपरा सब नैचें, कर गवतो बसकारौ।
टूटी टटिया में मों दैकें, घुसन लगो जड़कारौ।।
रमकू भौजी दुकीं पिआँर में
कमला कथरी ओड़ें।
कक्का थर- थर कपें पोंर में,
काकी आग न छोड़ें।।
राम राम रट रय बब्बा जू, ताक रए भुन्सारौ।
टूटी टटिया में मों दैकें, घुसन लगो जड़कारौ।।
लगरइ ठंड बतीसी बजरइ
तातौ लगै सिरानों।
भगो चपोला धमका ओजू
जाने कितै हिरानों।।
धरती के धौरे आँचर में दुक गव कीच गिलारौ
टूटी टटिया में मों दैंके, घुसन लगौ जड़कारौ।
सरसों फूल रई खेतन में
चुनवें चना चिरइयाँ।
चिलकै ओस हरी मेड़न पै
नोनी लगै उरइयाँ।।
मावठ की ठिठुरन ने सबखों, रनबन कौ कर डारौ।
टूटी टटिया में मों दैकें, घुसन लगो जड़कारौ।
भरौ सलूका पैरें डुकरो
कलुआ कोंड़ौ बारें।
बिना कमरिया के बाबा जू
दिन भर धूनी टारें।।
माटीं भरकें फिरै पिछौरा, कउँ धौरौ कउँ कारौ।
टूटी टटिया में मों दैके, घुसन लगो जड़कारौ।

- बुन्देली धाम, नैगुवां
जिला-निवाड़ी (म.प्र.)

एक पाठक की प्रतिक्रिया

- डॉ. लोकेन्द्र सिंह गुर्जर

बुंदेली विकास परिषद के संस्थापक ठाकुर श्री शंकर प्रताप सिंह जू बुन्देला साब खौं सौ सौ सीताराम हमाइ।

सन् 2018 की पत्रिका बुंदेली बसंत दिनांक 07-03-2018 खौं प्रिय विनोद मिश्र सुरमणि जू के हातन मिल गई है जू। अपुन नै बड़ी किरपा करी है जू। हम अपनौ आभार प्रगट करत हैं जू। अपुन नै पत्रिका में लिख दइ है जू समीक्षार्थ, अपुनइ बताइये जू कै समीक्षा करवै हर एक आदमी के बस की बात नइँ होत है जू। आलोचना समालोचना, प्रशंसा तनक सरल होत है। अब अपनो हुकुम भओ है जू तो हमसै जैसो बन परत है लिखत है जू।

अपनी अठत्तर बरस की उमर में हमनै कछू पढ़ो देखौ वे आज के चलन कौ चित्र कबऊँ नई देखौ है जू,जैसो आवरण पै अपुन नै छापौ है जू। अपुन की समझ में आउत हुये जू पै अपनी जॉन में कछू अच्छौ बताऊत हुयै जू पै अपनी समज के तौ बाहर है जू हमनै अफ्रीकी नारियों के मूल चित्र देखे हैं। वस्त्रहीन उन्मत्त यौवन बड़े शालीन सुकमार, हमनै वात्स्यायन खौं पढ़ौ है भतृहरि कौ श्रृंगार शतक उपन्यास कार वृन्दावन लाल वर्मा जू, हरिशंकर परसाई, मुंशी प्रेमचन्द पै उननै काउँ नै ऐसे चित्र नई गढ़े जू। हम सो कालपी सैं बालाघाट तक गये है हमने आसाम जम्मू मद्रास, दिल्ली, जयपुर से बड़े-बड़े शहर देखे है जू। पै ऐसे विचित्र- चित्र कितउँ देखवे खौ नइँ मिले जू हमने बुन्देली के उन्नइयक महाकवि ईसुरी जू की सबसे जादाँ चौकाड़ियाँ इकट्ठी करी है जू। उनके श्रृंगार में सोउ ऐसे चित्र देखवे खो नई मिले। हाँ कछू विद्वान है जैसे कीर्तिशेष राजेन्द्र यादव जू और श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा जू जिनकी कहानियाँ और उपन्यासन में कऊँ कऊँ ऐसे चित्र उभरतन दिखाई दये है जू। पै भइया वे सब हमारि बुंदेली संस्कृति और आचरण के लेख न होवै जू। बुन्देलखण्ड कौ आदिवासी क्षेत्र सोउ देखौ पै बड़ौ शालीन।

हम जौ मानत है जू कै आवरण पृष्ठ के चित्रकार ने बड़ी मैनत करी हुइये तब जौ चित्र बना पाव हुये- उन्हें बधाई, हमाव कैवौ जौ है जू जब हम बुन्देली गद्य- पद्य खौ साहित्य स्वरूप देके स्थापित करबे में लगे है तो ऐसे में ऐसे चित्र हमारी का मदद कर पा रये जू। जौ बात दूसरी है जू कै हमैं चित्रकारिता कौ जादा ग्यान है नइयाँ चित्र में का दुकौ है, का सन्देश देत है, जो अपुन जानवी हमाये विचार से बुंदेलखण्ड में अनगनिती चरित्र नायिकायें हैं नायक हैं जू कँऊ हम उनके चित्र छापें- उनकौ जनम- मृत्यु लिखई तो नई पीढ़ी कौ इतिहास जानवे मिल है और उनकी रुचि वह है जूफिर अपुन जानिये साब।

परमार साहब सम्पादकीय पृष्ठ पै अपुन नै हमैं भैयां करकै सम्बोधन करौ है जू कितनौ प्यार है स्नेह है, जा मैं हमाव मन गद्- गद् हो, गव जू। पै का करिये जू उमर मचल गई बोली कै भइया कै वौ तुमाये लानै तौ ठीक है पै हमाऐ लानै जामै का है जू? हम चुप्प हो गये फिर कई कै जाकौ जुआव हम न दै पै है अधिकार परमार साहब के लिंगा सुरक्षित है ।

प्रथम खण्ड-

(अ) भाषा साहित्य और आलोचनाः

सम्पादक जू जा खण्ड मैं सवइ विद्वानन के लेख भौतइ अच्छे है पढ़उआ के मन पे छाप छोड़त है जू। भाषा कौ रूप सुधरत जा रऔ हे जामैं श्री राजकुमार जू अहिरवार साव कौ लेख बुन्देली काव्य में नारी अस्मिता हमै सवसै अच्छौ लगौ है जू। हमाव पुरुष प्रधान समाज अवै नौ नारी समाज कौ बौ मान सम्मान नई दे पारओ जाकौ वौ गुन आउत है जू, नितै नारी को सम्मान होत है जू उतै देवता बास करत है कत तो, करत नइयाँ, कथनी करनी को भेद राजनीति हो गऔ है जू।

(ब) बुंदेल खण्ड के दुर्ग गढ़ तथा गरौठा के गढ़ी बन्दी की गाथाः- डा० सरोज गुप्ता जू कौ आलेख पढ़ौ, इतिहास की सूखती जरन में पानी दैवे कौ कामई कर रई है बहन जू। वे उन सबरे उपेक्षित जगन के लानै प्रानन सै मैनत कर रइँ है जिनै पैले के इतिहासकारन नै देखो तक नइयाँ वे संकल्पत साहित्यकार है उनकौ बुन्देली शब्द कोष खूब बारीकी सै बुंदेली शब्दन सै बाकी बारीकी खौ बता रऔ है जू, बुदेलखण्डी साहित्कार खूब प्रशंसा कर रये है जू है।

(स.) (**श्रीमती प्रमोद पाठक जी**) ने डा० गौरी शंकर सरल जी झाँसी के बुन्देली शब्द की प्रशंसा की है। 'सरल' बड़े विद्वान है जू और तपस्या कर रये है जू मूर्धन्य श्रेष्ठ कवि है जू।

(द.) बुंदेली लोक भाषा नई दिसावें नये प्रश्न :- डा० बहादुर सिंह जू देव परमार साब ने एक ग्यान वर्धक लेख लिखौ जू। वे बुंदेली के परम साधक हैं रात- दिन भाषा की सेवा मे लिप्त बनई रत है जू वे पत्रिका के मुख्य सम्पादक है जू, परमार साहब नै अनेकानेक बुन्देली सेवी विद्वानों की प्रशंसा करी है जू होय चइये। वैसे वे भूलत नइयाँ ई बिरियाँ जानै कैसै हमाइ सेवा वे भूल गये- बिसर गये। चलौ कछू बात नइयाँ कबऊँ कबऊँ ऐसो हो जात है नाउ परौसी खौं न्योतवों भूल जात है कहावत चली आरई है जू । दिया तरै अंधैरौ।

द्वितीय खण्ड

(अ.) इतिहास परम्परा और संस्कृति :

पन्ना का पुरातत्वीय एवं पर्यटनिक वैभव द्वारा श्री नरेश कुमार जू पाठक साव नै लिखो है जू। जा लेख पन्ना की पुरानी से पुरानी शान-शौकत की तस्वीर दिखान लगी। पन्ना बुन्देले और बुन्देलखण्ड की पुरानी राजधानी है। महाराज छत्रसाल जू कौ वैभव धरम - करम साहित्य सेवा समाज सेवा सब कछू उजागर हो गव है। ऐसे आलेख नई पीढ़ी खौ इतिहास को और बुन्देलखण्ड के मान सम्मान कौ ग्यान दऔ गऔ है। ऐसे लेखन की जरूरत सदइँ है जू।

(ब) दतिया की लेद गायन परम्परा खौ प्रिय विनोद मिश्रा सुरमणि नें बड़े सिलसिले वार ढंग सै लिखौ है जू। स्वतंत्रता से पेलै जितने राजघराने हते उनमें राज दरबाकर लागत हतै। राजदरबारन में संस्कृति, साहित्य, कला, संगीत, आदि के विद्वान सम्मान सें शामिल होत हते। हर राजदरवार में कोउ न कोउ नामी गवैया रतई हतै और उनकी अपनी गायकी फैली हती। जैसे ग्वालियर से भइया साव पूंछ वाले, राजस्थान में डागर बन्धु और पुराने गोविन्द भात कुलीकर आदी। सबकी गायिकी अलग-अलग नाँव से जानी जात हती। विनोद जी ने लेद को पूरौ शास्त्रीय स्वरूप मोती की माला सौ पो दऔ है। पैलै लेद कविता भई फिर लेद दतिया राज्य के दतिया घराना के नाव से फली -फूली। लेद की लय ने समाज को बाँधा गुदगुदाया। मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में जी०आइ०सी०झाँसी में एक सांस्कृतिक आयोजन की भूमिका निभाई थी। जा आयोजन में शकीला बानो

भोपाली, मुन्ना खान तबलावादक आये हते। बईं मंच पै बुदेली के शास्त्रीय गायक महान उस्ताद मरहूम आदिल खाँ साहब विराजे ते। जब आदिल खाँ साहब गाने को आये तो बे घुटनों के बल बैठ गये और अपने गायन में धरती और आकाश एक कर दिया। लेद की गायकी सबइ खों बहुत अच्छी लगी शकीला जी ने उनके सम्मान के उठकर उनके पाव छूलिये। लेद गीत तो मैंने भी लिखे है गाउत तो हम सौ रये पै अपने ढंग से। भौत अच्छौ लेख है जू विनोद जू खौ बधाइयाँ।

(स.) बुन्देल खण्ड में नाग विग्रहों की अवस्थिति पर डा० हरिविष्णु अवस्थी जू ने बड़ी भारी जानकारी दई है जू पूरौ लेख ग्यान से भरौ पूरौ है। काय न होय अवस्थी जी बुन्देल खण्ड के मूर्धन्य विद्वान हैं जू। अवस्थी जू ने बुन्देलखण्ड मे नाग विग्रहों का बड़ी व्यापक जानकारी दई है जू। जा जानकारी सर्प (नागों) की है उल्लेख पदवे खौ मिलत है जू। अवस्थी जू कऊँ भूमिका मे पुरुषों नागन कौ रूप और लिख देते तो और मजा आ जातौ। नये लरका नाग कौ मतलव अवे सॉपइ जानत है तो वे आदमी नागन खो सो जानन लगते। लगातार ग्यान कमत जा रऔ है जू। नाग गूजर हते जू। खैरागढ़ नागों का राज्य रहा है।

नाग भगवान शिव जू के संगै ईरान (स्वर्ग)से हिमगिर(हिन्दुस्तान) आये हते और जो लगत है के तक्षशिला में डेरा डारे हते जू जे सात भइया हते के पांच भूल रऔ है जू पै कश्मीर में इनइ नागन के बसाये कई गाँव हैं व नागन के नावन सैई जाने जात है जू' जनमेजय यज्ञ, यज्ञ नइँ हतौ नागन के खिलाफ नाम मिटाव कौ जुद्धइ हतौ जू। कालिया दह में भगवान श्री कृष्ण जू ने कालिया नाग कौ दमन करौ तौ। नाग हमाइ संस्कृति से सम्पूर्ण धार्मिक रूप में रचे से हैं। हमाइ माँ बहन बेटियाँ घर की लीपा पोती काम में नागन के चित्र बनाउत है पूजती है जू।

तृतीय खण्डः

बुदेली गद्य-में बुन्देली के महान कवि ईसुरी जू गंगाधर जू और इनके पाछे के अनेकानेक कवि बुन्देली भाषा में रचनायें लिख रये है जू। बइ सै बुदेली पद्य तौ अबै भौत अच्छौ है जू पै जो तक गद्य की बात है हुआँ तक हम अबै हिन्दी गद्य के सामने अपने आप खों कउँ ठाड़े नई दिखा रये जू। हमे कऊं भाषा के रूप में अपने आपखौं केन्द्रीय सूची में शामिल कराउनै है तो गद्य में किताबैं लिख के बुन्देली भाषा खौं और धनी बनावनै पर है जू। बुन्देली बसन्त पत्रिका से सीख लैने पर है जू। और हम सब जनें मिल के ऐतिहासिक कहानियाँ, संस्मरण, नाटक उपन्यास आदि देबै तो हमाव लक्ष्य पूरौ हो सकत है जू। नई तो अकेली पद्य विद्या के सहारे केन्द्र में जागा न मिल पै है जू। गद्य आलेख सवइ अच्छ पै इतै महान प्रज्ञा पुरुष आचार्य पं. श्री दुर्गा चरण जू शुक्ल साब को आलेख ने धरतीओ आकाश के कुलावे मिलाके ऐतिहासिक फूल चुनके जा मामुलिया कौ चित्रण अपने लेख में करो है अद्‌भुत है जितनी प्रशंसा करी जाय जू उतनियइं कम है उन्हें प्रणाम है शत् शत्

बुन्देली काव्य :

बुन्देलखण्ड में बुन्देली काव्य अपने पूरे सम्मान के संगै पूरी सुन्दरता के संगे फल-फूल रई है और मान सम्मान के झण्डा फैरारई है। सबइ सरस्वती पूत सपूत है मइया के। डॉ. इन्द्रपाल सिंगजू परिहार साब की कविता "धरती बुन्देली को वंदन" और डॉ. राज गोस्वामी की कविता मिट जै हड़फूटन खास तरॉ से प्रेरनादेत है जू और गुदगुदाउत है सवइ कवितायें भौतईं अच्छी है। मन खौ छुअत है कछू देत है जू। कविताइ में पिंगल प्रकाश में जौ लेखौ है जू के कविता कछू खास अक्षरन से श्री गणेश न बरी जाय जू जें अक्षर है:-

'ज ह र भ ख' जे पंचाक्षर हैं इनसे कविता लिखी ज, है तौ वा सै कवि खौ हानि होवे की बात कई गई। इने अग्नि अक्षर सोउ कत हैं।

आभार एवं बधाइयाँ :

प्रिय, सम्पादक जू सीताराम साब :

बुन्देली विकास परिषद की पत्रिका बुन्देली बसन्त बुन्देली भाषा के मील को पत्थर बनकै ठाड़ी भइ है जू, जो पत्रिका बुन्देली गद्य कौ पूरौ रूप निखार के लेखकन खौ जौ प्रेरणा दे रई है जू के हम सबखों गद्य में ऐसी रचनाये लिखें चइये जो हिन्दी के गद्य के समक्ष ठाड़े होवे में मान सम्मान पा सकै। संस्थापक महामना ठाकुर शंकर प्रताप सिंह जू बुन्देला आय खौ कोटि कोटि बधाइयाँ। आभार इस पुण्य महान यज्ञ हेतु आपकी सूझ बूझ आपके सम्पादन के लानै बधाइयाँ ही बधाइयाँ भइया जू कौनऊँ भूल चूक हो गई हौवे तो वय पेट में पचा लियो जू। धन्यवाद!

- रघुवंश नगर, भाण्डेर मार्ग
दतिया, बुन्देलखण्ड (म.प्र.)

कैसी जा आजादी

- डॉ. इन्द्रपाल सिंह परिहार 'अभय'

भलो हतो गोरन को सासन फरक न पाओ पत्ता
जानें गलती करी मार सै, उड़ गये ऊके लत्ता।।
अब न कोऊ सुनबेबारो, रेत फिरे फरियादी।
कैसी जा आजादी ?......

मौंते मुखिया मौज मनारये , कां गरीब जी पा रव।
पानी तक के लाले पर्रये, कितैं दूद पी पा रव।
आवो भलो सुराज भई है, जनता की बरबादी।
कैसी जा आजादी ?......

जो हैं पउआ वारे बेई , सुविधा सबरी पा रये।
ऐरा गैर नत्थू खैरा, हाँतउ न धर पा रये।।
चलते पुरजन की का काने, खूब काट रये चाँदी।
कैसी जा आजादी ?......

पारये बेई प्रधानी जिनके, घर में भरो रुपइया।
भ्रष्टाचारी ऐनई बढ़ रयें मचरइ खा खा खइया।
जो अपराधी और इनामी , बेई बैठे गादी।
कैसी जा आजादी ?......

मंत्री और विधायक सबरे, घपन घैरूआ कर्रये।
सबरी सी.सी. सड़कें चाटी, तोऊ पेट न भर्रये।।
काम न कर्रये एलकार जो, भए घूँस के आदी।।
कैसी जा आजादी ?......

बैने बिटियाँ कड़ न पाइँ, गली गली हैं गुण्डा।
जो बिरोध में आबै उनके, बजें ओइ पै मुंडा।।
खाकी नैंचे दबी दिवाबै हाबी हो रई खादी।
कैसी जा आजादी ?......

- परिहार मोहल्ला नदीगाँव
जिला-जालौन उ.प्र.
मो. 7897049524

सारा देश मौन है

- वीरेन्द्र बहादुर खरे

सन् 2018 प्रकाशित काव्य कृति 'सारा देश मौन है' एक संवेदनशील, जुम्मेवार इन्सान की वेचैन अभिव्यक्ति है। कवि को जितना दुख देश, समाज एवं देश के नागरिकों एवं नेताओं के नैतिक पतन पर और शासकों की कथनी करनी पर है उससे कहीं अधिक उसे देश की जनता पर, बुद्धिजीवियों, देश के नेताओं, संतों, तथा कथित समाज -सेवकों पर है जो गलत, अन्यायपूर्ण व्यवस्था का विरोध न कर मौन साध लेते हैं और अन्याय, शोषण एवं भृष्टाचार को सहे जा रहे हैं।

जाहिर है ये कविताएँ, असंतोष की क्रोध की एवं खीझ की कविताएँ हैं। इनमें जनता की कायरता, सहनशीलता पर लाज सलामत तो है ही, तीखा व्यंग भी है। ये कविताएँ पाठक की आत्मा एवं आत्म सम्मान से मुखातिव हो उस पर चोट करती हैं। इनमें आवेग ही नहीं, विवेक एवं तर्क भी है। कवि रोग को जानता है और निदान भी। कवि अन्याय, शोषण, अराजकता का विरोधी है। पर वह विध्वंश, तोड़- फोड़ और नकारात्मक आन्दोलनों का और हिंसक आतंकवाद का भी समर्थक नहीं है। नक्सलवाद की कविता उसकी सकारात्मक सोच का प्रमाण है - ''अपने कुकर्मों को रेडिकल चैंज कह कर मत छलो। हो सके तो गाँधी नेहरू जय प्रकाश के रास्ते चलो। अपने ही पूर्वजों के पद चिन्हों पर रास्ता निकालो''। कुएँ और खाई के बीच महत्थ रास्ता निकालो (नक्सलवादियों के लिये -पेज-18)।

सरसरी तौर पर देखने पर इन रचनाओं को प्रगतिशील या प्रगतिवादी काव्य या साहित्य में रखा जा सकता है। पर प्रगतिशील काव्य या प्रगतिवादी साहित्य के विपरीत ये कविताएँ पूर्वाग्रह या सिद्धान्त से प्रेरित हो नहीं रचीं गईं। इनमें बाद प्रमुख नहीं है। ये कविताऐं मन से उपजी हैं बुद्धि से नहीं। यथार्थ के धरातल पर लिखीं गईं ये रचनाएँ स्वप्रेरित, भावनाओं से उपजी हैं। इसलिये संवेदनशील एवं प्रभावित करने वाली हैं। इनमें मन की सच्ची पीड़ा है। इन कविताओं पर राजनैतिक कविता का आरोप नहीं लग सकता। इनमें किसी दल विशेष या सिद्धान्त की वकालत नहीं है। ये तो देश दशा और पीड़ा से अपनी-अपनी पीड़ा व्यक्त करती हैं। लेखक गाँधी और जयप्रकाश से अवश्य प्रभावित है। उसकी सोच समन्वयवादी समरसता और सब्रकी उपज की है। ये कविताऐं तोड़- फोड़, अराजकता एवं विध्वंश का समर्थन नहीं करती हैं। ये अन्याय का प्रतिरोध चाहती है पर गाँधी एवं जय प्रकाश की राह पर। ये कविताएं अच्छे दिनों के लिये कवि की ब्याकुल आवाज हैं।

श्री पस्तोर जी ने ये कविताएँ न खुद को कवि रूप में स्थापित करने के लिये लिखी हैं, ना ही पाठकों के मनोरंजन एवं आनंद के लिये लिखी हैं। लेखक इन कविताओं के माध्यम से हम ख्याल लोगों की तलाश कर रहा है। वह लोगों को खंगालना चाहता है। वह चाहता है लोग अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाएँ, वह चाहता है कि लोग साम्प्रदायिकता, भृष्टाचार और जातिवाद का विरोध कर, असहयोग कर उन्हें समाप्त करने का प्रयास करें। वह चाहता है मूक देश को अपने मौन पर शर्म आये। वह चाहता है कि जनता लोकतंत्र की धुरी होने का सबूत दे और बहके लोकतंत्र को पटरी पर लाने का प्रयास करे।

इस संकलन की कविताएँ श्रेष्ठ कविता होने की सभी शर्तें पूरी करती हैं। उनमें भावों की गम्भीरता और अनुभूति की सच्चाई प्रचुर मात्रा में है। वे किसी खास छंद में न होने पर न तो छंदहीन हैं, न लय यति एवं तुकहीन है। कवि के पास एक सशक्त और परिपक्व भाषा है। उसने खुले मन से अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है। कविता में कहीं भी अस्पष्टता नहीं है। भाषा भावों को जस का तस उतार देती है। कवि ने अपनी बात प्रतीकों एवं संकेतो में कही है। भाषा सरल है पर कविता में सपाट बयानी बोझलता एवं नीरसता नहीं है। कहीं कहीं अभिव्यक्ति इतनाी सटीक है कि वाक्य सूक्ति बन गये हैं। कवि अभिव्यक्ति में शब्द चित्र सा रच देता है, देखिये- ''कागज की धुरी से चाँदी की सिला कट रही है। और अफसरों की तिजोरी रकम से अट रही है।'' (अकाल पेज 12)

बच्चे भीख के लिये हाथ फैलाते तो भाषाएँ छोटी पड़ जाती हैं। तो विचार आते हैं। भाषाएँ छोटी पड़ जाती हैं। बँध नहीं पातीं शब्द सीमायें। विचार आते हैं।''(पेज 65)

व्यंग देखिये-''जो ईमान से जितना करीब है। इस देश में उतना ही गरीब है।'' संकलन में 41 कविताएँ हैं पर स्वर एक है। जैसे एक भाव सरिता पूरे आवेग में अगणित धाराओं में फूट निकली हो। संकलन अपनी भावनाओं एवं अभिव्यक्ति सामर्थ्य के कारण सुधी पाठकों और समीक्षकों का ध्यान खीचेगा। पस्तोर जी को अच्छी काव्य कृति के लिये बधाई।

- ओल्ड मीनाल इं. 101 भोपाल

चार - चौकड़ियाँ

- ठा. फेरन सिंह परिहार

होरी खेलें राधा प्यारी, संग में गिरवर धारी।।
कहूँ अबीर गुलाल उड़त है, लयें हाथ पिचकारी।
सखी सहेली संग राधा के, मोतन मांग सँवारी।
'सिंह' सराहत दिन फागुन के, धन बृज के नर- नारी।१।।
रँग में रँगी फिरत मतवारी, जे ग्वालन बलिहारी।
मद ते मती फिरत है सबरी, पट घूँघट के डारी।।
पतरी कमर बदन अति गोरो, कारी चूनर वारी।
'सिंह' सलोनी सुघर गुजरिया, चंद बदन उजियारी।२।।
बृज में फाग मची है भारी, ग्वालन संग गिरधारी।
छरी छवीली सुघर सलोनी, संग टषभान दुलारी।।
सखा सखिन संग जाय जुरे हैं, राधा संग मुरारी।
बरसै रंग अंग सब भीजे, भीजी केसर सारी।३।।
कान्हा रंग से खेलो होरी, करौ न तुम बरजोरी।
बाँह पकर चूनर ना तानों, लाज जात है मोरी।।
देख लेंय कोउ पुरा परोसन दै हैं मोहाँ खोरी।
बिरथा लपट झपट झक झोरत, ऊसइ रंग रस बोरी।४।।

- ग्राम- पिपरा माफ, जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो.9651773163

बुन्देलखण्ड के संत कवि हरिराम व्यास

- एन.डी. सोनी

बुन्देलखण्ड की पावन भूमि पर जब बुन्देलों के ओरछा राज्य का उदय हुआ तो सन् 1531 से 1554 तक भारती चन्द्र राजा रहे। भारतीचन्द्र के गुरू और पुराण वाचक पं. समोखन शुक्ल एक विद्वान व्यक्ति थे। इन्हीं शुक्ल जी के पुत्र थे पं. हरिराम शुक्ल जो बाद में हरिराम व्यास के नाम से प्रसिद्ध हुए। पिता की देख-रेख में अध्ययन करते हुए जब हरिराम जी अल्पायु में ही संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान हो गये, तो पिता ने उन्हें सखी भाव की युगल उपासना की दीक्षा दी। श्याम-श्याम की उपासना प्रारम्भ हुई और उसके प्रति उनका रुझान बढ़ता ही गया। सन्1554 में राजा भारतीचन्द्र के स्वर्गवास पश्चात् जब उनके पुत्र मधुकर शाह ओरछा के राजा हुए तो उन्होंने पं. हरिराम जी को अपना गुरू व पुराण पाठक नियुक्त किया। पुराण पाठक के कारण ही वे व्यास कहलाने लगे। हरिराम जी को अपनी विद्वता के प्रदर्शन का शौक लगा तो उन्होंने शास्त्रार्थ करना शुरू कर दिया। इसी सिलसिले में वे एक बार वृन्दावन गये और वहाँ के प्रसिद्ध विद्वान कवि हितहरिवंश से शास्त्रार्थ करने उनके पास पहुँचे। चर्चा के दौरान वे हरिवंश जी से इतने प्रभावित हुए कि उनके शिष्य बन गये। वृन्दावन उन्हें ऐसा रास आया कि वे वहीं के हो गये और फिर महाराज मधुकरशाह के मनाने पर भी ओरछा नहीं गये।

चूँकि हित हरिवंश कृष्णोपासना की माधुर्य भक्ति के उन कवियों में थे जो राधा को प्रधानता देते थे। सखी भाव से कृष्णोपासना करने वाले इन संत कवियों का मानना था कि केवल कृष्ण ही पुरूष हैं और पूरी सृष्टि स्त्री के समान है। श्री हरिराम व्यास भी इसी मान्यता के संत कवियों में शामिल हो गये। इस भाव के कवियों ने ईश्वर प्रेम को दिव्य अमृत समान माना और उसके रसास्वादन हेतु जो रसमय साहित्य सृजन किया वह वास्तव में अलौकिक आनन्द देने वाला हैं। व्यास जी का एक ही भाव हो गया कि ''श्री राधावर ध्याय कै और ध्याइये कौन''। कृष्णोपासना हेतु वृन्दवन वास के बारे में व्यास जी कहते हैं-

नैन न मूँदे ध्यान को, किये न अंगन न्यास।
नाचि गाय श्यामहि मिले, बीच वृन्दावन व्यास।।

पं. हरिराम व्यास और तत्कालीन अनेक संत गोपियों की भक्ति से प्रभावित हो कर उनकी रासलीला को भी ग्रहण किया। रास पंचाध्यायी ग्रन्थ इसकी पुष्टि का प्रतीक है। इस मत के कवियों में मीराबाई का प्रमुख स्थान रहा। उस समय के सूफी संत विरह के मार्ग पर चल कर ईश्वर रूपी प्रियतम की खोज को ही भक्ति मानते हुए विरह के पद श्रजित करते थे।

इसके ठीक विपरीत हिन्दु कृष्ण भक्त संयोग सुख की कल्पना करते हुए रसमय साहित्य का श्रजन कर रहे थे। गोपियों के समान कृष्ण के मिलन की आशा में सुख का अनुभव ही सखी भाव के कवियों का ध्येय रहा। हरिराम जी हित हरिवंश के सानिध्य में इसको स्वीकारते हैं।

देखे- अब हम वृन्दावन धन पायौ।
चरन सरन राधे मन दीनौ, श्री हरिवंश बतायौ।
सोयौ हतौ विषय मंदिर में, हित गुरू टेर जगायौ।

यद्यपि हरिराम जी व्यास संस्कृत के विद्वान थे लेकिन समय और परिस्थितियों के प्रभाव से हिन्दी में साहित्य सृजन करने लगे। उनका मानना था कि भक्ति पढ़ने- पढ़ाने से नहीं आती- इसके लिए ईश्वर कृपा और साधु - संतो का संग आवश्यक है और इसी कारण वृन्दावन वास कर इन दोनों को व्यास जी ने प्राप्त किया। वृन्दावन के घर- घर में और कण- कण में भक्ति की महिमा व्याप्त है इसलिए जोगी- जाती और साधु - सन्यासी वृन्दावन में रम कर कृष्ण व राधा की उपासना करते हैं। इसीलिए व्यास जी ने निश्चय किया कि ''अबन और कछु करनै, रहनै है बृंदावन। मिलिहैं हित ललितादिक दासी, दास में गावत सुनि मन''। सखी रूप से माधुर्य भाव की उपासना की दीक्षा तो व्यास जी को पिता जी ने ही दे दी थी इसलिए वे उनके गुरू थे ही, फिर वृन्दावन में हित हरिवंश और हरिदास वे उनके सद्गुरू हो गये। इन सद्गुरुओं के साहचर्य में रह कर व्यास जी ने जो साहित्य रचा वह व्यास वाणी में संग्रहित है।

तत्कालीन संत कवियो में हित हरिवंश, हरिदास जी और हरीराम व्यास कवियत्री के नाम से प्रसिद्ध हो गये थे। व्यास जी वृन्दावन के बारे में कहते है-

धनि- धनि बृंदाबन की धरनी।
अधिक कोटि बैकुंठ लोक ते, सुक नारद मुनि वरनी

राधा के प्रति श्याम से अधिक प्रीति और भक्ति क्यों हैं इस सम्बन्ध में व्यास जी का कथन है-

परम धन राधा नाम- अधार
जाहि श्याम मुरली में टेरत, सुमिरत बारंबार।।
जंत्र,मंत्र अरु वेद तंत्र में, सबै तार कौ तार।
कोटिन रूप धरे नँद- नंदन, तौऊ न पायौ पार।

जब नंदलाल स्वयं राधा नाम रटते हुए भी पार नहीं पाते हैं तो भला मनुष्यों की क्या औकात है, यही कारण है कि राधाकृष्ण की उपासना के लिए उन्होंने समस्त उपलब्ध सुखों का त्याग कर कठिनाइयों की परवाह न करते हुए संत का जीवन स्वीकारा।

ब्यास जी मन - वचन और कर्म से राधा- श्याम के चेरे हो गये और उन्हीं के गुण गान करने में मस्त रहे। निम्नांकित पंक्तियाँ इस बात का स्पष्टीकारण करती हैं-

''मोहि भरोसो है हरि ही कौ।
मोको सरन न और श्याम बिनु, लागत सब जग फीकौ
व्यासहिं आस श्याम-श्यामा की, ज्यों बालक आधार चुबी कौ''।।

भक्त कवियों ने कविता के साथ गायन और नृत्य कर आराध्य को रिझाने में भरोसा किया है। व्यास जी कहते हैं।

''मेरौ मन मानत नाँचै- गाये।
एक प्रेम भक्ति कौ फल है, मोहन लाल रिझायैं।'' एवं
''नाँचत -गावत हरि सुख पावत।
नाँचत गन गंधर्व देवता, व्यासहिं कान्ह जगावत।''

व्यास जी द्वारा छै सौ चार दोहों का 'राग माला' नामक ग्रन्थ संगीत

शास्त्र पर लिखा गया बताया जाता है, जिसकी प्रति स्टेट लाइब्रेरी टीकमगढ़ में बताई जाती है। चूँकि व्यास जी वृन्दावन में स्वामी हरिदास के निकट सम्पर्क में रहे और वे उस समय के सर्वोत्तम गायक थे अतः व्यास जी भी अच्छे गायक बने। वैष्णव कवियों व गायकों में ध्रुपद शैली पसंद की जाती रही इसलिए व्यास जी ने भी ध्रुपद का लेखन किया। एक उदाहरण देखें-

''अपनै बृन्दावन रास रच्यौ, नाचत प्यारे पिय संग।
शब्द उघटत श्याम नटवर, मानौं कल मुख चंग।।
बिबिध बरन संगीत अभिनय, निपुन नखसिख अंग।
'व्यास' स्वामिनि नित्य बिहरत, प्रनय कोटि अनंग।।''

कृष्ण भक्त कवियों ने श्रृंगार रस की रचनायें प्रचुर मात्रा में की हैं जिनमें राधा नायिका और कृष्ण नायक हैं। कोमलकांत पदावली में मधुर भावों की कल्पना करते हुए लीलाओं का वर्णन व्यास जी ने भी किया है। भक्ति और साधना के भाव उनके पदों में मिलते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से गोपिकायें जीव का प्रतीक हैं तो कृष्ण ब्रह्म स्वरूप हैं। व्यास जी की रचनाओं में भक्ति को प्रधानता दी गई है। उनके लिए कथनी नहीं करनी का महत्व है-

''व्यास न कथनी काम की करनी है इक सार।
भक्ति बिना पंडित वृथा ज्यों चंदन खर भार।''

कृष्ण के प्रति उनका एक निष्ठ भाव है इसे वे स्पष्ट रूप से कहते है।

''श्री राधावर ध्यायकै, और ध्याइये कौन।
व्यासहि बने देत नहिं बरी बरी प्रति लौन।''

राधा कृष्ण के प्रेम का श्रंगारिक वर्णन भक्ति और रीति का संगम है। कृष्ण राधा का श्रृंगार खुद करते हैं तो उनके रसिक मन को संतुष्टि होती है। ऐसा ही भाव इस पद में देखें-

''राधिका मोहन की प्यारी।
नखसिख रूप अनूप गुन सीमा, नागरी श्री बृषभानु- दुलारी
बृंदाविपिन निकुंज भवन, तन कोटि चंद उजियारी।
नव-नव प्रीति प्रतीति रीति रस, बस किये कुंजबिहारी।
सुभग सुहाग प्रेम रंग राची, अँग- अँग श्याम सिंगारी।
'व्यास' स्वमिनी के पदनख पर, बलि- बलि जात रसिक नर- नारी।'

नायक कृष्ण नायिका राधा पर ऐसे मोहित हैं कि उनके दर्शन बिना चैन नहीं। राधिका के सौन्दर्य को किसी की नजर न लगे इसका उपाय भी करते है। इन पंक्तियों में उक्त भावों का वर्णन दृषटव्य है-

''तब मेरे नैंन सिरात किशोरी, जब तेरे नैन निहारौं।
कोटि काम रति, कोटि चंद बदनारविद पर बारौं।।
तू भूषन धन जीवन मेरै, यह ब्रत मन प्रतिपारौं।
'व्यास' स्वामिनी के तन-मन पर, राई लौन उतारौं।।''

प्रेमी- प्रेमिका के रूठने- मनाने का वर्णन कृष्ण काव्य में बहुतायत से हुआ है। व्यास जी ने भी रूठी राधा को मनाने की अभिव्यक्ति का आनन्द किया है-

''मुख छवि अद्‌भुत होत रिसानें।
नैनन की सैननि महँ सुंदरि, तेरे हाथ बिकानें।।
तोरत अंग रंग भरि पुलकित, रिसि न तजत अकुलानें।
अपनौ काज बिगारति नाहिन, आतुर कुसल सयानें।।
व्यास उसास लेत दोऊ जन, रबकि कंठ लपटानें।।''

कृष्ण के मनाने पर खुश होकर झूठ- मूठ रिसानी राधा कह उठती हैं-

'सुनहु पिय! जिय तें हों न रिसानी।'
तुम्हरे मन कौ मरमु लेत ही, अरुचित काज निसानी।
समुझि विनोद 'व्यास' की स्वामिनि, श्याम कंठ लपटानी।।

राधा- कृष्ण के एक - दूसरे से मिलन का सहज सुख व आनन्द मात्र दो पंक्तियाँ पढ़ कर महसूस करें-

''नैननि नैंन मिलत मुसक्यानी।
तन सों तन, मन सों मन मिलयौ, ज्यों पिय पय में पानी''।

श्रीमद् भागवत के दसम स्कंध के अध्याय 29 से 33 तक को रास पंचाध्यायी कहा जाता है। इसकी कथा के आधार पर अनेक कवियों ने शस पंचाध्यायी लिखी है। नंददास, कृष्ण देव, दामोदर, कृष्ण राम चौबे, सुदर सिंह आदि कवियौं की पंचाध्यायी में नंददास की सबसे प्रसिद्ध है, लेकिन पं हरीराम व्यास की पंचाध्यायी इन सबसे पूर्व लिखी मानी जाती है। इसमें बसंत और फाग के वर्णन भी हैं। उदाहरण रूप से बसंत की छटा देखें-

''चलि चलहिं बृंदावन बसंत आयौ।
झूलत फूलनि के भँवरा, मारूत मकरन्द उड़ायौ।
नाचत श्याम बजावत गावत, राधा राग जमायौ।
चोबा चंदन बूका बंदन, लाल गुलाल उड़ायौ।
'व्यास' स्वामनी की छवि निरखत, रोम- रोम सचुपायौ।।''

इसी प्रकार फाग वर्णन में कवि कहता है कि- ''खेलत फाग फिरत दोऊ फूले। श्यामा श्याम काम बस नाँचत, गावत सुरत हिडोरे भूले।'' व्यास जी ने विभिन्न रसों में रचनाओं का सृजन किया है जिनमें अधिकांश अपने आराध्य की लीलाओं पर ही आधारित हैं। कुछ रसों की रचनाओं का आनन्द लीजिये

हास्य रस -

''हरि- भक्तन तें समधी प्यारे।
आये संत दूरि बैठारे, फोरत कान हमारे।
दूर देश ते सारे आये, ते घर में बैठारे।।
उत्तम पलका, सौरि,सुपेत, भोजन बहुत सवारे।
भक्तनि दीजै चून चननि कौ, इनकों सिलवट न्यारे।।''

वीभत्स रस

''जूठन जे न भक्त की खात।
तिनके मुख सूकर- कूकर के, अभखि भखि पोषत गात।
जिनके बदन सदन नरकिन के, जे हरिजननि घिनात।
काम बिवस कामिनि के पीबत, अधरन लार चुचात।
भोजन पर माखी मूतति हैं, ताहू रूचि सों खात।''

शाँत रस-

''ऐसौ मन कवि करहौ हरि मेरौ।
कर करवा, कामरी काँधे पर, कुंजनि माँझ बसेरौ।।''

व्यास वाणी में सभी प्रकार की रचनायें संग्रहीत हैं जिनमें सभी रसो, अलंकारो और विभिन्न परिस्थितियों आदि का वर्णन है। जहाँ उन्हें बृज बृजवासी और ब्रज की प्रकृति प्यारी लगती है तो पांखडियों से उन्हें घृणा भी है ''बिनु भक्तिहि जे भक्त कहावत। भीतर कपट निपट सब ही सों, ऊपर उज्जवल है जू दिखावत।।''

व्यास जी ने राधा- कृष्ण और बृज का गान तो भरपूर किया ही है, लेकिन उस समय प्रसिद्ध कवियों का भी गुण-गान किया है। अपनी पसंद के संत कवियों जैसे सूरदास, कबीर दास, मीराबाई, नामदेव, रामानन्द, स्वामी हरिदास, हित हरिवंश आदि पर अलग पद लिख कर उनकी प्रशंसा की है। भक्त ही भक्त की बात अच्छी तरह समझ सकता है, इसीलिए सभी भक्तों का आदर भी करता है। व्यास जी ने एक पद में अपने भक्तों के कुटुम्ब का वर्णन किया जो महत्वपूर्ण है। इसे राग धनाश्री में इस प्रकार बाँधा है-

''इतनौ है सब कुटुम हमारौ।
सैन, धना अरु नाभा, पीपा और कबीर, रैदास चमारौ।।
रूप सनातन कौ सेवक, गंगल भट्ट सुढारौ।।
सूरदास, परमानंद, मेहा, मीरा भक्ति बिचारौ।।
ब्रह्मन राजपुत्र कुल उत्तम, तेऊ करत जाति कौ गारौ।
आदि अंत भक्तन कौ सर्बसु, राधा बल्लभ प्यारौ।।
आसू कौ हरिदास रसिकं,हरिवंश न मोहि बिसारौ।
इहि पथ चलत श्याम- श्यामा के 'व्यासहि' बोरौ, भावहि तारौ।।''

संत का मन अपने आराध्य और उनकी प्रिय बस्तुओं व स्थानो ं का गुणगान करने में सुख का अनुभव करता है, इसीलिए संत कवि व्यास जी ने बृन्दावन और उनकी गति विधियों पर न जाने कितने पद लिखे व गाये है। बृन्दावन दर्शन से प्राप्त शांति का वर्णन जिस पद में एकदम अनूठा है उसकी कुछ पंक्तियों से ही मन प्रफुल्लित हो जाता है-

श्री बृन्दावन देखत नैन सिरात।
''इनि मेरे लोभी नैनन में , सोभा - सिंधु न मात।
संतत सरद- बसंत, बेलि - द्रुम, झूलत- फूलत घात।
ताल, तमाल, रसाल, साल, पल- पल चमकत फल- पात।
नाचत मोर, कोकिला गावत, कीर चकोर सुहात।।
त्रिभुवन के कवि कहि न सकत कछु, अद्भुत गति की बात।
'व्यास' बात नहि मुख कहिआवै, ज्यो गँगहि गुए खात।।''

'व्यास' जी की रचनाओं के सौंदर्य का कारण उनकी भाषा है। तत्कालीन कवियों के सानिध्य और बृजवास से बृजभाषा में ही रचनायें लिखीं किन्तु संस्कृत के विद्वान होने के कारण भाषा में संस्कृतनिष्ठता की सुगन्ध देखने को मिलती है। बुंदेलखण्ड में जन्म और अध्ययन के कारण बुन्देली भाषा के शब्दों और कहावतों व मुहावरों के प्रयोग ने लालित्य में वृद्धि की है। उनका वर्णन पढ़ कर ऐसा लगता है जैसे कवि न सब कुछ अपनी आँखो देखा हो। इसकी बानगी इन पंक्तियों में देखी जा सकती है-

''रास रच्यौ बन कुँज बिहारी।
सरद मल्लिका देखि प्रफुल्लित, बनि आई पिय- प्यारी।।
बाम श्याम के श्यामा सोभित, जनु चाँदनी अँधियारी।।
रति अनंग अभिमान भंग है, पद रज घसत लिलारी।।
व्यास विनोद मोद रस पीवत, जीवत बिबस बिहारी।

आनन्द विभोर करने वाली इन्हीं पंक्तियों से व्यास जी को प्रणाम करता हूँ।

– संदर्भ ग्रन्थ
व्यास वाणी
मो. 7999375995

बोलत में मुस्कानी

– रामरूप स्वर्णकार 'पंकज'

जे बुन्देली नारि लगै, नाहरनी सीं मरदानी,
अपये कंत के संगै दै रईं, जे खेतन में पानी।
बाँध कछौटा लयें फाँवरो मेंड़न कों डरवा रई,
टप-टप चुये पसीना जिनकें बोलन में मुस्कानी ।।
जे बुन्देली................

झार पोंछ कें गोवर डारो फिर कंडन को पाथो,
ढोर -बछेरू आँगे धर दई चूँन भुरक कें सानीं।
सपर खोरकें बना कलेऊ चटनी रोटी बाँधी,
संगे एक डिंगरिया गुर की बाँध लई गुरधानी।।
जे बुन्देली...............

छेड़ छाड़ की बात कितऊँ कऊँ काऊ नारि सें कै दई,
हाँत पनईया भरी ताव में टूट परी भन्नानीं।
झाड़ पहाड़ खार नरियाँ और जो पथरीली माटी,
मोड़ी-मोड़ा जई में खेलें पियें पुखरियन पानी।।
जे बुन्देली......................

दो- दो कोस दूर सें भरकें रोजई पानी ल्यावें,
का पहाड़ का बेहड़ इनकों चली उछलती आवें।
दो गगरी की खेप मूंड़ पै एक बगल में दावें,
एक बाल्टी लये हाँत में चली आँय सन्नानी।।
जे बुन्देली..............

कच्चे घर घूरन में रातीं कांस टपरिया डारें,
नारी मर्यादा कों राखें घूँघट नईं उघारें।।
लीप चौंतरा चौक पूरकें नित तुलसी को ढारें,
घोर गरीबी सहें तोऊ वे कभऊँ नईं उकलानी ।।
जे बुन्देली............

काम मिले ना भावई भोगे पानी पी सो जावें
भूखी बैठीं रयें काउसें कभउँ न माँगन जावें।
सारन्धा के शौर्य युद्ध की ध्वजा इतै फहरानी,
ऐसे जा बुन्देलखण्ड की कितउँ न मिलनें सानी।।
जे बुन्देली..............

गोरा टकरानें ते 'पंकज' झाँसी की रानी सें,
भर किलकार काल सी टूटी झाँसी वाली रानी।
छोड़- छाड़ रण गोरा भागे रण में माँगें पानी,
अँगरेजन कों धूर चटादई लिख दई अमर कहानी।
जे बुन्देली नारि लगै नाहरनी सी मरदानी,
अपये कंत के संगै दै रई जे खेतन में पानी।।

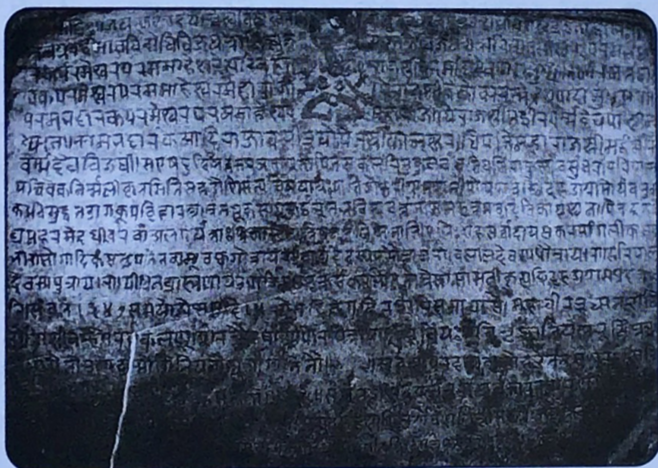
– भगत सिंह नगर, कोंच
जनपद, जालौन (उ.प्र.)
मो. 9936505493

वि.सं.1347 का हम्मीर वर्मा चन्देल का मऊसहानिया ताम्रपत्र

- डॉ. कन्हैयालाल अग्रवाल

प्रस्तुत ताम्रपत्र लेख मऊसहानियां, जिला छतरपुर म.प्र.के शासकीय ठेकेदार श्री गोविन्द सिंह बुन्देला की निजी सम्पति है। श्री बुन्देला मऊसहानियां से आठ किलोमीटर दूर खरका ग्राम के निवासी हैं। क्योंकि यह ताम्रपत्र श्री बुन्देला की पैतृक सम्पत्ति है, इसलिए इसका प्राप्तिस्थान ज्ञात नहीं है। किन्तु ताम्रशासन में उल्लिखित स्थान नाम तथा ताम्रशासन के जारी होने का स्थान समावास गहिरवारि मऊ सहानिया से अधिक दूर नहीं है, अत: सहज अनुमान के आधार पर यह इसी क्षेत्र से सम्बन्धित प्रतीत होता है।

ताम्रशासन एक पत्रीय है जिसकी नाप 38x28 से.मी. और वजन 2.5 किलोग्राम है। ताम्रपत्र के शीर्ष भाग पर पंक्ति एक और दो के मध्य एक छिद्र है जिसमें एक छल्ला पिरोया हुआ है। ताम्रपत्र के सिरे शेष भाग की अपेक्षा मोटे हैं। छिद्र के नीचे प्रथम पाँच पंक्तियों के मध्यभाग के रिक्त स्थान पर देवी लक्ष्मी पद्मासन विराजमान है। अन्य चन्देल ताम्रशासनों के समान यहाँ पर देवी का अभिषेक करने वाले हाथियों का अभाव है, अत: यह गजलक्ष्मी का साधारण स्वरूप प्रतीत होता है। देवी चतुर्भुजी हैं। उनके ऊपरी हाथों में कमल है और निचले दोनों हाथ खाली हैं।



ताम्रपत्र चिकना और सपाट है तथा एक ओर अभिलिखित है। इसमें कुल उन्नीस पंक्तियाँ हैं। ताम्रशासन बहुत अच्छी अवस्था और इसकी लिपि सुन्दर और सुडौल है। तो भी, पंक्ति अठारह और उन्नीस के अक्षर अन्य पंक्तियों के अक्षरों की उपेक्षा छोटे और बेडौल हैं। ताम्रशासन की लिपि तेरहवीं शती ई० के उत्तर भारतीय वर्ग के अक्षरों के अनुरूप है। वे हम्मीर वर्मा चन्देल के चरखारी ताम्रपत्र से पूरी तरह मेल खाते हैं। सामान्य अक्षरों का आकार तीन से.मी. है।

ताम्रशासन की भाषा संस्कृत है और पंक्ति 14 से 18 में उद्धृत स्वस्तिवाचक तथा अभिशायात्मक श्लोकों के अतिरिक्त पूरा लेख गद्य में है। पूर्व प्रकाशित अन्य चन्देल अभिलेखों के समान विवेच्य ताम्रशासन में भी अनेक भाषा सम्बन्धी अशुद्धियां हैं। उदाहरण के लिए परम भट्टारक और साहि के लिए क्रमश: पंक्ति 6 में परम भट्टारके और इत्यादि लिखा गया है। पंक्ति 3,4 और 6 में पादानुध्यात के दोहरे पूर्ण विराम का प्रयोग किया गया है। इसीप्रकार पंक्ति 7 दुर्व्वि के लिए दुव्वि पंक्ति 8 में समीपोपगत के लिए समीपोपगव और पंक्ति 12 में ताम्रशासनी के लिए ताम्रेश्रासनी लिखा गया है।

ताम्रशासन गहिरवारि समावास से परमभट्टारक परमेश्वर परम माहेश्वर महाराज श्री परमर्दिदेव के चरणों का ध्यान करने वाले परमभट्टारक परमेश्वर परममाहेश्वर महाराजाधिराज श्री त्रैलोक्य वर्म्मदेव के चरणों का ध्यान करने वालेख परमभट्टारक परमेश्वर परममाहेश्वर महाराजाधिराज श्रीमद् वीरर्म्मदेव कें चरणों का ध्यान करने वाले परमभट्टारक साहि राजावली त्रयोपेत श्रीकालंजराधिपति महाराज श्रीमद् हम्मीरवर्म्म देव द्वारा प्रवर्त्तित किया गया था। यह ताम्रशासन छिदहड़ा ग्राम के राउत पीथन ब्राहमण को प्रदान किया गया था। दान प्राप्त कर्ता वच्छ(वत्स) गोत्र का था। वह राउत हरिपाल देव का पुत्र, वलालदेव (बल्लालदेव) का पौत्र और राउत वाघदेव का प्रपौत्र था।

अभिलेख की तिथि विसं 1347 ज्येष्ठ सुदी 14 सोम दिन पंक्ति तेरह में दी गई है, जिसका तादात्म्य 1290 ई से स्थापित होता है।

हम्मीर वर्मा चन्देल विंस (1346–1279 ई.) के चरखारी ताम्रपत्र[1] से भी ज्ञात है। उक्त ताम्रशासन से ज्ञात होता है कि उसने वैदेशैथ विषय (विदिशा, म.प्र.) में भूमिदान किया था। इससे प्रमाणित होता है कि चन्देल साम्राज्य के पश्चिमी भाग में अब भी उसकी सत्ता निर्बाध थी। बम्हनी अभिलेख[2] से भी ज्ञात होता है कि म.प्र. के दमोह और जबलपुर जिलों तक उसका राज्यविस्तार था, जहां पर उसका प्रान्तीय शासक महाराजपुत्र बाघदेव शासन कर रहा था। रायबहादुर हीरालाल[3] का कथन है कि हम्मीर वर्मा के शासनकाल में दमोह और जबलपुर के प्रशासक महाराजपुत्र बाघदेव का मुख्यालय दमोह जिले के सिंगोरगढ़ नामक स्थान पर था। कालिंजर और अजयगढ़ के दुर्गों पर अब भी हम्मीरवर्मा का अधिकार था।विवेच्य ताम्रशासन से ज्ञात होता है कि गहिरवारि (आधुनिक गहरवार जि. छतरपुर म.प्र.) पर भी उसका अधिकार था। इस प्रकार प्रस्तुत अभिलेख के अध्ययन के प्रकट होता है कि ताम्रशासन की प्रवर्तन की तिथि 1290 ई. के समय चित्रकूट बांदा, महोबा,हमीरपुर, छतरपुर, पन्ना, विदिशा और दमोह जिलों के क्षेत्र पर चन्देलों की सत्ता पूर्ववत स्वीकार की जाती थी।

अभिलेख का प्रारम्भ 'ओम सिर्द्धि' के मंगलसूचक शब्द से होता है। तत्पश्चात चन्द्रात्रेय वंश की प्रशंसा करने वाला पारम्परिक श्लोक है। श्लोक के बाद लेख का गद्य भाग प्रारम्भ होता है जिसमें इस वंश के आद्य शासक जयशक्ति और और विजयशक्ति का उल्लेख है। तत्पश्चात् परमर्दिदेव, त्रैलोक्यवर्म्म देव और वीरर्म्मदेव के नाम हैं। वीरवर्म्मदेव के पश्चात् उसके पुत्र और उत्तराधिकारी

कालंजराधिपति हम्मीरवर्म्मदेव का वर्णन है। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि हम्मीरवर्मा अपने पूर्वाधिकारियों के लिए महाराजाधिराज और परमेश्वर जैसी महिमा मण्डित और भव्य उपाधियों का वर्णन करता है किन्तु अपने नाम के पहले इनका प्रयोग नहीं करता। इससे प्रकट होता है कि वह अपनी हासोन्मुखी शक्ति के प्रति पूरी तरह जागरूक है। इसीलिए वह महाराजा जैसी साधारण उपाधि तक सीमित रह गया अथवा इस समय उसके अग्रज भोजवर्मा का शासन होने के कारण उसे महाराजा ही स्वीकार किया गया। वि० सं० 1346 के अजयगढ़ सती लेख[4] से ज्ञात होता है कि इस समय महाराज भोजवर्मा शासन कर रहे थे। रायबहादुर हीरालाल का मत है कि अजयगढ़ सती लेख और चरखारी ताम्रपत्र एक ही तिथि (1346) में अंकित होने से यह संकेत मिलता है कि इस वर्ष हम्मीर वर्मा ने बलपूर्वक सत्ता पर अधिकार कर लिया अथवा ताम्रशासन के प्रचारित होने के कुछ पूर्व उसकी मृत्यु हो गई।

हम्मीरवर्मा द्वारा 'साहि' विरुद धारण करना और महाराजाधिराज और परमेश्वर उपाधियों का त्याग महत्वपूर्ण है। यह संभवतः समकालीन मुस्लिम शासकों की उपाधियों का सोत्साह अनुकरण है। तो भी, भारत में यह विरुद मुसलमानों के आगमन के पूर्व से निश्चित रूप से ज्ञात था। कुषाणों की यह एक सर्वविदित उपाधि थी और शाही वंश से सम्बन्धित उत्तर-पश्चिमी सीमान्त क्षेत्र के ब्राहमण शासकों ने भी इस विरुद को अपनाया था। वि० सं० 1011 के खजुराहो लक्ष्मण मंदिर अभिलेख[5] भी इसे कीरों के शासकों की उपाधि बताया गया है।

ब्राहमणों के नामों के पूर्व लिखे गये शब्द- संक्षेप रा और पं. क्रमशः राउत और पंडित शब्दों के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

छिदहड़ा ग्राम वहां स्थित तड़ागों, कूपों और विहारों के साथ साथ आम तथा महुआ वृक्षों सहित दान किया गया था। राज्य की ओर से यह आदेश भी दिया गया कि महत्तर, कुटुम्बि, कायस्थ, नापित, दूत, वैद्य, महर, मेद, धीवर ओर चाण्डाल, आदि सहित ग्रामवासी और कृषक इस शासन का सम्मान करते हुए दान प्राप्तकर्ता को सभी प्रकार के कर प्रदान करें।

ताम्रशासन में भाग और भोग नामक दो कर उल्लिखित हैं। भाग संभवतः विभिन्न उत्पाद सम्बन्धी राजकीय कर है और भोग का तात्पर्य प्रजा द्वारा समय-समय पर राज को समर्पित वस्तुओं से है।[6] ऐसा प्रतीत होता है कि कपास, कुसुम, खनिज, लौह, काष्ठ, पाषाण आदि भाग के अन्तर्गत थे। और ईश्व तथा आम गैसे मौसमी उत्पाद भोग कर के अंतर्गत थे। चन्देल ताम्रपत्रों में उल्लिखित 'भाग-भोगादि अथवा -भाग-भोग-पशु- हिरण्य' पद से संकेत मिलता है कि भाग का प्रयोग विभिन्न करों के लिए हुआ है।[7]

अभिलेख में भौगोलिक महत्व के चार स्थानों का उल्लेख हुआ है। तेरहवीं पंक्ति में वर्णित गहिरवारि- समावासे पद से संकेत मिलता है कि सहद्रोशिसन्य विषय (पं०8) के अन्तर्गत छिदहड़ा ग्राम दान के समय चन्देल शासक का शिविर गहिरवारि में लगा हुआ था। दान प्राप्तकर्ता उपर्युक्त विषय के पदखोहरी ग्राम से आया था। गहिरवारि आजकल का गहरवार है जो छतरपुर- ईसानगर मार्ग पर जिला मुख्यालय से 22 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। सहद्रोशिसन्य विषय आधुनिक सहानिया है जो नौगांव- छतरपुर मार्ग पर स्थित है। छतरपुर से इसकी दूरी 15 कि.मी. और नौगांव से 8 कि.मी. है। पदिखोहरी और छिदहड़ा ग्रामों का अभिज्ञान नहीं हो सका। ताम्रशासन पंडित कीर्तिपाल द्वारा लिखा गया।

पाठ

1. ।। उं सिद्धि ।। जयत्याल्हा(हत्या) दयन्विश्वं विस्वे (श्वे)श्वर शिरोधृत (1)चन्द्रात्रेयनरेन्द्राणीं वंशश्चंद्र इवोज्वलः।।- ।- ।।
2. तर्त्र तत्र प्रवर्द्धमान विरोधिविजयभ्राजिष्णु जय शक्ति विजयशच्यादि भावमास्वरः परम भट्टा-
3. रक परमेश्वर परम माहेश्वरेत्पदिन महाराज श्री परमर्द्दिदेव पादानुध्यात।। परमभट्टा
4. रक परमेश्वर परममाहेश्वर महाराज धिराज श्री त्रैलोक्य वर्म्मद (दे) व पादानुध्यात।।
5. परम भट्टारक परमेश्वर परममाहेश्वर महाराजाधिराज श्रीमद् वीरवर्म्मदेव पादानु
6. ध्यात। परम भट्टारके (क)त्पादि (साहि) राजावली त्रयोपेत श्रीकालंजरा धिपति महाराज श्रीमद् हंमीर
7. वर्म्मदेव विजयी । स एस दुर्वि (दुर्व्वि)बहतरप्रतापतापित सकलरिपु कुलबधू मिव निराकुलां वसुंधनं परिपाल--
8. यन्विवेक निर्म्मलीकृतमिर्ति सहद्रौशिसैन्य विषयान्तः पदिषोहरी ग्राम समीपोपगव (त) छिदहड़ा ग्रामोयं चरुका
9. [का] विसु (शु) द्ध तड़ागकूपविहार आम्रमधूकसायरुद्धं भूतमविष्यवर्तमान महत्रय कुटुंविकायस्थ नापितदूत है-वै-
10. द्य महरमे दधीवर चाण्डाल पर्यन्ताः। त्रिषत भिः सह सर्व्वादाय सकल मांगलीक सह
11. भागभोगादिक समुपनेतव्यं वच्छगोत्राय रा। वाघदेवस्य (प्र) पौत्राय रा। बलालदेवस्य पौत्राय ।रा ।हरिपाल
12. देवस्य पुत्राय। रा । पीथन ब्राहमणाय उपार्जित उदय संकलित ताम्रेस्रासनी (ताम्रशासनी) कृत्य छिदहड़ा ग्राम प्रदत्ता-इ-
13. ति संवत 1347 समये। ज्येष्ठ सुदि 14 सोम दिने गहिरवारि समावासे। महावीर रु नराधि
14. रौ। रा। श्रीबम्हौ। रा। कलण्ह । पं । रनौ एसां (षां)व्यापार चित्रायाम् ।। भूमिय प्रतिग्रहा तियश्व भूमिं प्रयच्छ
15. ति उभौ तौ पुण्य कर्म्मार्णौनियतौस्वर्गा (ग) गामिनो।। 1।। स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां। स वि-
16. ष्ठाया कृमिर्भूला पितृभि सहमज्जति ।। २ ।।। संषं (शंख) भद्रासनं छत्रं बरागन (ज)स्य वरवारणं। भूमिदा
17. नाति चित्र्हानि फलं स्वर्ग पुरन्दरः ।।3।। प (ष) ष्टि वर्ष सहस्त्रणि स्वर्गो वसति भूमिदः।
18. आच्छेत्ता चानुमन्ता तो न्येव व नरके वसेत।।4 ।। नास्ति भूमि समं दानं। नास्ति दान समा निधि। नास्ति सम पराधर्म्मराहृत्पातकं परम।।5 ।।
19. पं। कीर्ति पालेन लिखिंत इति।

अनुवाद

1. ऊं सिद्धि । जिसे भगवान शिव ने अपनी केशराशि में धारण किया और जो सारे संसार को प्रसन्न करता है उस चन्द्र से उत्पन्न चन्द्रात्रेय वंश के नरेशों की कीर्ति उज्जवल होकर अभिवृद्धि को प्राप्त हो।
2. जयशक्ति और विजयशक्ति इत्यादि वीरों के आविर्भाव से दीप्त तथा शत्रुओं के पराभव से सदेव प्रज्वलित वंश में

3. परमभट्टारक परमेश्वर परममाहेश्वर महाराज श्रीवरमर्द्धिदेव के चरणों के ध्यान में रत, परम मट्टारक
4. परमेश्वर परममाहेश्वर महाराजधिराज श्रीत्रैलोक्यवर्म्मदेव के चरणों के ध्यान में रत
5. परम भट्टारक परमेश्वर परममाहेश्वर महाराजाधिराज श्रीमद् वीरवर्म्मदेव के चरणों के ध्यान में रत
6. परम भट्टारक साहि राजावली त्रयोपेत कालंजराधिपति श्री हम्मीवर्म्म देव हुए।

7-13. अपने अतुलनीय प्रताप से समस्त शत्रु वंशोंने ो पराजित करके और अपनी परिष्कृत प्रतिभा से पृथ्वी को कुलवधू के समान सुरक्षित करके सहद्रौशिसैन्य विषय में परि षोहरी ग्राम के समीप स्थित छिदहड़ा ग्राम को समस्त चरु,तड़ाग, कूप, बिहार, आम, महुआ,सहित, भूत, भविष्य और वर्तमान के सम्पूर्ण अर्जन के साथ महत्तर, कुटुम्बि, कायस्थ, नावित, दूत, वैद्य, महर, नेद, धीवर और चाण्डालों सहित सभी को सम्बोधित करते हुए सदैव के लिए और समस्त मंगलों तथा भिग- भोगादिक करों सहित वत्सगोत्रीय राउत वाघदेव के प्रपौत्र, राउत वल्लालदेव के पौत्र, राउत हरिपालदेव के पुत्र राउत पीथन ब्राहमण को जल से संकल्प लेकर छिदहड़ा ग्राम दान किया गया।

संवत् 1347 ज्येष्ठ सुदि 14 सोमवार को गहिरवारि शिविर से। महावीर

14. राउत श्री ब्रहमौ, राउत कलण्ह, पं० रनौ द्वारा यह कार्य सम्पन्न किया गया। जो (दान में) भूमि ग्रहण करता है और जो देता है वे दोनों पुण्य कार्य करते हैं और निश्चय ही स्वर्ग जाते हैं।।- I- ।।

अपने द्वारा दी गई अथवा दूसरों द्वारा दी गई भूमि का जो हरण करता है वह विष्ठा में कीड़ा बनकर पितरों सहित निवास करता है ।।2।।

हे पुरन्दर! शंख, भद्रासन, छत्र, श्रेष्ठ घोड़े और हाथी भूमिदान के चिन्ह है, और स्वर्ग फल है अर्थात् इन वस्तुओं का दानकर्त्ता स्वर्ग प्राप्त करता हैं।।3।।

ऐसी भूमि का दान करने वाला साठ हजार वर्ष तक स्वर्ग में निवास करता है और जो ऐसी भूमि का उच्छेदन अथवा अपहरण करता है वह इतने ही वर्षो तक नरकवासी होता है। ।4।।

भूमिदान के समान दूसरा दाव नहीं है। दान के समान कोई दूसरी निधि नहीं है। दूसरों के धर्म का हरण के समान कोई पातक (पाप) नहीं है ।।5।।

पंडित कीर्ति पाल ने लिखा।

संदर्भ-

1. एपिग्राफिया इण्डिया, नई दिल्ली: आर्केलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया, खण्ड ××, पृ 0134- 36
2. वही, खण्छ पृ० 10 टि० 4
3. वही पृ० 11, टि 01
4. माधुरी, खण्ड v भाग 2 , क्र०2
5. एपि० इण्डि, खण्ड 1, पृ.० 129, 134, श्लो० 43
6. वही खण्ड xɪ, पृ० 129 सरकार इण्डियन एपिग्राफिकल ग्लौसरी मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ. 4-48 के अर्न्तगत भाग-भोर-कर।
7. एपि० इण्डि०, खण्ड xɪ, पृ०129.30

- पलटन मस्जिद के पास, वीरेन्द्र कॉलोनी चौराहा, नौगाँव जिला छतरपुर

जाने कैसौ आव जमानों

- कल्याण दास साहू 'पोषक'

भरौं-खातौ मचो देस में, जिउ येंनइँ घबरावै।
जाने कैसौ आव जमानों समझइ में ना आवै।
गेंदा जुही चमेली चम्पा, के पौधा मुरझा गए।
जबसें कछू विषेले पौधा, खेतन में जरया गए।।
फनी गुरुखुरू आइपोनियाँ, अब खूबई हरयावै।। जाने कैसौ..........

हॉती- घुरवा करत लाँगने, गदा पँजीरी खा गए।
उल्लूअन की का काने है, खूबइं मौज उड़ा रए।।
हंस चुगत फिर रय हैं दानें, कौआ मोती खावै।। जाने कैसौ..........

लड़इ दावजू मजा मारवें, कर रय वारे - न्यारे।
सेर ककाजू बनकें बुद्दू, फिर रय मारे मारे।।
मिल्ला-दुल्ला कछू न पावै, घच्ची घात लगावै।। जाने कैसौ..........

नरदा की विनती करवे सें, देखौ बखरी छूटत।
जबर मारवै रौन न देवै, ऐसी किस्मत फूटत।।
मौं देखी पंचायत होवै, मनकी कोउ न कावै।। जाने कैसौ..........

बातन के बन रय बसेता, लट्ठ धुआँ में घल रए।
दन्दा-फन्दी के दलदल में, होड़ लगा कें सल रए।।
अपनों उल्लू करवें सूदौ, और न कछू सुजावै।। जाने कैसौं..........

सीख जात हैं बैठ ऊँट पै, सब मलकइंयाँ लेवौ।
उड़वौ सीख हवा में जातइ, संगै दाव लगेवौ।।
जियै चिखा लग जावै, फिरतौ उयै राइ ना आवै।। जाने कैसौं..........

आँखन देखी खारय माछी, नाक लगाकें बड्डी।
जी खों समझौ तीस मार खाँ, निकरत बेउ फिसड्डी।।
बिड़ा पाय ना खुद की माछी, हमरी खाक बिड़ावै।। जाने कैसौं..........

सेर- खाल में दुके भेड़िया भलौ होत है कैसें।
सोस- फिकर में मरे जात हैं, कइयक ऐसइ- ऐसें।
दिल कौनउँ माई के सुत कौ, बड्डौ नहीं दिखावै।। जाने कैसों..........

चलें ढोल की पोलें अब तौ, अपनी- अपनी ढाँकत।
ई सें अपने गिरेबान में कोउ कभउँ नई झाँकत।।
अंधेर नगरी चौपट राजा, रइयत सुखी न रावै।। जाने कैसौं..........

उल्टी गंगा बह न लगी है, कोउ न उयै उलीचत।
पोषक जहरीले पौधन खों, आँख मीच कें सीचत।।
झूठ, पाप अन्याय, अनीती, सबरै में बिर्रावै।। जाने कैसों..........

- शरदकुन्ज, किले के पास
पृथ्वीपुर, जिला निवाड़ी (म.प्र.)
मो. 9981087763

ऐतिहासिक बुन्देली रूपक -

ओरछा का अमरदीप

- स्वामी प्रसाद श्रीवास्तव

पात्र परिचयः

1. जुझार सिंहः (ओरछा नरेश)
2. हरदौल : (ओरछा नरेश के अनुज)
3. साथी कुँवरः (हरदौल के साथी)
4. महारानीः (ओरछा नरेश की रानी चम्पावती)
5. खवासन :(रानी की दासी)

उद्घोषक-

अनन्तकाल से कलकल ध्वनि में प्रवाहित कलयुग की सुरसरि माता वैत्रवन्ती, ओरछा का दुर्ग, महाकवि केशव की ड्योढ़ी, शमशान घाट के भव्य स्मारक जो अपने गर्भ में राजवंशों के शौर्य, पराक्रम, उत्थान और पतन की अनेक गौरवमयी स्मृतियाँ समेटे निष्तब्ध खड़े हैं, अपनी रजत रसवन्ती धार से पखारती हुई आगे बढ़ जाती है खेतों की ओर उनमें हरीतिमा विखेरने के लिये।

भगवान रामराजा के आगमन ने जहाँ एक ओर इस बसुन्धरा को अवध तथा बृजभूमि की तरह पवित्र तीर्थ स्थली बना दिया, वहीं दूसरी ओर तत्कालीन राजवंशों के पुरुषार्थ, वीरत्व और चारित्रिक गरिमा ने इस भूमि को पवित्र शहीद स्थली का यश प्रदान कर भारत के इतिहास में बुन्देलखण्ड का नाम अमर कर दिया।

''मृत्यु के भय से धर्म को न छोड़ना यह हमारी शाश्वत परम्परा है।'' यह नपा तुला उत्तर था महाराज मधुकरशाह का सम्राट अकबर के दरबार में मस्तक पर टीका न लगाने की चुनौती का। इन्हीं गौरवशाली लोकविश्वास की कथाओं की श्रृंखला में महाराजा मधुकरशाह के पौत्र धर्मवीर दिमान लाला हरदौल का नाम प्रमुख रूप से जुड़ा है। जिन्होंने अपने साहसपूर्ण उत्सर्ग द्वारा अपनी मातृतुल्य भाभी को कलुषित कलंक से मुक्त कराकर अपने भाई के जीवन में आवृत मिथ्या भ्रम का निवारण कराया तथा वंश की शाश्वत परम्परा का निर्वाह किया।

ओरछा में फूलबाग में स्थित लाला हरदौल के स्मारक के अवशेष उनके बलिदान सहज ही पर्यटक के कानों में गुनगुना देते हैं:-
''भौजी भोजन परसें, असुवा चौमासे से बरसें।''

(अन्तराल ध्वनि)

(स्थान- महारानी चम्पावती का अन्तः पुर - रात्रि के सन्नाटे में महाराज जुझार सिंह का प्रवेश- पदचांप के स्वर।)

रानी- मौय बड़ो भाग- अपुन ने दर्शन दये। भौत दिनन सें मन व्याकुल हतो।

जुझार सिंहः (क्रोध भरे स्वर में) सब झूठ है महारानी सब झूठ है। अब कायखों अपुन प्रेम कौ स्वांग रचतीं। अपुन की चालन खां हम सब खूबई समझन लगे। अपुन तौ चाउतीं कै हमाई रहस बिलात दिनन नौं ओरछा सें बार राबै, जी सें तुमाई खूब रंगरेलियाँ होतीं रायें।

रानीः महाराज ! स्वामी ! जा कैसी मर्जी होत अपुन की?

जुझार सिंहः जानके अन्जान न बनो महारानी। अपुन हमाई आँखन में धूरा नईं झोंक सकतीं, पतिव्रता कौ दम नई भर सकतीं पाप कौ घड़ा फूट चुको है। कुलकलंकनी,ऐसी नीच करतूत करकें तैने खानदान भर कौ मौ कारो कर डारो।

रानीः महाराज।

जुझार सिंहः बृस्य-अब हमें अपुन त्रिया- चरित न दिखाओ चम्पावती। ओरछा भर में कान नई दऔ जात। हमाये संगै देवर- भुजाई ने मिलकें विश्वासघात करो। जी हरदौल खों अपनी ओली में खिलाव, बेटा दाखिल मानों, बोई भैया आज मोई इज्जत खराब करे। बो भैया नई, धुकेल है, बैरी है, ऊ कौ खून पी लेहों (दांत पीसते हुये)जुझारसिंह की तरवार हरदौल के खून की प्यासी है। ऊ की प्यास अबईं बुझ है अबईं।

रानी : महाराज । कुँवर साव पै ऐसो लांछन न सोचो जाबे, हरदौल हमाओ बेटा घांई है। वे ब्रह्मचारी और धरम के पक्के हैं। अपुन की मान मर्यादा रखत हैं। जरुर अपुन खो कोनउ बैरी ने उल्टो- सीधो भर दओ।

जुझार सिंहः हम तुमाओ एकऊ उपदेश नई सुनो चाऊत रानी। बिना आग के धुवां नई उठत और न बिना लत्ता के सांप बनत। तुमाओ हरदौल सें अब देवर- भुजाई कौ नातो नई रओ और जो कऊँ तुम ई कलंक सें बचौ चाऊतीं तों तुमे परीक्षा देने परहै। परीक्षा के लाने हमाओ हुकम होत कै तुम हरदौल खौं विषभरे भोजन जिमा कें पापी कौ अन्त करदो।

रानीः महाराज। विष। ऐसी आज्ञा न होय। देखो फिर पिछाई आपखौं पछताने पर है। अपनो भ्रम मिटाबै के लाने अपुन मोय तरवार से काट दो, तोप के सामने ठांड़ी करके गोला दगवा दो महाराज। रामराजा साक्षी हैं- हमाओ हरदौल सें मताई- बेटा का प्रेम है। देखो मोय मरै सें अपनों दूसरो व्याब हौजै, मो से साजी रानी मिलजै, पै सोचो भैइया के मरें भैइया न मिलहै। हरदौल निर्दोष हैं। ई बीर की हत्या कराकें कौनऊ बैरी ओड़छे में गड़बड़ करांय चाऊत ।ईसें अपुन समझदारी सें काम लेव, महाराज।

जुझार सिंहः हम जानत ते महारानी-अच्छी तरां जानत ते कै तुम हमाई आज्ञा न मानहो, भूल गईं अपुन एक पतिव्रता नारी कौ धरम? संसार में कुल्टा को नाम पाहौ रानी।

रानी- (आवेश में) महाराज। आज्ञा कौ पालन हूहै। मैं अपने धरम की रक्षा करवें के लाने एक निर्दोष की हत्या करवे खौं तैयार हों।

खबासन ------ ओ खबासन --------।

खबासनः हां जू। आई महारानी जू। कायजू का हुकम होत मोय लानें ?

रानीः तुम भौरई लाला हरदौल के डेरा में जाकें पैलें हमाई जुहार कइयो फिर भोजनन को नेवतो राउर में कर आईओ और कईयो के अखाड़े के संगियन खो लैके अबाई होबे।

खबासनः हओ जू महारानी।

अन्तराल ध्वनि

(स्थान लाला हरदौल का डेरा- खबासन का प्रवेश)

खबासनः कुँवर साब की जै हो, खबासन को मुजरा पौचे।

हरदौलः (प्रसन्न होकर) कऔ खबासन का बात है भाभीजू साब ने कौनऊ संदेशो भेजो है का?

खबासनः हओ जू कुँवर साब। उनने मुजरा कुवाओ और हुकम भयो है कि आज राउर में अपने भोजन हू है। तो सकारौ जावे।

हरदौलः जा तौ तुमने बड़ी खुशी की बात सुनाई खबासन। भभ्भी जू साब सै बिनती कर दियो के भोजनन के संगे हमें उनके हांतन की केसरिया खीर खाबे को मन है।

खबासनः हऔ जू। मै महारानी जू से अपुन की जैसी मर्जी भई सो बिनती कर दे हौ।

अन्तराल ध्वनि

(खबासन का वापिस जाना- भोजन के लिये जाने की तैयारी)

(छींक, तलवार, के गिरने की झंकार, कुत्ता के कान फड़फड़ाने की स्वर साथ में घोड़े की टापों व हिनहिनाहट के स्वर)

साथीकुँवरः असगुन। कुंवर साब। असगुन। सामने छींक हात सै तरवार को गिरबौ और कुत्ता को कान फड़फड़ाबौ, मोय मन मैं तो कछू शंका हो रई।

हरदौलः शंका---ह---ह-ह (ठहाका मारकर लापरवाही से) कैसी शंका? कौनऊँ पराये घरे जा रये का या कहूँ जंग में, जौन ऐसे असगुनन पै विचार करौ जाए। अरे, मताई लौ बेटा कऊँ सगुन विचार कैं जात?

साथीकुँवरः मान जाव कुँवर साब देखौ दिया खौ ओट करी जात। हमाओं कैबौ अपुन के हित मै है।

हरदौलः हमें न रोको कुँवर साब। अपने देवता समान भाई भाबज पै शंका करबौ- घोर नरक में गिरबे समान है।

साथी कँवरः तौ फिर चलबो होय।

(अन्तराल ध्वनि)

(स्थान- जैबनार में हरदौल का प्रवेश, दुखित हृदय सहमी सी भाभी द्वारा पांव धुलवा कर आसन पर बैठाना-बिष भरे भोजन का थार लेकर आना)

हरदौलः (नि:शतब्ध्ता को तोड़ते हुये) भाभी जू। महाराज की अबाई न हूहै का उनके भोजन हमाये संगे न हूहै?

हरदौलः (पुनश्च) अपुन चुप्प काय हो, कछू बोलतीं काय नैइयाँ

(थोड़ा सा रुक कर) अपुन की आंखन में अंसुवा? तो जुवांबे की का परी ती। भाभीजू अपुन को चुप्प रेबौ अब मोसे सहौ नई जात जल्दी मर्जी होय।

रानीः (रानी आह भर कर) का बोलें लाला, कौन मौ से बोलें।

हरदौलः मो से कछू छिपाओ न, अपुन खौ हमाव कौल है भभ्भीजू। कौ है बो जीने टेढ़ी निगा से देखौ, ऊ को मैं मूँड़ काट लेहौ, खाल खिंचवा कै भुस भरा दे हौं।

रानीः कुँवर हरदौल। हाय बेटा-कैसे बतायें। तुमाये देवता समान दाऊजू के मन मै अपुन की बीरता से जरबे बारन ने झूठी- सांची जुरै के पाप की बोल बैदई। उनें हमाये पतिब्रत धरम पै भ्रम हो गओ। उनने आज मौसें नीच, कुल्टा, कुलकलंकनी और न जानै का का कई। ऐसे लच्छिन लगाके महाराज ने बुन्देलखण्ड की नारी जाति की आबरू मांटी में मिला दई। महाराज कौ हुकम है कै उनकी संका कौ निबारन जबई हूहै जब मै अपुन खौं जिहर खबा कै प्राण लै लैहों। (सिसकिया) जी सें अपनो धरम निभाने के लाने इन भोजनन में जिहर.....।

हरदौलः (गम्भीर होकर) ऐसो जान परत जैसे अपुन अपने करतब से डर रई हौवो। हमाये भैइया देवता है। हमें अपने प्रानन को तनकऊ मोह नैइया, पै मन में इतने दुख जरूर है कि आज मोय कुत्ता की मौत मरने पर है अगर महाराज नाराज हते तो मोय कौनऊ बिकट लड़ाई में भेज कै मोरी बीरता देखते । मैं बुन्देलखण्ड और देश की रक्षा में तरबार के तरें कटकें मर जातौ धिक्कार है मोरी जिन्दगानी खा। जा धरती काये न फट गई और मै ऊमें समा जातौ। इन गाज गिरवे कैसी बातन सें काये अबै लौ मोरो हिरदो टूंका- टूंका न भयो। (रुक कर) प्रान देकेंई जो धब्बा धुबहै।

रानीः नई (अचानक आवेश में) न-ई। मोय काय को डर, मै तो कुँवर खो डराबे आई हो। भागो--भग--जाओ कुंवर । मै बिषभरी नागिन हों तोखो डंस के मानहौ। हरदौल दुक जाओ मैं चुड़ैल हौं तोरे प्रानन पै रूठी हौं, तोखां मारके दम लैहौं।

हरदौलः (दृढ़तापूर्वक) मौखौ मौत से डरावतीं हो महारानी । मै डरकें भगवे बारौ बुन्देला न हौव, ऊ को स्वागत करबे बारौ आंव।

रानीः कुँवर । तुमाये प्रान हरे से राज, देश और खानदान को भौत नुकसान हूहै। महाराज अबे भ्रम मै है। भेद खुलबै पै बै अपनी करनी पै पछतै हैं। ई से तुम जो भोजन न करो और कऊँ अपुन ने ईखा खाबे कौ पक्को प्रन कर लओ होय तो हमई ई संसार खों छोड़ दै है अपुन की जूठन खाकें।

हरदौलः ऐसो विचार न करियो भभ्भी जू साब। अपुन के संगे सुरग जाबै से कलंक को दाग औरई हौजे। ई सें अपुन धीरज धर के अकेले मौ खां हसी खुशी सें सुरग भैजो। मोरी रग-रग में अपुन की ममता को रकत बैरओ सो ई के बलदान सै जो कऊँ मै अपुन खां महाराज की निगा में पतिव्रता बना पाऔ, तो मौरो जनम सार्थक हौ जै है। हे बिन्ध्यबासिनी, मोय साहस देव जी से मै दाऊजू की आज्ञा को पालन और भाभीजू साब के चरित्र पै लगे कलंक के टीका खां मिटा सकौं। थार तौ चौकी पै धरो जू।

रानीः नई--लाला--नई। तुम भूखे लौट जाव, मौय भगवान के दये प्रान लैबै को कौनऊँ अधिकार नैयां (थाल अन्दर ले जाती हुई) लौट जाओ कुँवर मौय लो अपुन

खौं खुआवें खों कऊं नैइयां।

हरदौल: कैसी मंताई हो अपुन? जौन मोय भूखों भगाउती प्रेम की मणियन सें भरो मां को खजीनों कभऊँ खाली नई रात। मै भूकों हों भूको मोय खान देवां मोई आत्मा कभऊं हारी मानबे बारी नैइयां।

रानी: पै कुंवर जू। सांचे प्रेम की बेदी पै खून सें होंम। मां के हांतन बेटा की हत्या। अरे रामा धिक्कार है, मोय जीवन खो।

हरदौल: हां भभ्भीजू साब। ऐसो बलदान ई तो जीब खों अमर करत है संसार के सब प्रानी, जड़ और चेतन सब प्रेमई के डोरा से तौ बंधे हैं।

रानी: सब बातें झूठीं है लाला। दासी थार ले जा। मै। इने जेबन न दैं हों।

हरदौल: प्रेम की जै बोलो भभ्भी जू साब। ऊ की कभऊं हारी नई होत न थार नाय देव। अपुन कैसी छत्रानी हो, जौन अपने करतब सों मौं मोड़ रई?

रानी: (चौंक कर) करतबई पूरौ करबे खां तो आई हों, पै जो दिल रोकत है। ईतांई कुआं ऊतांई बाबरी है। मोई अकल में पथरा पर गये। समझ में नई आऊत कैसों करें का करें, संचाई खों मानों के करतब खों?

हरदौल: पति की आज्ञा मानवे के आगे नारी के लाने कौनऊँ दूसरौ करतब नई होत।

रानी: पै ऐसी अनहौनी और कठोर आज्ञा को पालन? भगवान जा कैसी दुविधा है, मोय आंगे?

हरदौल: धीरज धरौ महारानी। करतब की गली में सदा कांटेई-कांटे बिछै रात। अपुन जो मौ खों सच्ची आत्मा से अपनो बैटा मानतीं होव तो अपने हाथ सें खीर खवा कै अपनौ करतब पूरौ करवी।

रानी: (रोती हुई) अच्छी बात है लाला, जैसो अपुन कैहो ऊसई करहों। करतब पालहों, अपने हांतन से बिष खुबाहों। हे भगवान। आज मौय कोऊ न्याय करबे बारो नई दिखात।

(खीर की चम्मच आगे बढ़ाती हुई)हे कठोर विष। आज मोय तोरोऊ न्याय देखने है- मौ खोलो कुँवर

(चम्मच गिरने की आवाज)

हरदौल: (तीव्र स्वर में) भाभी जू।

रानी: कुँवर धन्य है तुमाओ साहस। तुम ऐसें बैठे हो जैसे मैं तुमें अमरत खबा रई होऊं। नई बेटा। मैं कमजोर हों (थोड़ा रुककर) पै नारी हों, हड़िया के मौ पै तो पारौ धरौ जा सकत-पै काऊ की जीब-मोय संसार कुल्टा कै है।

हरदौल: समरो भाभीजू । मोह में पड़के करतब खौ न भूलो। आदर्श की बेदी पै एक नई कैई हरदौलन खौं निछाबर हो जान देवं माँ।

रानी: ठीक है। करतब, करतब, करतब---लो मैं अब करतबई को पालन कर रई। मोय हिरदो अब पत्थर को हो गओ। (थाल हरदौल के सामने रखने का स्वर) महाराज अबाई होय। अपुनी आंखन से देख लओ जाय हरदौल कैसे प्रेम सें अपने प्रानन को होंम लगा रये।

हरदौल: अ-हा-हा। कितनी मीठी खीर है। आज लो ऐसो स्वाद नई मिलो।

रानी: बिस्या बिस्या अब भीतें खा लयी मानो जाओ कुंवर साब हरदौल बिस्या। (पागलों जैसी हरकत में) मैं---- मैने देखो अपने बेटा खों डस लओ। ह--ह---ह--ह। मैंने अपने बेटा खों जहिर खबा दओ। ह---ह---ह---। मैं असली नागिन हों, बेटा खों डंस लओ ह---ह---ह। मै डांकिन हों, बेटा खों खा लओं - ह---ह---ह---ह (होश में आने की कोशिश करते हुए) अरे कोऊ है, दौरो- इने बचाओ। बेसुध होना। ( )

हरदौल: भभ्भी जू साव का दाऊसाब की अबाई हो गई? मोई बिनती है भैइया, कै अपुन खों अबई ई देबी के चरित्र पै संदेह है? बोलो भैइया चलती बैरां मोय एक बैर छाती सें लगाकें कै दो भैइया कै हरदौल तुम निरपराधहो, भाभीजू निष्कलंक है, जी सें मोई आत्मा खां सुरग में शान्ति मिल सके।

रानी: जोन भैइया ने चुगलखोरन की बातन पै विश्वास करकें, अपनी आंखन पै भ्रम की पट्टी बांद कें अपने हांतन अपनो दायनों हांत काट डारो। जी को हिरदो पत्थर सौ कठोर है अपने एक आंत के भाई के प्रानन को तनकऊ मोह न होय- उनसें तुमें इतनी मोह? उनें क्षमा कर दियो कुंवर--क्षमा कर दियो।

हरदौल: राम की कठोर आज्ञा मानकें लछमन नें खुशी से प्रान त्याग दयते भभ्भीजू साब। हमाये दाऊजू देवता है, उनके मनोरथ में - मैं हर जनम में अपनो बल्दान देवे खों तैयार हों (निःस्वास छोड़ते हुये कराहते हुये) मोय लगत---अब दाऊजू की अबाई न हुइये। भाभीजू साब मोय जल्दी बिदा करो। बे देखों--बे देखों छाजे पै देवदूत ठाड़े हैं।

रानी: (फूट-फूट कर रोती हुई) सब जानत हों कुंवर। पै ममता के आगे धीरज नई बंधत।

हरदौल: (कराहते हुये मरणावस्था में) आत्मा कभऊं नई मरत। ईसें अपुन रंज न करो भाभीजू साब। होनी होंके रात। मै विधाता से विनती करहों, कै अगले जनम में मोय अपुन की कूँख से जनम देय। तब मै ओली में पलहो, ममता के बंधन ऐसें कसकें बांध हों, जिनें संसार के लोग कलंक की तरबार से न काट पैहैं, पै आज न रोंको। मोय जान देओ, कलंक को धब्बा अपने खून से धौंम देव। बस मां मोखों असीस देओ, अपने आंचर के छोर से ढांक कै अपने कुँवर खो सदा- सदा के लाने सुबा देओ। (ऊपर-नीचें देखकर) हे धरती माता, आकाश, वैतबन्ती की धार, ओरछा के इष्ट रामराजा तुम सब साक्षी हो, कै हरदौल मन, बचन, करम से पवित्र हतो और भाभीजू देबी मूरत है। इनपै अब कभऊं कलंक की छांयरी न परे।

रानी: जाव कुंवर--जाव वीर। तुमाये बल्दान की कहानी संसार के प्राणियन में प्रेम की नदी बहाऊत रैहै और तुमाई आत्मा जब कौऊ मोय जैसी ममतामयी माँ-बैंने दुख में पुकारें तो जैसे कृष्ण- द्रोपती की पुकार पै दौरे आये ते, ऊँसई उनकी रक्षा खां दौर परें।

हरदौल: (रुंधे कंठ रुक-रुककर) अब मौसें बोलो नई-- जा--- त, मां--- प्यारी--भाभी---जू- अपुन की बोली फिर ---जनम--- लेहों---मां चरन---मांथे ---सैं छुआ दो--- अब प्रान निकल रहे हैं--हे---राम।

रानी: (चिल्लाकर) न ---ईईईई---ई।ही - हीही--- । हरदौल। हाय बेटा हरदौल कुंवर हरदौल।

(अन्तराल में शोक ध्वनि)

जुझारसिंह: (महल की दीवारों से टकराती हुई दूर से भराई आबाज के साथ पदचांप का स्वर) ह---र---दौ---ल---प्यारे भैइया---रुक जाओ। बे---टा। महारानी विष भरे भोजन न जिमा दियों कुँवर खों---ऊ को कौनऊ दोष नैइया - मै कुचालियन की बातन में बहक गयो तो चम्पावती। भ्रम में पर गओ तो। अब मोय सई पतो चल गओ। सब पतो चल गओ।

रानी: (रोती हुई)अब पछतायें सैं का होत महाराज। कुंवर की निर्दोष आत्मा अपुन खों टेरत-टेरत परमात्मा में समा चुकी है।

जुझारसिंह: गजब हो गओ रानी। नई ऐसो नई हो सकत। हमें छोड़के हरदौल नई जा सकत- (शव की ओर देखकर)हाय--रे जो का भओ भगवान। मैंने अपनो दायनों हांत काट डारो। अभमान के वश में प्रेम और बासना के अंतर खों न जान सको। अब ई राज की बागडौर को संभार है भैइया। झूंठी अफवाहन से मैनें कैसो अनिष्ट कर डारो, कुल के होनहार दिया खों अपने हांतन बुझा डारो। मोय जैसो पापी को हूंहै जीने अपनी सीता सी रानी और लछमन से भैइया के चरित्र पै कलंक मड़के भैइया की हत्या करा दई।

रानी: कान के कच्चे हौवे, झूटी खबरन पै बिना सोच- समझें विश्वास करबे बारन खों तो ऐसोई फल मिलत स्वामी। मोई बिनती पै जो अपुन पैलई ख्याल कर लेते तो ई बीर की हत्या को दोष मोय न लगतो।

जुझारसिंह: तुमाओ कौनऊं दोष नैइयां रानी, दोष तो हमाई अकल को है। जी ने राजा होकें आंखे मूंदे बिना सोंचे- समझें ऐसी कठोर आज्ञा दे दई। (पुन: रोते हुये)अब खेलई मिट गओ--- का कैहै जौ संसार मोसैं। मों पापी खो क्षमा कर दियो बेटा। मोसैं बड़ी भारी भूल हो गईं। झुठे भ्रम ने तुमाई जान ले लई और तुमने मरत मरत लो ई निष्ठुर भैइया की आज्ञा मानी। तुम धन्य हो (रोते हुये) --ह---ह--ह ।। शोक ध्वनि के साथ। तुम धन्य हो हरदौल। धन्य हो।

शोक ध्वनि

उद्घोषक: लाला हरदौल की कीर्ति आज भी कम नहीं हुई है। बुन्देलखण्ड के गांव- गांव में बने हरदौल के चबूतरे इसके साक्षी हैं। बुन्देलखण्ड के कण- कण में हरदौल का बल्दिान, आस्था और विश्वास की ज्योति जगाये जीवित है-- जीवित रहेगा-- अनन्तकाल तक।

(समाप्त)

- बेयर हाउस की बगल में, गली नं.1 बजरंग नगर
पन्ना रोड छतरपुर (म.प्र.) 471001
मो.9479482980

कैसी कठिन जिंदगी जी रए

- डॉ. महावीर प्रसाद चन्सौलिया

जिन खाँ पेट भरन को नइयाँ ना सिर ऊपर छैया।
रात दिना मजदूरी कर रए, डेरा पेड़ तरइयाँ।।
बड़े भाग पी.ए.सी.में गए, बाडर कोउ रखइयाँ।
मरता का नई करे काम जो, पानी पेट भरइयाँ।।

जोखिम भरी जिंदगी जी रये, रात-दिना नई चैना।
गर्मी, वर्षा जाड़े ठाड़े देश रखा रए भैना।।
बैरी तक- तक गोली मारें, पाछें पाँव धरै ना।
वीर भूमि भारत माँ खातिर, पर परवाय करै ना।।

पहरा लगे बड़े बंगलन पै, वे सो पाँव पसारें।
मोरे मौड़ा उन्हें रखा रए, हम हैं राम सहारें।।
रोटी के लानें परदेशन, घर की राह न हेरें।
डेढ़ साल कौ नाती द्वारें पापा पापा टेरे।।

जब जब सोचत घर आवे खाँ, उनसें छुट्टी माँगत।
तब बे कहत देश पै संकट, आतंकी चढ़ आवत।
मन मसोस रैजात सोच के, परबस सुक्ख न पावे।
गोली खाएँ सिपाई रन में, अफसर नाम कमावें।।

बाहर जाकें हियाँ बुला रए बड़ी कंपनिन बारे।
गोला औ बारूद बना हैं, करहैं,वारे न्यारे।।
माल्या जैसे लूट- लाट कें जै हैं साँझ सकारे।
पढ़े लिखे अपने मौड़न खाँ, कर रए काए किनारे।।

खाएँ कमीशन मोटे हो रए, जब - जब कछू खरीदें।
'महावीर' तोपें पनडुब्बी , टेंक मिराज खरीदे।।
गये राजीव गान्धी कबके, जाँचे अब तक हो रईं।
अपराधी पैरोल माँग रए, फाइल इमरत पी रईं।।

- ग्रा. पो. बँगरा जिला जालौन उ.प्र.
मो. 8004776067

बड़ौनी वीरसिंह जू की

- डॉ. लखन लाल खरे

मै बड़ौनी हूँ।

बड़ौनी, बुन्देला कुल- कुंजर महाराज वीरसिंह जू देव की ।।

ओरछा के प्रबल प्रतापी सम्राट ओरछेश मधुकर शाह जू देव ने अपने बेटे वीरसिंह जू देव प्रथम को मेरा जागीरदार बनाया। तब मेरा वैभव देखते! महाराज ने अत्यंत रुचिपूर्वक मेरा श्रृंगार किया था। उनके मन में भले ही ओरछेश बनने की अभिलाषा थी, किन्तु उन्होंने कभी मेरी उपेक्षा नहीं की। इसका प्रमाण यह है कि दक्षिण विजय के पश्चात् नवाब अबदुल्ला खाँ से उन्होंने मेरी मांग की। नवाब ने उनसे दक्षिण में मुँह माँगा देने तथा अपने जैसा बना देने की बात की। परन्तु महाराज ने वह सब मेरे लिए ठुकरा दिया। जब उन्होंने कहा कि "बड़ौनी के बिना मैं एक पल नहीं रह सकता हूँ"- तो हर्षातिरेक के कारण मेरा हृदय उन्मत्त हो उठा-

दक्षिन दिसि को कियो पयान। बीरसिंघ लै संग सुजान।।
नियरी कछु बरार जब हरी । बीरसिंघ तब विनती करी।।
मो कहँ देइ नवाब बड़ौन। मैं सबही राखौ तिहि भौन।।
सुचित होहिं मेरे रजपूत। हौं अति सेवा करौं अँगूत।।
सुनि नबाब यह उत्तर दियो। मैं अपनो घर दक्षिन कियो।।
दक्षिन में मुँहमाँग्यौ देउँ। अपने सम तुमको करि लेउँ।।
बीर कहयौ दक्षिन किहि काज। हौं बड़ौनि की बाँधौ लाज।।
बिन बड़ौनि पल एक न रहौं। झूठो क्यों नवाब सौं कहौं।।

-(वीरचरित्र: केशव: तृतीय प्रकाश)

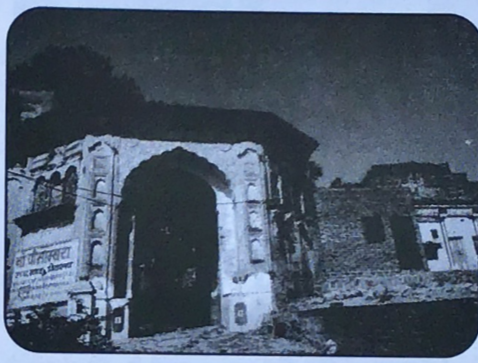
मेरे मालिक वीरसिंह जू का कद और पद बहुत बड़ा था। उनके सम्मुख मैं कुछ भी नहीं था। फिर भी महाराज ने मेरा मान बढ़ाया। महाकवि केशव ने तो मेरे यश वर्णन में एक सवैए की रचना तक कर डाली थी जिसमें उन्होंने मुझे सांच की बेल की उपमा दी-

बीर नरपति के भुजदंड अखंड पराक्रम मंडप झौंड़ी ।
जाइ जड़ी जड़ सेस के सीस सिंची दिनदान जलावलि औड़ी ।।
फैलि फली मनकाम सबै दुजपुंजनि के करि सीवँ पिछौड़ी ।
देखत दूरि भए दुख 'केसव' साँच की बेलि बड़ौन में बौड़ी

(वीरचरित्र: केशव: तृतीय प्रकाश)

मेरी समृद्धि के लिए महाराज ने बहुत कार्य किए। मेरे किले को नया स्वरूप प्रदान किया। मेरे चारों ओर बहुत सुन्दर- सुन्दर पहाड़ हैं। इन पहाड़ों को लिड़रा पहाड़, गनियार पहाड़, धरैना पहाड़, लड़ैरा पहाड़, गोपेश्वर पहाड़ एवं हरिन्दर पहाड़ के नाम से जाना जाता है। इन पहाड़ों की तलहटी में मेरे उदारमना स्वामी वीरसिंह जू ने एक विशाल सरोवर का निर्माण कराया था, जिससे कृषकों के खेतों की सिंचाई होती थी। इस तालाब में मेरे स्वामी के समय सुंदर-सुंदर कमल खिलते थे, समुचित साफ- सफाई होती थी। परन्तु अब आप देख रहे हैं प्रजातंत्र में साँस लेने वाले लोगों ने मेरी क्या दशा कर दी? मेरे अधिकांश पर अतिक्रमण कर लिया और जो बचा, उसे पॉलीथिन तथा शहर भर के कचरे से भर दिया। मेरे स्वामी अत्यन्त प्रजावत्सल थे। मेरे आँगन में सरोवर निर्माण के साथ- साथ मेरे पड़ौसी दतिया में भी उन्होंने वीरसागर तालाब का निर्माण कराया था,जो अब भी विद्यमान है। मैंने युद्धों की विभीषिका भी झेली है और कई बार उजड़ा भी हूँ। मेरे स्वामी के राजनैतिक जीवन का प्रारम्भ मेरे ही आंगन से हुआ था। बहुत संघर्ष किया उन्होंने - अपनों से भी और बाहर वालों से भी। केशव कवि ने अपने ग्रंथ - वीर चरित्र में मेरे स्वामी के इस संघर्ष का वर्णन किया है। इस वर्णन में यत्र- तत्र मेरा भी सांदर्भिक उल्लेख होने के कारण मैं भी अजर हो गया।

बब्बाजू महाराज मधुकर शाह जू ने जब वीरसिंह जू देव को मेरी बैठक दी, तब मेरी छाती पर मुगल बादशाह अकबर का शेख मूँग दल रहा था। वीरसिंह जू ने उसे तथा बड़ौनिहां आदि को मार भगाया । इतना ही नहीं उन्होंने अपने बाहुबल से पवाया, नरवर, कोलारस और आरौन तथा भांडेर तक को हस्तगत कर लिया। उनकी यह प्रभुता देख देखकर मेरा- मन- मयूर नृत्य करने लगता।



अकबर द्वारा शासित भूमि पर जब मेरे स्वामी ने एक के बाद एक अधिकार किया तो बादशाह ने ओरछा नरेश रामशाह को मुझे ध्वंस करने का फरमान जारी किया। रामशाह, इन्द्रजीतसिंह तथा अन्य शाही सरदारों सहित मुझे नष्ट करने में जुट गये, परन्तु मेरे स्वामी के प्रताप के सम्मुख ये टिक न सके।

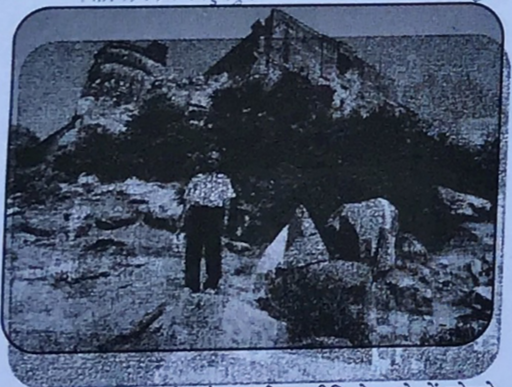
यह मेरे स्वामी की ही सामर्थ्य थी कि हिन्दुस्तान के महाबली सम्राट की अजेय शक्ति को वे ललकार सके। बड़ी बड़ी रियासतों के बड़ी - बड़ी सेनाधारी राजे अचंभा करते कि ये एक पिद्दी - सी गुमनाम बड़ौनी जागीर का साधारण सा जागीदार शहंशाह ए हिन्दुस्तान को कैसी कड़ी चुनौती दे रहा है?

मेरा ऊबड़- खाबड़ स्वरूप जब था, तब किसी ने मुझे नहीं चाहा, परन्तु जैसे ही मेरे स्वामी ने मेरा श्रृंगार किया सबकी लार टपकने लगी। मेरे स्वामी के उत्पात रोकने के बदले पहले ओरछा नरेश रामशाह के पुत्र संग्रामशाह ने नवाब से मेरी मांग की। नवाब ने तहरीर लिख भी दी, पर इस अभियान में संग्राम शाह सफल न हो सका। सन् 1599 में रामशाह ने अकबर से अनुरोध किया कि वह मेरे स्वामी को जिंदा या मुर्दा पकड़कर दरबार में पेश करेगा। मगर इसके बदले मुझे रामशाह को सौप दिया जाय। अकबर तैयार हो गया। रामशाह ने उदयपुर के राजसिंह सिसौदिया के साथ मुझे घेर लिया।

मेरी सहायता के लिए वीरसिंह जू के दोनों भाई सुख प्रताप और इन्द्रजीत तत्काल आ पहुँचे। रामशाह ने मेरे स्वामी को पत्र लिखा कि राजसिंह का मान रखते हुए केवल दो दिन के लिए मुझे छोड़कर चले जाएँ। मेरे मालिक अपने भाई की बातों में आ गये और भैया हरिवंश आनंदी पुरोहित व देवा पायक की साक्षी में रामशाह की बात मानकर मुझे दो दिन के लिए छोड़ दिया।

वीरसिंह जू देव जैसे ही मुझे छोड़कर गये, वैसे ही रामशाह और राजसिंह के दुष्ट सैनिकों ने मुझे जीभर कर लूटा। मेरी हँसती-खेलती बस्ती उजाड़ दी, मेरे निवासियों को खदेड़ दिया गया। सारे समाचार मेरे मालिक तक पहुँचे, परन्तु वे दो दिन के वचन से बद्ध, विवश थे।

दो दिन के उपरान्त जब उन्होंने मेरे आँगन में प्रवेश किया तो मेरी लुटी- पिटी दशा देखकर उन्हें अत्यन्त दुख हुआ और यह पैशाचिक कृत्य करने वालों पर क्रोध भी आया। उन्हें ग्लानि होने लगी स्वयं पर कि दो दिन तक मुझे अकेला क्यों छोड़ा?



इन्हीं दुश्चिन्ताओं में घिरे और भावी रणनीति के बारे में सोचते-सोचते किले में विश्राम कर रहे महाराज को नींद लग गयी। एक विश्वासघाती ने इसकी खबर जयसिंह को दे दी। उसने बिना विलंब किये मेरे किले को घेर लिया। परिस्थिति की भीषणता को समझते हुए महाराज के सैनिक पल भर में तैयार हो गये और शत्रु- सेना से भिड़ गये। बकसराय, सुंदर प्रधान, बलवंत जादो, कृपाराम, चम्पतराय, तथा मुकुट गौर जैसे अपने अति विश्वस्त सरदारों सहित शत्रु सेना की आँखों में धूल झोंकते हुए महाराज किले से बाहर हो गये। राजसिंह हाथ मलता रह गया। नरवर घाटी में महाराज को ज़िंदा या मुर्दा पकड़ने के सपने लिए बैठा अकबर यह समाचार सुनकर तिलमिला उठा और अपने लाव- लश्कर सहित वापस आगरा चला गया। मेरे स्वामी भी अपने किले में लौट आये। मेरे उजड़े रूप को उन्होंने पुनः सँवारना प्रारंभ किया।

मेरे स्वामी एक दिन अपने किले के उपवन में टहलते हुए विगत घटनाओं के बारे में सोच रहे थे। तभी उन्हें विचार आया कि क्यों न शहजादा सलीम से मित्रता की जाय क्योंकि अकबर तो अब बुझता हुआ दीपक है। रामशाह आदि तो इसी अकबर की कठपुतलियाँ हैं। तो क्यों न सलीम के सहयोग से अकबर को चुनौती दी जाय? क्योंकि सलीम भी अपने पिता शहंशाह अकबर से विद्रोह किये बैठा है।

यह विचार आते ही वीरसिंह जू देव सलीम से भेंट करने तत्काल कड़ा (इलाहाबाद) जा पहुँचे। सलीम ने अकबर के परम प्रिय और उसके परम शत्रु अबुल फजल का सिर काटकर लाने की शर्त रखी। हुआ भी ऐसा ही।

इस बात का मैं प्रत्यक्षदर्शी हूँ कि आँतरी के वियावान में हुए युद्ध में जब मेरे स्वामी ने अबुल फजल का सिर काटा तो उसे लेकर वे मेरे किले में ही लाए थे। यहाँ से यह कटा सिर ले जाकर मेरे स्वामी ने इलाहाबाद के किले में सलीम को भेंट किया था।

मैं जानती थी कि इस घटना से भूकंप आ जाएगा। हुआ भी वही। शोकसंतप्त अकबर के कठोर आदेश से एक बार फिर मेरा मान मर्दन हुआ। शाही सेना महाराज के पीछे पड़ी थी, पर वह उनका कोई अहित न कर सकी।

रोग और शोक संतप्त अकबर, अक्टूबर सन् 1605 में स्वर्ग सिधार गया। अकबर का पुत्र सलीम, जहाँगीर के नाम से भारत का सम्राट हुआ जो मेरे स्वामी वीरसिंह जू का अभिन्न मित्र था। उसने प्रसन्नतापूर्वक मेरे स्वामी का राजतिलक समारोह आयोजित कराया। मेरे किले को तथा मुझे भाँति- भाँति से सजाया गया। इस किले में महाराज वीरसिंह जू देव का जब राजतिलक हुआ, तब मैं हर्ष के मारे नृत्य कर उठी। महाराज के लिए तिलक, खिलत, तलवार आदि सलीमशाह ने चम्पतराय के द्वारा भिजवाया था।

आगे चलकर मेरे महाराज मुझे छोड़कर बडे स्थान के राजा बनकर ओरछा चले गये। श्रीकृष्ण जैसे ब्रज छोड़कर मथुरा और द्वारका गये थे, वैसे ही वीरसिंह जू देव मुझे रोता-कलपता छोड़कर ओरछा चले गये। अब वे जागीरदार नहीं थे, बुन्देलखण्ड के स्वतंत्र राजा थे। दूसरी व्यवस्था होने तक ओरछा से ही महाराज मेरी देख-रेख करते रहे।

सन् 1625 में वीरसिंह जू देव ने अपने द्वितीय पुत्र अर्थात् हरदौल के अनुज भगवान राव को पृथक जागीर के रूप में दतिया सौंपा। दतिया के साथ ही मुझे उन्होंने अपने बेटे को सौंप दिया। इस समय मेरी जागीर में सत्रह गाँव थे। इसके साथ ही मेरा स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया। आगे चलकर दतिया स्वतंत्र रियासत के रूप में परिवर्तित हो गया।

भगवानराव ने तीन विवाह किये थे। पहली रानी से शुभकरण का जन्म हुआ जो अपने पिता के पश्चात् दतिया के राजा हुए। दूसरी पत्नी से पुत्र पृथ्वी राज उत्पन्न हुए। इनके वंशज मेरे यहाँ के ठाकुर हैं। क्योंकि शुभकरण ने दतिया का राज्यभार संभालने के पश्चात् पुनः मुझे स्वतंत्र जागीर बना दिया और पृथ्वीराज को मेरा नया स्वामी बना दिया। अन्तर इतना रहा कि पहले मेरा संबंध ओरछा से था, अब दतिया से हो गया। परन्तु वंश तो एक ही था न। पर दुर्भाग्य औरंगजेब के पक्ष में शाहजादा शुजा से खजुहा (फतेहपुर, उ.प्र.) के युद्ध में जनवरी, 1659 में मेरे स्वामी पृथ्वीराज स्वर्ग सिधार गये। इनके पश्चात् इनके पुत्र छत्रसाल मेरे जागीरदार हुए। सन् 1667 में औरंगजेब के दक्षिण अभियान में छत्रसाल ने भी भाग लिया था।

महाराज छत्रसाल से लेकर दतिया के समस्त राजाओं -

शुभकरन, दलपतराव, रामचन्द्र, इन्द्रजीत, शत्रुजीत और राजा पारीछत के समय तक लगभग एक सौ पचास वर्षों तक मैं कभी स्वतंत्र जागीर के रूप में स्थित रहा तो कभी दतिया के अधीन। परन्तु राजा पारीछत के समय तक मुझ पर और दतिया पर मराठों व अँग्रेजों के मध्य वर्चस्व की लड़ाई होने लगी। महाराज पारीछत के समय एक क्रान्तिकारी घटना घटी। इतिहासकार बताते हैं कि निः संतान पारीछत महाराज को शिकार के समय वन में एक बालक पड़ा मिला। राजा ने इसका पालन- पोषण किया और गोद ले लिया। इसमें अँग्रेज सरकार की सहमति थी। राजा ने इस बालक विजय बहादुर को सन् 1837-38 में राज का उत्तराधिकारी घोषित किया। परन्तु मेरे यहाँ के ठाकुर मर्दनसिंह ने राजा पारीछत की मृत्यु (सन् 1839) के उपरान्त राज्य के उत्तराधिकार का दावा प्रस्तुत किया जो अँग्रेज सरकार ने निरस्त कर दिया।

बस, मेरी राजनीतिक उथल- पुथल भरी कहानी अपने अंतिम चरण में है। आप उसे भी मनोयोगपूर्वक सुन लेंगे, तो मैं आपका आभारी रहूँगा। सुनाऊँ? सुनिये

विजय बहादुर की व्याहता रानी से पुत्री और एक दासी से पुत्र होने के कारण दासीपुत्र को उन्होंने राजसिंहासन पर बैठाना चाहा। मेरे यहाँ के ठाकुरों ने इसका विरोध किया और राज परिवार का खाने- पीने तक का बहिष्कार कर दिया। अंततः दासीपुत्र अर्जुनसिंह को पीछे हटना पड़ा। 1857 ई० में विजय बहादुर का निधन हो गया।

1857 का विप्लव शांत होने पर मेरे यहाँ के ठाकुर भुजबल सिंह ने उत्तराधिकार का प्रश्न फिर खड़ा किया परंतु सन् 1862 में वह निरस्त हो गया।

महाराज भवानी सिंह सन् 1857 से 1907 तक दतिया में राजा रहे। इनके शासनकाल में मुझसे संबंधित एक ऐसा प्रश्न सुलझा जो अनेक वर्षों से चला आ रहा था। यह प्रश्न था कि मैं स्वतंत्र जागीर हूँ अथवा दतिया राज्य के द्वारा संरक्षित और निर्देशित हूँ। प्रश्न मेरी जागीर की मूल स्थापना को लेकर भी था। सरकार द्वारा यह निर्णय दिया गया था कि मेरी जागीर दिल्ली से दी गयी थी, यह दतिया राज्य से सर्वथा स्वतंत्र थी। अतः मेरे अर्थात् बड़ौनी के ठाकुर नैतिक रूप से दतिया राज्य के अन्तर्गत समझे जावें। यह निर्णय सन् 1882 ई० में हुआ था।

भवानीसिंह जू अगस्त 1907 में स्वर्गबासी हुए और उनके पुत्र गोविंद सिंह ने गद्दी संभाली। इनके समय में मेरी जागीर का क्षेत्रफल 21559 एकड़ था। मैं राज्य को कोई कर नहीं देता था। मैं राज्य के जब्ती कानून से भी पृथक था। सरकार की ओर से यह अधिकार मुझे दिया गया था। परन्तु इस समय तक मेरे बारह हिस्सेदार हो गये थे। इनकी वार्षिक आय छह सौ रुपये से चौबीस हजार रुपये वार्षिक तक थी।

लेखक महोदय, उस समय मेरे चारों ओर पहाड़- पहाड़ियाँ और भीषण वन थे। मैं दतिया से पश्चिम में छह मील दूर स्थित था। आपने देखा होगा, पहाड़- पहाड़ियाँ अब भी हैं, परन्तु उन्हें भी तोड़ तोड़कर मेरा सौंदर्य नष्ट किया जा रहा है। वनों से हीन तो मैं वर्षों पहले हो गया था। विकास के नाम पर मुझे छला जा रहा है। मैं पहले ग्राम पंचायत के रूप में था। अब नगर परिषद् बन गया हूँ। और अभी एक वर्ष पूर्व मुझे तहसील भी बना दिया गया है। दतिया से मेरी आठ किलोमीटर तक की दूरी के लिए पक्की सड़क भी है जिससे सफर करते हुए मुझ तक पहुँचे हो।

तुम सोच रहे होगे कि मैं केवल साढ़े चार सौ- पाँच सौ साल का हूँ? मेरे प्यारे जीवनी लेखक। मैं छठवीं- सातवीं शताब्दी से यहाँ खड़ा हूँ। मैंने अपने प्रांगण में बौद्ध- जैन और शैव मतों की उन्नति- अवनति देखी है। तुम जिन गुप्तेश्वर महादेव के दर्शन करने गये थे, वह प्रतिमा ही छठी शताब्दी की है। जैन तीर्थ सोनागिरि मुझसे मात्र चार कि.मी. दूरी पर है।

मैं अपने मैदान में हुए अनेक युद्धों का मौन साक्षी रहा हूँ। कला और साहित्य भी मेरे प्रांगण में फले- फूले होंगे, पर उनकी कहीं किसी ने कोई चर्चा नहीं की। केवल मुझ पर ही स्वतंत्र और बृहद ग्रंथ लिखा जा सकता है, परंतु मेरी गाथा सांदर्भिक मात्र बनकर रह गयी। मित्र, तुमने मुझमें रुचि प्रदर्शित की, कड़ी धूप में मेरे किले के भग्नावशेषों से साक्षात्कार किया, मैं तुम्हारा आभारी हूँ।

मैं बुन्देलखण्ड के इतिहास से विलग हो ही नहीं सकता, क्योंकि मैं बड़ौनी हूँ।

बड़ौनी, बुन्देला कुल- कुंजर महाराज वीरसिंह जू देव की।।

प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय
कैरा (शिवपुरी)

बुन्देली - गीत

गुलाब सिंह यादव भाऊ

१. बैरी जी कलयुग नई भारव
पाप लिगा खा आरव
दिन दूनौ और रात चौगनौ-2

2. ई धरती पै धरव.......... बैरी
सत्य धर्म धरनी में धसरये-2

3. पापई पाप दिखा रव.......... बैरी
रीछ बूछ न रई धरती पै-2

4. मनुवा पाप कमारव...... बैरी
बाप मताई आजा- आजी की-2

5. मताी हंसी उड़ारव...... बैरी
आँखन को काजर नई बचबे-2

6. आँख मिचौली पारव........ बैरी
बलसाली के बल के मारे-2

7. ओई ताई बतारव.......... बैरी
होरव उल्टो उल्टो देखो-2

8. नर पर नारी चारव......... बैरी
अधर्म की जड़ थोरी जानो-2

9. भाऊ बता के गारव........ बैरी

ग्राम- लखौरा पो. बहादुरपुर
जिला- टीकमगढ़ म.प्र.

रिवाज

- दिनेश चन्द्र दुबे

''बाई नै तौ भौत रोको। हमनैई नई मानी। कोऊ का कै? सरमई नई आइ। जरा सो दई माँगौ जाऊन के लानै तौ प्लास्टिक में धर कैं फैंक दवो जैसें कूरा करकट बाहर फैकत या भिखारियान कों कछू बचौखुचौ देत। वे इत्ते बड़े आदमी हैं। ठाकुर हैं जात के। और सबसें बड़ी बात सबसे अच्छे पड़ौसी। दो बेरैं मौड़ी कौ दिमाक खराब भऔ तब बिनई ने प्रेम और दया दिखाई ती। वाकी मोहल्ला कौ तौ जैसे साँप सूँग गऔ तो। अस्पताल के डाक्टरन कौ कैबौ है कै जब आदमी कौ दिमाक फिर जाय तौ वाय केवल प्रेम सैई ठीक करौ जा सकत। दवाई केवल वाके भीतर के विस्फोट खौं कन्ट्रौल कर सकत। ठीक तबई हो सकत बीमार जब वाय कोऊ प्रेम सैं बाके सवालन कौ जबाब देवै। धीरज न छोड़ै मूरखता भरी वातन कौ सुन कें। पागल भऔ जानै कैसी कैसी हरकतें करत। इनई के घरै अपने घर की तीसरी मंजिल सें पथरा पटक दऔ तौ जौन उनकी मौड़ी के पाँव पै गिरो तो और पड़ौसियन घाई वे उलानौ दैवे न आकें अपनेई बच्चाय समझाई ती-'' बेटा वाय का पतौ वौ का कर रई। धीरज राखौ। बा कैसी हालत कोऊ की भी हों सकत। अपने घरै नई हो चुकौ। बड़ी जिज्जी की याद करौ। विचारी खौ आदमी नै नई समझ पाओ, छोड़ दऔ सौ ...''।

जेई वातें हतीं मन में जब हमई नै प्लास्टिक की जगाँ सैट वाली एक छोटी कटोरी में जाऊन रखा कै पट्टी वै धरा दऔ तो दोऊ मकानन के बीच की दीवार पै।

हौंय जौ चइयेत तौ हमाये हिसाब सै कै बगलवारी जाऊन निकर कै कटुरिया फिर दविार पै धर देती। पर कई दिना निकर-गए कटुरिया नई लौटी, रोज वर्तन वारी वासन मांज कै झब्बा में धर देत और उनै ठीक सें अलमारी में बेई जमाउत, और ऐसे में कंटोरी की याद हर बेर कौंदत ती। कई दिना न उनसे मांगवे के और न भूल वे के। वाई सैं अखीर में नई रऔ गऔ। हमाई वातैं सुनके बिलिया माँगई लई। बिलिया अवैऊ नई लौटी। लेकिन कारन सुन कैं हम हक्के वक्के रै गये पचत्तर साल के डुकरा -हवो बाई विलिया लौटावो हम भूले नईयाँ। हम सोस रये ते कै काल शिमला मिर्च बन है तौ मिर्च रख कै लौटाये। पर दूसरौ साग बन गऔ। सो वर्षन सें रिवाज चलौ आ रऔ कै कोऊ यां से कछू वासन आवै तौ खाली नई लौटाओ जात।

और हम हक्के वक्के हैं सुन कैं। क्या ये रिवाज जो सदियन सैं चले आरये ठीक हैं?

एक बात और दिमाग पगलया रई। वौ जौ कै आदमी कौ मन भी कितनी हैरतकारी भावनन सें बनौ। एक दो कौड़ी की बिलिया के आदान प्रदान की प्रक्रिया से मन विलग नई हो पाओ हमाओ, मौड़ी कौ, और वाई कौ। इन तीनों में हर उम्र हर स्तर कौ दिमाग है। पर है एकेई सौ। वो तो क्या मानवीय सम्बन्धों में खास कर आज के समय में छोटी बातों पर भी हरपल सतर्क रहकर धारणा बनाना जरूरी है?

रिवाज की बात चलीतौ मन मस्तिक कौ हला डारबे वानी अवई घटी एक और घटना आप सब से बॅटि बिना मन नई मान रऔ।

हमाये परिचित तौ भौत हैं लेकिन दोस्त भौत कम। एक दोस्त है ठीक हमाई उमर, पद के पचास साल सै ज्यादा के। एक आम व्यवहार परिचित दोस्त कबै क्वान लगत वौ आप खौ बतावे की जरूरत नईयां।

ऐसई एक दोस्त कौ फोन आऔ-'' दिनेश परौं वाई शांत हो गई। दो दिना बाद उठावनी है। मैं चिरगांव में हूँ।

जौई वौ फौन हतौ, जौन ने कछू मइनन सें कलम बंद की 'राइटर्स ब्लाक' मन स्थिति टौर। डारी ती। कछुअई तै न कर पाबे की हालत में हमने दोस्त खौं एक चिटठी लिखीती। बौ चिट्ठी लेकिन डार आज तक नइ पाई। का लिखैतौ सीधे आपई पढ़ौ-'' भाई.......

एक अरसे बाद जौ चिट्ठी लिखबे की मजबूरी है। बाई के मरवे की खबर के बाद भी चिरगाँव न पहुँच पाना यदि दंडनीय है तो दंड देना। क्षमा प्रार्थी हों।

लेकिन हमैं नई लगत कै हम गलत हैं। कारन स्याद हमाये कछू रिवाजई ऐसे हैं कै ...... मानसिक आरोग्य शाला में छः माह बंद रह कर घर लाई गई ४६ वर्षीय मंझली बेटी को छोड़कर अकेले इतने बड़े घर में हमें नई लगत कै जौ सई रतौ के हम उठावनी में पौंचते खास कर तब जब रिवाज जौ है कै उठावनी में पहुँचकर, सम्वेदना व्यक्त कर वापस लौटना पड़ता है।

हमाऔ घर लगभग डेढ़ साल से पत्नि की हत्या के बाद बंद है। तुमाये यां ठैर नइ सकत ते और अपनौ घर बंद। ऐसे में एक मात्र ट्रेन से बारा बजे याँ सें चल कैं तीन बजे चिरगाँव स्टेशन पौचते और फिर पैदल एक डेढ़ किलोमीटर तुमाये घरै। फिर तुरतई स्टेशन काये कै एक मात्र ट्रेन छः वजैं ग्वालियर तक की आती थी। पचहत्तर साल की उम्र, दांतों का डेन्चर, आँखों की दवा, कानों की मशीन ले जाना भूलना एक दम परेशान कर दे जिस पर बच्ची की साथ चली होती चिन्ता क्या ठीक रहता आना?

हाँ यह संभव था। और रात को तुम्हारा फोन आने पर ही तय कर लिया था कि कार से जल्दी चल देंगे क्योंकि उठावनी सुबह ही हो जाती है। शाम तीन चार बजे तक नहीं रुकी रहती। लेकिन छोटे पुत्र तैयार नहीं हुये। ड्राइवर तलाशा, नहीं मिला। पुत्र का कहना था ऐसे रिवाज निरर्थक होते हैं। मरने वाला क्या लौटता है फिर हमारी माँ की मृत्यु पर तो कोई नहीं आया। और उपरोक्त स्थितियों में अनुपस्थिति यदि दंडनीय है तो दंड दो। चेतना भी, कामवाली बाई, सभी मुझे दंडनीय मानते हैं। पर मैं--- पर निर्णायक तुम रहो''।

बिलिया अवैतक नई लौटी। उठावनी पै नई जा पाये तौ अब तेरई पर भी नई जा सकत। वकौल पत्नि। प्रेमिका ''उठावनी पै तौ गये नईयाँ, ठूँसवे जावे में शरम न लगै तुमै? हम तौ नई जै, नाक कटावे गोया कि खाने की कमी है इसलिये.........

कछू रिवाज और याद आ रये जा टैम। जैसें कोनऊ भी निमंत्रण आवे, न जाओ तो आफत। जाओ तौ मुसीबत। कौऊ के जन्मदिन है तौ 'प्रजैन्ट' लै जावौ जरूरी है। व्याव मौड़ी कौ होय चाय मौड़ा को बुलाओ है तौ दो चार सौ की चपत तौ लगनैई है। टैम जौ लगने बाकी तौ कऊँ गिनतीयई नईया। कछू दिनन पैले स्कूटर सें एक परिचित के व्याव में गये। लौटत में रात हो गई ज्यादा। अब बाइफोकल चश्मा लगाये, गाड़ी चलावे पै सामने सै आ रई गाड़ियन की लाइट सै जौ लगै के अब मरे, तब मरे। पुराने समय में बिटियन के व्याव में हते रिवाज कछू रिवाज कछू मदद के। लेकिन ......

हरियाणा की पंचायते तै कर रई दो प्रेमियन के भाग्य। पंचायतें बनी तीं गाँव मैई अपने झगड़ा तय करवे। लेकिन...........

सोच सोच कें दिमाग फटौ जात कै कैसे कैसे रिवाज चले आरये। चाँय जैसौ पढ़ौ लिखौ परिवार होय पर ब्याव के पैलें अँगूठा पंडितन से पत्री मिलवाय। महूरत निकर वाय। मजे की बात जौ है कै हमाये मुहल्ले के एक पंडित जी ने इन्द्रागांधी जी हत्या के पैले इस हत्या के वावद कई ती। हत्या के बाद पुलिस ने उनै पूछताछ कौं पकरो तो। उनई पंडित जी ने अपनी बिटिया की पूरे गुन मिलाकैं, व्याव करौ तौ वौ मोड़ी व्याह के एक साल बादई विधवा हो गई ती लेकिन .....।

- 68 विनय नगर 1, ग्वालियर - 474012
मो. 9301104227

कवियों की जन्म भूमि बुन्देलखण्ड की उपज : बखत कुँवरि 'प्रिया सखी'

- हरिविष्णु अवस्थी

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ, साहित्य मनीषी स्वर्गीय भगवानदीन दीन ने दिनांक २४,२५,२६ सितम्बर सन्१८९९ को प्रयाग में आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन के द्वितीय अधिवेशन में सभा को सम्बोधित करते हुए कहा था कि- ''बुन्देलखण्ड कविता की जन्मभूमि है और यहाँ के कवि उत्तम श्रेणी के होते आये हैं और सदैव होते रहेंगे।''[1]

''अपनी इस स्थापना को प्रमाणित करने हेतु उन्होंने आगे कहा कि-जो श्लोक श्री बाल्मीकि जी की जबान से पहले ही पहल अनायास निकला हुआ माना जाता है वह 'तमसा' नदी के तट पर निकला था। इस बात को सभी लोग अविरोध मानते हैं। — तमसा (टौंस) नदी बुन्देलखण्ड की पूर्वीय हद्द पर है। इससे भी प्रमाणित होता है कि बुन्देलखण्ड की पूर्वीय हद्द पर पहले पहल श्रीमती कविता देवी का अवतार हुआ था। इस हेतु यदि बुन्देलखण्ड को कविता की जन्म-भूमि कहैं तो इसमें चौकने की बात ही क्या है।''[2]

''हमारा अनुमान है कि कालिदास जी इसी देशखण्ड जिसे बुन्देलखण्ड कहते हैं के निवासी थे। ---- हमारे कथन का तात्पर्य केवल इतना ही है कि इस देशखण्ड की भूमि में कुछ ऐसा विलक्षण प्रभाव है कि यहाँ कवि अधिकता से पैदा होते हैं और बड़े प्रतिभाशाली होते हैं। अन्य खण्ड निवासी कवि भी यदि इस देशखण्ड में आकर कुछ दिन निवास करें तो उनकी प्रतिभा और अधिक बलवती हो जाती है।''[3]

बुन्देलखण्ड में जन्मी ऐसी ही एक प्रतिभाशाली कवयित्री थीं दतिया नरेश महाराजा शत्रुजीत सिंह (1763-1801 ई०)की महारानी बखत कुँवरि ''प्रिया सखी''। आपका जन्म अनुमानतः संवत् 1800(1743ई.) एवं कविता काल संवत् 1848(1791ई०) माना जाता है। आप राधा बल्लभीय संप्रदाय में दीक्षित थीं और आपका अधिकांश समय श्री राधाकृष्ण की उपासना में विन्द्रावन में ही व्यतीत होता था।

आपने 'बानी' काव्यकृति की रचना की थी जिसका शुभारंभ एवं समापन निम्नलिखित विवरणानुसार है-

''1. प्रारंभ श्री राधावल्लभो जयति'' श्री हरिवंश चन्द्रो जयति।। अथ प्रिया सखी जू कृत होरी लिख्यते ।। जति राग।। सखी ये दोई होरी खेलैं। रंग महल मैं राधा वल्लभ रूप परस्पर झेलैं।।1।।

रूप परस्पर झेलत होरी खेलत खेल नवेलैं।। प्रेम पिचक पिय नैन भरे तियरूप गुलाल सुमैलैं।।2।। कुंदन तन पर केसरि फी की स्याम गौर भए भेलैं। सुरत समर के सूर लरत दोई टूटत हार हमलैं।।3।। सनमुख रुख मुसक्यात झपटि- झुकि लाड़िली लालहि पेलैं।। प्रिया सखी हित यह छवि निरखति सुख की राशि सकेलैं।।4।।

2. श्री राधावल्लभो जयति ।। श्री हरिवंश चन्द्रो जयति।। अथ श्री महाराज कौ मारि श्री महारानी बखत कुँवरि जू देव्य कौं नाम महल कौ प्रिया सखी जू है तिनकी बानी तो बहुत हैं तामैं एकु पद लिख्यते।। राग काफी।। प्रीतम हर हिय बसत हमारे।। जोई कहूँ सोई करत रैन दिन छिन पल होत न जिअ तैं न्यारे।। जित तित तन मन रौंम-रौम मैं ह्वै रहे मेरे नैननि तारे।। अति सुन्दर वर अन्तर जामी प्रिया सखी हित प्राननि प्यारे।।1।।

इस पद पर 5 भाव के टीका है-1- सिद्धान्त, 2- रस कौ अर्थ 3- सखी को बचन सखी सौं 4- श्री लाल जू को बचन श्री हित सखी प्रिया सखी जू सौं 5- वेष पलट।

अंत-छैल छवीली राधा गोरी होरी खेल मचायौ। केसरि ढ़ोरि गुलाल मांडि मुख अंजन दै हसि पिय गुलचायौ। पींताबर सौं हाथ बाँधी कर कहि होरी कौं नाच नचायौ। प्रिया सखी कौं भेष बनायौ महावर रंग रचायौ ।।3।।

---- इति श्री प्रिया सखी जू कौ एक पद ताके पाचु अर्थ सम्पूर्ण संवत् 1848 मार्गवदि।[4]

''मिश्र बन्धु विनोद'' खंड- 2 कवि क्रमांक 81 पृष्ठ संख्या 207 पर प्रिया सखी की गारी का उल्लेख मिलता है। इस ग्रंथ के पृष्ठ क्रमांक 315 पर उपरोक्त विवरण की पुनरावृति हुई है।[5] श्री गौरी शंकर द्विवेदी 'शंकर' ने अपनी कृति बुन्देल वैभव द्वितीय भाग पृष्ठ 514 पर निम्नलिखित विवरण दिया है- 191- बखत कुँवरि उपनाम प्रिया सखी जन्म स्थान दतिया जन्म संवत् 1800 वि० कविता काल सं० 1840 ग्रंथ- बानी विवरण दतिया निवासिनी थीं।[6]

'प्रिया सखी की बानी' के पदो में श्री राधा एवं श्री कृष्ण की युगल लीलाओं का भावपूर्ण चित्रण है जिसके अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि रानी बखत कुँवरि उनके युगल रूप की उपासक थीं। राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं का बहुत सजीव चित्रण उन्होंने किया है।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी की सन् 1906 की खोज रिपोर्ट में प्रियासखी की 'बानी' की जिस प्रति का विवरण प्रस्तुत किया गया है वह संवत् 1848वि. (1791ई०) की प्रति रही है। इसके अतिरिक्त दतिया राजकीय पुस्तकालय में रानी बखत कुँवरि के पदों की एक और प्रति संवत् 1857 (1800ई.)की सुरक्षित है जिसे दुल्हैया रतन कुँवरि ने अपने पढ़ने के लिये तैयार किया था।

रानी बखत कुँवरि 'प्रिया सखी' कृत पदों की वैशिष्टता का स्पष्ट प्रमाण है कि उसी समय में उनके एक- एक पद की टीका प्रस्तुत की गई। ''प्रीतम हर हिय बसत हमारे'' पद पर पाँच भावों की पाँच टीका एक साथ पढ़ने को मिलती है। कवयित्री ने स्वयं तो टीका नहीं लिखी होगी। तत्कालीन किसी रसिक पंड़ित ने हीं प्रिया सखी के पदों की टीका की होगी।

संदर्भ-

1. विभूति मिश्र सम्पा० सम्मेलन पत्रिका (शोध त्रैमासिक) अधिवेशन अंक-2 प्रयाग भाग संख्या 2 पृष्ठ 138
2. वही पृष्ठ 139
3. वही पृष्ठ 139
4. डॉ श्याम सुन्दर दास सम्पा. हस्तलिखित हिन्दी ग्रंथों की खोज का विवारण भाग 3 पृष्ठ 124-125
5. मित्र बंधु सम्पा. मिश्र बन्धु विनोद भाग 1-2 पृष्ठ 207
6. पं. गौरी शंकर द्विवेदी 'शंकर' सम्पादक बुन्देल वैभव द्वितीय भाग पृष्ठ 514

- अवस्थी चौराहा, टीकमगढ़ म.प्र
मो. 9407873003

होनहार लरका

– श्रीमती लक्ष्मी बरसैयाँ

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' सो भईया जा बुन्देलखण्डी कहाऊत आय। ई बात के लाने एक गाँव के लरका ने कर दिखाव। ई लरका को जनम बांदा जिले के गाँव भौंरी में भव। जा बात 80-82 साल पैलऊँ की आय। ई लरका कौ जनम माव के महीना में खूबई जाड़े में भव। मोड़ा तनक बड़ो भवो सो खूबई रोउत हतो। सो ऊ की मताई घर-बाहरें कौ कौनउ काम उसार न कर पाउती। सो उनने एक बाई खौं लरका खिलाबे के लाने राख लवो। ऊ बाई कौ नाम हतो बलझग्गी। बा लरका खों खूबई अच्छी तरां सें राखै-खिलाबै। ऊ खों खिलाउत-खिलाउत देरै-गंगाराम, गंगाराम, मोंग जावो। जी ने सुन लई सो सब जने ऊ लरका खों गंगाराम कैकें बुलाउन लगे। जोई लरका तनक बड़ौ भव सो पढ़वे के लाने स्कूल जान लगो। गंगाराम पढ़वे में होसियार हते सो परीक्षा में अउअल आन लगें। मास्साब ई लरका सें भौतउ खुस होतते। एई गाँव में गंगाराम ने आठ क्लास पास कर लई। उनके भौतइ नौने नम्बर आये, सो मास्साब खौं भौतइ खुसी भई।

गाँव के दो लरका पढ़बे के लाने करवी जा रये ते। गंगाराम खौं जैसइ पतौ चलो सो उनने अपनी मताई सें कई के मौखों सोई इनई ओरों के संगे जानें। सो बे कायखाँ हाँ कबे। गंगाराम तौ उनई साथियन के संगै पढबे के लाने घर सें निकर गये। तै एक कुठरिया में तीनउँ लरका रान लगे। गये तो पढबे के लाने। खाबे के लाने रोटी सोई बनाऊने। उन लरकन सें तो सब बनाउत बनतती अकेलें इन गंगाराम सें न चूल्हो जराउत बने न रोटी बनाउत बने। उन लरकन ने इनखों धीरें-धीरें सब कछु सिखा लवो। अब इनोरन ने बारह क्लास पढ़ लई। सबई के अच्छे नम्बर आये। गंगाराम जी के तौ सब जनन सें भौतक नौने नम्बर आये। गांव के बे दोई लरका सहर चले गये। एक लरका ने पुलिस की नौकरी करी। दूसरे ने कारखाने में नौकरी करी। गंगाराम सोई जबलपुर सहर चले गये।

उतै इनके भइया-भौजी रत हते सो जे ऊनई के पास रान लगे। अब इनै तौ हतो पढ़बें कौ चसका सो उसे जाके इनने कॉलेज में दाखिला लै लवो। सो भैइया पढ़बे के लाने किताबें सोई चाउनें और फीस भरबे खां रुपइया चाउनें। सो अब ऊखों सोइ परिबन्ध करने। सो गंगारामजी शहीद स्मारक में बाबूगिरी कौ काम करन लगे। इनकी पढ़बे की गाड़ी चलन का लगी दौड़न लगी।

जब गंगाराम जी खा बी.ए. कौ इम्तहान देने हतो सो इन्नहें उते सें छुट्टी न मिलत्ती सो जे उतई के एक डाँ हूँका के ऐंगर पोंचे। के भईया मौखों इम्तहान देबै खां छुट्टी नई मिल रई, सो कछु रास्ता बताबो। सो फिर का भव भईया के उन डॉगटर साब ने इनके गोड़े में पटटी बँधवा दई। जी सें जौ पतौ चलै के इनके गोड़े की हड्डी टूट गई। फिट का भव भईया गंगाराम जी ने अपने दफतर में आकें अपनी बँधौ पाँव दिखा दओ। सो इनखौं इमतहान देवे के लाने औकास मिल गवो। अब का भव इनने बँधे पाँव में इम्तहान दै दओ। जे खूबई नोने नम्बरन सें पास हो गये। इनने जाके उन डॉगटर साब खों अपने पास होवे की खबर बताई सो बे सोई खूबई खुस भये।

अब तौ जेई गंगाराम सहर में आकें गंगाप्रसाद हो गये। जे नौकरी करत-करत नौनी पढ़ाई करत्ते। अब इनने एम.ए.के इम्तहान के लाने पढाई सुरू कर दई। इनखां अपनी मेहनत कौ फल मिल गवो। जे भौतई नोने नम्बरन सें पास भये। पढ़त-पढ़त इनकी अच्छे लरकन सें दोस्ती हो गई। सो बा दोस्ती इनकी बुढ़ापे तक निभ गई।

एई बीचां इन खां ग्वालियर में बिटियन के कॉलेज में नौकरी जांगा मिल गई। पै इनखां तौ और पढ़बे के लाने मन में खाका बन रवो हतो। इनने बा नौकरी खा मना कर दओ। इनने आँगू के पढ़बे की सोच लई। अब तौ इनखां पढ़बे में डॉगदरी की डिगरी चाने हती। ऊ पढ़ाई खां पी-एच.डी. कात हैं। ई पढ़बे सें पढ़बे वारौ किताबन कौ डागडर बनत है। गंगाप्रसाद जी ने खूबई मन लगाके पढ़ाई करी। फिर बे इत्तौ पढ़न लगे कै उनखां पढ़बे के लाने बजीफा मिलन लगो। दो बरस में बे ई इम्तहान में भौतउ नोने नम्बरन सें पास हो गये। अब वे डॉगडर गंगाप्रसाद जी कहाउँन लगे।

ऐई बीचां उतइ जबलपुर में उमदा घर की बिटिया सें डॉगडर बरसैंया को ब्याव हो गवो। अब इनखाँ घर-परिवार की फिकर सताउन लगी। बरसैंया जी नई दुनिया अखबार के प्रेस में रात की नौकरी करन लगे। कछु पईसा मिलन लगो सो गिरस्ती चलन लगी। सालई के भीतर बे पिता जी कहाउन लगे। उनके घरै नौनी सी बिटिया भई। थोरे दिनन में उनखाँ रायपुर के पासई बागबरहा कॉलेज में पढ़ाबे की जाँगा मिल गई। घरै आकें डॉगडर साब उते जाबे की तैयारी करन लगे। फिर का है बे तीनई जने, बे घरवारी और बिटिया। उनके तीनई गिरस्ती के अदद हते। फिर कहै जाबे की बेरा हो गई। गंगा प्रसाद जी टेशन पोंच गये। उनखाँ पौंचाबे खौं घरवारी के मताई बाप टेशन पौंच गये। उनने अपने जमाई और बिटिया की बिदाई कर दई।

उतै पोंच कें जे लरकन खाँ पढ़ाउन लगे। अपनी गिरस्ती सोई सँभारन लगे। उतई बाग बहरा में पढ़बे लिखबे वारन सें डॉगटर साब की दोस्ती हो गई। अब का है चाये भुनसारी होबे, चाये सन्झा, बरसैंया जी खाँ उनौरन से मिले बिना नौनों नई लगै। बे औरें पढ़ें लिखें सो जे सोई पढ़न लिखन लगे। एक कहाउत है न के संगत को असर होत है। नौनो लिखत सो अखवार बारे हरें इनको लिखो भव छापैन लगे। छपन लगो सो कछु रुपईया सोई मिलन लगे। कछु दिनन में इनकी रायपुर बदली हो गई। जे कालेज में पढ़ावे के लाने भुन्सारें जाबू करें। उतै कॉलेज में जे लरका-बिटियन को पढ़ाउन लगे। दुफारी में घरै आकें घरई की फुलबारी में थोडो भौत बिरवन खां आँगू-पाँछू करें। फिर का है सपर खोर कें तनक भागवान के ऐंगर घन्टेरिया टुनटुनावें। पाँच दोहा रामान सोई रोज पढ़ें। ई के बाद बे भोजन करें। फिर बायरे की कुठरिया में घंटो पढ़ें-लिखें। घरवारी बायरे सें तारो लगा देबै। बे तो भीतरें किताबें लिखे उनके ऐंगर न लरका बच्चा पोंचें न घरवारी। ऐसई लिखत-पढ़त हते सो उनखाँ चारउ तरफ के लोग बुलाउन लगे।

जो कछु जे लिखो करें सतो उतई के अखबारन में और किताबन में छप जाय। सो ऊके दस-बीस रुपइया मिलत्ते। डाकिया

इनकी रोजई चिठियाँ ल्याबे और थोरो भोत रुपइया सोई ल्याबे। जे भारी खुस होवे। डागदर साब की एक खास बात हती कै जौन चिठिया रोज आउत हतीं सो बे उन चिठियन कौ लौटा बाट ज्वाब तुरतईं लिखतते उनखाँ मइना भरे मा सौं ठइया कारड लगतते। एकइ दिना डाकिया चिठिया और किताबे देबे न आये सो उनखा भौतइ फिकर होन लगे। सोजा तो आय गंगाराम जी रामकहानी।

अररर हम सोई लिखत-लिखत कछु बिसर रये हते। उनकी एक खासियत सोई हती कै उनके दुफारी के भोजनन की बेरां कोनउ पाहुनो आ जाय सो ऊखां जिमाउत जरूर हते। और तो और इनके ऐंगर घरई में पढ़बे खां कॉलेज के लरका-बिटियाँ आव करें, सो उने सोई जे चाय- नासता कराउत हते। इनकेपढ़बे- लिखबे की संगत कौ असर इनकी घरवारी पै सोई परो। वे ८ वीं पढ़ीं तीं सो उनने १०-११ और बी.ए. मध्यमा एम-ए तक पढ़ लव। उनके चार लरका-बच्चा हो गये। तीन बिटियाँ और एक लरका हो गवो। चारउ लरका-बच्चा बड़ी-बड़ी किलासन में पढ़न लगे।

बरसैंया जी की कॉलेज में नौकरी खूबई नोनी चलतती। ई बींचा इनके कई जांगा तबादले भये। पै इनकौ पढ़वों- लिखवो सब जाँगा चलत रवो। इनने खूब किताबें लिखीं। पुरस्कार सोई मिले। अपने देश के उप राष्ट्रपति जी शंकर दयाल शर्मा जी ने इनखाँ पुरस्कार दवो। इनखाँ काम भर मिल जाय सो दिन सें दिन नई और रात सें रात नई। बँधी पुरियन में सें इनने पुरानी खतीं भईं किताबें निकरवाईं, घरै ल्याये। उनखाँ पढ़कें फिर सैं लिखो। जहाँ किताबन की पिरदरसनी लगतती सो जे उतै पोंचा देतते। फिर का है इनकी भौतई बड़वारी होतती।

इनकी टीकमगढ़ सें राजगढ़ कॉलेज में बदली हो गई। दो साल बाद फिर इनको तबादला छतरपुर हो गवो। दो साल किराये के घर में रये। फिर उतईं छतरपुर में १२- एम.आई.सी. घर खरीद लव। इनके सब बिटिया और लरका खूब पढ़न लगे। बे औरें नौकरी सोई करन लगे। उतईं सें इनने तीनउँ बिटियन और लरका को ब्याव कर लओ। सबकें लरका-बच्चा हो गये। पै इनके लिखबे-पढ़बे में कोई बाधा ने आई। लरका बड़ो भव सो इनई के कामंन में बो हाथ बटाउन लगो। अकेलें इनको पढ़बे लिखबे को तार-तम नई टूटो।

बिटियाँ ससरारे चली गईं। लरका नौकरी करन लगो। जोकोऊ नौकरी करै सो तबादला सोइ होत। सो लरका कौ तबादला होउन लगो। बरसैंया जी अपनी घरवाई के संगे लरका-बहू के ऐंगर रहन लगे। छै मईना बाद घरै आये सो घर की साफ- सफाई करी, अपनो बगीचा सम्हारो बस जेई करत- करत कभऊ बे बीमार कभउँ घरवारी बीमार लरका की नौकरी खां दस-बारा साल सोई हो गये। अब काहै दोई आदमी बाहर आत- जात खूबई थकन लगे। दोई जनन खाँ अकेलो रैबो भारी परन लगो। तीन बरस पेले बरसैयाँ जी जाड़े के दिनन में बीमार हो गये। पुरा परोस बालन खाँ फोन करो आधी रात में कोउ न आवो। फिर एक-दो डागडरन खाँ फोन करो, फिर, सो सबरन के फोन बंद। इनखाँ तो भौतउ बुरव लगो। सो इनने घर बेंच बाच के जाबे की ठान लई। घरवारी न तैयार भई। बे कात्ती कै घर बेचो न किराये सें दे दो। वे कह ते कै घर बेच-बाच कें चलौ। का है उतईं के एक डॉक्टर साब चौहान जी खाँ पतो चलो सो बोले कै चाचा जी आप तो भोपाल जाबे वारे हते सो काय नई गये। बरसैंया जी बोले के अब हमने अपनो घर बेचबे की सोच लई। सो फिर चले जैहें। डागडर साब बोले के हमें सोई घर चाउने। सो आप हमें अपनो घर दै दो। डागडर साब घर देखबे न आये। उनने अपने लरका खों एक खास आदमी के संगे भेज दवो। उनको लरका घर देख कें भोतई खुस भवो। दूसरे दिना डॉक्टर साब सें बरसैंया जी मिलबे खाँ गये। डागडर साब बोले के चाचा जी अब आप भोपाल जा सकत है। अब घर हमाव हो गओ।

फिर का है तीनई चार दिना में घर की लिखा-पढ़ी हो गई। सो हमोरें घर की जौन फिकर कत्ते सो अब हमोरें निसफिकर हो गये। हमाये लरका ने भोपाल में अच्छो सो नई चलन कौ घर लै लवो। फिर हमोरन कौ सामान टिरक में रखवा कें दोऊ जनन खाँ भोपाल लिवा ल्याये। अब का है घर छूटो, बाग बगीचा छूटो, पुरा परोस छूटो परोस कौ मंन्दिर छूटो, संग की सखियाँ छूटी। चौंतीस बरसे रओ घर छोड़ने परो। अपनो घर छोड़बे में जीखाँ भौतउ बुरव लगरवो हतो। फिर का करते। बा एक कहाउत है न, कि कछु पाबे के लाने कछु छोड़ने परत है। सो हमाय संगै बोई भव।

डागडर बरसैया अपनी घरवारी के संगै भोपाल आकें अपने लरका-बहू के संगै खुसी-खुसी रहन लगे। उनोंरो की फिकर मिट गई। और हमोरे दोई आदमी अब उनके संगै रहन लगे। उनोरन के संगै रये सें हमोरें सोई निसफिकर होकें रान लगे। बड़ो सहर बड़ी सोसायटी पढ़े-लिखे आदमी, घर सोई ऊपर नीचे कौ, नई चलन कौ। अब का है, दोई आदमी नई जगह में रान लगे। अब काये की फिकर। दोई जने खुसी-खुसी अपनके लरका बच्चन के संगै रन लगे।

आप ओरें सोचत हुइयो कै डॉगडर साब की जे बातें लिखबे बारो को आय, सो हम आँय उनकी घरवारी। जबईतौ मोखों उनकी सबरी बातें पतो हैं। इतै सोई भोपाल में आन कें उनने अपनो पढ़बे-लिखबे कौ झंडा लहरा दव। इतै सोई भोपाल में पढ़बे-लिखबे बारन के बड़े-बड़े कार्यक्रम होउत हैं। इनखा बे औरें बुलाउत हैं। मान सम्मान सोई देत हैं। इत्ती बड़ी जागा में उनकी बुलाउत है। बे बढ़िया गाड़ी में जात हैं। सबई सें मिल-जुलके उने सोई खुसी होत है।

बरसैयाँ जी ने भौत किताबें लिखीं। उनने जो कछु किताबन में लिखो है सो उनके संगी-साथी जोन पढ़बे लिखबे वारे साहित्यकार कहाउत है उनोरन ने उनकी किताबन कों पढ़कें उनके ऊपर भौतउ नोनो लिखो है। उन सबोरन के लिखे भये की एक बड़ी सी ,मोटी सी किताब छपी है। ऊ किताब में उनके घर परिवार के लोगन ने सोई लिखो है। बा किताब के खोलबे कौ जलसा भव। ऊ जलसा में घर-परिवार के लोगन को बुलाव। बाहर सें सोई पढ़बे-लिखबे वारे साहित्य कारन कों बुलाव। पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, सागर, जबलपुर, और भोपाल सें सबई बुलाये पाहुने आये। खूबई उमदा कार्यक्रम एक भौत बड़े हॉल में भव। सबई जनो खों खूबई आनंद आव।

मोरी सो ईसुर सें बिनती है कि डागडर बरसैंया जी खूबई सुखी रयें। ऐसई लिखत-पढ़त रयें। उनकी खूबई लम्बी उमर हो। बे स्वस्थ रयें प्रसन्न रयें। उनको घर, परिवार के ऊपर आसीरबाद बरसत रये। सब जनो को मोरी दोई हाथ जोर कें राम-राम पौंचै।

नाटककार डॉ० राम कुमार वर्मा का संस्मरण

और गाड़ी छूट गई

– सन्तोष कुमार पटैरिया

प्रख्यात नाटककार डॉ० रामकुमार वर्मा का जन्म सागर (म.प्र.)में हुआ था वहाँ उनके पिता प्रशासनिक सेवा में थे। बुन्देलखण्ड से डॉ० वर्मा को बहुत लगाव रहा है। सन्1983 में जगनिक शोध संस्थान महोबा के कार्यक्रम में आए थे तब मुझे उनका सानिध्य मिला। कार्यक्रम में सम्मिलित होने के पूर्व उन्हें जीप में ले जाकर डॉ०वीरेन्द्र निर्झर और मैं खजुराहो दिखाने ले गए। मन्दिरों की सीढ़ियाँ चढ़ने में डॉ० निर्झर ने दोनों ओर से सहारा दिया। वापसी में लौड़ी(लवकुशनगर) म.प्र. में जीप खराब हो गई। हम उन्हें कपड़े की दुकान में ले जाकर बैठा दिया और उनका परिचय दिया। दुकानदार ने तो उस पर कोई ध्यान नहीं दिया किन्तु दुकान से लगे घर से एक लड़का आया और उसे ज्ञात हुआ कि डॉ० वर्मा यहाँ आए है तो बोला मैंने आपका साहित्य पढ़ा है कहानी पढ़ी है तो डॉ० वर्मा के अन्दर का साहित्यकार जिज्ञासु होकर पूछने लगा कैसी लगी कहानी तुम्हें? लड़के ने उत्तर दिया अच्छी लगी। दुकानदार ने चाय पिलवाई। जीप ठीक हुई, तब रात्रि में महोबा वापस आ सकें।

महोबा में डी.ए.वी. इण्टर कॉलेज महोबा में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के बाद डॉ०रामकुमार वर्मा को प्रयाग पहुँचाने के लिए सहयात्री होने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। महोबा रेलवे स्टेशन पहुँचे वहाँ उनके शिष्य थानेदार मिल गए। थानेदार व उनके अधीनस्थों ने भी डॉ० वर्मा के चरण स्पर्श किए। हम प्रथम श्रेणी के आरक्षित डिब्बा में पहुँचे, उसमें डॉ०वर्मा का ही आरक्षण था। अत: मैं सामान्य टिकट निरीक्षक की सहमति से मैं ऊपर बर्थ पर लेट गया।

मानिकपुर स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो बाहर कई लोगों के स्वर सुनने पर मैंने द्वार खोला तो कई टिकिट निरीक्षक खड़े दिखे वे मेरे बारे में पूँछने लगे कि अन्दर लेटे हुए डॉ०राजकुमार वर्मा के साथ हूँ, उनके असन्तोष व्यक्त करने पर मैंने डॉ०वर्मा जी को समस्या बताई तब उन्होंने कहा कि किसी एक व्यक्ति को बुलाओ तब मैंने एक टिकिट निरीक्षक को बुलाया उसे हिन्दी-अँग्रंजी में डॉ० वर्माजी ने बताया कि वृद्ध हूँ, साथ में एक आदमी तो चाहिए ही किंतु निरीक्षक अपनी ही बात कहते हुए बड़बड़ाता हुआ चला गया। बाद में वर्मा जी बोले-इनसे तो पुलिस वाले ही अच्छे हैं जिन्होंने मुझे सम्मान दिया, ये रेलवे वाले पढ़े-लिखे माने जाते है। तब मैंने निर्णय लिया कि बगल के डिब्बे में यात्रा करूँगा, वर्मा जी से कहा-दादा आप विश्राम करें। रात्रि भर मैं हर स्टेशन पर उतरकर डॉ० वर्मा जी डिब्बे में झाँक कर देखता रहा। सुबह गाड़ी इलाहाबाद पहुँच गई। इलाहाबाद तक ही आरक्षण था अत: मैंने सोचा कि इलाहाबाद व प्रयाग के बीच असुविधा न हो। मैंने डिब्बे में झाँका तो देखा कि बे मंजन कर रहे थे। मैं वर्मा जी को बिना बताए इलाहाबाद से प्रयाग तक का टिकिट लेने चला गया। यद्यपि ट्रेन के चालक से पूँछ कर गया था किन्तु स्थान की जानकारी न होने के कारण विलम्ब हो गया। टिकिट लेकर वापस लौटा तो ट्रेन छूट चुकी थी। मैं टेम्पो में बैठकर प्रयाग रेलवेस्टेशन पहुँचा वहाँ टिकिट संग्रहकर्ता से ज्ञात हुआ कि डॉ० वर्मा घर जा चुके है। प्रयागस्थित साकेत भवन में उनके निवास पर पहुँचा और वस्तुस्थिति बताते हुए क्षमा माँगने लगा तो वे बोले प्रयाग में मुझे कौन नहीं जानता, मुझे दुख है कि तुम्हें परेशानी हुई। मैंने अपने ड्राईवर को तुम्हारा हुलिया बताकर स्टेशन पर खोजने के लिए भेजा था। काफी देर रुका रहा, मैं उनकी सदाशयता से अभिभूत था।

उस दिन उनके घर पर सत्यनारायण कथा का आयोजन था बाद में उनके साथ भोजन किया। स्व. श्री जाहिर सिंह ने उन्हें लगे हुए पानों से भरा डिब्बा दिया था क्योंकि वे महोबा जाते समय घर पर अपना डिब्बा भूल गए थे। डॉ० वर्मा ने उस डिब्बे को पुन: पानों से भरकर श्री जाहिर सिंह को देने के लिए मुझे दिया साथ ही जगनिक शोध संस्थान महोबा को अपनी कृतियाँ भी भेंट की। फिर दिल्ली में तृतीय विश्व सम्मेलन में भी कवि सम्मेलन के मंच पर उनसे मिला वहाँ उन्हें पान चाहिए था तब मैंने मंच के पीछे रखे पान उन्हें दिये। मैं उनसे प्रयाग में घर पर कई बार मिला।

– रत्नम् ज्वेलर्स, सराफा बाजार, महोबा (उ.प्र.)
मो.9956959270

बुड़ापे को हाल

– रामस्वरूप पांडे

जौ तन घुट्टेरा सौ हो गव।
घुरा सौ हो गव, जौ तन घुट्टेरा सौ हो गव।।
चुटिया झुरी चाँद कड़ आई, गुड़यानौ मौं हो गव।
आँखे धँसे झदा सी हो गई, भलौ विजूका हो गव।।
जौ तन घुट्टेरा सौ हो गव।

बिना कूत कीचाव चलारय, रैंट भरौ मौं होगव।
उचक रईं खवना सीं मूँछे, बँदरा सौ मौं होगव।।
जौ तन घुट्टेरा सौ हो गव।

का कै लेबैं का सुन लेवैं, मन मसोस के रै गव।
टेरें कोउ न ऊतर दै रव, डारौ घालौ हो गव।
जौ तन घुट्टेरा सौ हो गव।

हाँत पाँव हो गये ठटेरे, महल खड़ैरा हो गव।
तनक ढका में खाल उदर रई भुँजे भटा सौ हो गव।।
जौ तन घुट्टेरा सौ हो गव।

उरवतिया सी लार चुचाराई, कानन बैरौ हो गव।
झुक कें पींठ धनुइया हो गई, तनक तनक में रो रव।।
जौ तन घुट्टेरा सौ हो गव।

का खा लेवैं, आज का बनौ, नियत खोर मन हो गव।
तनक सौक सें खा लेवैं तौ, टुल्ल, सडरसड़ हो रव
जौ तन घुट्टेरा सौ हो गव।

खाट ढचोला, पास कटोरा, फटे गदेलन सो रव।
टूटी खाट, पौर में डेरा, मरगट कूका दे रव।
जौ तन घुट्टेरा सौ हो गव।

हे भगवान समैटो माटी, सब कोऊ आकें कै रव।
छोड़ो धीरज बऊ लरकन ने, बदनामी खों रो रव।
जौ तन घुट्टेरा सौ हो गव।

– ग्राम अचर्रा
टीकमगढ़ (म.प्र.)

आज के सवाल और केदारनाथ अग्रवाल की कविता

- नीरज कुमार मिश्र

हिंदी कविता में आधुनिक काल से ही प्रगतिशील चेतना परिलक्षित होती देखी जा सकती है.भारतेन्दु काल से ही आधुनिकता की प्रवृत्तियों का बोध होने लगा था.इस समय के साहित्यकारों में समाज और जीवन के प्रति सजगता दिखाई देती है द्विवेदी युग की कविताओं में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन तेजी से होते दिखते हैं.जिसका संज्ञान लेते हुए इस युग के कवियों ने भी शोषण,अत्याचार और तत्कालिक सामाजिक तकलीफों को अपनी कविता के माध्यम से उभारा लेकिन इस काल के काव्य में सामाजिक अन्याय के विरुद्ध प्रतिक्रिया कड़े शब्दों में न होकर अनुनय - विनय के रूप में है.यूरोप में औद्योगिक क्रांति के प्रभाव से भारत अछूता नहीं रहा,जिससे पुराने सामाजिक तथा नैतिक मूल्य तेजी से टूटने-बिखरने लगे.ऐसे में हिंदी काव्य में परिवर्तन आना लाजिमी था.जिसके परिणामस्वरूप प्रगतिशील दृष्टिकोण का विकास हुआ.प्रगतिवाद;आंदोलन के रूप में सन 1936 से प्रारम्भ हुआ,उसके बीज छायावादी कविताओं में पहले ही बोये जा चुके थे.

1936 के लखनऊ अधिवेशन में प्रेमचंद ने अपने भाषण में कहा था कि 'हमें उस कला की आवश्यकता है जिसमें कर्म का संदेश हो 'प्रगतिशील कविता इसी कर्म के संदेश को लेकर चलने वाली कविता है.यह कविता आर्थिक,राजनैतिक,सांस्कृतिक और सामाजिक रूपों से भारतीय जमीन की उपज है इसीलिए ये कविताएं मनुष्य की चेतना को गहरा,व्यापक और मानवीय बनाती चलतीं हैं.डॉ रामविलास शर्मा के शब्दों में कहें तो प्रगतिशील साहित्य जनता की तरफदारी करने वाला साहित्य है. प्रगतिशील काव्य-धारा के कवियों में केदारनाथ अग्रवाल का महत्त्वपूर्ण स्थान है.राजेश जोशी जी ने इन्हें समकालीन प्रगतिशील कविता के पंचभूत नागार्जुन,त्रिलोचन,शमशेर,मुक्तिबोध और केदारनाथ अग्रवाल को कहा है. केदारनाथ अग्रवाल के शब्दों में ही प्रगतिशील कविता को देखें तो पाते हैं कि प्रगतिशील कविता वह है जो जीवन और कविता के क्षेत्र में प्रगति पर अपना विकास श्रृंगार करती है.वह कभी भी जीवन खोकर कला की अभिव्यक्ति मात्र बनने का प्रयास नहीं करती.वह जीवन को जीकर,जीवन से कविता की ओर संक्रमण करती है.उसकी विषय-वस्तु जीवन की विषय-वस्तु से रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करती है और अपना रूप तदनुकूल प्राप्त करती है.

केदारनाथ अग्रवाल सामाजिक चेतना के कवि हैं.उनकी कविताओं में देश के गाँव-समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है.इनकी कविताएँ आज के समय के प्रश्नों से बराबर टकराती नजर आती हैं.इनकी कविताओं को मुख्यतः दो भागों में बाँटकर ही आज के प्रश्नों से जूझा जा सकता है- राजनीतिक-सामाजिक काव्य और प्रकृति संबंधी काव्य.केदार बाबू ने सामंतवाद और उसके अवशेषों को अनेक रूपों और स्तरों पर चुनौती दी है.स्वाधीनता के बाद जिस तरह से पूंजीपतियों के प्रतिनिधि शासक वर्ग ने सामंतवाद से गठजोड़ किया.ऐसी स्थिति में पूंजीवाद और सामंतवाद के अवशेषों को एक साथ चुनौती देना बहुत जरूरी हो गया था.केदार बाबू कई मोर्चों में एक साथ इसी लड़ाई को लड़ रहे थे.1948 में उनकी 'मैं लड़ाई लड़ रहा हूँ मोर्चे पर' शीर्षक कविता इसी का परिणाम है-

मैं लड़ाई लड़ रहा हूँ मोरचे पर
लेखनी की शक्तिशाली गर्जना से
मैं कलेजा शोषकों का फाड़ता हूँ,
सूदखोरों को,
मिलों के मालिकों को,
भूमि के हड़पे हुए धरणीधरों को
मैं प्रलय के साम्यवादी आक्रमण से मारता हूँ।

आज इसका रूप और विकराल हो गया है.इस भ्रष्ट तंत्र के गठजोड़ ने केदार बाबू की सबसे प्रिय केन को भी नहीं छोड़ा.केदार जी को केन से बेहद आत्मीय लगाव था.आज केन का अस्तित्व संकट में है.यहाँ बालू माफिया सरकारी तंत्र के साथ मिलकर अपने फायदे के लिए केन की सौंदर्यता के साथ उसके अस्तित्व को नष्ट करने में तुले हुए हैं.केन केदार के तन-मन में इस कदर रची बसी हुई थी कि वह कभी रेत में बैठकर उसके तेजधार को घंटों निहारते तो कभी उसकी उदासी देखकर घर लौट आते.केदार का केन चित्रण यथास्थिति से संघर्ष का चित्रण है.सरकारी तंत्र इस कमाई में बराबर की साझेदार है.तभी वह भ्रष्टाचार के चश्में को लगाकर आँखें खराब होने का बहाना करता है.केदारनाथ अग्रवाल सरकारी तंत्र और माफियाओं के गठजोड़ को आज से साठ-सत्तर साल पहले ही पहचान गए थे -

चोरी करो चढ़ाओ पैसा,पूजो तुम भैरव का भैंसा
भैंसा है थाने का ऐसा,कोई देखा सुना न ऐसा
डाका मारो कतल कराओ,काटो खेत अनाज चुराओ
थाने जाओ झुक जाओ,भैंसे को छूकर बच जाओ

आज का युग भैंसे को छूकर बच जाने का ही है.जिनके पास ऐसे भैंसों का संरक्षण है उसको किसी का भय नहीं.हमारी और अपनी विवशता में केन हमारी तड़प रही है और तड़प रही है केदार बाबू की आत्मा.

यदि अपने देश के इतिहास को समझना है तो आपको केदार जी की राजनीतिक कविताओं से होकर गुजरना होगा.1955 में केदार जी जिस दर्द को महसूस कर रहे थे.वह आज की जनता के दर्द से अलग नहीं है बल्कि आज दर्द पहले से ज्यादा बढ़ गया है-

दोष तुम्हारा नहीं हमारा है
जो हमने तुम्हें इंद्रासन दिया....
और असमर्थ हैं हम

कि उतार दें तुम्हें,इंद्रासन से-देश के शासन से इस विवशता में केदार बाबू के विद्रोही स्वर को देख सकते हैं.समाज में व्याप्त शोषण,भ्रष्टाचार,झूठ,मुनाफाखोरी,स्वार्थ-साधन की अंधी दौड,लूट खसोट,सांस्कृतिक-साहित्यिक गिरावट की पराकाष्ठा आज चरम पर है;जिसको 1950 में केदार बाबू ने महसूस कर अपनी खीज और वेदना को देश की छाती दरकते देखता हूँ कविता में व्यक्त किया

देश की छाती दरकते देखता हूँ।

थान खद्दर के लपेटे स्वार्थिओं को,
डालरी साम्राज्यवादी मौत घर में,
आंख मूंदे डांस करते देखता हूँ।
खाद्य मंत्री को हमेशा शूल बोते देखता हूँ।
लौह-नर के वृद्ध वपु से,दण्ड के दानव निकलते देखता हूँ।
बूचडों के न्याय घर में,लोकशाही के करोडों राम-सीता,
मूक पशुओं की तरह बलिदान होते देखता हूँ।
व्यास मुनि को धूप में रिक्शा चलाते देखता हूँ,
भीम,अर्जुन को गधे का बोझ ढोते देखता हूँ
सत्य के हरिचंद को अन्याय घर में,झूठ की देते गवाही देखता हूँ।

केदार बाबू की अनेक कविताओं में राजनीतिक स्वर स्पष्ट हैं-'आग लगे इस रामराज्य में',कांग्रेस के राज में',ऐसि राज गारत है जावै',पंचवर्षी योजना',कहीं न देखा ऐसा राज',तीरथ है कलियुग का थाना',हमने तुम्हें इंद्रासन दिया',राजतंत्र का चक्कर मक्कर',पूंजी के पैंतरे से हमें भरमाया',आग दबाए है लोकतंत्र के चिमटे',देश हुआ बरबाद'आदि अनेक ऐसी कविताएं हैं;जिनके माध्यम से कवि ने सरकार की नीति और उसके शासन तंत्र पर गहरा प्रहार किया है.

प्रगतिशील कविता जब यथार्थ चित्रण की ओर उन्मुख होती है,तो उसके पीछे भी एक निश्चित उद्देश्य छिपा रहता है.वह है,सामाजिक परिवर्तन और अंततः शोषण-उत्पीडन से सामाजिक मुक्ति.किसी के भी व्यक्तित्व का विकास सामाजिक जीवन से अलग-थलग होकर नहीं हो सकता.प्रगतिशील कविता में मानव-जीवन और सामाजिक जगत सर्वाधिक महत्तवपूर्ण ढंग से आते हैं.केदारनाथ अग्रवाल के अनुसार प्रगतिशील कविता ने आदमी को उसका खोया रूप फिर से दिया.इस कविता में आया हुआ किसान गाँव घर का शोषित किसान प्रस्तुत हुआ.मजदूर भी संघर्ष करता,जीवन जीने के लिए लड़ाई लड़ता हाड़-मांस का इंसान हुआ.मध्यवर्ग के लोग भी,इस कविता में अपनी पूरी पहचान के साथ और कमजोरियों एवं कुंठाओं के साथ आए.यानि प्रगतिशील कविता ने काव्य की तमाम परम्पराओं, उसकी रूढ़ियों को,उसकी संकीर्णताओं और सीमाओं को जन-हित में तोड़ा।''केदार बाबू की कविताओं में वैयक्तिक अनुभव के साथ-साथ सामाजिक यथार्थ-बोध भी उतनी प्रमुखता से आया है;इसी से उनकी कविताओं में जीवंतता दिखाई देती है. कविता संग्रह युग की गंगा में उनकी सामाजिक विचारधारा,व्यक्ति-समाज के द्वंद्व और अंतर्विरोध,संघर्ष आदि के भाव प्रकट हुए हैं.डॉ रामविलास शर्मा ने केदार बाबू की सामाजिक चेतना का सही विश्लेषण किया है तार सप्तक के अनेक कवियों के पास कम्युनिस्ट विचारबोध तो था लेकिन जुझारू किसान या मजदूर का भावबोध नहीं था.इसके अभाव में उनके पैर उखड़ गये,केदार अपने पैर जमाये रहे।''केदार बाबू जानते हैं कि समाज से अलग आदमी का अस्तित्व बचा नहीं रह सकता.अगर बचा रहे तो भी वह आदमी की तरह नहीं रह सकता इसीलिए जब अपनी सामाजिकता की पहचान व्यक्ति को होती है तो अपनी विसंगतियों को भी दूर करने को प्रेरित होता है.आत्म से निकलकर अनात्म होने की चेष्टा करना केदार बाबू की कविता की विशेषता है यह सच है कि व्यक्ति की चेतना को लोक-चेतना में प्रविष्ट करना चाहिए और उसे प्रभावित करना चाहिए.साथ ही उसे नए मानवीय मूल्यों के संस्कार देकर समाजवादी जनतंत्र की छवियों को प्रतिबिम्बित करना चाहिए और उसे प्रभावित करना चाहिए.तभी कृतिकार का 'मैं' दूसरों का 'हम' बन सकता है.तभी कृतिकार का 'मैं' मानवीय मूल्यों के लिए संघर्षशील जनता का साथ दे सकता है.कविता केवल आत्मबोध या आत्मतुष्टि का साधन नहीं होती.वह कृतिकार की आत्मा को, भीतर से बाहर लाकर,विशाल मानवता का स्वरूप प्रदान करती है.वही वैयक्तिक 'आत्मानंद' की परिधि से निकल कर लोक मांगलिक आनंद की प्रदाता होती है.कवि कर्म के बारे में यही धारणा है।(मार प्यार की थापें-भूमिका,पृ-88)

सामाजिकता के दायरे में प्रेम और प्रकृति दोनों आते हैं.इनकी प्रेम और प्रकृति संबंधी कविताओं का सामाजिक महत्त्व कम नहीं है.निःसंदेह केदार की सामाजिक विचारधारा की छाप उनके प्रकृति चित्रण पर है.वह सामाजिक विषयवस्तु वाली कविताएँ लिखते हैं,तो प्रकृति के अनेक उपमान बड़े सहज भाव से कविता की संरचना के अंग बन जाते हैं.प्राकृतिक विषय को सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में औजार की तरह इस्तेमाल कैसे किया जाता है यह कोई केदार बाबू से सीखे

काटो कल की चट्टानों को,तोड़ो कारा
जल्दी-जल्दी वर्तमान की मोड़ो धारा
सूरज उदय किंतु उदय हो भानु तुम्हारा
गौरव से मंडित हो युग का सानु तुम्हारा।

अपने सामाजिक स्वभाव के कारण केदार बाबू प्रकृति के सौंदर्य का आनंद अकेले नहीं लेते बल्कि वह इसमें अपने साथ-साथ जन-जीवन को और मनुष्यता को भी समेट लेते हैं इसीलिए इनकी कविताओं ने जन और घन एक साथ गरजते दिखते हैं.केदारनाथ अग्रवाल को विश्वनाथ त्रिपाठी जी ईसुरी के बाद बुंदेलखंड की जातीय संस्कृति का सबसे बडा प्रवक्ता कवि मानते हैं केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं को पढ़ने और उनका रस लेने का मतलब है बुंदेलखंड की प्रकृति और जनजीवन को पढ़ना और उसका रस लेना.रस सुख दुखात्मक है,केवल आनंद में विश्रांति देने वाला नहीं है। केदार बाबू छायावादोत्तर कविता के पंत हैं.वह बुंदेलखंड के जनजीवन से ही नहीं,यहाँ की प्रकृति,यहाँ की लय,यहाँ के लोकगान,यहाँ की भाषा और तान से जुड़े हैं.उनकी रचना-धर्मिता में बुंदेलखंड अपनी समग्रता में रचा बसा है.यह रचाव-बसाव ही उनके ह्दय से कविता में उतरता है.जब भी आप ट्रैन से केन का पुल पार कर रहे होंगे तो यह मह्सूस करेंगे कि आज नदी बिलकुल उदास थी और साथ ही महसूस करेंगे कि यहाँ की बसंती हवा का रूप कुछ बदला हुआ है.अब यहाँ न तो महुआ की थपाथप सुनाई देती न आम को कोई झकोर रहा और न ही कान में कू सुनाई देती.चारों तरफ बस खामोश विरानी है.यदि कुछ सुनाई देता भी है तो दबी एवं घुटती केन की सिसकती आवाज.जिसे भद्रर्जन अब तक नहीं सुन पाये.आज हमारी केन अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अकेले ही जद्दोजहद कर रही है.मुझे बाँदावासी होने पर गर्व के साथ शर्म भी आ रही है क्योंकि

यह है मेरा गाँव,यहाँ की कुंठित मति है.

अनुशासन से हीन यहाँ की जीवन गति है.

फिर भी कुंठित मति के मारे भद्रर्जनहारे ऐसे हारकर बैठने से केन को नहीं बचाया जा सकता .जिस नदी का पानी पहले चट्टानी तट तोड़ता था

तेज धार का कर्मठ पानी,चट्टानों के ऊपर चढ़कर
मार रहा है घूंसे कसकर,तोड़ रहा तट चट्टानी

वही कर्मठ पानी समाज के धन-लोलुप एवं स्वार्थी चरित्र को देखकर घूंसे मारना भूल गया है.केदार बाबू केन किनारे पल्थी मारे यदि आज केन की हालत देख रहे होंगे तो हम सबको कोस रहे होंगे कि हम निजी स्वार्थ में कितने अंधे हो चुके हैं.आज आर्थिक लाभ के एवज में भूमंडलीकरण के इस दौर में सामाजिकता और मानवीयता ने अपने मूल्य खो दिये हैं।

मैं उसे खोजता हूँ,जो आदमी है और अब भी आदमी है तबाह होकर भी आदमी है,चरित्र पर खड़ा,देवदार की तरह बड़ा यह वही बाँदा है जहाँ श्रम की सौंदर्यता को केदार बाबू ने सही ढंग से पहचाना था

छोटे हाँथ,सवेरा होते,लाल कमल सा खिल जाते हैं.
करनी करने को उत्सुक हो धूप हवा में हिल उठते हैं।

लेकिन आज का मंत्र उल्टा है कि समय और मेहनत कम और कमाई ज्यादा इसके लिए भले ही हम समाज का कितना ही नुकसान करें वैसे नैतिकता की रेखा कहीं अनन्त में नहीं होती बल्कि वह इसी सामाजिक ढाँचे में छिपी है.कमाई के और भी बहुत से साधन हैं जिन्हें अपनाकर मनुष्य सहभागिता के साथ अपना और देश के विकास में कारगर एवं महत्वपूर्ण भूमिका तो अदा कर ही सकता है साथ ही आदमीयत को भी पा सकता है।

यदि मनुष्य हो तो स्वदेश के अमन बनो तुम,कोटि जनों के साथ जियो तुम खेत जोत कर अन्न उगाओ,रोटी खाओ और खिलाओ यदि मेहनत करके कमाने वाला रास्ता सब अपना लें तो केदार बाबू की धरोहर केन को बचाया जा सकता है.जिससे बाँदा में 'बसंती हवा के उधमी रूप एवं केन के कर्मठ पानी को फिर से देख सकेंगे.अपने श्रम को पहचानने की मति उत्तर आधुनिक युग में कुंठित हो गई है.कानून व्यवस्था और न्याय व्यवस्था के साथ इन माफियाओं की सांठ-गांठ से केन के अस्तित्व को बचाना हम सबका कर्तव्य है लेकिन सच के पाँव उखड़ते,झूठ के जब झंडे गड़ते सच जीते तो कैसे,न्याय मिले तो कैसे यही आज के समय का सबसे बड़ा सवाल है.

- सम्पर्क मो.9968323683

डॉ. राघवेन्द्र उदैनियाँ "सनेही" की रचनाएँ

- डॉ. राघवेन्द्र उदैनियाँ "सनेही"

हमें साँसी जो कै दैने, सो उनखाँ ताव आ जानें।।

बड़े जल्बा है जिन-जिन कौ,अरे अब उनकी का कानें।
हमें साँसी जो कै दैने, सो उनखाँ ताव आ जानें।।
कुचरकें खात रए मउआ, अबैलौ रोज ब्यारी में।
लगी का सट्ट सूरे की,कै मुर्गा रात-दिन छानें।।
अंगूठाछाप पबरत है, और घूमें लाल बत्ती में।
का हुइयै देस कौ भइया, जौ तौ परमात्मा जानें।।
न जीने खेत देख हों, करी हो और ना खेती।।
बताऔ यार अदरक कौ बौ बंदरा स्वाद का जानें।।
जिनें कोऊ न पूँछत तो,''सनेही'' गुर लगायें लौ।
बेइ दुनियाँ के ठेकेदार बन बैठे लगा टानें।।

फिर ना हमसें कइयौ जू

साँसी कइ तौ सबै अखरजै, फिर ना हमसें कइयौ जू।
बनी बनाई बात बिगरजै, फिर ना हमसें कइयौ जू।।
जाँलौ टरै अरी टारत रव, दो बातन की गम खाकें,
नइतर बगरो मठा बगरजै, फिर ना हमसें कइयौ जू।।
नोंनें रव नोंने सन्टोले, जैसें मान्स रात दुनियाँ में,
नइतर सब गर्राट उतरजै, फिर ना हमसें कइयौ जू।।
रिजवा दयें दौंदरा फिर रए, रखा सकौ तौ खेत रखालो।
नइतर सबरी फसल उजरजै, फिर ना हमसें कइयौ जू।।
हमखाँ जो कानें ती कै दइ, चेतौ चायँ न चेतौ अब,
कटी फसल पै पानी परपै, फिर ना हमसें कइयौ जू।।
अनदेखी ना करौ''सनेही'',समय कछू करबे कौ है,
सौने सौ जौ समय निकरजै, फिर ना हमसें कइयौ जू।।

बुन्देली की छटा निराली

दुनियाँभर सें न्यारी-न्यारी, बुन्देली की छटा निराली।
जाँ देखौ ताँ प्यारी-प्यारी, बुन्देली की छटा निराली।।
गाँव गली खोरन-खोरन में, लिपे पुते दोरन- दोरन में।
रकम-रकम की रंगन बारी,बुन्देली की छटा निराली।।
खेतन हार पहारन देखौ, का नोंनी कोंढन की भोरें।
भुरी भेंसिया सी लमछारी, बुन्देली की छटा निराली।।
चौक-चाँदनी ब्याव-बरातें, ज्यौनारन खाँ डारी पाँते।
कढ़ी-बरन नें आन समारी, बुन्देली की छटा निराली।।
मेला-ठेला जग्ग-जात्रा, तीरथ खाँ जब होय जबाई।
सबरें शोभा की बलिहारी, बुन्देली की छटा निराली।।
सबइ तीज-त्योहार रंगे हैं, बुन्देली के रंग में भइया।
बुढ़की हो के होय दिवारी, बुन्देली को छटा निराली।।
चाँए कोउ रमटेरा गाबै, चाए ईश्वर की चौकड़िया।
शब्दन-शब्दन में अनियारी, बुन्देली की छटा निराली।।
चाँऐं भजन कबीरा गालो, चाए सूरवीरन के सैरा।
सबमें झलकत है अबढारी, बुन्देली की छटा निराली।।
जैसइ सन्नाबै बिलवारी, झूँम उठें गदरानीं बालें।
कान लगी कोयलिया कारी, बुन्देली की छटा निराली।।
ऊसें तो कौनउँ कम नइयाँ, पै मैं साँसी काँव ''सनेही''।
सबसें सबा हाँत अतकारी, बुन्देली की छटा निराली।।

- शारदा विद्या मन्दिर
सरानी दरवाजा, छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9406762156

आल्हा की प्रामाणिकता

– डॉ. सुधा चौहान 'राज'

वैसे आल्हा गायन जनमानस में मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता रहा है। यह एक लोक महाकाव्य है। इसमे उस काल की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा अर्थव्यवस्था का संपूर्ण वर्णन मिलता है। यह एक ऐसी धरोहर है, जो हर आल्हा गायक अपने बेटे या चेले को दे कर जाता है। बुंदेलखंड में कई लोगों के पास हस्त लिखित आल्हा की प्रतियां आज भी हैं, पर वह टुकड़ों में है, उसमें कुछ देवनागरी शैली में भी हैं, पर गाने वाले उसे बुंदेली शैली में ही गाते हैं। आज भी भारत के कई हिस्सों में यह अपने अपने तरीके से गाया और सुना जाता है। अभी तक यह जहां भी उपलब्ध हुआ काव्य-शैली में ही है। इसे पहली बार गद्य-शैली में क्रमबद्ध किया जा रहा है।

सत्य को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं होती, फिर भी हम आप सभी की जानकारी के लिए कुछ बातों का उल्लेख यहां पर कर रहे हैं--

प्रमाणिकता---यह समय बीर गाथा काल का था, उस समय अनेकों बीर काव्य लिखे गए जिनमें से परमाल रासो और पृथ्वीराज रासो महाकाव्य हैं। आल्हा उदल का विस्तृत वर्णन भविष्य पुराण और स्कंद पुराण में मिलता है। आल्हा उदल की प्रामाणिकता इस बात से सिद्ध होती है कि पृथ्वीराज चौहान का इनसे अलग-अलग स्थानों पर पांच बार युद्ध हुआ है। उस समय तीन महाशक्तियां भारत में राज्य कर रही थीं। दिल्ली में चौहान वंशी राजा पृथ्वीराज, कनवज में राठौर वंशी राजा जयचंद और महोबा में चंदेल वंशी राजा परमार्दिदेव जिनके धर्म भाई दच्छराज और बच्छराज के के पुत्र आल्हा उदल और मलखान थे।

पृथ्वीराज की पुत्री बेला का विवाह चंदेल राजकुमार ब्रह्मदेव के साथ हुआ था। जिसकी अगुवाई आल्हा और उदल ने की थी। सन् 1191 में सबसे अंतिम युद्ध पृथ्वीराज का आल्हा उदल से महोबा के मैदान में हुआ था। उसके बाद अपनी सारी सेना को गंवा कर पृथ्वीराज ने युद्ध जीता था जिसका वर्णन चंदेलकालीन बुंदेलखंड के इतिहास में मिलता है। बेटी के गौने के बाद पृथ्वीराज ने गौरी से आखिरी युद्ध लड़ा था।

''इसके लिए सबसे बड़ा प्रमाण पृथ्वीराज के दरबारी कवि चंद्रबरदायी का लिखा पृथ्वीराज रासो है। जिसमें इनकी सभी लड़ाइयों का क्रमवार ब्योरा दिया गया है। इब्नबतूता ने भी अपनी भारत यात्रा के दौरान चंदेलवंश और आल्हा-उदल की बीरता का बर्णन करते हुए कहा है कि आल्हा उदल के रहते हुए महोबा का किला अजेय है।'' ''छतरपुर के गजेटियर में इस बात का उल्लेख है महमूद गजनवी के साथ प्रसिद्ध इतिहासकार अबू रहमान उल बरौनी खजुराहो आया था। उसने चंदेरी, महोबा, कालिंजर, खजुराहो, टीमगढ़, छतरपुर सहित आसपास का दौरा किया था। उसने लिखा है कि मध्य भारत में चंदेल वंश का गौरव शिखर पर है। दस्सराज और बच्छराज नामक दो भाईयों की बीरता के कारण महोबा अजेय है।''

'' चंद्रबरदायी ने भी लिखा है कि गौरी ने अपनी सेना और सेना नायक ---को साफमना कर रखा था कि वह बुंदेलखंड की किसी भी गतिविधि में शिरकत ना करे। जब तक वहां पर आल्हा-उदल नाम के दो भाई हैं वह दिल्ली पर भी कब्जा नहीं कर सकता है क्योंकि वह दोनों पृथ्वीराज के संबंधी हैं, वह उसका गजनी तक पीछा नहीं छोड़ेंगे। इसलिए हमें समय का इंतजार करना चाहिए। उनके न रहने पर मैं इतिहास पृथ्वीराज का नाम मिट दूंगा।''

नेपाली राजवंशावली के अनुसार भी आल्हा उदल के नेपाल के मिथिला नगरी में आने के उल्लेख मिलता है और वहां की राजकुमारी मछला से विवाह के प्रमाण मिलते हैं। उस समय मिथला नेपाल का एक छोटा सा स्वतंत्र राज्य था, जहां राजा राघोमच्छ का राज्य था।

इसके अलावा अरब साहित्य और अफ़ग़ानी साहित्य में भी इनके युद्धों का उल्लेख मिलता है।

आल्हा की प्रमाणिकता इसी बात से सिद्ध होती है कि वह ग्यारहवीं सदी के अंत से ही लोगों के मन मानस पर अंकित हैं। आल्हा उदल के ना रहने पर भी जगनिक का ''आल्हा रायसो'' ''परमाल रासो'' सहित अनेक कवियों चारणों के लिखे हुए बीर रस के गीत उनकी बीरता का बखान करने लगे। 12 वीं सदी में सबसे पहले ''चंद्रावली का डोला'' और ''भुजरियों की लड़ाई'' यानि कि कजली विसर्जन की लड़ाई का गान उनकी याद में किया जाता था। यही उनकी आखिरी लड़ाई थी। इसलिए जो भी राजा महाराजा बचे थे वह इनकी बीरता को नहीं भुला पा रहे थे। ''परमाल रासो'' को हर दरबार में गाया जाने लगा ''चंद्रवरदायी कृत पृथ्वीराज रासो'' को भी लोग सरल भाषा में अनुवाद करके लिखने लगे थे और देखते ही देखते वह भी राजदरबारों में प्रचलित हो गया ।

इसके अलावा कन्नौज क्षेत्र के आस-पास बनाफर वंश का आखिरी राजा ''अभयंकर देव'' जो आल्हा का छोटा बेटा था उसने अपने पूर्वजों की इस गाथा को समेटा और सहेज कर रखा। वह अपने दरबार में बार-बार चारणों और भाटों से आल्हा सुना करता था। इसी कारण कन्नौज, बिंदकी, जमुना पार, कानपुर और उसके आस-पास के क्षेत्र में आल्हा गायन आज भी प्रचलित है।

केदारमिश्र द्वारा रचित 'प्रबोधचंद्रोदय'' कीर्तिवर्मन द्वितीय के दरबार में सन् 1265 में खेला गया था।

''कवि जयदेव'' ने ''गीत गोविन्द'' की रचना1200वीं सदी में की थी , उसी के साथ उन्होने ''आल्हा रायसो'' और प्रसन्नाराव राघव'' भी लिखा था जो उस काल के राजाओं द्वारा बहुत सुना जाता था। ''इतिहासकार कीथ'' ने आल्हा-उदल की बीरता की बहुत प्रसंशा की थी। उनका कहना था कि अगर इनका आपसी लड़ाई में विनाश ना होता तो भारत का भविष्य ही कुछ और होता। 1200 वीं सदी में ''जयसिंह सूरी'' नें' हम्मीर-मद-मर्दन'' की रचना में भी आल्हा उदल के उल्लेख मिलते हैं। 1266 में ''कवि वर्मन'' नें ''प्रद्युम्न-अभ्युदय'' की रचना की उसमें भी इनकी बीरता का भरपूर उल्लेख मिलता है। ''कवि विद्यानाथ'' ने 1310 ई में ''प्रताप-रुद्र कल्याण'' 1320 ई में ''वामन भट्ट'' ने ''पार्वती -परिणय'' में इनका भरपूर यशोगान किया है।

कविवर गंगाधर ने ''गंगादत्त-प्रताप विलास'' आदि नाटकों की रचना की थी। जिसमें बीच बीच में आल्हा-उदल की बीरता का भरपूर उल्लेख किया गया है। इसके अलावा ''बीसलदेव

रासो'' ''हम्मीर रासो'' ''हम्मीर काव्य'' सहित अनेक काव्य ग्रंथों की रचना उस काल में अनवरत होती रही। जिसमें ये दोनों नायक अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहे हैं। इसके अलावा तमिल कन्नड़ और तेलुगु में लिखे उस काल के साहित्य में भी आल्हा-उदल की उपस्थिति मिलती है। विजयनगर के महान ''राजा कृष्णदेव राय'' स्वयं एक महान कवि था उसने ''अमुक्तमलयद'' नामक ग्रंथ की रचना की थी, जिसमे उस काल के महानायक आल्हा, उदल, पृथ्वीराज, जयचंद, विजयराज और ब्रहमजित का वर्णन आता है। उनके दरबार के प्रसिद्ध ''कवि अलस्सनी पैदना'' ने ''स्वरोचिसा-मनुचरित्र'' की रचना की थी। जिसमें उस काल की लड़ाई के नायक आल्हा-उदल, मलखान, जयचंद, पृथ्वीराज, रतिभान, चामुण्डाराय, संयमराय और धांधूजित आदि के नामों का भरपूर उल्लेख मिलता है।

इन सब बातों से सिद्ध होता है कि कर्नाटक और सूरत की लड़ाइयों का हवाला सही है। जिसमें आल्हा उदल का युद्ध दक्षिण में कलचुरी वंश के गांगेयदेव और गुजरात में चालुक्यवंष के मूलराज प्रथम के वंशजों के साथ हुआ था।

इसी के समकक्ष पन्ना नरेश, दतिया नरेश, समथर नरेश, कालिंजर नरेश, कन्नौज नरेश के अलावा और भी बहुत से राजदरबारों, रियासतों में भी आल्हा गायन होने के प्रमाण मिलते हैं। उसके बाद यह अनवरत राजाओं के दरबार में गाया जाता रहा हैं। यह प्रथा मौखिक रूप से ज्यादा विकसित हुई क्योंकि हर कवि एक दूसरे से सुनकर याद करके गाया करते थे, पर इसका आधार ''आल्हा रायसो'' था। सौ साल के अंतराल में ही यानि कि सन् 14वीं सदी के पूर्वाद्ध तक यह गायन सारे भारत में गाया जाने लगा। इसका एक बड़ा कारण यह भी था कि युद्ध पर जाने के पहले सेना इसे सुनकर बीर रस में डूब जाती थी और अपनी जन्म भूमि की आन बान और शान के लिए सब कुछ न्यौछावर करने को तत्पर हो जाती थी। वह भी आल्हा उदल की तरह दुष्मनों को मार भगाना चाहती थी। इस प्रकार आल्हा-उदल सारे देष के बीरों के आदर्श बन गए थे। यह बीरों की वो गाथा है जो सदियों से चली आ रही है और आज 900 सौ सालों बाद भी उसी जोश खरोश और उत्साह के साथ गाया जाता है।

सौ साल के अंतराल में ही सभी लड़ाइयां गायी जाने लगी थीं। बस फर्क ये था कि लोग क्षेत्रीय आधार पर अपनी अपनी बोली में इसको गाने लगे थे। इसका कारण यही था कि उस समय के हस्त लिखित प्रतियों की खोज जोर शोर से होने लगी थी लोग उनके बारे में बहुत कुछ जानने को उत्सुक थे। आल्हा उदल जन मानस के दिलो दिमाग में अंकित थे। वह उनकी बीरता को भूलना ही नहीं चाहते थे। इसके बाद आस पास के राज्यों में जो भी काव्य उस समय लिखे जा रहे थे उन पर भी आल्हा उदल की याद और छाप स्पष्ट देखी जा रही थी।

16वी सदी में रानी दुर्गावती जो महोबा राजवंश के राजा कीर्तिपाल चंदेल की बेटी थी, उन्हें आल्हा सुनना बहुत पसंद था इसीलिए उन्होने अपने कालिंजर के दरबार में बहुत से चारण भाट आल्हा गायन के लिए रखे था। उन्होने बहुत सी पुरानी पांडुलिपियों को सहेज कर बुंदेली बोली में लिपि बद्ध कराया था। उन पर इनकी बीरता का बहुत प्रभाव था इसी कारण उन्होंने उन्हीं की पद्धति पर चल कर दलपतशाह की बीरता से प्रभावित होकर उनका वरण किया था और उनसे प्रेम विवाह भी किया था। वह दो भाटों को अपने साथ गढ़ा मंडला भी ले गईं थी। वह हर दिन इसे सुना करती थीं। उसी का प्रभाव था कि उन्होने अपनी बीरता दिखाते हुए मुगलों से लोहा लिया था।

मुगल दिल्ली के आस-पास तो आते जाते थे, पर कभी वह बुंदेल खंड में अपनी जड़ें नहीं जमा पाये, गजनी के शासक का कहना था कि अफ़ग़ानी सेना कभी बुंदेलखंड की ओर जाने का बिचार भी नहीं करेगी। हमारा लक्ष्य दिल्ली है। अभी हम आल्हा उदल से व्यर्थ बैर नहीं करना चाहते। समय आने पर उनसे निपटा जायेगा। इसीलिए जब आल्हा उदल के बाद उनका आक्रमण बुंदेलखंड पर हुआ तो उन्होंने यहां के भवन, इमारत, मंदिर, मठ आदि तुड़वा दिये। दरबारों से कवियों से सारा इतिहास लूट कर कीरत सागर में बहा दिया था। उनका कहना था कि इसे पढ़ कर राजपूत सैनिकों में अद्भुत जोश आ जाता है।

प्रो. नर्मदा प्रसाद के अनुसार 1722 में ''कविवर हरिकेश'' द्वारा रचितप्रबंध काव्य ''जगतराज की दिग्विजय'' में महाराज परमाल की वंशावली और उनके राज्य काज व सुशासन का वर्णन किया गया है। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई भी आल्हा गायन सुनने की शौकीन थीं इसीलिए उनके अंदर भी बीर रस कूट कूट कर भरा था। अंग्रेजों के दांत खट्टे' करना इस बात का गवाह है। इस प्रकार यह दोनों ही बीरांगना आल्हा उदल को अपना आदर्ष मानती थीं।

इसी प्रकार16 वीं सदी में जब अकबर को यह बात पता चली कि महाराणा प्रताप ने इलाहाबाद के कुंभ में जाकर आल्हा का गायन सुना था और फिर वह उस गायक को ससम्मान मेवाड़ ले गए थे, जहां पर उससे हर दिन जन्म भूमि के प्रति प्रेम को और आल्हा की बीरता का गान सुना करते थे। इस बात को सुन कर सम्राट अकबर ने भी जबलपुर के मंडला से आल्हा गायक को बुला कर अपने दरबार में अनेकों बार आल्हा का गान सुना था।

16वीं सदी से अंग्रेज अफ़सर भी इस गायन से अछूते नहीं रहे। वह भी समय-समय पर इस प्रकार के आयोजनों में राजाओं के दरबार में शामिल होते थे और बहुत ही ध्यान पूर्वक आल्हा-उदल का बखान सुनते थे। 17 वीं सदी के आते-आते आल्हा गायन अंग्रजों के सर चढ़ कर भी बोलने लगा। वह अपनी छावनी में आल्हा गायकों को बुला कर आल्हा गायन बार बार सुना करते थे। और उसे लिपि बद्ध भी कराते थे। अपनी शैली में लिखवाते थे।

फर्रूखाबाद के ''बंदोबस्त कलेक्टर सी. ई. इलियट साहब'' ने जब इसे सुना तो वह इतने प्रभावित हुए कि 14 लड़ाइयों को 1865 में हिन्दी में लिपिबद्ध कराया और ''दिलकुशा प्रेस फ़तेहगढ''. से 1872 में प्रकाशित कराया यह कन्नौजी तर्ज पर आधारित था। इसके बाद ''जार्ज ग्रियसन'' ने भोजपुरी में इसका अनुवाद कराया उसके बाद ''जार्ज विन्सेन्ट स्मिथ'' ने बुंदेली में इसका अनुवाद कराया। ''इंडियन एन्टिकवेरी'' एवं ''लिंगविस्टिक सर्वे आफइंडिया'' में प्रकाशित भी हुए थे। बाद में मि. ईसी इलियट साहब ने इंगलिश में अनुवाद कराकर सन् 1920 में इसे इंगलैंड भेजा था। कहा जाता है कि प्रथम विष्व युद्ध के समय अंग्रेजों ने इसका भरपूर लाभ लिया। आल्हा गायन अंग्रेज सेना को सुनाया जाता था और वह जोश में भर कर दुश्मनों पर टूट पड़ती थी।

दूसरी सत्य घटना सन् 1930 की है कि महोबा जिला के ग्राम खरेला के आल्हा गायक ''श्री शिवराम सिंह'' को कत्ल के अपराध में फांसी की सजा सुना दी गई थी। अंग्रेज अफ़सर ने फांसी के पहले उनसे अंतिम इच्छा पूछी, तो उन्होंने कहा .. मैं बुंदलखंडी हूं और

आल्हा गायक हूं और आपको आल्हा की बीरता का बखान सुनाना चाहता हूं। अफसर की अनुमति मिलने पर उन्होने आल्हा सुना कर ऐसा शमां बांधा कि अंग्रेज अफसर उनके गायन में खोकर उसे कई घंटों तक सुनते रहे और इस प्रकार फांसी की सजा का समय ही निकल गया था। उसके बाद अफसरों ने खुश हो कर उनकी फांसी की सजा माफ करके उन्हे रिहा कर दिया था और आदर के साथ उन्हें अपनी छावनी में बुलाकर बार-बार सुना करते थे। आज भी उनके बेटे इस घटना को बहुत ही गर्व के साथ सुनातें हैं। ''ये सभी ग्रंथावली, काव्यग्रंथ एवं सारी घटनायें स्वयं ही आल्हा-उदल की प्रामाणिकता को सिद्ध करती हैं। सत्य को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं होती, वह तो अपने आप में स्वयं ही बड़ा प्रमाण होता है।'' इसी लिए आज 900सौ सालों बाद भी वह लोगों के दिलो- दिमाग में हैं। यह तो हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि ऐसे बीरों के इतिहास को सुरक्षित तरीके से संजो कर नहीं रखा गया है और मुगलों द्वारा इसे विलुप्त कर दिया गया।

हम इसमें लिखी किसी बात, पात्र या घटना की सत्यता का दावा नहीं करते, पर हमने हर घटना को सभी तथ्यों से तालमेल करके ही लिखने का प्रयास किया है।

''आल्हा गायन एक इतिहास है, बीरों की एक संस्कृति है, एक राग है, एक आग है, एक जोश है, जो रग-रग में बीरता का जोश जगा देता है। आल्हा उदल आज भी लोगों के दिलों में वास करते हैं। वो आज भी अमर हैं और सदियों तक अमर रहेंगे।''

- आर-44 महालक्ष्मीनगर इंदौर
मो. 98260-30993

पैरानोइया *

- साकेत सुमन चतुर्वेदी

उनकों पूरौ कौ पूरौ आंग पीपर के पत्ता के नाई कंप रवोतो। अस्पताल में बैड पै वे परींती। मैं और मोरी घरवारी उनके खाली हांड न सें चिपकी चमड़ी वारे आँग खों कसकें पकरें उनखों उनके उन्नन सें ढांक रयेते। वे ऊल ऊलकें हमलोगन की करीं पकर सें छूट छूट जा रयीती।उनकी आँखन के डोरा कों रंग डरन के मारै सुरख लाल हो गवो तो।मोंसें लार चूं रयीती, सारी,पेटी कोट,बिछी चादर अपनी जगां सें इतै उतै हो रयेते। हाँफी तेज चलरयीती,साँस फूलरयीती,वे रिरयात सी,घुटीसी,दबीसी आवाज में कछू हरदारें बड़बड़ा रयीती। अचानक जोर जोर सें चीखकें कनलगीं ---वौ आगवो--वौ अब मोय कसकै मारहै--वौ आगवो--मोरे बार पकरकें मोय खाट सें पटकदैहै--मोय खचोरकें ई ठंड में द्वारे के बायरें गली में फेंक दैहै---वौ आ गवो अब मोय मारडारहै --। तुमयी बचालो मोय ऊसें--नयीं तौ---। वे डराऊतसीं,सहमी छोटेबच्चे की तरह मोरी छाती सें चिपक गयीं।

आतंक उनके मौ पै अपनी लकीरें खैंचरवोतो । नीचट पकरैं मैंने उनखों धीरज दैकें पूछी---कीकी कै रयीं काकी,इतै तों कोऊनयीयां,जो तुमें मारै।हमलोग तौ हैं, तुम न घबराव,बिल्कुल नयीं डराव,हमतौ हैं। तौलों घरवारी नें थरमस की चाय कप में डार उनके मों सें लगा दयी।वे नैक शांति पकरकै चाय पियन लगीं।ओई बेरा उनके इकलौते मोंड़ा की अबाई भयी।काकी की नजर जैसयीं अपने मोंड़ा पै परी उनकौ चाय के घूंट रूक गये,।मोरी घरवारी के हाथ खों एक झटका दवो,चाय सबरै फैल गयी।काकी डराऊतसीं, पैले जैसी चीखन लगी,तड़पतड़पकें,होश खोकें चिल्ला न लगीं---वौ आगवो--वौ मोये मारहैं,वौ मोय खाट सें पटककैं कंसकरोड़नकरहै--वौमोय मोरे घर सें बायरें ठंड में खचोरकें गली में रात में फेंक दैहै, वौ मोय मारडारहै ---।डरके आतंक सें हरपल तड़फत उनकों शरीर चिल्ला के नेंक देर में शांत हो गवोतो।

कछू देर बाद आयी नर्श ने बताव हतो कै मोरी काकी पैरानोइया मानसिक रोग की शिकार थीं।

* पैरानोइया एक मानसिक रोग है।घरवालों द्वारा अच्छे व्यवहार, और मनो चिकित्सक द्वारा समय पर उचित उपचार से रोगी स्वस्थ हो सकता है।

- 36/15 प्रेमगंज, सीपरी बाजार, झाँसी 284003 उ, प्र
मो. 09453907387

सपने सबई हिराने

- डॉ. अवधेश कुमार चन्सौलिया

टूटी खटिया
द्वार घुने हैं
चेहरे लगे बिराने।
पोर- पोर में
परे फफोले
अब तक नहीं सिराने।।
रेहन रखी झोपड़ी कँप रई
हल- बक्खर गरमा रये।
बँधुआ बेटे तड़प भूख सें
कंडन से धुँधुआ रये,
छोटी बिटिया
कँधा पहुँच गई
अब नहिं चित्त ठिकाने।
सोटा घिसो तार भई पगड़ी
रही अबै तक क्वँरीं।
सबई देवता पूज- पूज कें
बूढ़ी दादी हारीं।।
दानों- दानों
गओ सूद में
गैय-गोरू गये बिकाने।
फूटो तबा और चूले की
रुकबे नई रुलाई ।
अम्माँ ठिठुर- ठिठुर कें मर गई
मिली न उनें दुलाई।।
कौड़ी- कौड़ी
जोरे सपने
एक- एक कें सबई हिराने।

- डी.एम 242 दीनदयाल नगर, ग्वालियर (म.प्र.)

बुन्देलखण्ड की लोक गाथाओं का सांस्कृतिक एवं सांगीतिक स्वरूप

- नेहा तिवारी

भारतीय परम्परा का प्रमुख आधार तत्व उसकी लोक संस्कृति है। शहरी क्षेत्रों में भले ही संस्कृति के नाम कितनी घुत बनती पर ग्रामीण अंचलो में अभी भी प्रकृति की अनुपम छटा के बीच लोकरंग की धारायें समवेत फूट पड़ती है। लोक गाथाओं का सांस्कृतिक एवं संगीतिक पक्ष में लोक संगीत लोकगाथायें ,लोककथायें लोक नृत्य ,लोक वाद्य ,लोकोक्तियां ,रीतिरिवाज पर्व उत्सव ब्रतपूजन अनुष्ठान लोक देवता ग्राम देवता आदि का समावेश है। बुन्देली गाथा का संगीत एक ज्योति पुज है जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रतिबिम्ब झलकते है एवं गरिमा गौरव विलोकिता जागरूकता निर्मलता एवं नवीनता के दृष्टि से भरपूर है। किसी भी धर्म औरजीवन दृष्टि को समझने में उसके आख्यान या गाथायें बड़ी सहायक होती है उनमें ऐसा अर्थ छिपा होता है जिसकी गुत्थी सुलझाने से धर्म की बहुत ही गुत्थियां अपने आप सुलझ जाती है ऐसी ही हमारी बुन्देली लोकगाथायेंहै । धर्म के साथ -साथ संस्कृति से इनका सम्बन्ध होता है तथा ये राष्ट्र के चरित्र को ऊंचा उठाने में सहयोगी है। बुन्देली लोक गाथायें संस्कृति एवं भावों को अतीत की गौरवशाली गरिमा की ओर वापस कर उन्हें शक्ति एवं सम्बल प्रदान करती है।

गाथाओं में एक ऐसी अद्भुत शक्ति होती है ,जो मानव में जीवन को सन्मार्ग की दिशा देती है इन कथाओं में देवी देवताओं से सम्बन्धित आख्यान होते है. इनके साथ -साथ ऋषि मुनियों की कथायें जिनमें तय सच्चाई तथा त्याग पर चलना आदि आदर्शों की शिक्षा होती है। बुन्देली लोक -गाथायें ज्ञान वैराग्य निष्काम कर्म ,यज्ञ ,दान ,तप ,देव पूजन भक्ति आदि शुभकर्मों की प्रवृत्ति पैदा करती है गाथाओं को सुनकर मनुष्य को अपने अपने कर्तव्यों का बोध होता रहता है। लोकगाथाओं ने युगों-युगों से जनमानस को एक सूत्र में बाधा है सुख के अवसर हो या दुख के क्षण लोक गाथाओं के गायन ने भारतीय समाज के जननायकें का गौरवशाली अतीत प्रस्तुत करके जन-जन के सदैव प्रभावित किया है । बुन्देली लोक जीवन में लोकगाथाओं बडे प्रेम और तन्मयता से गायी तथा सुनी जाती है यह कथापरक गीत होते है । लोकगाथाओं में कहानी गीत के माध्यम से आगे बढते है । लोकगाथाओं में प्राय: लोकनायकों का शौर्य ,लोक जीवन में चर्चित प्रेम-गाथायें देवी-देवताओं के कथा परक प्रसंग तथा पौराणिक आख्यान वर्णित होते है । बुन्देली गाथायें लोक संस्कृति की वह कृति है जिनका आधार इतिहास होता है इन आख्यानों ऐतिहासिक तथ्यों को कल्पना का रंग देकर रूपायित किया जाता है लोकगाथायें अतीत का स्वर्णिम एवं भव्य झांकी का प्रतिबिम्ब होती है हमारे धार्मिक ग्रन्थ,वेद,पुराण ,महाकाब्य आदि में अनेक आख्यान है लोक ने पौराणिक गाथाओं का आधार लेकर अपना एक मार्ग बताया और उसे अपनाकर लोक आख्यान के रूप् में प्रचलित किया बुन्देली गाथाओं का लोक कथाओं में एक विशिष्ट स्थान है या यह भी कह सकते है कि बुन्देली गाथा एक सागर के समान है उसके भीतर के सच्चे मोती उसी के हाथ लग सकते है जो उसमें गहरा गोता लगाये।

लोक के रूप में बुन्देली गाथा की प्रस्तुति आदि काल से चली आ रही है इन कथाओं का अपने आप में एक विशेष महत्व है जो हमें यह इंगित करता है कि इसके मूल में कोई ऐतिहासिक या पौराणिक धटना रहती है जो कालान्तर में अतिरिक्त हो जाती है। लोक तथ्यों के अनुसार लोक कथा से लोकगाथा की उत्पत्ति मानी जाती है। लोक गाथायें लोक कथा से विकसित हुई है लोक मानस जिन घटनाओं से प्रभावित होता है उनका स्मरण लोक कथा में करता है।

उदाहरणार्थ - बुन्देलखण्ड के हरदौल की लोकगाथा हरदौल ने अपनी माता तुल्य भावज के आत्म के हित में विषपान कर अपने प्राण गवाये थे। इस गाथा की कुछ पंक्तियां इस प्रकार है।

''निरदोसी हरदौल लला सों विष भोजन वाउत काय प्रीतम पाप कमाउत काय''

इन घटनाओं से बुन्देलखण्ड का जनमानस इतना प्रभावित हुआ कि धटना को लोककथा का रूप देकर इस घटना का स्मरण करने लगा । इसी प्रकार विभिन्न लोकांचलों में अनेक लोकगाथाओं ने जन्म लिया। जैसे - आल्हा ,ढोला मारू,कारसदेव की गाथायें ,धर्मा -सावेरी ,विरहा ,माड''आल्हा'' लोकगाथा को ही ले 'जगनिक' द्वारा रचित जो मूलकृति थी वह आकार में बहुत छोटी थी किन्तु अब जो बाजार में 'आल्हा' के रूप में बिकता है उसका आकार मूल ग्रन्थ से कई गुना अधिक है। लोक महाकाव्य आल्हा की यह घोषणा सुनायी देती है।

बारह -बरस लौं कूकर जीएँ और तेरह लौं जिए सियार ।
बरस अठारह क्षत्रिय जीएँ आगे जीवन को धिक्कार ।।

''कारसदेव की गाथायें '' - बुन्देलखण्ड मे प्रचलित चारागाही संस्कृति का एक लोक आख्यान 'कारसदेव की गाथायें 'है। कारसदेव से सम्बन्धित जो गाथायें है उन्हें हम 'गोट' कहते है, गोटों को चौथ के दिन गाया जाता है इनकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार है।

कै भये कनैया के कारस भयें ।
जिन्ने गइयन की राखी लाज हो।
धन-धन सांझ की गइयां।
धन-धन सांझ की खोड ।
धन -धन कारस महाराज हो।

बुन्देलखण्डी लोक कथाओं से संस्कृति एवं सभ्यता का उद्घाटन होता है । लोकगाथायें पुरातन काल से आधुनिक काल तक अपनी परम्परा को एक धागे में पिरोये हुए है। अन्य लोकगाथाओं की तुलना में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य के अतिरिक्त अहीर ,कहार ,धोबी आदि प्रमुख है । जातिगत विभिन्न लोकगाथायें भी प्रचलित है जैसे कारसदेव की गाथा गूजर जाति के पास सुरक्षित है। बुन्देली लोक गाथाओं में भाव -सौन्दर्य के साथ-साथ काव्य सौन्दर्य भी मिलता है बुन्देली 'लोक गाथाओं 'की गायन शैली एवं उनके विकसित रूप पर विचार करें तो इस दृष्टि से हम पाते है कि दिन पर दिन गायन शैली में भी परिवर्तन ,परिवर्धन तथा परिमार्जन होता चला जा रहा है ।बुन्देली लोक गाथाओं के गायन,वादन के साथ-साथ नृत्य भी जुड़ गया है । लोक गाथा के संवादों को लोक नाट्य का रूप दे दिया जाता है।

लोक गाथा कार सम्पूर्ण समायोजन पर विशेष घ्यान देने लगे है. जैसे गायन के साथ लोकवाद्य (वृन्द), मुद्राएं पद संचालन एवं वेशभूषा आदि ।

- पुत्री सूर्य नारायन तिवारी
43 विजय नगर उरई
मो. - 9450291639

बुन्देल केशरी महाराजा छत्रसाल

- डॉ. वन्दना जैन

बुन्देल केशरी महाराज छत्रसाल का जन्म ऐसे समय मे हुआ थायजब सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में ही नहीं समस्त भारत में युद्धाग्नि धधक रही थी तीरों की सनसनाहट और गोलों की कडकडाहट उस काल में नभ मंडल में व्याप्त थी उन्होंने आंखें खोलते ही रौद्रता के दर्शन किये थे।अत: वह उनके हृदय पटल पर अंकित थी मख़मली गद्दे वाले पालन ने और फूलों की सेज पर उनका बाल्यकाल व्यतीत नहीं हुआ था ।इस कारण महाराज छत्रसाल कष्ट सहने के अभ्यासी थे तथा भयानक परिस्थितियों में भी वे भयभीत नहीं होते थे किशोरावस्था में ही वे माता पिता विहीन हो जाने पर भी साहस और और विवेक के बल पार कभी निराश नहीं हुए अपने ज्येष्ठ भ्राता अंगद राय जीके सहयोग से उन्होंने बुंदेलखंड को स्वतंत्र कराने और हिन्दू संस्कृति की रक्षा का दृढ़ निश्चय किया था विपक्षी मुग़ल सम्राट की प्रबल शक्ति नीति और राजकीय समस्याओं से परिचित होकर उन्होंने देश में अपनी धाक जमा ली ।उन्हें की तीव्र बुद्धि और दूरदर्शिता से यह कार्य हो सका।

देवगढ़ युद्ध के अवसर पर महाराजा छत्रसाल ने जो असीम वीरता का परिचय कठिन संग्राम कर प्राणों की बाज़ी लगाकर अजयगढ को विजयश्री दिलायी इसके अतिरिक्त महाराज छत्रसाल ने अपनी मातृभूमि का उद्धार करने का बीड़ा उठाया और बिखरे हुए बुंदेल बल का संगठन प्रारंभ करने का दृढ़ संकल्प किया

ऐसा प्रतीत होता था कि महाराज छत्रसाल के सामने सफ्लता हाथ बाँधे खड़ी है जिधर घोड़ों की बागें उठीं उधर विजय श्री हुई।उत्तर में कालपी से लेकर सागर दमोह मंडला तक दक्षिण और पश्चिम में चम्बल से लेकर टोंस तक पूर्व में मुगलराज्य के भूभाग पर छत्रसाल का अधिकार हो गया उनके राज्य विस्तार की साक्षी इस दोहे में व्यक्त हुई है

इत जमुना उत नर्मदा एइत चम्बल उत टोंस।
छत्रसाल सौ लरन की रही न काहू हौंस ।

मुग़ल शासकों से बुन्देलखण्ड की हिन्दू जनता को मुक्त कराकर छत्रसाल ने बड़ा सुयश कमाया और उनका आतंक सारे देश में छा गया।

छत्रसाल के व्यक्तित्व में एक श्रेष्ठ संगठनकर्ता और नेता के गुणों की प्रचुरता के साथ साथ काव्य प्रतिभा भी थी। छत्रसाल की कविता उनके व्यक्तित्व की धार्मिक और राजनैतिक विचार.धारा के रचनात्मक ताने बाने को प्रकाश में लेकर आती है।इन्हीं विशिष्ट गुणों के कारण छत्रसाल को सत्ता के साथ दिए गए दीर्घकालीन संघर्षों के दौरान जन सहयोग का कभी अभाव नहीं हुआ।

महाराज छत्रसाल ने मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब के जीवनकाल में ही उसके साम्राज्य को तोड़कर बुन्देलखण्ड में एक स्वतंत्र सत्ता की स्थापना कर ली।

यदि बुन्देलखण्ड के जनजीवन का अवलोकन किया जाए तो सामन्ती ;सैनिक व्यवस्था और लोककल्याण के बीच एक गहरे रागात्मक तालमेल की अभिव्यक्ति प्रस्फुटित; फूटती होती हुई मिलेगी।लोकहित का उन्नयन करने वाले सामन्त को ही बुन्देलखण्ड का लोक मानस अपनी भावनाओं का पुष्प चढ़ाकर उसके नेतृत्व के पीछे खड़ा होकर उसी नायक की छाया के साथ साथ चलता था।

बुन्देलखण्ड के जन जीवन में महाराज छत्रसाल के प्रशासन और उनकी राज्य.कल्पना ; जिसका स्वरूप उनके काव्य में निहित है। के दो स्पष्ट परिणामों को आज भी देखा जा सकता है। उन्होंने प्रत्येक गाँव में पंचायती न्याय व्यवस्था की स्थापना की थी। गाँव के लोग दिनभर के कार्यकारी जीवन के झगड़ों को शाम के वक्त एक चबूतरे पर इकट्ठा होकर आपस में निपटा लिया करते थे। पंचायती न्याय चबूतरों को छत्रसाल की 'अथैय्या' कहा जाता था। 'अथैय्या' का अर्थ है शाम।सूर्य के अथै अर्थात डूब जाने के बाद का समय । इसी संध्याकाल में पूरा गाँव खेतों से लौट आता था और दिनभर के झगड़े पंचायत द्वारा समाप्त हो जाते थे।यह पंचायती न्याय व्यवस्था उनके शासन का प्रधान अंग थी।

बुन्देलखण्ड के जनजीवन में महाराज छत्रसाल की दूसरी छाप ;विशेषता, यह पड़ी है, कि उन्होंने इस क्षेत्र के लोगों को स्वाभिमान पूर्वक हथियार बाँधकर रहने का मार्ग दिखाया था। कालिंजर से लेकर जमुना तट के सिमानी क्षेत्र को सैनिकों की खान बनाने की दृष्टि से प्रत्येक घर.परिवार में कम से कम एक पुत्र को खिला पिलाकर हष्ट पुष्ट 'पट्ठा' बनाने का चलन आज तक विद्यमान रहा है। अत: कह सकते है कि छत्रसाल ने अपने राज्य को किसान और सैनिक इन दो पायों पर ही खड़ा किया था और यही उनकी सफ्लता का रहस्य था। छत्रसाल के काव्य की प्रासंकिता पर संदेह नहीं किया जा सकता।

महाराज छत्रसाल ने प्रजा की कल्याण कामना से जिस राजधर्म को अपनाया था उसका भविष्य में भी उसी प्रकार पालन होता रहे यही उनके जीवन की प्रमुख अभिलाषा थी।महाराज छत्रसाल के दो पुत्र थे जगतराज और हिरदेसाह। बड़े पुत्र जगतराज ने पिता के गुणों को ग्रहण नहीं किया था अत: महाराज उससे असंतुष्ट थे। छोटे पुत्र हिरदेसाह ने अपने पिता की जीवनदृष्टि और अधिक गुणों को ग्रहण किया था अत: महाराज छत्रसाल उनसे बहुत अधिक प्रसन्न थे। हिरदेसाह की सेना अपने नायक के प्रति निष्ठावान थी। अत: हम कह सकते हैं कि छत्रसाल के आदर्श प्रतिमानों का बुन्देलखण्ड की शासन व्यवस्था में वास्तविक रूप से ग्रहण कर उसका अनुसरण किया गया।

नई पीढ़ी को लोककल्याण की भावना से प्रेरित होते हुए राजधर्म के यथावत चलने की भविष्य चिन्ता उन्हें निरन्तर परेशान करती रही।इसी की रक्षा और विकास के लिए बड़े.बड़े राज दरबारों में धर्मगुरुओं तथा ग्रामपंचों के समक्ष अपने प्रशासनिक आदर्शों को काव्यबद्ध वाणी में शिक्षा दे गए।

महाराज छत्रसाल ने प्रजापालन के साथ.साथ किसानों के महत्व को समझा और अन्नदाता कृषक की सुविधाओं को निरन्तर विकसित और पल्लवित किया।कृषिकर की वसूली का आख्यान किया है।

माली के सम नृप छता, सो संपति सुख लेहि।
सत बीजन रोपहि थलन, लघुहि बडौ कर दैहि।

महाराज छत्रसाल की रीति नीति काल्पनिक न होकर यथार्थ के धरातल पर खरी उतरती है। वे उच्चस्तरीय राजनेता और जननेता भी थे।राजा अपनी प्रजा का पालन बड़े ही जतन से करते थे।

- शासकीय कालिदास कन्या
महाविद्यालय, उज्जैन
मो. 9406864234

फिर का भऔ

- महेश कटारे सुगम

काय जगन का भऔ किसना कौ-कुदऊँ नें में पै बैठ कें पैलेंई सें बैठे जगन खौं हूदा मार कें पूछी ।

"होनें का हतौ डाक्टर नें अस्पताल में भर्ती कर लऔ जगन तनक मुस्कात भऔ बोलौ ।

"काय तौ का जुर नें पै है कुदऊँ नें आँखें का कें कई ।

"जुरहै का हाड़ ! जब पूरौई अलग हो गऔ जगन मै पैड़ आराम सें लोट कें बोलौ ।

कुदऊँ नें ठोड़ी पै हाथ लगा कें आँखें फैलाइ और फिर कई "जगन भैया, एक बात समझ में नईं आई कै कट कैसें गऔ"

"जे बात तुमाई का काउ की समझ में नईं आई" चारौ तौ दुनिया काटत है मनौ ऐसौ तौ आज तक नईं भऔ "जगन सोउ ता ुब करत बोलौ"

बात सोउ साँची आय। ऐसौ पैली बेर भऔ तौ कै चारौ काटत काटत कोउ कौ गुप्तांग कट गऔ होय। कुदऊँ मैज पै पसर कें बोलौ "जो जैसौ करत है एवौ ऊसौई भरत है" किसना नें सोई अति धर लई ती।

सांसऊँ अति धर लई ती किसना नें । सवेरे सें लैकें संजा तक बस मौड़ियन खौं देखवे और टोंट बाजी कसवे केदाई जाय आलावा और कौनऊँ काम नईं हतौ ऊ खौं। काम वौ करै भी का। घर में काम जैसेकरवे नौकर चाकर लगे है गांव प्रधान कौ लौरौ मौ ा है किसना। नाम तौ ऊ कौ कृष्ण कान्त सिंह है। मनौ प्यार सें सब ऊ खौं किसना कैत हैं। शैर में पढ़त हतौ। केऊ साल जेल हो हुआ कें आखिरकार गांव भग आऔ ण्बाप नें भी सोच लई कै दो वैसैई तीन एका फ्रक परत है। उनकी इच्छा तौ सोला आना पढ़वे लिखावे की हती। मनौ पढ़ाई लिखाई कछू ऐसी चीज तौ है नईं कै घोर कें प्या दई जाय। जब तक किसना प ौ अनाप सनाप खर्च दऔ कौनऊँ चीज की कमी नईं होंन दई किसना नें चार पैसा मांगे छै दये। वे जानत्ते पैसा कौ हुइयै का। एक लड़का पढ़ लिख जाय तौ कम सें कम कैवे खौं तौ हो जाय। मनौ उनके सबरे सपने ओस जैसे निकरे। वे समझ गए जिनें वे मोती समझ रये ते वे तौ निरे पानी के बूंदा हैं ।

किसना गांव के लानें आफत बन गऔ तौ। बऊ बिटियन कौ घर सें बायरै निकरवौ दूभर हो गऔ। फरागत जावे के पैलेन पतौ लगानें परत्तौ कै किसना कितै बैठौ है। वौ की सें कबै का कै देवै कछू भरोसौ नईं। कछू कओ तौ आफत एनईं कओ तौ ऊ खौं शै मिलत। ऐई सें सब ऊ सें बरकाव दैवे में भलाई समझत्ते।

किसन जब शैर सें लौट कें गांव आऔ तौ वौ अबै तक पटाईं गईं मौड़ियन की गिनती सोला बतात हतौ। मनौ अब वौ बड़ी शान सें कैत हतौ हाफसेंचुरी में तीन कम रै गईं हैं ।

किसन के चाल चलन की खबर प्रधान तक पौंच गयी ती। उन नें ऊ खौं पैलें समझाव नईं मानौ सो मारौ भी मनौ वौ हर बेर जा कै कें बच निकरवै कै सबूत का है। झूटी साँची कैवे सें का होत। कोउ माई कौ लाल पकर कें बताय। और वौ कभऊँ नईं पकरो गऔ । पकरौ भी कैसें जातौ सब काम इत्ती हुश्यारी सें करत्तौ कै कोउ खौं कानई कान खबर तक नईं लग पात्ति। और लुटी ।पिटीं मौडीं अपनौ सौ मौ लै कें रै जातर्ती। बदनामी के डर सें कोउ खौं बतात तक नईं हतीं। बस ऐई सें ऊ कौ मन दिन पै दिन बढ़त जा रऔ तौ।

और एक दिना ऊ नें खेत सें आ रई शीला खौं गाना गा कें छेड़ो "बुरे नहीं हम भी इधर देखो न"

शीला नें जब ऊ कोद नईं देखौ, तौ वौ शीला के कान के पास जा कें केंन लगौ "देखौ रानी बाद में भौत पछ्ताओगी" शीला नें ऊ की एक नईं सुनी। वा तौ जल्दी जल्दी डग बढ़ात घर कोद लपकी। ऊ नें तनक दूर तौ पीछौ करौ, फिर उतई मैड़ पै बैठ गऔ । शीला नें घरै आकें सब बात अपनी अम्मा खौं सुनाई। अम्मा नें संजा सबरौ किस्सा शीला के बापू खौं सुनाऔ। बापू तनक देर तौ घर मेंई गरयाने और शांत हो गए। अम्मा नें जब उनें कुरेदो तौ वे लड़की वारी बात और आगौ पीछौ बता बतू कें चुप्पी साध गए

ऐसौ अकेली शीला के सँगै नईं केऊ बिटियन के सँगै हो चुकौ तौ। और सब ऐसेई मन मसोस कें रै गए ते। सबकौ एकै कैवौ ऊ आवारा की का। बदनामी तौ अपनी मोड़ की होएगी। जेई कारन मुतके सबूत ऊके खिलाफहोत भये वो कभऊँ पकरो नईं गऔ।

"कुदऊँ दाऊ जगन हौले सें बोलौ" गांव में एक चर्चा और है -

"का एकैसी-कुदऊँ उठ कें बैठ गऔ।

जगन तनक मुस्काऔ फिर बोलौ" सुन रये हैं , कौनऊँ मोड़ी नें किसना खौं हंसिया सें खसिया कर दऔ हैं"

कुदऊँ नें हाँ में हाँ मिलाई और केंन लगौ "बात मोय सोउ साँची सी लगत है। नईं तर चारौ काटत में ऐसौ कैसें हो सकत। जोय न होय बात जेई साँची हैं" और बात जेई साँची हती। धनू काछी की मोड़ी हती रधिया। उमर हती जेई सोला सत्तरा। अच्छे नाक नक्श। देखत में न जादा गोरी नें जादा सावरी ण्मनौ लगत हती खबसूरत ण्ज्वानी की गदराई देह। बस किसना की आँख पै चड़ गयी। ऊँ नें सोची होएगी कै पैसा के लालच दाब धौंस कैसेउ नें कैसे बस में आई जै। सो खेत जात राधिया के पीछें लग गऔ ण्रधिया जितै मिल जाए वौ उतई गान लगै "बोल राधा बोल संगम होगा कि नहीं" किसना खौं भरोसौ हतौ एक दिना रधिया जरूर कई है होगा.......... होगा..........होगा ....हाँ होगा।

मनौ रधिया नें कभऊँ कछू नईं कई। ऊ खौं कछू कह कें करनें भी का हतौ। भाड़ में जाय-कुत्ता है भौंकतई रत हैं वा जानत है बात कौ बतंगड़ बनवे में देर नईं लगत। ऊ खौं पतौ है एक दिना गौरी नें किसना खौं गारीं गुल्ला कर दऔ तौ। पुरखन तक खौं पानी दै डारौ तौ । बात पूरे गांव में फैल गयी ती किसना नें उलटौ ओई खौं बुरऔ बना दऔ तौ "केंन लगौ एई नें हमसें पैसा मांगे ते हमनें नईं दये सो हमें बदनाम करन लगी"

सई बात तौ सब जानत्ते। मनौ मौ को पकरे। बात प्रधान तक पोंची ती रोज रोज के उराने सुन सुन कें वे सोई उकता गए ते। सो उन नें खुले आम कह दई ती किसना खौं अगर गलत काम करत पकर

लो तौ पन्हैयाँ मारौ। हमें कछू इतराजी नईं हुइयै ण्कोरी कोरी खबरें हमाए लिगां ल्यावे कि जरूरत नईयाँ ।

रधिया जा बात अच्छी तरा जानत्ती कै किसना बड़े और भले बाप कौ बिगड़ेल बेटा है। बाप और भैयन के काबू सें बायरौ हो गऔ है । गांव वारे सब हिज्जड हो गए हैं। मार मार जूता चाँद गंजी कर देवें । सबरी अकल ठिकानें आ जाय। मनौ सब हाथ पै हाथ धरें बैठे हैं और वौ अपनी मनमानी करत जा रऔ है। वा और सें का कय ऊ के बापू सोई ऐसेई हैं। हमनें कई हती सो सुन कें रै गए ते। उल्टो ओइ खौं सुन नें परी ती बापू की उलटी सीधी बातें।

कल ई की तौ बात है रधिया दुफैर में अपने खेत पै चारौ काट रई ती किसना नें पीछे सें आकें ऊ के दोई कंधन पै अपने दोई हाथ धर दये। ऊ नें मौ ऊपर करकें देखौ सो किसना हतौ। पैलें तौ वा तनक घबरानी, फिर ऊ नें हिम्मत बटोरी किसना ऊ सें पूछन लगौ "आज काल तुम रस्ता काट कें निकर जात हौ रानी"

किसना की बात सुन कें रधिया नें खुद पै काबू करौ। इतै उतै देखौ। कऊं कोउ नईं हतौ। वा समझ गयी कै आज वा फंस गयी है सोई बातें बनात बोली "देखौ किसन तुम तौ हौ पूरे पक्के बेशरम, हम ठैरे मोड़ी जात। कोउ नें अगर देख लऔ तौ किताऊँ के नईं रै जैहें, तुम कछू सोचत समझत तौ हौ नईंयाँ जितै देखत उतई छेड़ छाड़ शुरू कर देत"

किसना खौं अपनी गलती पैली बेर समझ में आई । मन ई मन ऊ नें रधिया की बुद्धि खौं सराहौ। और फिर हौले सें बोलौ "तौ अब का देर दार है जल्दी करौ, नईं तर कोउ टपक पर है" किसना नें रधिया की बांह पकरी, तौ रधिया बोली लै कां चल रये हौ ।

किसना नें मड़ैया कोद इशारौ करौ राधिया उठ कें ऊ के सँगै चल दई। हंसिया दूसरे हाथ में हतौई। मड़ैया में पौन्च कें किसना ऊ खौं चूमन चाटन लगौ। काम में आंधरौ वौ आँखें मींच कें चूमत जा रऔ तौ कै तबई किसना की चीख हवा में घुर गयी किसना तड़पत भऔ पैलें जमीन पै गिर परौ फिर उठ कें अपनौ गुप्तांग पकर कें निहुर सौ गऔ ।

रधिया खून सें सनौ हंसिया लयें घर खौं भगी रास्ता में ऊ नें पानी सें हंसिया धो कें फिर आराम सें चलत घरै आ गयी।

किसना गिरत उठत जैसेंई गांव में घुसौ बात पूरे गांव में फैल गयी किसना नें रो रो कें बताऔ कै चारौ काटत में ऊ खौं हंसिया लग गऔ । प्रधान किसना की हालत देख सोई पलका पै सें उठे नईं। सोचत रये झूठ के पाछें के सत्य खौं, ड्राइवर खौं कई कै गाडी सें जल्दी ई खौं अस्पताल लै जाओ। एक मौड़ा खौं सँगै पौचा दऔ।

"काय जगन, अब का हुइयै किसना कौ" कुदऊँ नें आँखें फ ॉर कें अपनी चुप्पी टोरी ।

"मोय का पतौ, जितै तुम उतै हम"और फिर अपनी जूती फ्टकारत बोलौ "होरी में जाय एहमें का करनें"

"हाँ सो तौ सई है" कुदऊँ सोई उठौ। और दोई अपनी अपनी भैंसन कोद बढ़ गए

- काव्या, चन्द्र शेखर वार्ड
बीना जिला-सागर (म.प्र.)
09713024380

दो बुन्देली गज़लें

- डॉ. वर्षा सिंह

एक

काय चांद पर धब्बा देखत
आग पराई तुम का सेंकत
बिटिया कौन गली से जाएं
इते - उते हैं लपरा छेंकत

कोनउ को ना फिकर काऊ की
सबई इते हैं पासा खेलत
मोड़ा तो हो गओ सहर को
इते मताई रस्ता हेरत

जिनखों हाथ बढ़ाओ चइये
बेई कुंआ में सबको ठेलत
ऊको दिल तो पथरा हुइये
अपनी मोड़ी खों जो बेंचत

धरे पटा पे लोई घांई
किस्मत हमखों रोजई बेलत
बदल रओ है मौसम सगरो
'वर्षा' जाने का-का झेलत

दो

चुप ना रइयो मंझले कक्का
मन की कइयो मंझले कक्का
घर में सौचालय बनवा ल्यो
खुले ने जइयो मंझले कक्का

मोड़ी खों ने घरे बिठइयो
खूब पढ़इयो मंझले कक्का
मोड़ पे सो नजर राखियो
फेर ने कइयो मंझले कक्का
ठोकर खा जो गिरत दिखाए

हाथ बढ़इयो मंझले कक्का
मुस्किल आए चाए कैसई
ने घबरईयो मंझले कक्का
ठाकुर बाबा पूजे 'वर्षा'
दीप जलइयो मंझले कक्का

-एम - 111, शांति विहार, रजाखेड़ी
मकरोनिया, सागर - 470004
मोबाइल 7999562075

तीरथ का फल

- राजकुमार

जेठ-मास की गरमीं मँ लरका-बच्चा, ज्वाँन-जँमाँन, बूढ़े-बारे मॉरे तपँन के चुरे जात्ते। ब्याव-बरातैं और न्योते-हकारी के मॉरे कोहू काँ घरी एक बिलमैं काँ टैंम नँ मिलत्ते। चँदला-महोबा, लौड़ी-बाँदा के लाँनें चलैं बाली इक्का-दुक्का बसैं तरे-ऊपर से ठसाठस भरी जात्तीं। उँनमाँ तिल डारैं तकै साँस नँ रहै। ऐसे मँ राँमदींन बड़ी मुस्किल से पाँछे की खिड़की मँ टँग पाओ। एकाध कोस आँगे जायकै वही पाँव घरैं कै जगा मिली। थाँनाँ-तसीली बाले गाँव गौरिहार मँ खूब सबारीं उतर गईं। उत्तै मँ राँमदींन एक सीट मँ लपक्कै बैठगा। एक डबल सीट मँ पहले से एक साठक साल का डुकरा बैठो रहै। राँमदींन नें आपँन इवारा बस की रैक मँ धरकै सीट बाले से राँम-राँम करी। घसीटा नें भी रामाँकेसनीं करी और दुनौंहुँन्ह मँ चूँनाँ-तँमाँखू कै होंएँ लाग।

बस सबारी लेत-उतारत, आगे बढ़त रही। कुछू लफंगा टैप के लरका चिल्लायँ लागे-''ए डिराईबल! थोरी बस रोक दे। हमैं मुँतास लागी है।'' डिराइबलौ यहै चाहत्तै कि कँहूँ मोंका मिले तौ धुँआँ-धक्कड़ कै है जाय। बस रुकी। बेसरमिंन् नें अपनें-अपनें नँल चालू कर लए। सयानें, समझदार झाड़िन के पाँछे चलेगे। बेचारी मिंहिरियाँ जहाँ की तहाँ पिसाब साधे जमीं रहीं। राँमदींन एक पुराँनीं बोतल मँ पाँनीं भर ल्याओ। घसीटा कनैं काँ हाँथ बौंड़ायकै बोलो-''दादा पानी पी ल्या, अबै ठण्ढा है।'' घसीटा नें बोतल तौ पकर लई, पै जी दुबिधा मँ परगा। वा स्वाँचै लाग कि पता नँहीं या आदमी कौंन जात-धरँम का आय? कहूँ जात-कुजात होय तौ मोंर पुँत्रँ-धरँम सब बिगर जाय, नँरक लग मँ ठौर नँ मिली। उइसै मैं तीरथ करैं जाथौं। घसीटा काँ नँ रहोगा। पूँछ बैठो- ''भइया तैं को ठाकुर अही?'' बिनाँ हिचक् के राँमदींन तुरतैं बोलो- ''मैं तौ नाँन्हीं जात अँहूँ दादा। तुँम् कौंन् ठाकुर अहू?'' घसीटा का उँन्माँन् बिलकुल सही निंकरो। ''बेटा अबै प्यास नँहीं लागी। तैं पीले।'' घसीटा नें ज्वाब दओ। पै राँमदींन काँ सन्तोस नँ भा। वाखै बुद्धी कुलबुलाँनीं। वा सोच मँ परगा कि या डुकरा नें मोर जात् तौ पूँछ लएस पै आपँन नँहीं बताएस। कुछू गड़बड़ है का? या जात भाई होत् तौ पलट कै मोंर जात नँ पूँछत। ''दादा तुँमनें नँ बताओ कि तुँम् को ठाकुर अहू?'' राँमदींन नें फिर से पूँछो। ''मैं राँमनँगर का गड़रिया अँहूँ। तीरथ करैं पिराग राजै आय जाथौं। घसीटा नें खुलकै कह दओ। ''तब तौ दादा बड़ा अच्छा साथ है। मँहूँ अपनी मँहतारी के फूल लैके इलाहाबाद आय जाथौं। तुँम्हार संग मिलगा तौ अच्छा रहो। मैं तौ कबहूँ बाहिर नँहीं निंकरूँ सो मुँहीं कुछू ग्याँन् निंहाँयँ और नँ करँम्-धरँम् का कुछू अटकर आयँ''। राँमदींन नें अपनें मँन कै बात कह दई।

बस मटौंध टेसँन मँ जाय कै ठाढ़ी भै। सबारीं रेलगाड़ी की आसा मँ पलेटफारँम् की कुर्सिंन् मँ बैठ गँईं। एकाध घरी मँ रेलगाड़ी आई। राँमदींन और घसीटा नें इलाहाबाद के लाँनें पहले से टिकस कटाय् लई ती। दोऊ जँनें जैसे-तैसे डब्बा मँ घुस पाए। साँमौंसाँम् गाड़ी नें नैंनीं टेसँन उतार दओ। गाँव का आदमीं बाहिरी भीड़-भाड़ मँ नँहीं रँमै। वा एकान्त और सान्त जगा की तलास मँ रहाथै। घसीटा राँमदींन काँ पलेटफारँम् के आखरी चौंतरा मँ लिबायगा। दोऊ जँनें अपनें-अपनें चद्दरा बिछायकै घर कीं बनीं सुहारीं और अथाँन से अपनीं-अपनीं भूँख मिटायकै स्वाबा-नींदी होंयँ लागे। अधरत्तँन मँ एक च्वार राँमदींन के मुँड़ीसे धरो इवारा थथवालैं लाग। राँमदींन काँ कहाँ फिक्कर। घसीटै कुछू खुरखुराहट सुँनाँनीं। झट से उठ बैठो। इत्ते मँ च्वार बिनाँ हाँथ मॉरि तिड़ी भा।

बड़े भुँन्सारे उठ कै दोऊ जँनें दिसा-मैंदाँन से फुरसत ह्वैकै पैदर गंगा अस्नाँन् के लाँनें निंकर परे। पाँनीं का कौंनँव सम्भार नँ रहै। नँजर पसारे गंगा मइया कै माया दिखात्ती। अपनें पुरखा-पितरँन के फूल पौहामैं के लाँनें इतना मँड़ई उमड़ो रहै कि जैसे एकै साथ आधे संसार के बाप मँहतारी सरगै चले गे होंयँ। देसी-देहाती और सहरी सोच ऐसे माँमले मँ रत्तीभर अलग नँहीं होय। चहै उँनके लरकँन नें जिंदा-जियत अपनें बाप-मँहतारिंन काँ एक गड़ई सुख से पाँनीं नँ पिबाओ होय, पै मरैं के बाद ऐसा ढ्वाँग करैं मँ लागे रहाथे जैसे यई असली सिरमँनक्काँर की औलादैं होंयँ। आखिर पुरातँन-पंथी सोच, धरँम् और संस्कार की झूँठी जकड़ँन से कोऊ कहाँ मुक्ती पाओ है? बड़े-बड़े पोथी-बँचइया, पण्डा-पुजारी, बेद-पुरानँन् के मिथ्या ग्याँता, पोंगा-पण्डित सीधे-साधे आदमिंन काँ, और को गोर करै, पढ़े-लिखिंन तक्काँ चौबीसौं घण्टा ऐसे आडम्बर मँ अरझाए रहाथे कि आदमिंन काँ नींर-छीर-बिबेक का अवसरै नँहीं मिलै। इत्ती भीड़ देखकै राँमदींन का मूँड़ चकरायँ लाग। घसीटा से बोलो-''दादा अब कौंन-कौंन किरिया-करँम् आय करे जाथे? तुँमँहीं बताबा। मुँहीं तौ कुछू नहीं आँवै।'' घसीटा नें राँमदींन का हाँथ पकरो और एक बड़ी नाँवँ मँ चढ़ाय कै बीचधार मँ लुबाय गा और कहेस कि ''बेटा राँमदींन! जौंन थैली माँ मँहतारी के फूल भरे गरे मँ टाँगे हा, वही खोलकै मँहतारी का नाँव लैकै गंगाजी मँ पौहाय दे।'' रामदीन का ढ्यार नँ लागी। नाँवँ मँ चढ़े-चढ़े मँहतारी के फूल पौहाय कै ऐसा अनुभव करैं लाग जैसे राँमबाई कीं पुरानीं जरी-कुचरी हड्डिंन से आत्मा निकर कै गंगा मँ उखरा-बूड़ी करैं लागी होय। उँइँ दसक साल पुराँनें वई हाड़ आँयँ जिंन्हें तुबकसींग ठाकुर नें अपनी कार से देसी दारू के नँसा मँ रौंद डारोतै। पुरा-परोसी के जात भाइँन नें या कहकै मनाओ-पथाओ तै कि पहारँन मँ मूँड़ माँरि से अपनें मूँड फूटाथै। उँन्का कुछू नँहीं बिगरै कहेसे कि उँइँ बज्जुर के बँनें होथे। उँन्के जी नँहीं पसीझैं। मॉरे डिरँन के राँमदींन नें थाँनें मँ रपट तक नँ लिखाई ती। वा समँयँ काँ याद करकै राँमदींन की तरइयाँ भर आँईं। राँमदींन कै सूरत देखकै घसीटा नें जी करौं कराओ। ''बेटा राँमदींन! सब ऊपरबाले कै लीला आय। तैं चिन्ता नँ कर। चल उत्थल पाँनीं मँ बुड़की माँरले। कुछू दाँन पुँन्न ईं साँम्हूँ के तींनौं पण्डितँन काँ कर दे। फिर आँगे बड़े पण्डितँन से कथा करा लए।'' राँमदींन और घसीटा नें नाँवँ से उतरकै नँहाओ-धोओ। पहिरे-पहिराए मैले कपड़ँन मँ गंगाजल किंनछकै फिर पहिर लए और गंगाजल काँ अमरित माँनकै एक-एक बोतल मँ भर लओ। राँमदींन दस-दस के तींन लोट भितरी जेब से निंकार कै पण्डितँन काँ देंय लाग। दस-दस के लोट देखकै तींनौं पण्डितँन कै कारी आतमाँ सुलगैं लाग। एक बोलो-''कहे रे गँवार? हँम् भिखारी आँयँ का जो तैं दस-दस रुपइया देथा? ऐसी सराफदैबे कि तोरे आँगे के जलँम् निखद्दर जोनीं मँ हुँइँ हैं। अबै जेखे फूल ल्याओ हा, वा कँबहूँ नँ तरी। वा आतमाँ भूतै जोनीं मँ डरी रही। सुँनकै राँमदींन कै बोलती

बन्द। वही ऐसा लागैं लाग जैसे वा बिंनाँ मरे गीध-कउआ बँनगा होय। और जौंन मँहतारी आजतक सपनें लग मँ नँहीं दिखाँनीं वा डाएँन बँनकै बाल बच्चँन् काँ सैंघौ लील रही होय। जिंनकै आतमाँ निरदोखिल होथी उँन्का मँन् इकदम ऊजर हौथै। ऐसे मँडैंन कै तरक-बुद्धी घास चरैं मँ मँगँन रहाथी। अग्याँन और भूत-पोंगड़ा उँन्की रकत की एक-एक बूंद मँ सँमाओ रहाथै। उँन्के जी मँ सरग-नँरक का खटका दिनाँरात लागो रहाथै। ऐसे मँडैंन पै जहाँ पढ़े-लिखे पखण्डिन कै सिकारी नँजर लागी रहाथोय, ह्वाँ भला समाँज के ऐसे लाखँन राँमदींन तसल्ली से जी पावाथुँइँहैं ? घसीटा नें राँमदींन काँ सँम्हारो। आँसू प्वाँछत-प्वाँछत राँमदींन नें सौ-सौ के तींन लोट तींनौं पण्डितँन काँ दै कै बिंन्ती करी कि ''महराज! अब दो सौ रुपइया बचे हैं। अपनें ब्रम्ह बचँन वापस लैल्या। तींनौं तिलकधारी नँफ्रत कीं आँखीं तरेर कै दुसरे सिकार की तलास मँ उल्टी दिसै चलेगे।

गैल चलत राँमदींन नें घसीटा से पूँछो-''दादा या कैसी लूट मँची है ? तुँम तौ पहले कई दाँ आए हऊ। तुँम्हारौ साथै ऐसा भा है?''बेटा रामँदींन! इँन्से कोउ नँहीं बचो। पै अब का करैं ? धरमौं तौ कुछू होथै! अगर आँगे का जलँम सुधारैं कँ है तौ बाँम्हनँन कै सेबा खुसामँद करहीं कँ परी। जो उँइँ माँगैं सो दाँन-दच्छनाँ, सीधा-पाँनीं सब देंय का परी। नहीं फ्रि उँनकै सराफभ्वागा । तुँम लोगँन से तौ ई रुपइया पइसा और सीधा भर लेथे। हँम लोगँन से तौ दूध-घी, पक्की रसुइया, नए-नए उँन्हाँ-कपड़ा, बैल-गोरू, हर नई फ्सल कै अँगवाँनीं, भये-ब्याहे, तीज-त्यौहार, काज-अवसर मँ हँमनें खेत की पटियाँ तक दाँन करीं हैं। पर उँन्हें संतोस कबहूँ नहीं होय।'' घसीटा नें ज्वाब दओ। आडम्बरपुरी मँ जजमाँनँन कै भीर लागी रहै। सबकीं अलग-अलग दुकाँनें, रँगे माँथे के छोटे-बड़े बाँम्हँन पण्डताई मँ जी जाँन से लागे रहैं। राँमदींन काँ नँहीं सँमुँझपरै कि पण्डित कथा आय बाँचाथे कि जजमाँनँन से मोंलभाव करकै जेबैं आय भराथे। बीच-बीच मँ संसकिरित के कुछू सबदँन के बाद फ्रि वहै देसी भाँसा सुनाय परै। ''दादा''! कौंन पण्डित से कथा सुँनबे?'' राँमदींन नें घसीटा से पूँछो। घसीटा नें कहो-''सब जातँन के अलग-अलग घाट और पण्डित होथे। पहले मैं कथा सुँन लेवँ फ्रि तैं सुँन लए। घसीटा नें आपँन पण्डित ढूँढ़ कै कथा सुनैं कै अर्जी दई। बड़े पण्डित नें पलट कै पूँछ लौ-''काहे कै कथा सुँनों चाहाथा जजमाँन?'' घसीटा सकुच्याँनों। मुँहुँ सींकै रहगा। कहेसे कि ओखे लरका से हार मँ एक गरिंया धोखे से मर गै ती। लखँन पाल के छोटे लरका नें घटनाँ देखकै गाँव भरे मँ हल्ला कर दओतै कि घसीटा के लरका नें गरिंया माँड़ारी। सकारे भे जात भाइँन ने पंचायत बुलाई। गाँव के उपरहतौ काँ अथाई मँ लिबा ल्याए। उपराहित के मँन मँ लड्डुआ फूटैं लागे। वानें कहो-''घसीटा! तोरे लरका नें तौ बहुत बड़ा अधरँम करो है। जीव हत्या का पाप तींन साख तक नँहीं मिटै। उपाय एकै है कि गंगाजी नँहाय आव। ह्वाँ के पण्डितँन से कथा सुँन आव। और गाँव मँ कँम से कँम तेंतिस ब्राँम्हनँन काँ भोजँन करायकै, दाँन-दच्छनाँ दैकै, माँन-सम्माँन से पाँव-पूजा और डाँड़ जुर्बांना दै कै बिदा कर दए। एखे बाद तोर समाज जइसा कहै, सो तइसा करे। पर गंगा अस्नाँन और ब्राँम्हन-भोज तुही करहीं कँ परी, नहीं तौ तोरी पीढ़ी के सबै जनँन काँ पाप जोनीं मँ जलँम लेंयँ का परी। ऐसा सास्तरँन मँ लिखो है। और सास्तर भगवाँनें नें लिखे हैं।'' गाँव के उपराहित की उँइँ सब बातैं घसीटा के जी मँ सूजी सी गुलकैं लागीं। बड़े पण्डित नें घसीटा से ऊँची आवाज मँ फ्रि पूँछोस-''बताव जल्दी। कौंनें परयोजँन से कथा सुँनें आओ हा पिरागराजै? मोरे और जजमाँन लैंन मँ लागे हैं।'' ''महराज! छोटे लरका से बहुत बड़ी भूल ह्वैगे है। वा नें एक गरिंया मार कै जीव हत्या कर डारी है।'' घसीटा नें रूखे और भयातुर सुर मँ धीरे से कहोस। बड़े पण्डित काँ जैसे मुँहुँ माँगी मुँराद मिलगै। भीतर से कुप्पा ह्वैगा, पै बाहिर से बड़ी करुनाँ से मुँहुँ बनाँय कै बोलो-''जजमाँन! या कथा तौ बहुत करीं परी। तोरे बस कै निंहाँयँ। धँन खरचा करैं कै हिम्मत होय तौ बोल, नँहीं तौ सात जलँम तक नँरक भोग।'' घसीटा नें पाँवँ पर कै बिंन्ती करी कि ''महराज! आपँन लतमरा समझ कै खरचा बता दओ जाय। तुँम्हाँरी किरपा से दो सौ नँग गरैं हैं, पचास बीघा जँमींन है। गइँयाँ-भैंसियाँ हैं। ज्वाँन-जमाँन लरका हैं। मैं सब पूरा करिहौं।''

राँमदींन या सब सुँन-जाँन कै दाँतँन अँगुरिया करकै रहगा। ओखी बुद्धि मँ थोरी-थोरी रोसनीं का संचार होंयँ लाग। मँनैं-मँन स्वाँचै लाग कि मोंरौ मँहतारी काँ तौ गाँवँ के ठाकुर नें मार डारो तै, पै वा नें तौ कौंनँव पण्डित से कथा-भागवत नँहीं सुँनीं। कौंनँव तीरथ नँहीं गा। मूँछ मुँरयारत मौजर टाँगे मँजे से घूँमत फ्रिथै। कौंनँव उपराहित, भगौती, बेदान्ती कै हिम्मत नँहीं परी कि दाऊ साहिब से या मामले मँ बात तौ कर लेय। राँमदींन कै आतमाँ झंकारैं लाग। स्वाभिमाँन और तरक का तेज तँमतँमाँ उठो। वा नें मँनैं-मँन संकलप लओ कि आज से मैं कौंनँव पोंगा-पन्थ मँ नँ परिहौं। अब तौ बाल-बच्चँन काँ बाहिर सिटी मँ पढ़इहौं और बाप के मरे मँ नँ तौ गंगा पिरागै जइहौं और नँ कथा-भागवत सुँनिंहौं। ई सब आदमी के लूटैं के अवजार आयँ। ब्याव-साखे, मरे-गरे, पोंगा-पंथिन काँ कबहूँ दाँन नँ करिहौं। लँगड़ा-लूला, अँधरा-कोंढ़ी, काँ दाँन दए से पुँन्त्र और असीस दोऊ मिलिहैं। उँनकै असीस मोरे बाल-बच्चँन काँ लागी। अब जो भा, सो भा, आगे नँ हुई। बरत घर काँ बुझाए मँ ही सार है।

पण्डित जी नें लाल कपड़ा मँ लपटी एक बही निंकारी। घसीटा का नाँवँ-पता, दादा-परदादा के नाँवँ से लैकै अबै तकै बंसाबली दरज कर लई। कथा के अनुट्ठाँन का पूरा सिजरा लिखकै खरचा का हिसाब लगा दओस। कुल खरचा चार लाख पचपँन हजार पाँच सौ पचीस के अंकन मँ झाँखैं लाग। पण्डित की बुद्धी नें इसारा करो कि अबै पैंतालिस हजार का गड़वा और पूरो करो चहिए। अंकन का उच्चारण भी कँम ह्वै जई और एक मँहिनाँ कै मँझले लरका कै कैम्ब्रिज विष्वविद्यालय कै फीस भी चुकता ह्वै जई। पण्डित नें कहो-''घसीटा! तोर माली हालत देख कै जादा खरचा नँहीं कराओ चाहाथौं। तोर कुल पाँच लाख का खरचा परी। बड़े-बड़े असाँमीं तौं पन्द्रा से बीस लाख तक खरचा कराथे ऐसे अधरँम के मामले मँ। तैं चिंन्ता बिलकुल नँ कर। बेद के सुद्ध मन्तर तोरे अनुट्ठान मँ मैं खुद पढ़िहौं। तोरे परवार के सबै कलंक छिंन भर मँ राख ह्वै जइ हैं। थोड़ी दाँन-पुँन्त्र गाँव के पण्डित (उपराहित) काँ भी कर दए, कहे से कि वा गाँव का दिवता होथै। उँन्हें कबहूँ कौंनँव मामले मँ निंरास नँहीं करो जाय।'' घसीटा नें मूँड़ औंधाय कै सब सुँन लओ। काँन मँ लागकै घसीटा से पण्डित नें पूँछो-''खरचा का इंतजाँम कैसे करिहे?'' घसीटा ने दुखित मन से कहो कि-''महराज इतना रुपिया तौ मैंने कबहूँ नँहीं देखो। अबै खलीथा मँ द्वै-तींन हजार हैं। घरै पचासक हजार गोंहूँ की कुठिया मँ बीचौं -बीच धरे हैं। बस इतै हैं।''

बुन्देलखण्ड से सूरीनाम तक की यात्रा कथा

- डॉ. राहुल मिश्र

अगर यह पता चले, कि रामलीला देखने का शौक भी किसी के लिए मुसीबत का सबब बन सकता है, और रामलीला देखने के लिए जाना ही किसी व्यक्ति के जीवन में ऐसी रामलीला का रूप ले सकता है कि चौदह वर्षों के बजाय जीवन भर का वनवास मिल जाए तो सुनकर निश्चित तौर पर अजीब लगेगा। इसके बाद अगर पता चले कि यह वनवास उस व्यक्ति के लिए संकट का लंबा समय लेकर जरूर आया मगर संकटों विपत्तियों से भरे कालखंड ने उस व्यक्ति को ऐसी बड़ी जिम्मेदारी सौंप दी जिसने कालांतर में उस व्यक्ति को एक देश का जनकवि ही नहीं राष्ट्रकवि बना दिया तो बेशक आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहेगा। इस तमाम बातों के साथ ही अगर यह कह दें, कि वह महान व्यक्ति अपने बुंदेलखंड का बाँका नौजवान था। तब क्या कहेंगे शायद जुबाँ पर शब्द नहीं आ पाएँगे केवल और केवल गर्व की अनुभूति होगीनिः शब्द रहकर।

बुंदेलखंड से सूरीनाम तक की यह यात्रा कथा उसी गर्वानुभूति की ओर ले जाने वाली है जिसमें बुंदेलखंड का एक बाँका नौजवान तमाम मुश्किलों कष्टों को सहते हुए संघर्ष करते हुए न केवल अपना नाम रोशन करता है वरन् समूचे बुंदेलखंड का गौरव बढ़ाता है। निश्चित तौर पर उसके संघर्ष के पीछे उसकी जिजीविषा के पीछे बुंदेलखंड के पानीदार पानी और जुझारू जमीन के तमाम गुणों ने अपना असर दिखाया था।

यहाँ जिस बाँके बुंदेलखंडी नौजवान की सूरीनाम पहुँचने और वहाँ के क्रांतिकारी जनकवि बनने यात्रा कथा है उसने अपने जीवन के संघर्षों को, साथ ही अपने गिरमिटिया साथियों के संघर्षों को डायरी में उकेरा, जिसने बाद में आत्मकथा का रूप ले लिया। संघर्ष के कठिन समय में लिखी गई उनकी डायरी के अस्त-व्यस्त पन्नों को समेटकर जुटाई गई जानकारी और उनकी दो पुस्तकों से एक व्यक्ति का ही नहीं, एक युग का, एक देश का अतीत परत-दर-परत खुलता है। उनकी दैनंदिनी के पन्नों को समेटकर सन् 2005 में आटोबायोग्राफी ऑफ एन इंडेंचर्ड लेबर मुंशी रहमान खान नामक पुस्तक का प्रकाशन हुआ था।

मुंशी रहमान खान अपने बारे में परिचय देते हुए अपनी कृति ज्ञान प्रकाश में लिखते हैं.

कमिश्नरी इलाहाबाद में जिला हमीरपुर नाम ।
बिंवार थाना है मेरा मुकाम भरखरी ग्राम ।।
सिद्ध निद्धि वसु भूमि की वर्ष ईस्वी पाय ।
मास शत्रु तिथि तेरहवीं डच गैयाना आय ।।

पिछले पेज का शेष .....

''घसीटा'! इत्ते मँ काँम नँ बँनीं।'' पण्डित नें दो टूँक कह दओ। साथ मँ एक उपाय भी बताओस कि ''अबै सादे कागद मँ लिखा-पढ़ी कराय कै आँठा लगाय दे। बाद मँ हराँ-हराँ हिसाब होत रही।'' आडम्बर के अँधयारे मँ आदमीं की बुद्धी काँ साँप सूँघें लागाथे। घसीटा नें लिखा-पढ़ी के लाँनें हाँ करी और पण्डित नें अपँनीं नँई कार से तँनक द्वयार मँ एक बकील और द्वै गबाहिंन काँ हुँई बुलाय लओस। सीधे-साधे घसीटा काँ थोरी पता रहै कि पण्डित मोंरि साथै जागा-जँमींन, हड़पैं कै चाल आय चल रहो है। काहे से कि आस्था और विसवास के आँगे कोउ नँहीं खटाय। वही तो आँगू का जलँम सुधारैं कै चिन्ता है, लरका चाहै खपरियँन मँ खाँयँ। बकील साहिब नें रँगे-चँगे इस्टाम पेपर निकारकै लिख लओस कि सादेह घसीटा गड़रिया बल्द लटोरा, निवासी-रामनगर, तहसील-गौरिहार, जिला-छतरपुर (म.प्र.) नें जेठ बदी पाँचें बुधवार सम्बत् 2050 वि. को पण्डित बिपिंन बिहारी चौबे निवासी गउ घाट इलाहाबाद से नँगदी पाँच लाख रूपइया उधार लै लए हैं। एक मँहिंनाँ के भीतर पाँच रुपइया सैकड़ा के हिसाब से ब्याज देयँ का परी। अबध पूरी होंयँ पर सँम्पूरँन धँन वापस नँ हुई तौ पण्डित बिपिंन बिहारी चाबे, काँनूँन घसीटा गड़रिया कै लगाँनी जँमींन, पसुधँन और घर-बखरी से अपनें दए धँन कै मँयँ ब्याज के बसूली कर लई। वसूली करैं मँ घसीटा गड़रिया काँ कौंनँव उजर नँ हुई। लिखाई के बाद कुछू खाली जगा छोंड़ कै बकील नें घसीटा से आँठा लगवा लओ। द्वै-चार गवाहिंन नें भी दसकत कर दए। इत्ते मँ राँमदीन बोल परो कि ''महराज या तौ बताबा कि या कागद मँ काय लिखो है?' इत्ता सुँनकै बिपिंन बिहारी की आँखीं आगी बरसाँमैं लागीं। वा सिर्रयानें कूकुर घाँई भूँक परो-''भाग सारे ह्याँ से। तुही पाँयँलागी करैं मँ तौ सरँम आबाथी। जबाँन लड़ाँमैं मँ नँहीं? अबै आँखिंन से औलट ह्वैजा, नँहींतर लिहास तक का पता नँ लागी।'' माँरै डिरँन के राँमदींन काँन-पूँछ दाब कै टेसँन कनैं काँ भाग गा। राहगीरँन से पूँछत-पाँछत टेसँन पहुँचो। अपनी जैसी बोली-बाँनी के आदमिंन के लगे ठाढ़ ह्वैकै टिकस कटामैं कै बिंन्ती करी। एक नई उँमर के लरका नें फुरती से लैंन मँ घुस कै टिकस कटाय कै राँमदींन काँ थमाँय दयी। उँनँहीं आदमिंन के सहारे वा गाड़ी मँ चढ़कै मटौंध टेसँन मँ पसर की ब्यारा उतरगा। दिसा-मैंदाँन और कुल्ला मुँखारी करकै अपनें गाँव काँ पैदल चल परो। कलब्याही ब्यारा घरै पँहुँचगा। पुरा मुँहल्ला के आदमीं पूँछें लागे ''राँमदींन! कइसा रहो तीरथ? राँमदींन नें पूरी कथा सुँनाई और सबलिंन के आँगे पिरँन करिस कि ''आज के बाद मैं कबहूँ कौंनँव तीरथ करैं नँ जइहौं और जियत-जागत नँ अपनें बाल-बच्चँन काँ जाँयँ दँइहौं। जिंन्नें बाप-मँहतारी कै सेवा और लरकँन-बिटियँन कै पढ़ाई-लिखाई पूरी कराय कै उँन्हें लायक बनाय दओ, सो उँनके सबै तीरथ-पिराग पूरे ह्वैगे। अब झूँठे परपंच मँ परैं कै जरुरत खतँम। मँन चंगा तौ कठौती मँ गंगा नँहीं तौ बँनै रहा भिखमंगा।''

(नोटः- यह कहानी पूर्णतः मौलिक है। कहानी के पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं। कहानी का उद्देश्य बुन्देली की उपबोली 'बनाफरी' की शब्दावली एवम् उसकी उच्चारण ध्वनियों से पाठक को परिचित कराना है। कहानी की विषयवस्तु और शैली को ध्यान में रखकर इस कहानी का सृजन नहीं किया गया है। - लेखक।)

- मो. 9424346942

गिरमिट काटी पाँच वर्ष की, कोठी रूस्तम लोस्त ।
सर्दार रहेउँ वहँ बीस वर्ष लों, लीचे मनयर होर्स्त ।।
अग्नि व्योम इक खंड भुईं ईस्वी आय ।
मास वर्ग तिथि तेरहवीं गिरमिट बीती भाय ।।
खेत का नंबर चार है, देइक फेल्त मम ग्राम ।
सुरिनाम देश में वास है रहमानखान निज नाम ।।

मुंशी रहमान खान ने अपने बारे में लगभग सारी बातें इन पंक्तियों में बता दीं किंतु उनका सूरीनाम तक का सफर इतना भी सरल नहीं था। मोहम्मद खान के पुत्र मुंशी रहमान खान का जन्म हमीरपुर जिले के बिंवार थाना में आने वाले भरखरी गाँव में सन् 1874 ई. को हुआ था। मैट्रिक तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद वे एक सरकारी स्कूल में शिक्षक नियुक्त हो गए थे। बचपन से ही जिज्ञासु और कलाप्रेमी मुंशी रहमान खान को रामलीलाओं से बड़ा लगाव था। संभवत: इसी कारण वे अध्यापन कार्य से बचने वाले समय का सदुपयोग रामलीला आदि देखने में किया करते थे।

सन् 1857 के पहले स्वाधीनता संग्राम के बाद बुंदेलखंड अंचल में भी अंग्रेजों का कब्जा हो चुका था, और वर्तमान बुंदेलखंड का हमीरपुर जनपद संयुक्तप्रांत के अंतर्गत आ गया था। हमीरपुर से लगा हुआ कानपुर नगर बड़े व्यावसायिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था और अंग्रेजों के लिए बड़ा व्यावसायिक केंद्र था। दूसरी तरफ कानपुर का अपना ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी रहा है। सचेंडी के राजा हिंदू सिंह ने कानपुर में रामलीलाओं के मंचन की शुरुआत सन् 1774 ई. में की थी। इसके बाद कानपुर के अलग अलग इलाकों जैसे जाजमऊ, परेड, गोविंदनगर, पाल्हेपुर, सरसौलद्ध आदि की रामलीलाओं के कारण कानपुर की अपनी प्रसिद्धि रही है। रामलीला के अंतर्गत आने वाली धनुषयज्ञ की लीला का जन्म ही बुंदेलखंड में हुआ था। जो कालांतर में कानपुर तक प्रसिद्ध हुई। इन कारणों से तमाम लीलाप्रेमियों के लिए कानपुर जाकर रामलीला देखना अनूठे शग़ल की तरह होता था। मुंशी रहमान खान भी इसी शौक के कारण कानपुर पहुँच गए। कानपुर में उनकी मुलाकात दो अंग्रेज दलालों से हुई जो कानपुर और बुंदेलखंड के आसपास के इलाकों से किसानों कामगारों को दूसरे ब्रिटिश उपनिवेशों में कामगार मजदूर के तौर पर ले जाते थे।

कानपुर, मद्रास, कलकत्ता और बंबई चार ऐसे बड़े केंद्र थे जहाँ आसपास के ऐसे किसानों मजदूरों को पकड़कर ले जाया जाता था जो प्राय: लगान नहीं चुका पाते थे। हालाँकि मुंशी रहमान खान के सामने ऐसा संकट नहीं था किंतु वे भी अंग्रेज दलालों के झाँसे में आ गए और गिरमिटिया मजदूर के रूप में उन्हें सूरीनाम भेजने का बंदोबस्त कर दिया गया। वस्तुत: गिरमिटिया शब्द अंग्रेजी के 'एग्रीमेंट' से विकृत होकर बना है। 'एग्रीमेंट' या करार के तहत विदेश भेजे जाने वाले मजदूर ही 'एग्रीमेंटया' और फिर गिरमिटिया बन गए थे।

सन् 1898 ई. में 24 वर्ष की आयु में मुंशी रहमान खान को गिरमिटिया मजदूर के तौर पर कानपुर से कलकत्ता और फिर सूरीनाम के लिए जहाज से रवाना किया गया। दक्षिण अमेरिका के उत्तर में स्थित सूरीनाम अंग्रेजों का उपनिवेश था। जिसमें बड़ी संख्या में गिरमिटिया मजदूरों को अंग्रेजों ने बसाया था। भारत से सूरीनाम तक की जहाज की यात्रा भी बहुत कष्टसाध्य और लंबी होती थी। इस यात्रा में कई मजदूर रास्ते में ही दम तोड़ देते थे। इन विषम स्थितियों के बीच जब मुंशी रहमान खान ने समुद्री यात्रा शुरू की तब उन्होंने दो बातें अच्छी तरह से समझ ली थीं। पहली यहए कि अब वे शायद कभी लौटकर नहीं आ सकेंगे और दूसरी यह कि उनके साथ जहाज में सवार अनपढ़ असहाय गिरमिटिया मजदूरों के कल्याण के लिए भी उन्हें समर्पित होना पड़ेगा।

समूचे मध्य भारत के लिए श्रीरामचरितमानस के प्रति ऐसे आदर्श और पवित्र ग्रंथ की मान्यता रही है जो विपत्ति के समय रास्ता दिखा सकता था। आज भी ऐसा ही माना जाता है। इसी कारण पढ़े लिखे और साथ ही अनपढ़ों के पास भी मानस की प्रति जरूर होती थी। बुंदेलखंड के गाँवों में आज भी तमाम ऐसे लोग मिल जाएँगे जिनको मानस कंठस्थ है। गिरमिटिया मजदूरों के लिए भी परदेश में आपद विपद में मानस का ही सहारा था। संकट केवल इतना थाए कि मानस की पुस्तक साथ में होते हुए भी उसे पढ़ पाना जहाज में सवार अनपढ़ गिरमिटिया मजदूरों के लिए संभव नहीं था। जहाज में मुंशी रहमान खान के अलावा कोई भी पढ़ा लिखा नहीं था। अपने सहयात्रियों को संबल साहस देने के लिए मुंशी रहमान खान ने रामायण का पाठ करना शुरू कर दिया। वे नियमित रूप से ऐसा करते और मानस को सुनकर गिरमिटिया मजदूरों को संकट से जूझने की नई ताकत मिलती थी।

सूरीनाम पहुँचने के बाद भी यह क्रम निरंतर चलता रहा और इसी कारण मुंशी रहमान खान को 'कथावाचक' की उपाधि मिल गई। सरकारी स्कूल में शिक्षक होने के कारण उन्हें मुंशीजी कहा जाता था। कहीं कहीं ऐसा भी बताया जाता है कि वे सरकारी शिक्षक नहीं थे। वे गिरमिटिया मजदूरों के बच्चों को पढ़ाया करते थे इस कारण लोग उन्हें सम्मान से मुंशीजी कहने लगे थे। कारण चाहे जो भी रहे हों किंतु उन्होंने अपनी नैतिक जिम्मेदारी को बहुत अच्छी तरह से निभाया। मुंशी रहमान खान को उर्दू लिखना नहीं आता था इस कारण उन्होंने नागरी लिपि में ही रचनाएँ कीं। उन्होंने देशी भाषा में और साथ ही दोहा.चौपाई छंदों में रचनाएँ कीं। इस कारण उनकी रचनाएँ सूरीनाम में रहने वाले गिरमिटिया मजदूरों के बीच बहुत प्रसिद्ध हुईं। इन रचनाओं में अकसर नीति नैतिकता की शिक्षाएँ भी होती थीं। भारत से सूरीनाम पहुँचने वाले गिरमिटिया मजदूरों में सभी जातियों के लोग थे। उनमें हिंदू भी थे और मुस्लिम भी थे। परदेस में सभी एक रहें मिल जुलकर रहें और अंग्रेजों के अन्याय अत्याचार से संघर्ष हेतु एकजुट रहें इस पर भी मुंशी रहमान खान ने बहुत जोर दिया और रचनाएँ कीं। इसी कारण वे सूरीनाम में जनकवि के रूप में विख्यात हो गए। एक बानगी के तौर पर उनके द्वारा रचित चंद पंक्तियाँ

दुई जाति भारत से आये । हिंदू मुसलमान कहलाये ।।
रही प्रीति दोनहुँ में भारी । जस दुइ बंधु एक महतारी ।।
सब बिधि भूपति कीन्हि भलाई । दु:ख अरु विपति में भयो सहाई ।।
हिलमिल कर निशि वासर रहते । नहिं अनभल कोइ किसी का करते ।।
बाढ़ी अस दोनहुँ में प्रीति । मिल गये दाल भात की रीति ।।
खान पियन सब साथै होवै । नहीं विघ्न कोई कारज होवै ।।
सब बिधि करें सत्य व्यवहारा । जस पद होय करें सत्कारा ।।

मुंशी रहमान खान ने सूरीनाम में पाँच वर्षों तक गिरमिटिया मजदूर के रूप में काम किया बाद में उनकी लोकप्रियता और उनकी

काबिलियत को देखते हुए अंग्रेज अधिकारियों ने उन्हें मजदूरों के एक समूह का सरदार बना दिया। पहले गिरमिटिया मजदूर के तौर पर और उसके बाद बीस वर्षों तक मजदूरों के सरदार के तौर पर वे अपने काम को करने के साथ ही सारे समूह को एकसाथ जोड़े रखने के लिए लगातार काम करते रहे। इस दौरान उनकी लेखनी भी नहीं रुकी। इसी के परिणामस्वरूप उनकी दोनों पुस्तकें. दोहा शिक्षावली और ज्ञान प्रकाश क्रमशः सन् 1953 और 1954 ई. में तैयार हो गई थीं। उन दिनों सूरीनाम में हिंदी की पुस्तकों की छपाई भी बहुत कठिन रही होगी। इन पुस्तकों की छपाई आदि के संबंध में अधिक जानकारी तो नहीं मिलती किंतु मुंशी रहमान खान द्वारा ज्ञान प्रकाश में दिए गए विवरण से पता चलता है कि उनकी ख्याति तत्कालीन राजपरिवार तक पहुँच चुकी थी और रानी युलियान द्वारा उन्हें सम्मानित भी किया गया था –

लेतरकेंदख स्वर्ण पद दीन्ह क्वीन युलियान ।
अजरु अमर दंपत्ति रहैं प्रिंस देंय भगवान ।।
स्वर्ण पदक दूजो दियो मिल सन्नुतुल जमात ।
यह बरकत है दान की की विद्या खैरात ।।

मुंशी रहमान खान ने इन दोनों सम्मानों का विस्तृत वर्णन अपनी पुस्तकों में किया है। उनकी तीसरी पुस्तक का नाम है जीवन प्रकाश जो उनकी आत्मकथा है। इस पुस्तक में चार खंड हैं। इसके पहले खंड में उन्होंने अपने गाँव और अपने परिवार का परिचय देते हुए भारत की साझी संस्कृति को बड़े रोचक तरीके से लिखा है। इस खंड में ही उन्होंने सूरीनाम तक की अपनी यात्रा और वहाँ गिरमिटिया मजदूरों के जीवन का विशद वर्णन किया है। दूसरे खंड में उन्होंने सूरीनाम में अपने काम के बारे में बताया है। इस खंड में उन्होंने अंग्रेज अधिकारियों से हुए झगड़ों के बारे में अंग्रेजों द्वारा उन्हें मजदूरों का सरदार बनाए जाने के बारे में और साथ ही अपने जीवन संघर्षों के बारे में बताया है। तीसरे खंड में उनके विविध संस्मरण हैं जिनमें सूरीनाम के बदलते हालात भी हैं देश दुनिया के तमाम बदलावों की बातें भी हैं सूरीनाम में सशक्त सक्षम होते गिरमिटिया मजदूरों की जिंदगी भी है और साथ ही भारत में चलते स्वाधीनता आंदोलन की झलक भी है। सन् 1931 में सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में सूरीनाम नदी के किनारे डिजवेल्ड इलाके में उन्होंने अपना मकान बनवाया जहाँ वे अपने पाँच बेटों के साथ रहने लगे। उनकी आत्मकथा के चौथे खंड में बदलते सूरीनाम की दुःखद तस्वीर यक्साँ है। इसमें धर्म और जाति के नाम पर शुरू होने वाले झगड़े हैं जो मुंशी रहमान खान के लिए बहुत कष्टप्रद दिखाई पड़ते हैं क्योंकि उन्होंने सदैव जाति धर्म के झगड़ों को दूर करके एकता की बात कही मेल मिलाप की बात कही। उनके लिए राम और कृष्ण का भारत सदैव पूज्य रहा। उनके लिए सभी भारतवंशी एक माँ की संतान की तरह रहे। इस कारण बाद के वर्षों में बदलती स्थितियों के कारण उन्हें बहुत कष्ट हुआ जो उनकी आत्मकथा के चौथे हिस्से में खुलकर उभरता है।

भारत में चल रहे स्वाधीनता आंदोलन की खबरें भी मुंशी रहमान खान तक पहुँचती रहती थीं। अपने वतन से हजारों किलोमीटर दूर एक तरह से कालापानी की सजा भोगते हुए भी उनके लिए अपने वतन के प्रति लगाव था। वे भारतदेश को आजाद देखना चाहते थे। भारत की आजादी की लड़ाई दुनिया के दूसरे उपनिवेशों के लिए प्रेरणा का स्रोत थी। मुंशी रहमान खान की कविताओं में इसी कारण भारत की आजादी की लड़ाई की झलक दिखाई पड़ती है देश के स्वाधीनता संग्राम सेनानियों के प्रति आस्था और सम्मान का भाव दिखाई देता है। इस सबके बीच वे अपनी बुंदेली बोली बानी को भी नहीं भूल पाते हैं। उनकी दूसरी रचनाओं से कहीं अधिक बुंदेली की मिठास आजादी से संबंधित रचनाओं में उभरती है। एक बानगी

नौरोजी मिस्टर गोखले गंगाधर आजाद
मोतीलाल पति मालवी इनकी रही मर्याद
इनकी रही मर्याद बीज इनहीं कर बोयो
भारत लह्यो स्वराज नाम गिरमिट का खोयो
कहें रहमान कार्य शूरन के कीन्ह साज बिनु फौजी
मुहम्मद शौकत अली अरु चंद्र बोस नौरोजी ।।

इन पंक्तियों में जहाँ एक ओर भारत की आजादी के आंदोलन के महानायकों का विवरण मिलता है वहीं इन सेनानियों से प्रेरणा लेकर अपने देश को आजाद कराने का संदेश भी मुखर होता है। मुंशी रहमान खान सूरीनाम के गिरमिटिया मजदूरों को बड़ी सरलता और सादगी के साथ संदेश देते हैं कि अब सूरीनाम ही हमारा वतन है। हमें इसको भी आजाद कराना है और इसे आजादी दिलाने के लिए हमें भारत के स्वाधीनता सेनानियों से सीख लेकर गिरमिट या एग्रीमेंट की दासता से मुक्त होना है।

सन् 1972 ई. में 98 साल की श्रीआयु पूरी करके मुंशी रहमान खान ने सूरीनाम में अपनी जीवन लीला समाप्त की। वे भले ही सूरीनाम की आजादी नहीं देख पाए हों किंतु उनके प्रयास निरर्थक नहीं गए। सूरीनाम की धरती पर अपने कदम रखने के बाद से ही जिस महामना ने सदैव लोगों को जोड़ने का एकजुट होने का संदेश दिया जिसने सदैव नीति नैतिकता की शिक्षा दी पढ़ने लिखने के लिए प्रेरित किया और फिर दुनिया में बदलते हालात के अनुरूप बदलते हुए सूरीनाम की आजादी की अलख जगाई उसके प्रति कृतज्ञ राष्ट्र की आस्थाएँ आज भी देखी जा सकती हैं। उन्हें सूरीनाम का राष्ट्रकवि माना जाता है। ऐसे महामना का संबंध जब बुंदेलखंड से जुड़ता है तो असीमित अपरिमित गर्व की अनुभूति होती है।

मुंशी रहमान खान अगर चाहते तो पाँच साल का एग्रीमेंट पूरा करके गिरमिटिया का तमगा उतारकर अपने देश आ सकते थे किंतु तमाम दूसरे गिरमिटिया मजदूरों की तरह वे नहीं आए। उन्होंने सूरीनाम को ही अपना देश मान लिया वहाँ अपना परिवार बसाया। इतना ही नहीं भारतीय संस्कृति को बुंदेलखंड की संघर्षशील, कर्मठ, जुझारू धरती के गुणों को सूरीनाम में अपने निर्वासित साथियों के बीच पुष्पित पल्लवित किया। इस कारण मुंशी रहमान खान भारतीय संस्कृति के बुंदेलखंड की तहजीब के संवाहक हैं सांस्कृतिक दूत हैं। मुंशी रहमान खान की तीसरी पीढ़ी सहित अनेक गिरमिटिया मजदूरों की तीसरी चौथी पीढ़ी आज सूरीनाम में फल-फूल रही है और जिस आजादी को अनुभूत कर रही है उसमें बहुत बड़ा योगदान बुंदेलखंड के इस बाँके नौजवान का है। हमें गर्व है कि हमारी उर्वर बुंदेली धरा ने ऐसा हीरा उपजाया है।

– एसोसियेट प्रोफेसर
केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह-194101

महाराजा छत्रसाल की लोकव्याप्ति

- डॉ. संध्या टिकेकर

महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड के युग पुरुष थे। अपराजेय पराक्रम के धनी छत्रसाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की व्याप्ति रवि किरणों की भांति लोक के कोने-कोने तक में समाहित थी।अपनी लोकहिताय दृष्टि, शासनिक कुशलता, वीरता और काव्य प्रियता के कारण वे अब तक बुंदेलखंड के लोक चित्त में बसे हुए हैं। आज भी बुंदेलखंड के अनेक व्यापारी और दुकानदार अपने दिन का आरंभ - ''छत्रसाल महाबली करियो भली भली'' कह कर करते हैं और सर्प का चढ़ा जहर उतारना हो या भूत-बाधा का निवारण करना हो, लोग छत्रसाल का नाम ले कर मंत्र पढ़ते हैं। -[1]

कहते हैं कि पूत के पांव पालने में दिख जाते हैं। लोक कथन है कि-जब आठ वर्ष के छत्रसाल अपनी कुल देवी विंध्यवासिनी के दर्शन करने पहुंचे और देवी के सामने सिर झुकाया तो उनके गले में फूलों की माला आ गिरी। जिसे भविष्य में छत्रसाल के राजा बनने के संकेत के रूप में देखा गया।[2] बुंदेलखंड के पराक्रमी पुरुष छत्रसाल का जन्म जेष्ठ्य शु. 3 संवत 1706 (4 मई 1649) संध्या में, वर्तमान म.प्र. टीकमगढ़ जिले के मोर पहाड़ी में(गुना – महोबा के निकट) हुआ था। स्वाभिमान और पराक्रम का संस्कार छत्रसाल को उनके पिता राजा चंपतराय से मिला था। प्रसिद्ध बुंदेली कवि गोरेलाल ने यह बात 'छत्रप्रकाश' में कुछ इस प्रकार लिखी है-

पिता हमारे सूबा डांडे।
तुरकन पर अजमाये खांडे।।
करी पातसाहन सों ऐंडें।
परै रह्यौ मुगलन के पैंडे।।
ऐंड बुंदेलखंड की राखी।
चम्पति कीर्ति जगत मुख भाखी।।
तिन चंपत के नंद हम।
सीस नवाबें काहि।।
हम भूले सेयों वृथा।
हितू जानि के वाहिं।।[3]

छत्रसाल के पिता चंपतराय ने अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए मुगलों की मनसबदारी का त्याग कर आजीवन मुगल सत्ता से संघर्ष किया था। छत्रसाल की मां लालकुंवरि भी वीर छत्राणी थी। छह माह के छत्रसाल को पीठ पर बांध कर उसने भी , पति चंपतराय के साथ मुगल सैनिकों से युद्ध किया था। यह समय बुंदेलों के लिए संकट का समय था। मुगल सम्राट शहजहां की नीति से सभी हिन्दू राजा त्रस्त थे। शहजहां का वि0 सं01691 में ओरछा पर चढ़ाई करना , जुझारसिंह के लड़कों को मुसलमान बनाना , हिन्दुओं पर अत्याचार करना , मंदिरों की मूर्तियां तोड़ना - पैरों से कुचलना आदि कारणों से हिन्दू धर्म संस्कृति के प्रेमी चंपतराय ने मुगल सत्ता से सीधे विरोध कर संघर्ष किया था। वि0 सं0 1718 कार्तिक सुदी 11 को चंपतराय का निधन हो गया तब छत्रसाल ने स्वाभिमान संरक्षण और अनीति के विरोध की परंपरा को आजीवन बनाए रखा। यद्यपि समय की मांग और कूटनीति को ध्यान में रखते हुए '' छत्रसाल ने वि0 सं0 1622 में जयपुर नरेश जयसिंह के पास जा कर , मुगल सेना में भरती हो कर अनेक शौर्य के कार्य किए थे परंतु देवगढ़ के युद्ध में घायल हो कर वे शाही सेना से खिन्न हो गए थे और कहा था कि -

हम तो छात्र धर्म प्रतिपालयौ रीझ न यायौ माथौ हाल्यौ।।
मूरख के आगे गुन गायौ। भैंसा बीन बजाय रिझायौ।।
खर के अंग सुगंध चढ़ायौ। बायस को घनसार चुगायौ।।
बधिर कान में मंत्र सुनायौ। सूरदास को चित्र दिखायौ।।
अविवेकी कों सेइ कें को न हिये पछिताइ। बीजा बवै बबूर के, कहा दाख फल खाइ।।[4]

छत्रसाल गुणों के पारखी थे। औरों के गुणों को परखना हो या स्वयं के , वे पूरी दक्षता से गुणों को पहचान कर उसका उपयोग राज्य और लोक हित में करने की कला में निपुण थे। इसी मूल्यांकन क्षमता के आधार पर उन्होंने अपने व्यक्तित्व की विशिष्टताओं को जाना और व्यक्त किया था। छत्रसाल ने अपने जीवन के आदर्शों को बहुत ऊंचा रखा था। उन्हें अपनी गुणात्मक क्षमता का आभास भी था इसीलिए उन्होंने लिखा कि -ज्ञानिन में ज्ञानी और ध्यानिन में ध्यानी अहौं /पण्डित पुरानी अरथाने बेद बाने का।/साहिब सों सच्चा क्रूरूर कर्मन में कच्चा छत्ता ,/चम्पति का बच्चा शेर सूर वीर बाने का।/ मित्रन को छत्ता दीह शत्रुन को कत्ता सही / ब्रह्मरस सत्ता एक कायम ठिकाने का।/नाहीं परवाही न्यारा नोंकियां सिपाही मैं तो /ने ही चाह चाही एक श्याम श्यामा पाने की।[5] छत्रसाल को संत महामति प्राणनाथ का आशीर्वाद प्राप्त था। संत प्राणनाथ के प्रति छत्रसाल के मन में आध्यात्मिक स्तर का पूज्य भाव था। संत ने उन्हें तिलक लगाकर आशीर्वाद दिया था कि -छत्ता तोरे राज में धक -धक धरती होय। जित -जित घोड़ा मुख करै , तित तित फत्तै होय। अपने संत गुरु से आंतरिक उर्जा -प्रेरणा पाकर छत्रसाल ने विशल साम्राज्य स्थापित किया था। छत्रसाल के राज्य की सीमाएं इन पंक्तियों से स्पष्ट होती हैं - इत यमुना उत नर्मदा , इत चंबल उत टोंस । छत्रसाल सों लरन की , रही न काहूं हौंस।

छत्रसाल ने वीर शिवाजी से स्वतंत्रता का मंत्र पाया था। जिस समय बुंदेलखंड पर मुगलशाही आक्रमण के बादल मंडरा रहे थे , तब छत्रसाल ने शिवाजी की वीरता , युद्ध दक्षता और उनकी शत्रुओं से राज्य स्वतंत्र कराने की ललक से प्रेरित हो कर , उनसे राज्य की रक्षा के लिए मदद मांगी थी। शिवाजी इस युद्ध के लिए तैयार हो गए थे और उन्होंने कहा था - करौं देस को राज छतारे , हम तुमतें कबहूं नहिं न्यारे। कवि गोरेलाल छत्रसाल के आश्रयी कवि थे किन्तु छत्रसाल उनका सम्मान राज्य के सचिव और एक अच्छे मित्र के रूप में करते थे। कवि लाल के प्रति उनका प्रेम आत्मीयता के स्तर का था। लाल ने छत्रसाल की वीरता वर्णन के अनेक काव्य रचे किन्तु ' छत्रप्रकाश ' ग्रंथ छत्रसाल की इच्छा से ही लिखा था। 26 अध्यायों वाली इस कृति

में छत्रसाल के चरित्र का प्रामाणिक वर्णन, बुंदेलों की वंशवली, चंपतराय के समय के घटनाएं, बाकी खां से युद्ध का वर्णन, देवगढ़ विजय, शिवाजी -छत्रसाल मिलन वर्णन, छत्रसाल के विभिन्न मैत्री संबंधों -विजयों का वर्णन आदि चित्रित है।[6]

छत्रसाल की राज्य शासन की सफलता और युद्धों की विजय के पीछे एक बहुत बड़ा कारण उनकी दूरदर्शिता थी। राज्य और जन की रक्षा तथा उनकी भलाई के लिए छत्रसाल ने अत्यंत साहस और कूटनीति से काम लिया था। उन्होंने अपने शत्रुओं को लगभग चेतावनी के स्वर में यह समझा देने का प्रयास किया था कि उनकी भलाई छत्रसाल के साथ मिलकर रहने में ही है।- जै भुमियां हम मैं मिलि रैहैं, तेई संग फौज के है हैं। जे न लागि है संग हमारे, दोषु न लागै तिनके मारै। जे उमराव चौथ भरि दैहे, तेई अमुल देश को पैहे। जिनमें ऐंड़ युद्ध की पावौ, तिन पै उमंग अस्त्र अजमावौं।[7] छत्रसाल को यशस्वी शासक के रूप में अपार ख्याति प्राप्त हुई थी। छत्रसाल प्रजावत्सल थे। प्रजा के हितों को ध्यान में रखना, प्रजा को प्रसन्न रखना छत्रसाल के मुख्य ध्येयों में सम्मिलित कार्य थे। नीति व्यवस्था पर आधारित शासन को वे राज्य की स्थिरता और दृढ़ता के लिए अति आवष्यक मानते थे। - रैयत सब राजी रहै, ताजी रहै सिपाहि।/ छत्रसाल तेहि राज कौ, बार न बांकौं जाहि।'[8] छत्रसाल के व्यक्तित्व में मानवीय गुणों की प्रचुरता थी। राज्य करते हुए भी वे राजनीति में अनीति के दखल के विरोधी थे। किसी भी तरह के अन्याय अत्याचार को वे सहन नहीं करते थे।- तासौं राजनीति में अनीति कहों कौन करै,/ छत्रसाल भाखतु है वेदन को गायवौ।/जो पै कोउनिबल पै सबल जनावै जोरि, ताकै मद तोरि आपु करै जन भायवौ।/मानियो रे मनुज विचार उर आनि औरे, जानि औरे गजब गरीब को सतायवौ।[9]

छत्रसाल के व्यक्तित्व में स्वाभिमान, साहस और दया का अद्भुत मेल था। वे स्वयं की भांति अपनी प्रजा को भी इन गुणों से संस्कारित होते देखना चाहते थे। स्वाभिमान और साहस छोड़ कर जीवन जीने को, छत्रसाल कलंकित जीवन के रूप में देखते थे। - लाख घटै कुल षाखत छांडिये, वस्त्र फटै प्रभु औरहुं दैहे।/द्रव्य घटै घटता नहिं कीजिये।/भूपछता जल रासिकौ पैरिबो, कोनहूं बेर किनारे लगै हैं।/हिम्मत छोड़ते किम्मत जायगी, जायगो काल कलंक न जैहें। -10 छत्रसाल की कृतज्ञता और दानशीलता बुंदेलखंड में आज भी चर्चित है। कहते हैं एक बार छत्रसाल शिकार करने के लिए जंगल गए थे। जब वे थक गए तो एक पेड़ के नीचे विश्राम करने लगे, उन्हें नींद लग गई। वहां से भेड़ें चारतें हुए गुजरने वाले एक वृद्ध गडरिया लल्लू ने देखा कि एक नाग उस सोये हुए व्यक्ति के मुख पर फन से छांह कर रहा खड़ा है। जागने पर गड़रिया ने छत्रसाल को वह घटना बताई और कहा कि यह शुभ संकेत है। आप राजा बनोगे। कालान्तर में छत्रसाल राजा बने तब उन्होंने कृतज्ञता से उस वृद्ध गडरिया के पुत्र मोहन गडरिया को जागीर प्रदान की और उसे अपने तोपखाने का संचालक नियुक्त किया था।[10] अपने सचिव और मित्र कवि गोरेलाल की कार्यशैली, विष्वास और राज्य के प्रति अखंड निष्ठा से प्रसन्न हो कर छत्रसाल ने उन्हें पांच गांव ससम्मान प्रदान किए थे।

राज्य की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर हाथ में तलवार उठाने वाले छत्रसाल मूलतः कवि हृदय थे। राज्य कार्य से मिले अवकाश के क्षणों में रचनाएं करना उन्हें प्रिय था। इनकी रचनाओं में छत्रसाल, नीतिमंजरी, महाराजा छत्रसाल जू काव्य विशेषतया प्रसिद्ध हुए। छत्रसाल का कविता काल सं0 1734 से 1788 तक माना जाता है। इन्होंने सामान्य बोलचाल और बुंदेली में भक्ति और नीति रस से परिपूर्ण कविताएं रचीं। पं0 गौरी शंकर द्विवेदी के अनुसार छत्रसाल की अन्य रचनाएं थीं - श्री राधाकृष्ण पचीसी, कृष्णावतार के कवित्त, रामावतार के कवित्त, रामध्वजाष्टक, हनुमान पच्चीसी। छत्रसाल ने अपने काव्य में नीति, वीरता, मर्यादा जनहित को विभिन्न प्रकार से अभिव्यक्ति दी। इनके काव्य में उपमा, श्लेष अलंकारों कवित्त, सवैया, दोहा, कुंडलियां का सुंदर प्रयोग हुआ है। कवि मन छत्रसाल ने न केवल स्वयं रचनाएं कीं वरन् साहित्य सृजन में रुचि रखने वालों को भी प्रोत्साहित एवं सम्मानित किया था। उनके दरबार में चुनिंदा 82 कवि हमेशा छत्रसाल को अपनी रचनाओं से सतर्क बनाए रखते थे। ये कवि छत्रसाल के साथ हमेशा रहते थे और " याद है तो आबाद है, भूल गया तो बर्बाद है।" की लोकोक्ति को सार्थक करते थे। इन कवियों के प्रति छत्रसाल के मन में विशेष सम्मान था जो उनकी इन पंक्तियों से व्यक्त होता है - आवत आए कृपा करिके, छत्रसाल कहै उठ आदर कीजै। सारद कंठ बसै जिनके, तिनके ढिग बैठ सुधारस पीजै।[11] महाकवि भूषण शिवाजी के सान्निध्य से बुंदेलखंड में छत्रसाल के पास आये तब छत्रसाल हाथी, पालकी, डंका और निशान ले कर नंगे पांव महाकवि भूषण की अगवानी करने आये थे और उनकी पालकी को कंधा लगाया था।इस सम्मान से अभिभूत हो भूषण कवि ने कहा था - और राव राजा एक मन में न ल्याउं अब।/ साहू को सराहौं कै सराहों छत्रसाल को।।[12]

वस्तुतः छत्रसाल बुंदेलखंड के जन -मन में बसे राजा थे। छत्रसाल ने अपनी विशिष्टताओं से और अपनी समृद्ध लोकव्यवहारी दृष्टि से राज्य और प्रजा के बीच एक ऐसे पुल का कार्य किया जिससे वे दोनों के बीच संपर्क बनाने में सफल हो सके। एक वीर, अपराजेय लोक रक्षक के रूप में छत्रसाल की लोकव्याप्ति असीम है।

संदर्भ सूची -

1- मध्यप्रदेश संदेश, सं0 अरविन्द चतुर्वेदी, अंक 7, 1989, जनसंपर्क संचालनालय भोपाल। पृष्ठ -11।
2- वही पृष्ठ- ।
3- बुंदेली काव्य परंपरा भाग 1, प्रो0 बलभद्र तिवारी, बुंदेली पीठ, सागर, पृ0161।
4 - वही। पृ0 162।
5- वही ।पृ0 158।
6- वही160।
7- वही पृ0 160।
8- म0 प्र0 संदेश पृ0 11।
9- बुंदेली काव्य परंपरा भाग 1 पृ0 162।
10 -वही पृ0 163।
11- वही पृ0 162।
12 -म0 प्र0 संदेश पृ0 12।

- शास० कन्या महाविद्यालय, बीना
मो.9165568909

फागोत्सव : बुन्देलखण्ड के विशेष सन्दर्भ में

- डॉ. सरोज गुप्ता

विन्ध्याचल की श्रृंखलाबद्ध उपत्यकाएँ, सघन-वन-कुंज, सर-सरिताएँ और कल- निनाद करते झरने आदि सब ऐसे उपक्रम हैं जिनसे प्रभावित होकर मानव स्वत: ही आनन्द विभोर हो जाता है। इस प्रदेश में प्राकृतिक कवित्व गुण प्रदान करने की बलवती क्षमता विद्यमान है। बुन्देलखण्ड में फागों की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। बसन्तोत्सव महिनों चला करता था। फाग-गीत, फागुन का महिना और रंग-गुलाल जनता के उल्लास का प्रतीक बनकर सौन्दर्य का आत्मिक उल्लास और आह्लाद के शिवतत्व के रूप में मानवीय चेतना का उज्ज्वल वरदान बना। बुन्देलखण्ड के दो प्रसिद्ध कवि पद्माकर और ईसुरी ने आनन्द-उल्लास के सहज चित्रों, फाग की मस्ती, वासंती अल्हड़ता, सौन्दर्य परक हावभाव चेष्टाओं के साथ आनुप्रासिक छटाओं को बिखेरने में वैशिष्ट्य प्राप्त किया। भाव-व्यंजना, संवेदना-सम्प्रक्ति और कथा-शिल्प की बारीकियाँ इन कवियों को उत्कर्ष का शिखर प्रदान करती हैं।

पद्माकर प्रकृति की रमणीयता के वर्णन के लिये प्रख्यात हैं। उनके षड्ऋतु वर्णन में बसन्त और होली के कवित्त सम्पूर्ण ऋतुओं पर हावी हैं।'वनन में बागन में बगरो बसन्त हैं' तथा 'नैन नचाय कही मुसकाय, लला फिर आइयो खेलन होरी' -उदाहरण द्वारा कृष्ण को प्रेमरस में डुबो कर ऐसा लगता है कि जो पद्माकर सागर में जन्मे उन्होंने रस-सागर ही तरंगायित कर दिया।

फाग के भीर अभीरन ते गहि, गोविन्द ले गई भीतर गोरी,
भायी करी मन की पद्माकर, ऊपर डारी अबीर की झोरी।
छीन पितम्बर कम्मर ते सु, लगा दई मीड़ि कपोलन रोरी,
नैन नचाय कही मुस्काय, लला कब आइयो खेलन होरी।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद जी कहते हैं कि होली पर बहुतों ने लिखा है पर हिन्दी में इसका जोड़ नहीं मिलता। फाग का खेल, भीड़ में से गोरी का गोविन्द को पकड़कर ले जाना और उनका अबीर उन्हीं के ऊपर उड़ेल देना, अद्भुत वर्णन है। 'गोरी के रंग भीजि गए संवारे, सांवरे के रंग भीजि गई गोरी', जैसी पंक्तियाँ अपनी अर्थवत्ता में गहरी व्यंजना छिपाये है जो लाजबाब है। इसी तरह 'प्रेम पयोनिधि में धँसि के, हँसि के कढ़िवौ हँसी खेल नहीं', जैसी पंक्तियाँ अरसिक को भी रसिक बना देती हैं। पद्माकर जी द्वारा वर्णित होली व बसन्त के कवित्त कल्पना मात्र नहीं हैं। प्राचीन काल में मदनोत्सव, वसन्तोत्सव बड़े ही उल्लास से मनाये जाते थे। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन करके जो वर्णन किया है उसका सारांश इसप्रकार है - मदनोत्सव में उद्यान यात्राओं और वनयात्राओं की धूम मची है। अनेक सुसंस्कृत मंडलियाँ, अन्त:पुर की गृहदेवियाँ उद्यानों में कहीं पहेलियाँ, आख्यायिका, समस्यापूर्ति कर रहे हैं। सैंमर के पेड़ के निकट लुका-छिपी का खेल हो रहा है जिसे 'क्रीडैक शाल्मली' नाम से पुकारते हैं। एक विनोद का नाम है -'उदकक्ष्वेदिका' यानी बॉस की पिचकारी में सुगन्धित रंग भर कर अपने प्रियजनों पर फेंकना। राजप्रासादों, भवनों में निरन्तर फब्वारें चल रहे हैं। दिशायें अबीर से रंगीन हो गयी हैं। अन्त:पुर की रसिकायें, परिचारिकायें हाथ में आम्र मंजरी लिए द्विपदी गीत गाते हुए नाच रही हैं। नगर के स्त्री-पुरुषों द्वारा मदनोद्यान में भगवान कामदेव की पूजा हो रही है। लोग अपनी इच्छा के अनुसार फूल चुन रहे हैं। अशोक-वृक्ष के नीचे मिट्टी का कलश स्थापित कर, सफेद चावल से भर कर रति-कामदेव की पूजा की जा रही है। कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में बसन्त व फागोत्सव वन-उपवन व सम्पूर्ण ऋतु के स्वाभाविक विकास का महोत्सव है। इससमय प्रकृति आत्मदान हेतु आनन्दित हो वृक्ष, लता, पुष्पों द्वारा पागल हो उठती है। बसन्त के गूढ़ रससंचार से धरा विकसित तरू, लता, पुष्प, पल्लव, आदि से क्या मनुष्य जाति का कोई सम्बन्ध नहीं है? जीवन का अर्थ सिर्फहोने में नहीं, प्रेम में होने में ही रहा है। प्रकृति हमें प्रेम करना सिखाती है। प्रेम करने की सामर्थ्य मानवजीवन में घटित होने वाली घटनाओं में न सिर्फचमत्कारी घटना मानी गयी हैं वरन् जीवन को अर्थ और चरितार्थ करने की शक्ति भी इसी से मिली है। श्री अरविन्द ने कहीं लिखा है- कालिदास के समय भारतीय मनीषा आध्यात्मिक अनुभवों से बाहर आकर इन्द्रियों के विषयों की अधिकाधिक खोज कर रही थी। मुक्ति का रास्ता विराग में नहीं राग में है, विदेह में नहीं देह में है-देह के श्रृंगार में है। काव्य में देह की उपस्थिति से सामान्यीकृत भावना विशिष्ट हो जाती है, प्रकृति बहुवर्णी और बहुआयामी होकर निरन्तर विस्तारित होती चली जाती है। पद्माकर की तरह ईसुरी भी प्रकृति के कवि रहे हैं उनकी फागों में प्रेम, सौन्दर्य, श्रृंगार के ढेरों उदाहरण मिल जायेगें। ईसुरी बुन्देलखण्ड के कण्ठ-कण्ठ में विराजित कवि हैं। उनकी फागों को गाँव-गाँव में ग्रामवासी तो गाते ही हैं, स्वर-ताल में गाने वाले गवैये भी उनका उपयोग करते हुए नाचते, झूमते आनन्द मग्न होते हैं।

अब रित आई बसन्त बहारन, पान-फूल-फल डारन।
हारन, हद्द-पहारन-पारन, धाम-धवल-जल-धारन।

होली के रंगचित्रों का वर्णन करते हुए ईसुरी के रचना कौशल को बखूबी परखा जा सकता है-

व्रज में खेलें फाग कनाई, राधे संग सुहाई।
चलत अबीर रंग केसर कौ, नभ अरुनाई छाई।
लाल-लाल व्रज लाल-लाल वन, बीथन कीच मचाई।
ईसुर नर-नारिन के मन में, अति आनंद सरसाई।
भींजी फिरै राधिका रंग में, मन मोहन के संग में।

इसप्रकार ईसुरी ने विशुद्ध बुन्देली भाषा में अपनी फागें गायी हैं। उनके द्वारा कृष्ण-राधिका के चरित्र वर्णनों के साथ ऋतुकाल, नखशिख वर्णन तथा प्रेम विषयक ऐसे चित्र उपस्थित किये हैं कि सुनकर रसिक का हृदय भाव विभोर हो उठता है। ईसुरी की फागें विविधविषयी हैं। आशा- निराशा, धर्म, अध्यात्म, दर्शन से ओतप्रोत हैं। मौलिकता के साथ-साथ उनमें भावों की प्रौढ़ता, सहजता व सरलता के साथ जन-जन के लिए उपयोगी व ग्राहय भी है।

बुन्देलखण्ड में पर्व व त्यौहार लोकजीवन के सच्चे साथी की भूमिका निभाते हैं। बुन्देली संस्कृति अपनी गहन सामाजिक सम्बद्धता के कारण उत्सव-धर्मिता का परिचय देने में सतत् सक्रिय है इन पर्वों में सत्य की विजय और असत्य की पराजय का निहितार्थ भी जुड़ा है जो मानवता की विशिष्ट सेवा के लिए समर्पित है।

- प्राध्यापक
शास० कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
सागर (म.प्र.)
मों० 9425693570

गाथाओं का धनी है बुन्देली लोकसाहित्य

-डॉ. सुश्री शरद सिंह

बुन्देली लोक साहित्य गद्य और पद्य दोनों विधाओं में धनी है। बुन्देली में सामान्य जनजीवन से जुड़े संदर्भों के काव्य के साथ ही लोक गाथाएं भी सदियों से कहीं-सुनी जा रही हैं। इनमें भारतीय इतिहास के महाकाव्य कहे जाने वाले रामायण एवं महाभारत काल की कथाओं को भी गाथाओं के रूप में गाया जाता है। वस्तुतः लोकगाथा अंग्रेजी के 'बैलेड' शब्द से अभिप्राय रखता है जिसकी व्युत्पत्ति लैटिन के 'वेप्लेर' शब्द हुई है जिसका अर्थ है 'नृत्य करना'। कालांतर में इसका प्रयोग केवल लोकगाथाओं के लिए किया जाने लगा। जी.एन. किटरेज ने लोकगाथा को कथात्मक गीत अथवा गीतकथा कहा है। फ्रैंक सिजविक लोकगाथा को सरल वर्णनात्मक गीत मानते हैं जो लोकमात्र की संपत्ति होती है और जिसका प्रसार मौखिक रूप से होता है। प्रो.एफबी. गुमेर के अनुसार लोकगाथा गाने के लिए लिखी गई ऐसी कविता है जो सामग्री की दृष्टि से प्रायः व्यक्तिशून्य रहती है और संभवतः उद्भव की दृष्टि से सामुदायिक नृत्यों से संबद्ध रहती है पर इसमें मौखिक परंपरा ही प्रधान है। डा. मेर लोकगाथा को छोटे छोटे पदों में रची कविता मानते हैं जिसमें कोई लोकप्रिय कथा विस्तार से कही गई हो।

लोकगाथाओं में गीतात्मकता अनिवार्य तत्व हैं। कथानक प्रभावशाली और विस्तृत होता है। ये समाज के किसी वर्ग और व्यक्ति विशेष से संबद्ध नहीं हैं अपितु, संपूर्ण समाज की धरोहर होती हैं। इनका उद्भव जनसाधारण की मौखिक परंपरा से होता है। डा.कृष्णदेव उपाध्याय लोकगाथाओं का वर्गीकरण करते हुए इन्हें तीन श्रेणियों में बांटा है- 1.प्रेमकथात्मक गाथा 2. वीरकथात्मक गाथा तथा 3.रोमांच कथात्मक गाथा।

बुन्देलखण्ड में जगनिक के बाद विष्णुदास ने लगभग 14 वीं सदी में महाभारत कथा और रामायण कथा लिखी। विष्णुदास की महाभारत कथा 1435 ई. माना गया है। यह गाथा शैली में दोहा, सोरठा, चौपाई तथा छंदों से युक्त है। बुन्देली की प्रसिद्ध महाभारतकाल संदर्भित लोकगाथाएं हैं- बैरायठा, कृष्ण-सुदामा, द्रौपदी चीरहरण तथा मेघासुर दानव आदि। इनके अतिरिक्त राजा जगदेव की लोकगाथा में भी पाण्डवों की चर्चा का समावेश है। महाभारत कालीन चरित्रों से जुड़ी गाथाओं का इस प्रकार बुन्देलखण्ड में रूचिपूर्वक गाया जाना इस बात का द्योतक है कि बुन्देली जन प्रकृति से जितने वीर होते हैं तथा मानवीय संबंधों के आकलन को लेकर उतने ही संवेदनशील होते हैं। उन्हें व्यक्ति के अच्छे अथवा बुरे होने की परख होती है तथा साहसी, वीर, उदार दानी और सच्चा व्यक्ति अपना आदर्श प्रतीत होता है। इसीलिए जन-जन में गाए जाने वाली बैरायठा लोकगाथा में 'महाभारत' महाकाव्य की लगभग सम्पूर्ण कथा को जन-परिवेश में प्रस्तुत किया गया है। जैसे, धृतराष्ट्र और गांधारी के विवाह के प्रसंग को इन शब्दों में प्रस्तुत किया गया है-

जब आ गई है चिठिया महाराज रे कै,
जब गंधार में हो रये हैं ब्याव रे कै
जब गांधारी को हुइये नौने ब्याव रे कै,
जब खबरें तो मिल गईं महराज रे कै
जब सज गए गंगंव महराज रे कै,
जब फौजें कटीली सजवांय रे कै
जब गांधार की पकरी उनने गैल रे कै
जब गांधार तो पौंचे जांय रे कै
जब गांधारी के हो रये नौने ब्याव रे कै
जब देखे समर महराज रे कै

इसी गाथा में द्यूतक्रीड़ा तथा चीर-हरण का अत्यंत दृश्यात्मक वर्णन मिलता है-

जब सकुनी ने डारे दाव रे कै,
जब पर गये अठारा दाव रे कै
फिर हारे धरम और राज रे कै
जब बोले जरजोधन महराज रे कै.......
जब जूटो तो पकरो ओने आज रे कै
जब रानी खों लै गव अपने साथ रे कै
जब आ गई सभा के नोने बीच रे कै
जब सबरो से करी है गुहार रे कै
जब कोऊ खों ने आई लाज रे कै........
जब भरी कचेरो महराज रे कै
जब कोनऊ ने करे सहाय रे कै
जब पांच पती मौजूद रे कै
जब हर से लगा दई ओने टेर रे कै
जब कैसे तो रये हो नोने सोय रे कै ......

इस विवरण में जिन तथ्यों को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है वे ध्यान देने योग्य हैं कि जब व्यक्ति अनुचित कर्म करने लगता है तो 'धरम' और 'राज' दोनों गंवा बैठता है। इसी प्रकार जब 'पांच पती' अर्थात् सगे-संबंधी भी रक्षा नहीं कर पाते हैं उस समय 'हरि' अर्थात् ईश्वर सहायता करता है। यह मानव मन की वह अवस्था है जो राजनीतिक अस्थिरता एवं असुरक्षा के दौर में प्रभावी हो उठती है। यही भाव 'चीरहरण' लोग गाथा में मिलते हैं। दुश्शासन द्वारा चीरहरण किए जाने पर द्रौपदी पतियों द्वारा निर्धारित नियति नियति को चुपचाप स्वीकार करने के बदले सहायता के लिए कृष्ण को पुकारती है-

हे श्याम मेरी सुध लइयो, रे प्रभु मोरी लाज बचइयो रे
शकुनी दुर्योधन ने मिल के, कपट के प्रांसे डारे
जुआ खेल के पति हमारे, राजपाट सब हारे
मोरी बिगड़ी आज बनइयो, रे प्रभु मोरी लाज बचइयो रे

इसी गाथा में द्रौपदी की पुकार सुन कर श्री कृष्ण के आने का वर्णन भी कम महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि इसमें इस बात का ध्यान रखा गया है कि श्री कृष्ण द्रौपदी की लाज बचाने पहुंचे तो किन्तु किस साधन अथवा किस वाहन से?

बेगी चलो गरुड़ मोरे भाई, कारज बिगड़ो जाई
नौ सौ कोस हस्तिनापुर बसो है, जल्दी देव पहुंचाई,

बेगी चलो .....

नौ गज चलत हवा से आगें, दस गज की ऊंचाई
तीन लोक को भार जो लावे, और चाल प्रभु कहां से आई,

बेगी चलो ......

गरुड़ पर सवार हो कर श्री कृष्ण सभा में पहुंचे जहां द्रौपदी के पांचों पति मूक दर्शक बने बैठे थे। यहां पतियों के मौन बैठे रहने पर विशेष कटाक्ष है क्योंकि बुंदेली समाज में स्त्रियों को सदा सम्मान की दृष्टि से देखा गया है, भला ऐसे में पांच पति और वे भी मौन तमाशबीन बने रहें, यह गाथाकार के लिए असह्य रहा -

पांचई पति मौन हो बैठे, अर्जुन भीम सही
हरि से द्रौपति टेर करी
जब नन्दलाल आये सभा में, बढ़ गओ चीर सही
खेंचत चीर दुसासन हारे, चीर पे भीर भरी

बुन्देली लोकगाथाओं में महाभारत के विविध प्रसंगों के साथ ही विविध पात्रों एवं चरित्रों को भी स्थान दिया गया है। 'कृष्ण सुदामा' लोकगाथा में कृष्ण और सुदामा की मित्रता का सुन्दर वर्णन है, साथ ही 'मिसरानी' के बहाने घरेलू समस्याओं को भी मुखर किया गया है-

दोई पढ़ें इक गुरुकुल में, नन्द नन्दन और सुदामा
ईंधन की हुई महा तबाही, घर में से मिसरानी आई
जल्दी लकड़ी दो मंगवाई, अधकचरी है दाल
भोजन खों हो गई शामा, नन्द नन्दन और सुदामा

जब गुरुकुल के लिए ईंधन हेतु लकड़ियां लाने कृष्ण और सुदामा जंगल में गए उसी समय दोनों की मित्रता का अनुकरणीय भविष्य तय हो गया।

चने चबा तेने सब लीने, हमको तनक भी न दीने
पिटबे के लांछन कर लीने
यह सोच किया है कान्हा, नन्द नन्दन और सुदामा।

वर्षों बाद अपनी पत्नी के कहने पर अपने मित्र से मदद मांगने पहुंचे सकुचाए हुए सुदामा की आवभगत मित्र कृष्ण ने की। अपने हाथों से सुदामा के चरण धोए तथा सिंहासन बैठने को दिया। मित्रा कृष्ण की सम्पन्नता देखकर सुदामा भेंट में लाए चावल देने का साहस नहीं कर पा रहे थे जिसे कृष्ण ने ताड़ लिया।

कासी दास श्रीकृष्ण कांख से, तंदुल खेंच चबावे
सुदामा जी के तंदुल मोहन खावें
तंदुल खाय मुट्ठी भर के, मन में बहुत सराहवें
कंचन महल बनाय मित्र के, संपति अमित भराहवें
सुदामा जी के तंदुल मोहन खावें

'मेघासुर' लोकगाथा में पांडवों के साहस एवं कौशल का वर्णन मिलता है। मेघासुर संग्राम से पूर्व देवी भवानी पांडवों को एक मढ़िया बनाने का निर्देश देती हैं-

बोले भुवानी सुनो पांडवा, ले के गजा तुम जाय
गजा लाये जब अर्जुन डगरे, धरनी झोंका खाय
भरे समुंद समतल करे माया, मढ़ के करे विस्तार
कै गज की माई नींव डराऊं, कै गज के विस्तार
नौ गज की माई नींव डराओ, दस गज के विस्तार
को तेरी ईंट जमाई जालपा, को देवे ईट गिलाव
अर्जुन तेरी ईट जमाई जालपा, भिम्मा देत गिलाव
वन मढ़िया समतल भई, माया मढ़ के करे विस्तार
बैठो-बैठो मोरी आदभुवानी, सोने छत्र धराय
बैठ के पाई आदभुवानी, मेघ भये तैयार

'राजा जगदेव' लोकगाथा में भी पाण्डवों का उल्लेख आया है। यह उल्लेख प्रश्नों के रूप में है। किसने पृथ्वी को रचा? किसने संसार को रचा? किसने पाण्डवों को बनाया? पाण्डवों को किस उद्देश्य से बनाया गया? इन प्रश्नों का उत्तर भी इन्हीं के साथ दिया गया है कि देवी ने पाण्डवों को बनाया। पृथ्वी से अन्याय और अधर्म का विनाश करने के लिए पाण्डवों की रचना की गई।

कौना रची पिरथवी रे दुनियां संसार,
कौना रचे पांडवां रे अपने दरबार।।
राजा जगत के मामले हो मां ....
ब्रह्मा रची पिथरवी रे दुनिया संसार
दैवी रचे पंडवां के अपने दरबार।।
राजा जगत के मामले हो मां ....
काहे रची पिरथवी रे दुनियां संसार,
काहे रचे पंडवां रे अपने दरबार ।।
राजा जगत के मामले हो मां ....
बसबे खों रची पिरथवी रे दुनियां संसार,
रन खों रचे पंडवा रे अपने दरबार ।।
राजा जगत के मामले हो मां ....

'कारसदेव' और 'धर्मासांवरी' नामक लोकगाथाओं का संबंध 12 वीं-13 वीं शताब्दी से जोड़ा जाता है। कारसेदव गाथा अधिकतर पशुपालकों में प्रचलित है। इस गाथा के आरम्भ में 'पृथवीराज' नाम आता है जिसे अधिकांश विद्वान पृथ्वीराज चौहान तृतीय मानते हैं। यद्यपि यह पूर्णतः प्रमाणित नहीं है। बुंदेलखण्ड के एक पशुपालक की बेटी ऐलादी पर गढ़ाछौर का राजा मुग्ध हो जाता है और वह ऐलादी के पिता से ऐलादी को मांगता है। साथ ही राजा पिता को धमकी भी देता है कि यदि उसने ऐलादी को नहीं भेजा तो वह बलपूर्वक उठा ले जाएगा। ऐलादी का पिता राजा की मांग ठुकरा देता है। बदले में उसे अपनी घर छोड़ कर भटकना पड़ता है। ऐलादी दुखी हो कर शिव की तपस्या करती है और शिव उसकी तपस्या से प्रसन्न हो कर कारसदेव के रूप में प्रकट होते हैं। ऐलादी और उसके पिता को न्याय दिलाने के लिए कारसदेव उस अन्यायी और अभिमानी राजा से युद्ध करते हैं। जिस समय यह भीषण युद्ध होता है उस समय......

काड़ो खाड़ौ बिजुरिया ऐसौ, जैसे जीभ काढ़े करिया नाग
दोऊ ओर से बज रये खांड़े, बिजुरी चमक-चमक बुझ जाय
कारस गरजे जैसे घन गरजो, खांड़ों गिरो जैसे गाज हो ओ.....
राजा धरन में ऐसे गिर गओ, जैसे गिरो टूटी डार
बारा बरस कौ कारस खेलै, लैके नगन तलवार
झांझ के मिट गए दुख अपार, हो ओ ओ.....

'धर्मासांवरी' लोकगाथा में एक न्यायप्रिय चिड़िया की कथा है। इस कथा में स्त्री के अधिकारों के पक्ष को जिस तर्कसंगत दृढ़ता से उठाया गया है वह अद्वितीय है। इस कथा के अनुसार एक चिड़िया एक वृक्ष पर घोंसला बना कर अपने अंडे रखती और सेती है।

एक दिन जंगल में आग लग जाती है। चिड़वा चिड़िया से भाग चलने को कहता है लेकिन चिड़िया अपने अंडो को छोड़ कर नहीं जाती है। एक मां की इस ममता को देख कर इन्द्र प्रसन्न हो जाते हैं और पानी बरसा कर आग बुझा देते हैं। कुछ दिन बाद चिड़वा लौट कर आता है और अंडो पर अपना अधिकार जमाने लगता है। चिड़िया और चिड़वे का या विवाद राजा के दरबार तक पहुंचता है। राजा मामले के मर्म को समझे बिना फैसला सुना देता है कि यदि अंडो से चिड़ियां निकलें तो वे मां चिड़िया को मिलें और जो अंडों से चिड़िवे निकलें तो पिता चिड़वे को मिलें। दुर्योगवश अंडों से चिड़वे ही चिड़वे निकलते हैं और एक मां को अपने बच्चों से वंचित होना पड़ता है। चिड़िया राजा के इस आदेश को एक ताम्रपत्र पर लिखवा लेती है और जीवन त्याग देती है।

अगले जन्म में चिड़िया एक बढ़ई के घर पैदा होती है और अच्छे नस्ल का एक घोड़ा खरीदती है। फिर वह घोड़े को लेकर राजा के अस्तबल में जाती है जहां उसके घोड़े से अस्तबल की घोड़ियां गर्भवती हो जाती हैं। समय आने पर घोड़ियां शिशु घोड़ों को जन्म देती हैं। तब चिड़िया उन शिशुघोड़ों को अपने साथ ले जाने लगती है। राजा इस पर आपत्ति करता है तो चिड़िया वही ताम्रपत्र राजा को दिखाती है जो उसने पिछले जन्म में लिखवा लिया था। जिसके अनुसार राजा ने ही फैसला सुनाया था कि नर संतान पर नर का अधिकार होता है। चिड़िया की बात सुन कर राजा को अपनी भूल का अहसास होता है। इस कथा में चिड़िया सात अलग-अलग जन्म लेती है और न्याय के लिए संघर्ष करती हुई अंत में विजय प्राप्त करती है।

एक और लोकगाथा है 'सारंगा-सदाब्रज'। इस गाथा में सारंगा नायिका है और सदाब्रज नायक। इस कथा में हंस-हंसिनी, गोरखनाथ से वरदान प्राप्त कर मनुष्य रूप में जन्म लेते हैं। हंस एक राजा के यहां सदाब्रज के रूप में और हंसिनी एक साहूकार के घरं सारंगा के रूप में जन्म लेती है। दोनों किशोरावस्था तक प्रगाढ़ प्रेम में निमग्न रहते हैं। यही से प्रेम में विरह और अन्य प्रसंगों की शुरुआत होती है। अन्याय के विरुद्ध न्याय का संघर्ष हमेशा चलता रहता है और अंततः न्याय की ही विजय होती है। इसी न्याय-अन्याय को ले कर लोकगाथा 'परसा' में भी वाद-विवाद और युद्ध के विवरण लिते हैं –

नाय की चरचा नई से रे गई, परसा को सुनो हवाल
जो बैठो अपने मंडवा पै, मनमें करे विचार
सुरत लगा लई गोबर गांव की, धरमा पै पोंचो जाय
बोले परसा जा कहे, माई सुनो हमारी बात
आज्ञा दे दे तू जल्दी से, हम जायं बिराने राज
बोले धरमा जब समझावै, सुनो भनेजा आज
तुम चले जा बंगाल कौ, मामा को ले आय लिवाय
मामा तुमरे जभ ही आवै, बेई आज्ञा दे तुमाय
इतनी सुन के परसा बोले, माई कहीं ने माने आज
हम जेहें ओ बांगाले तोरी माने ने आधी रात
बोले धरमा जा कहे, मान भनेजा हमाई बात......

लोक गाथाएं लोक परम्पराओं के साथ चलती हैं। इनमें जन की आस्था, विश्वास और धारणाएं निहित होती हैं। लोग गाथाएं जन के चरित्र को समझने में मदद करती हैं। कुल मिला कर ये सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं चारित्रिक परम्पराओं का प्रतिबिम्ब होती हैं। भारतीय जनमानस को चरित्रों की विविधता से परिपूर्ण 'महाभारत' महाकाव्य 'रामायण' के बाद सबसे अधिक प्रभावित करता है। बुन्देली जनमानस इससे अलग नहीं है। अन्याय, दासता के विरुद्ध युद्धघोष करने वाले बुन्देलों के लिए महाभारतकालीन प्रसंगों का विशेष महत्व होना स्वाभाविक है। यदि मुग़लों अथवा अंग्रेजों के विरुद्ध बुन्देलों के संघर्ष का इतिहास पढ़ा जाए तो यही तथ्य सामने आता है कि शत्रुओं से बुन्देलों ने सदैव डट कर संघर्ष किया। ठीक उसी तरह जिस प्रकार पाण्डवों ने कौरवों का सामना किया था। अतः इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि ऐसे संघर्षपूर्ण अवसरों पर ये लोग गाथाएं आमजन में साहस का संचार करती रही होंगी। आज भी सुदूर ग्रामीण अंचलों में ये लोक गाथाएं गाई जाती हैं।

– एम-111,शांतिविहार,रजाखेड़ी, सागर (म.प्र.) 470004
मोबाईल: 7987723900, 9425192542

22वें बुन्देली उत्सव में सम्मानित

1– **डॉ. सुरेश पराग**, देवेन्द्रनगर –
राव बहादुर सिंह बुंदेला स्मृति सम्मान
(बुन्देली साहित्य सर्जना हेतु)

2. **डॉ. वीरेन्द्र निर्झर**, महोबा –
राव बहादुर सिंह बुंदेला स्मृति सम्मान
(बुन्देली साहित्य समीक्षा तथा संपादन हेतु)

3. **डॉ. सुरेन्द्र दुबे**, कुलपति झाँसी–
राव बहादुर सिंह बुन्देला स्मृति सम्मान
(बुन्देली लोक संस्कृति व लोककलाओं के संवर्धन में उत्कृष्ट योगदान हेतु)

4. **डॉ. सुधा चौहान**, इन्दौर –
ओरछा दीवान प्रतिपाल सिंह स्मृति सम्मान
(बुन्देलखण्ड के इतिहास में उल्लेखनीय कार्य हेतु)

5. **डॉ. रामसहाय पाण्डेय**, सागर –
डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त स्मृति सम्मान
(लोक कलाकार के रूप में राई नृत्य हेतु)

6. **श्री जगदीश गंगेले**, ढड़ारी –
गौरिहार नरेश प्रताप सिंह स्मृति सम्मान
(बुन्देली उत्सव में सक्रिय व उत्कृष्ट योगदान हेतु)

7 **श्री देवीशरण ग्रामीण**, नागौद –
श्री हरगोविन्द हेमल स्मृति सम्मान
(बघेली लोक साहित्य में उत्कृष्ट रचनात्मकता हेतु)

8 **श्री वेदप्रकाश चतुर्वेदी**, छतरपुर –
श्री हरिराम मिश्र स्मृति सम्मान
(प्रिन्ट मीडिया में योगदान हेतु)

9 **श्री नरेन्द्र सिंह परमार**, छतरपुर –
श्री हरिराम मिश्र स्मृति सम्मान
(इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में योगदान हेतु)

बुन्देली विकास संस्थान द्वारा प्रत्येक सम्मान में 3100/- की राशि, सम्मान पत्र तथा शाल-श्रीफल से सम्मानित किया जाता है।

अँगना में बरसत जुन्हैया

- आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल

दिवारी के आठ दिना बाद आधो चंदा आसमान में चिल रओ है। ठाकुर की बारी के फूलन की नौनी बास महक रई है और मन कछु अनमनों हो रओ है। दूर से धुन आ रई है -

" मोरे अँगना में बसरत जुन्हैया
यार तुम हेरत काय नईया।"

पांछे मुरक के देखो, तो उपर दिखाने बाज जैसे चमकत-दमकत तीन तरा। जौ है "सिरबन कुमार" की बँहगी। ई में बे अपने मात-पिता कों तीरथ कराउत ते। हमें तो सुनने ते बेई मीठे बोल सो बे नई सुना परे। मन मार के भीतर लौटे, ओड़ के पर रये।

मन है बड़ो विचित्र। मन चाहे तो बांध देवे, मन चाहे तो छोड़ देवे, मन आंगे दूर-दूर लो चलो जाये, मन पांछे घूम जाये। पांच पचास वर्ष की बातन को ऐसे दिखा देवे जैसे वे अबे आज की होंय। और बे बाते जो कभउं नई भईं, उनकों रचके आंखन के सामने ठांड़ों कर देत। मन नईया काल के बस में, मन नईया काउ के बस में। बड़ी महमा है मन की। आंखे मिची और मन ने अपनो स्वांग भरो।

सत्तर-बहत्तर साल पेंले, अपने गाँव के बड़े ताल पे हम ठांडे है। "बैजनाथ" कक्का दिवारी गा रये है-

" भैंस बियानी ओरछा, पड़ा होंषगांबाद।
लगबैया है कालपी, चपिया रेबा पार"।।

"भैंस ओरछा में बियानी है। पड़ा होंशगांबाद नो है। भैंस को दूध निकारवे बारो लगबैया कालपी में है और चपिया नर्मदा जू के बा पार है।" जा कठिन बात है जा को होने है समाधान। जानकारन क मत जा में अलग-अलग है। कछु कत है के जा में अपने बुन्देलखण्ड की हद् बताई गई है। और कछु दूसरे जन कहत है के दिवारी सो दिवारी मतलब से का मतलब ?। मतलब है तो है एक दिवारी के खेल सें। ऐसई जितेक मों उतेक बांते, जितनी ढपली उतने ही राग। का है जो दिवारी को मतलब ? का है जाकों इसारो ? जो नई समझ पड़ो तो तब।

अब जो कछु-कछु समझ में आ रओ है ,जा पक्की सी उमर में तनक समाधान भओ है। सो मन को तनक चैन मिलो है। मन ने रचलई रचना और उड़न लगो है आकास में।

मन कह रओ है दिवारी गावे वारे कक्का पड़े गुने तो है नईया, सो का होत जा से ? कक्का है सूधे सांचे। कक्का में नेकउ छल छिद्दुर नईयां न नैकउ छिपाव् दुराव है। बैजनाथ कक्का ने जिंदगी भर छिरिया बुकरियां भेड़े और मिढ़लन की सेवा करी है। इनको रओ है अपने काम से काम, जो मिलो वा से करी राम-राम। सो ऐसे आदमी को का होने। ग्यानी महाविग्यानी मुनि जागवल्क (याज्ञयवल्क्य) महाराज ललकार के रये है- " सुनो बेटा बुकरिया की देह को साधारण ना जानो। बुकरिया बनी है तपस्या से। जा है अगिनमइ। प्रजापत महाराज ने जब जा सरिषटी बनाइ ती तब उनकी आँखन से तेज निकरो तो सो बा तेज से बनो है बुकरिया को सरीर। सब जानवरन को रूप है जा के भीतर। जा है देववानी को रूप-

वाचो ऽजम् (ष 7/5/2/6)
वाग्वा अजः (ष 7/5/2/21)
आग्नेयो वा अजः (ष 6/4/4/15)

तस्याक्षिभ्यामेव तेजो ऽ स्रवत सोऽजः पशुरभवद् धूमः (ष 12/7/1/2)

सो ऐसी है जा छिरिया बुकरिया। भेड़ सोउ कौनउ ऐसो वैसो पशु नईया। भेड़ साक्छात देवता है। सीधों सांचो देवता है भेड़। भेड़ धरती माता को रूप है। देवतन के महाराजा वरून देवता और देवतन के चतुर कारीगर तुष्टा देवता की परम प्यारी है भेड़-

"अविः वै नाम देवता ऋतेनास्ते परीवृता' (अथवा- 10/8/31)
वरूनी च त्वाष्ट्री च अविः (श 7/5/2/20)
इयं पृथिवी वा अविः इयम् (श 6/1/2/33)

सो ऐसी है जा भेड़। ऐसी छिरिया और भेड़न की सेवा करवे वारे कक्का बैजनाथ है। सो कक्का ने अनजाने करी है अगिन की सेवा। प्रजापत महाराज के तेज की उपासना और देव वानी के रूप की खुसामत। कक्का ने करी है धरती माता की सेवां देवतन की सेवा ।वरून महाराज की प्यारी भेड़न की सेवा। सो कक्का बैजनाथ को सरीर हो गवो है देवतन को घर। उनकी वानी देवबानी हो गई है। उनके सुर में ईसुर को सुर बज रवो है। हमावो मन सुन रओ और गुन रओ है।

ग्यानी जन बताउत है के सपनो, देखवेवारे के भीतर बैठे जीव के ग्यान को विकास है। सपनो ग्यान को फैलाव हैं।

खेज चल रओ तो सो अब परदा बदल गओ। परदा बदल गओ सो सीन बदल गओ।

बेतवन्ती के किनारे तुंगारत्र में बड़ी आवाजाही चल रइ है। चारउ तरफडंड कमण्डल धारी ऋषि मुनि दिखाई पर रये है। एक ऋषि ने कोनउ लरका से पूछ दओ- "महाराज इते का हो रओ है" ऋषि जू बताउन लगे है-

"सुनो बेटा, इते जो तुंगारत्र को वन है जा वन में "सारस्सुत" ऋषि ने दूसरे ऋषियन कों वेद पढ़ाये ते। कछु दिनन में उन ऋषियन को बे वेद बिसर गये। वेद है धरम की मूर। जर मूर मिट जाय तो धरम कैसे बचे ? सो अंगरा ऋषि जू के कुल-बन्स के एक ऋषि ने बड़ी विधी से ओंकार को उच्चारन करो सो उन ऋषियन को भूले बिसरे बे वेद सुमरन हो गये ते। सबने वेदन को ऊँचे सुर में पाठ करो सो बड़ो आनंद भओ। सबको इखट्टो सुर ईसुर नों पौचों । बृम्हा जू, नारायन महाराज ,भोले बाबा, अगिन देवता, वरुन देवता और सबई बड़े-बड़े देवता उते आ गये बृम्हा जू ने भिरगू ऋषि को आग्या दई" आज की खुषी सदा सवज्दा जा तुंगारत्र में बनी रहै। जा के लाने बेटा तुम और अंगरा ऋषि के कुल वंस के सब मिल जुल के एक बड़ो जग्ग इते करो"

बे देवता तो सब जा कहकें अपने ठोर को चले गये सो अब हो रओ है वो जग्ग। बेटा देखो बे ऊँचे आसन पे बैठे है भिरगू महाराज। उनके चरनन नों बैठे है अंगरा ऋषि के सोरा लरका। बड़ो अद्भुत है जो जग्ग जा में पूरो वेद को कुल-वंस एक संगे बिराजो है। दरसन करो इनके" (महा.वन. 85 अ.)।

ऋषि जू जा कहकें आंगे बड़ गये और हम देख रये है। हम उने देख रये है और उने सुन रये है। मंत्रन की धुन गुन रये है। काय से के

ओंकार को विधी से उच्चारण हो रओ है जो महानाद है। सबई धुनियन के उच्चारन की जर मूर है। जो उच्चारन सबको रस है, ऐसो रस जा की एक बूंद में सबरे वेद है। जा धुन को जो लेत है सहारो सो अभय, अजर, अमर लोक पा लेत है (प्रश्न 5/7) काय से ओंकार है पराविद्या। जा के गुण भेद के जानवे वारे रिखियन की भाषा जा गौरी है। हमाई तुमाई भाषा मे गौरी को मतलब भैंस होत है। जा भैंस की महिमा बेई भखान रहे है। बे के रये है के जा गौरी बरून देवता के लोक की है। बानी को जो मूल सरूप है महानाद। जो ओंकार है। वेद जो मानत है के सबद से संसार बनो है और सबद को मूल है ओंकार। सो जोई बानी को 'अव्यक्त' रूप वेद को बीज है। ई बीज को इसारो (प्रतीक) है भैंस। बड़ी महिमा है भैंस की। जाने जानी बा ने मानी और बखानी है।

ऋषि गित्समद गा रये है महावलवान भैसा ने विष्णु जू महाराज के हाथ से निचोरो गओ सोम को पियो है जैसो ऊने सोचो तो और विचारो तो। सो जा भैंसा के मन प्रान सबई पूरन रूप से सोमरस पी के तिरपत हो गये है–

"त्रिक द्रुकेषु महिषो यवाषिरं, तुविष्मस् तृपत् सोमम् अपिवत्
विष्णुनासुतं यथावषत्.................... (ऋ 2/22/1)

जा धुन आज लों भोपाल से लेंके साबरमती नौं गूज रई है, भोजपुर से, वेतवंती के किनारे से लेंके साबरमती के किनारे लों जा गित्समद ऋषि की धुन आज लों सुनाई दे रई है।

और सुनो जे वे ऋषि गा रये है। जो गर्ज परे के देवता और दानवन दौअन के गुरू रये हैं। इनको नाव है त्रिसिरा जू महाराज (त्रिसिरा)। इनके तीन सिर है और तीन मौ है। एक मौ से पिअत ते दूध, दूसरे से सोमरस और तीसरे से पिअत ते मदिरा– मतलब जे है के मानुस, देवता और राक्षस तीनौअन के गुन लेंते वे ज्ञानी समदरसी ऋषि जू। वे बता रये है के "भैसा है अगिन को रूप बा अगिन जो जल में पैदा होत है उतई बढ़त है और फिर बैल जैसी रम्हात है, ऊपर ऊंचे सूरज सो प्रकास करत है और धरनी के भीतर बई अगिन अपने रूप में धधंकत रत है। ऐसी अगिन को रूप है भैंसा, ज्ञान को स्वरूप है भैंसा, और प्रान को रूप है भैंसा, जो भैसा को रूप समझे वोइ जाने–

"प्र केतुना बृहता याति अगिन: आरोदसी वृषभे रो रवीति।
दिव: चिदंतां उपमा उपानट्, अपं उपस्थे महिषो ववधा।।"
(ऋ 10/8/1)

एक भ्रिगुवंस के महाराज ने तो भौतई साफ-साफ बात सुनाई है– जिनकी बुद्दि सुद्ध होत है बेई ग्यानी जा जानत है के भैंसा की वानी में देव वानी की परम जोत होत है, दूसरे नई जान सकत है–

"जानन्त: रूपं अकृपन्त विप्रा:, मृगस्य घोषं महिषस्य हि ग्मा"
(ऋ 10/123/4)

जा बात जानत ते ग्यानेसुर महाराज। सो उनने जा जमाने में भैंस के मौंसे बेद बुलवाये ते और बड़े बड़े पग्गड़धारी पडितन को सुनवाये ते। सो जोन तुमाई भैंस ओरछा में वियानी ती सो बा को मतलब अब तुमें समझ में आ गओ हुये" इत्तो कहके वे ऋषि महाराज सपने में अंतरध्यान हो गये।

अब हम समझ रये है भैंस कों और भैंस की वानी कौ। भैंस बियानी है ओरछा में। मतलब जो है ओरछा के तुंगारन्न में वेद वानी प्रगट भई है। तबई तों राम राजा सरकार साकेत छोड़ के ककरीली पथरीली जा भूमि में पधारे है। इमरावती से ज्यादा सुंदर अजुद्या सी नगरी, सतवंती सरजू जू को किनारो छोड़कें रानी गनेस कुंवर के संगे बे इते चले आये है। और कलयुगी गंगा बेतवंती के तीर पे बे महाराज रामराजा जू ऐसे आये के इतई रम गये। जो कछु जा भूमि को पुरानो पुन्य हतो। काय से इते भैंस बियानी ती यानी वेद वानी प्रगटी ती और इतें भूले बिसरे वेदन को दूसरो जनम भओ तो।

मन महाराज कों जांसे जा बात को समाधान मिलो सो उनने लगा दई कुलांच और वे उड़न लगे। ग्यानी जन कहत है के मन अद्भुत है, मन दिव्य ज्योत है। मन देवता है और मन राक्षस है। तरह-तरह के रूप धर लेत है मन। और मन को कौनउ अपनो रूप नईयां। मन चाहे तो भगवान से भेंट करा दें और मन चाहे तो नरक में ढकेल दे। सो मन हलको भओ, उठो ऊपर पौंच गओ बेदवंती की जनम भूमि में। वो पौंचों बहेड़ा गांव की "झिरी" में (पिरयात) परबत के ऊपर।

कालपी वारे महाराज व्यास जू ने अपने एक पुरान में जा बात कही है–

वेतबंती है देवतन के महाराज वरून देवता की महारानी। बेतवंती साधारण नदिया नईया ऊने खुद बताओ है– "हम है महात्मा वरून देवता की घरवारी
अहं जलपते: पत्नी वरूणस्य महात्मन:" (वराह पु. 28 अ.)

बेतवंती ने अपनो जनम सोउ बताओ है के "एक समय की बात है– बिरतासुर (वृत्रासुर) नाव को एक असुर हतो। ऊ असुर ने परियात्र पहार के ऊपर एक भौत गहरो कुआ खोदो तो सो ऊ कुआ में बड़े बड़े पापन कों नास करवे वारी मैं बेतवंती प्रगट भई ती–

"वृत्रेणैव कृतो कूपो महागंभीर संज्ञक:।
कूपात्सा निसृता देवी महापापौघ नाषिनी"।। (पद्म. अष्टोत्तर. 33 अ)

अब हमाओ मन जिते वो कुआ खोदो हतो उते पोंच गओ। वेतवंती को मीठो नीर अँचऔ। मन त्रिपत् हो गओ। मन तो है चिरैया सो। पिये चैंच भर नीर चिरैया सागर से का करने। इमरत घूंट गरे से नीचे उतरी, मन फिर ऊपर उड़ो। मन आ गओ उते जिते राजा भोज महाराज जू ने अपने ताल किनारे वेतवंती के तट पे महादेव जू को मंदिर बनवाओ तो।

भोजपुर में मन में सुख और दुख दोउ बराबर हो गये। सुख भओ भोला शंकर के दरसनन् को और दुख भओ टूटे ताल को बेहाल देख कें। जिते कौनउ समय भोज महाराज को इत्तो बड़ो ताल हतो के जा ताल की कीरत और जस दूर-दूर नौं फैलो तो। कांनात् कई जात ती कै" ताल है भोपाल ताल और हैं तलैया"। जा कौनउ 'हुसंगसाह' को देखो नई गओ वाये जरन भई। काय् चले राजा भोज को नाव ? सो ऊ हुसंगसाह ने जो बहाबूदी को काम करो के ताल को टोर दओ। सो ताल टूट गओ और ताल से सालन पानी बहो। जरन-बरन सै करो गऔ जो काम पौत गओ हुसंगसाह के माथे पे कलंक की कारौंच। जाने कर दओ उनको मौं कारो। सो जे ताल को हाल देख के मोये मन को दुख भओ। जब दुख-सुख दौउ बराबर हो जात तो मन निज भाव में पौच जात है और सांत हो जात है। सो मोय मन हो गओ सांत।

मोय ऊंची बोली में ऊंचो सुर सुना परो। उन (पारियात्र) पहार की पहारियन ने उको दोहरा दओ। कोउ कै रओ है "सुनो-सुनो हमाये मन में वासना को जो बुरओ धुआं पैले हतो बो अब हमाई

तपस्या से सांत हो गओ है। हमें सबई बराबर दिखान लगे है। हमाओ नाम है गौतम हमें जानों-

''गौदमो दमताऽधूमोऽदमस्ते सर्वदर्षनात्
बिद्वि मां गोतमम्................. (महा. अनु. 93 अ.)

हमने सुनो जो सुर हम आंनद से भर गये। काय से के हम जानत ते के जे दीरघतमा ऋषि के बेटा हैं। बामवेद्. नोधा और सतानंद ऋषि जू के पिता है. अहिल्या माई के पति है, ऐसे जे ऋषि महाराज गौतम जू ऋषि है जिनकी बिनती करत है बड़े बड़े देवता उनको हम सुन रये है सो धन्य है हमाये भाग्य। बे ऋषि महाराज बोलतई चले जा रये है

''मधुवाता ऋतायते, मधुक्षरन्ति सिंधवः.............................''

अर्थात् जा हवा, जो पानी जे बिरछा जे बिरवा, जे संजा जे भुन्सारे जे राते जे दिन जे धरनी और जो आकाश, जे सूरज जे चंदा, जे पहाड पहाडिया जे नरिया नारे सबई इमरत से मीठे हो जात है ऊके लाने हो जात है जो होवे छल-छिद्रुर से दूर जो होवे सीधो सांचो।

हम गुन रये गौतम ऋषि के वचन इतेकई में दूसरो सुर सुनाई पड़ो। कोउ कै रओ तो- ''हम जानत है सब देवतन के जनम को रहस्य'' - ''अवेदं अहं देवानां जनिमानि विष्वा''। हमने जा बात सीखी है अपने इनई पिता जू से। सो तुम हो जाओ सीधे सांचे। तुमाये मन में ऐसी आनंद की हिलोरे उठे जैसी हमाये मन में उठ रई है।'' हम समझ गये के जे ऋषि गौतम के बेटा ग्यानियन के सिरमौर और आतम ग्यानी बामदेव महाराज कितउ बोल रये है इतई हतो पास में गौतम के पिता जू को आश्रम महाराज दीरघतमा को ऋषि को आश्रम जिनने बताई ती जा बात-'' के बेद को आखर है परम् लोक में उतेई ऊ आखर में बसत हे सबरे देवता। जो जा बात जानत है बो सोउ परम् लोक में बस जात है। जो नई जानत जा बात बो जानत रये सबरे बेद मंत्र उसे कछु नई होने है। जा बताई ती गौतम के पिता महाराज ने बात। (ऋ 1/164/39)। जा बात में उनने जो आखर कई ती ऊ आखर को मतलब है ओंकार- ओंकार को महानाद। जो बेद को बीज है। ईको ऋषि इषारे कत है गौरी-भैंस। मन गौरी महमा में बिचलन लगो पहारिया पहार हामी भरन लगे कन लगे इते जाने-इते जानो।

गौतम ऋषि ने जो मंत्र गाए है उनई मंत्रन में व्यास जी ने साम बेद की पूरनता मानी है। इतई इन पहार पहारियन के बीच में गौतम जू के पिता दीर्घतमा महाराज ने जोन मंत्रन को उच्चारन करो तो उनसे यजुर्वेद (जजुर्बेद) की पूरनता भई है और तो और इतेई इन परियात्र की पहारियन में इनके कुल वंष के ऋषि संबनन महाराज ने जो मंत्र ऊंचे सुर से पडे ते उनई मंत्रन से व्यास जू महाराज ने ऋगवेद संहिता कौ समापन करो है।

ऐसे ऋषियन के कुल वंस इन पहारियन में बसे ते सो बोई तो कुल वंस वेद वानी को बेटा कहाओ है। ओरछा में जो भैंस (बेदवानी) बियानी ती उको पड़ा जोई कुलवंस कहो गओ है। सो जोई कुल वंस है ओरछा की भैंस को पड़ा। महष जो अगिन को स्वरूप है।

ऋषि जिनने बेद मंत्रन को अरथ देखो तो उनने पियो तो बो इमरत सो बे हो गये ते सब अगिन रूप। उनई को कहो गयो है महष, पड़ा, भैंसा। बेदन में पूरे यर्जुर्वेद को जाने तो याज्ञवल्क्य (जागबल्क) मुनि ने सो उनने कई है के ऋषि प्रान है और प्रान अगिन है और प्रान भैंसा है - '' ऋषय: वै प्राणाः। प्राणाः वै महिषाः। अग्नि वै महिषाः। अर्थात ऋषि प्रान महिष रूप है। और अग्नि महिष रूप है। सीधी बात जा है के वे ऋषि अगिन रूप और प्रान रूप है सो पड़ा कहे जात है। पुराने मध्यदेश के के हिरदय में जेजाक भुक्ति जग्ग भूम में एक पुरानो क्षेत्र है जो परियात्र के पहार पहारियन को और इतई बिचरत ते जे ऋषिमुन।

मन कौ एक पुरानी बात याद आ गई-एक हते राजा ''ययाति'' उनके हते दो रानी बड़ो राज हतो उनको। उनकी राजधानी हती प्रयाग राज जू के पास की ''झूसी''। उन राजा की बड़ी रानी को बेटा हतो ''यदु''। यदु को दओ गयो तो चंबल, बेतवंती और केन की सिचाई वारे देस को राज जोई है पुरानो बुंदेलखंड जो है जेजाक भुक्ति। यदु के भयें दो बेटा उनमें हतो हैहय सहस्त्रजित् ऊकी संतान कहाई हैहय। हैहय महिष्मंत ने मांधाता राजा के बेटा मुचकुंद कौं हराओ तो और उनके किले पे जां आज काल ओंकारेश्वर को मंदिर है बा भूम पताका फहराई ती। जा तरह से बुदेलखंड के एक बेटा ने नर्मदा जू के बा पार बुंदेलखण्ड की पताका गाढ़ दई ती। बो बेटा हतो महिष्मंत भैंसा बारो राजा महान पूज्यनीय राजा।

अब रे गई बात चपिया की चपिया तो अबै लौं नर्मदा जू के पारई है। बेद के रस भरवे को बासन है चपिया। चपिया है बेद को भाष्य यानि जो बेद में बात बताई गई हो ऊको सरल भाखा में समाझाइस है भाष्य। अबे लों बेद के सबरे भाष्य नर्मदा जू के ऊ पार भये है सबरे बे भाष्य बनावे वारे नर्मदा जू के ऊ पार के रेवे वारे है। महाराज दुर्ग, स्कन्दस्वामी, महेश्वर, वररूच, आत्मानंद, सायण और दयानंद आदि ने ऋग्वेद पे भाष्य लिखे है, इनमें सें एकउ नर्मदा जू के ई पार को नईंया। सो चपिया भई नर्मदा जू के बा पार।

हां लगवैया है इते। कालपी के व्यास जू महाराज ने अठारह पुराण और महाभारत लिखो है। पुरानन में बेद की कही बताई बातन को आसान तरीका से किसा कहानियन के बहाने से केई तरा से समझाईस दई गयी है। ऐसो है महाभारत ऐसे है पुरान सो बिना पुरानन की मदद के बेद को अरथ लगई नई सकत है, ईंसे लगवैया कालपी वारे व्यास जू माने जात है।

कक्का बैजनाथ की दिवारी में जा तरह से हमें दिखानी बेद वानी की महिमा, गौरी-भैंस की महमा। कक्का कै रये है-

भैंस बियानी ओरछा पड़ा होशंगाबाद, लगवैया है कालपी चपिया रेवा पार।

ओरछा में वेद वानी को जनम भओ, जा वेद वानी को रस जिनने जानो वो ऋषि कुल पारियत्र की पहार पहारियन में होंशगाबाद में बिचर रओ है, जा को लगवैया व्यास जू इते कालपी में है और चपिया सबरे भाष्य नर्मदा जू के ऊ पार है। जो है अपनी भूम को महत्म, जो अपने पुरखन की वानी की महमा। जो है बुंदेलखण्ड की जस की जुनैया। और सबसे ऊपर जो है ओरछा की महमा को उजयारो। जा उजयारे को बो हेरहे देखे कीके नैनन् में नौनी ज्योत हुये।

''तोरे आंगन में बसरत जुनैया
यार तुम हेरत काय नैया''

सुर ऊंचो हतो हेरवे के लाने आंखें खुल गईं नींद टूट गई। सांचउ नींद टूट गई है और सांचउ की आंखें खुल गई है, हेरवे के लाने।

- नूतन बिहार कॉलोनी,
टीकमगढ़ (म.प्र.)

देश की पहली 'स्मार्ट सिटी' नयेगाँव-छावनी

– अमर सिंह खंगार

देश को पहलो सुन्दर शहर ''स्मार्ट सिटी'' के खिताब से नवाजो गओ नयेगॉव–छावनी को इतिहास बहुत पुरानों है। पौने दो सौ बरस से जादा समय बीत गओ जब जो नगर सन 1842 में अंगरेजन ने बसाओ हतो। अंगरेजन शासनकाल में बुन्देलखण्ड एजेंसी को ब्रिटिश मुख्यालय रहो नौगॉव को नक्शा ब्रिटेन में तैयार भओतो फिर ओई आधार पै ईखां बसाओ गयो। नौगॉव की स्थापना अंगरेजी हुकूमत के मिस्टर डब्ल्यू एस सिलीमेन ने एक बिरगेड सेना के सिपाहियन के रुकबे के लाने छावनी के नाम से करी। देशी छत्तीस रियासतन के बीचों बीच होबे के कारन अंगरेजी अफसरन ने ई जगह को चुनाव करो और नगर को नाव नौगॉव के साथ छावनी पड़ो, जो आज भी चलत जात। नगर को इतिहास 1842 से लेकें 1932 तक ब्रिटिश कालीन कंजुमेंट एजेंट भओ करत तो, जी के अधीन छत्तीस रियासतें आत हतीं। इन छत्तीस रियासतन को लगान वसूलबे और इन पर नजर रखबे के लाने अंगरेजन को पॉलिटिकल एजेण्ट को नौगॉव में निवास हतो। इतईं पै छत्तीस रियासतन के राजा अंगरेजी एजेन्ट से मिलबे और लगान चुकाबे के लाने आउत हते। राजन के रुकबे के लाने अलग अलग छत्तीस 'हाउस' मतलब बँगले बने हते जितै राजा रुकत हते, जैसें कि पन्ना हाउस, चरखारी हाउस...आदि–आदि। मिनी चंडीगढ़ के नाम से विख्यात नौगॉव नगर के जितने चौराहे, तिराहे, अबै आस–पास बड़े शहरन तक में नहियाँ। जितनी इतै की आबादी है, जौन हिसाब से नौगॉव बसो है शायद है कौनउ दूसरे इतने छोटे नगरन मा इतने चौराहे मिल जॉय। चौराहन के मामने में जो अपने आस पास के जिलन की तो छोड़ो भारत मा विख्यात हतौ। नौगॉव में 192 तिराहे–चौराहे हैं। नौगॉव को ''मिनी चंडीगढ़'' के नाम से जानो जात। पहली बेर की तो बातइ नहिं करत वो तो चौराहन में बिलुरतई को आय, कईन देर नौगॉव में आबै बालो आदमी भी अबै नौगॉव के चौराहन में भटक जात, काये से पग पग में चौराहे हैं और सबरे चौराहे एक से लगत हैं। विंध्य प्रदेश की राजधानी रही नौगॉव विंध्य प्रदेश के गठन के बाद 15 अगस्त 1947 से 11 अप्रैल 1948 तक नौगॉव को विंध्य प्रदेश की राजधानी रहबे को मौका मिलो। पहले मुख्यमंत्री चरखारी के श्री कामता प्रसाद सक्सेना रहे। आदर्श प्राइमरी के नाम से जाने जाबे बालो स्कूल जितै आज हायर सेकेण्डरी स्कूल चल रओ उतै तबै विधान सभा को सचिवालय हतो। वर्तमान एडीजे कोटज़ परिसर में तबै हाईकोर्ट और सेशनकोर्ट चलत्तो। सेल टैक्स दफ्तर में तबै आर टी ओ और कैनाल कोठी में डीआईजी निवास रहत तो। नगर को पहलो भवन कमिश्नरी कार्यालय जीमें लगत तो वो 1861 में बनो तो।ईके अलावा

सेंट पीटर रोमन कैथोलिक चर्च 1869 में, शहर की चर्च और सरकिट हाउस को निरमाण 1905 में भौतो। अंग्रेजों के जुल्मों का गवाह नौगॉव अंग्रेजी हुकूमत के अफसर बहुत जालिम हते। तनक सी गलती करबे पै तुरतउं सजा मिलत हती। बड़ी गुस्ताखी करबे पै फाँसी की सजा पॉलीटेक्निक कॉलेज में तबै की जेल मा अपराधियन खां खुले में फाँसी पै लटकाओ जात हतो, और तना मना की गल्ती के लाने अपराधियन को जेल के भीतर बनी काल कोठरी मा डार दओ जात तो। कड़ी सजा के कारन ही ब्रिटिश शासन के दौरान अपराध बहुत कम होत हते। नौगॉव वर्तमान परिदृश्य में मध्य परदेश के गठन के बाद नौगॉव उपेक्षा को शिकार होतई चलो गओ। प्रदेश, संभाग, और जिला इस्तर के सरकारी दफ्तर इतै सें भोपाल, सागर, छतरपुर, और सतना चले गये, और नौगॉव नगर राजधानी से तहसील तक सिमट कैं रह गओ। साफ-सफाई जी पै इतनों जोर दओ जा रओ एक समय नौगॉव को अपनो अलग नाव व पहचान हती। लेकिन अब तो सफाई के मामले में ईको प्रदेश में 78वॉं इस्थान है। पहलॉं को आदमी जादा पढ़ो लिखो न हतो न शिक्षा को उतनो विकास हतो तब न जादा अपराध होत हते न गन्दगी। जैसई जैसई शिक्षा को बिकास होत गओ गन्दगी सोई बढ़त गई। आज के जे हालात हैं कि ई गन्दगी को असर अब हमाये तन,मन, पर भी बढ़त जा रओ, परिणाम सामनू हैं कि लोगन के मन मा ईर्ष्या, बैर, बदले की भावना, एक दूसरें खां नीचा दिखाबै की भावना, समाज में बढ़तई जा रई, ऐसो काये? तना आपउ बिचार करौ, काये कि समाज के एक अंग आपउ तौ हौ, मोरी बात पै अपुन भी जरूर बिचार करियो।

– नौगॉव, छतरपुर म.प्र.

श्रीराम जन्मभूमि अवधधाम

– लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'

अवध में राम तौ भये ते सब जानत हैं,
अवध खौं उलटौ करें की कय ठान रये।
क्वाय कातत्तो के राम हिन्दुआन के अकेले,
अपुन खौं रामइँ कौ कय नइँ मान रये।।
राम अपने औ देश रामइँ कौ अपनौं जौ,
राम रहमान एक इतनूँ न जान रये।
नाम रहमान जू कौ लैकैं राम–धाम में जौ,
अनरौ मिटायबे की कय नइँ ठान रये।।1
हम तुम दोउ औ सबइ जने जानत हैं,
राम–धाम बनेब में अपनी भलाई है।
हम तुम मिल जुर कैं बनायँ सब जने,
एइ में विदेशन में देश की बड़ाई है।।
बोटन के लाने फूट डारत हैं भैयन में,
अवध के भैयन न कौनउँ लराई है।
दुनिया कितै सें कितै पौची पौच लो अपुन,
बैर खौं विसारबे की घरी आज आई है।।2
हिन्दू औ मुसलमान कबहूँ न लरत हैं,
नेतन के स्वारथ की बात नहीं सुननें।
धरम विशेष की न बात कोउ मानौं इयै,
देश की जा आसथा है इयै कछू गुननें।।
देशइ में देखौ जू धरम सबरे पलत,
ईसैं देश–धरम खौं पैल हमें चुननें।
राम की जनम–भूँम अवध अवध राय,
आपस में बैठ दोउ जनन खौं गुननें।।3

– ईशानगर, जिला–छतरपुर (म.प्र.)

दिक्कत की खों

- डॉ0 दया दीक्षित

माव (माघ) मईना में बड़े गनेसन के बाद सें ठंड उतनी न रै गईती, जित्ती बुड़की के टैम हती! अब तौ दिन भी बड़े हौन लगेते औ घाम एन ऊजरौ औ तेज कड़ रओतो! मगर बसंत डोल रएते, सो हवा तौ बिल्कुल तीर की नाईं हड़रा कपाएं दै रईती। ऐसे में तनकई बेपरवाई भई नईं, औ सर्दी जुखाम खांसी खुर्रा तुरतईं सुरू। कन लगत कै सावधानी हटी औ दुर्घटना घटी! जनीमांस की को कए, पाखी परेवा लौ, धूप ताप में दाना पानी के लानें निकर कें, दिन बूड़वे सें पेलां अपने नीड़घोंसलन में चिमा कें बैठ जातते! रौतेलन के जौन आँगन में बात बतकाव हो रओतो, उस कच्चे आंगन में ओंरी, आम, नीम औ इमली के पेड़न पै पखेरूअन की खूब चेंचें में में हो रईती, दिन बूड़वे सें पैलें, सबरे अपने-अपने ठिकानों में लौट रएते! ई सबसें बेखबर आंगन में बतकाव चल रओतो। हवा के झकोरन में झूमतीं घूमतीं तुलसा महारानी की मंजरियन की तेज महक सें पूरी अंगनाई गमगमा रईती।

तुलसीघरा के पासई तीन जनियन को बतकाऔ, चिरईय्यन, पखेरूअन की चें चें में में सें भलाऊँ, दब सौ गओतो, पै मंजीरन कैसी खनकदार बातन की धुन हरां हरां सबरे हार सुना पर रईती। आज कुल दिनन बाद भेंट मुलाखात भईती तीनऊ जनियन की, इनमें से एक जनी जौन सबसे बड़ी बूड़ी हतीं, वे थीं कड़ा की बरिया बारी माईं। माईं से तनक लौरी औ अपनी नंदबाई सें कुल्ल जेंठी हतीं बड़ी भुज्जी (ऊजरा बारी) औ इन दौनऊ जनियन सें लौरी हतीं नंदबाई राजमोहिनी बिन्नू! बतकाव हो रओतो ठाड़ें ठाड़ें। गुर भरे हंसिया सी करीं बोली कड़ी माई के मुख सें- "काए जू ऊजरा बारी! अपनी गौनियाऊ बउ खों सलवार कुर्ता कब सें पैराउन लगी! ब्याऔ में तौं हांत भरौं घूंगट घालें रतती दुलैया!"

ऊजराबारी (बड़ी भुज्जी) खों ममिया सास के जे बोल तीर की नाईं करेजे में धंस गए! अनमनी सी बोलीं-हम का करिये माईं! हमसें न काओ कछू, काऔ अपनें भानेंज से और भानेंजन सें! ग्वालियर झांसी औ छतरपुर कौ बजार छोड़ कें गएते वे चढ़ाऔ लैवे बनारस! सो उतै तुमाई भानेंजन बिन्नू की सलाय सूत सें एसौ बढ़ियल चढ़ाऔ आओं कै हम तौ दंग रै गए! बनारसी साड़ी तौ ठीक, मगर रेशम और सिलक के सलवार सूट औ बे का कहाउतीं पनमेसरी जींस लौ आईतीं जौ तौ बरगओ ऐसौ पहरावा है कै चाय जनी पैरलें चाय मान्स आदमी! औ जा सबरी बुद्धि दईती तुमाई लौरी भानेंजन बिन्नू बाई सिम्मू नें। माईं, भनैंज तौ तुमाए तऊ साजे हैं, उननें खरीदारीं सें पैंलें सिम्मू सें हमाई बात कराईती, सो सिम्मू के आगें हम बेबस हो गए। बे कै रईतीं कै भाभी तुमोंरन के जमाने लद गए। अब जौन बिटिया बहू बनकें आ रई तुमाए इतै, बा बी0टेक0 की डिग्री लयें हैं। पीजीडीएम करईं रई है! पिलेसमेंट हो गओ है। घरै बायरें दोऊ जांगा काम सें आहै जहै, सो जेई पोसाकें जादा ठीक हैं! धोती उन्ना न हम मना कररए औ न बा मना करहै पैरवे ओढ़वे सें। पै भावी जौन पैरवो ओढ़बो ऊए पुसात है, हमई काए नं अपनी मानता ऊऐ दै दें! औ फिर हम तुमाई नंद हैं, तुमाए घर की बेटी बिटारू हैं, हमाऔ हर तरां कौ पैरवो ओढ़वो तुमें नोंनों लगत, तौ बउरानी कों भी छूट देनें परै! का हम गलत कै रए।" सो अब तुमई बताऔ माई हम का काते! औ फिर हमें तौ लो इन बातन में तत्त दिखा परो सो हमनें तो लो ऐन हां कै दईती! न काते तौ सिम्मू कौ का भरौसौ, जानें का बिलोरा पार देतीं बिन्नू कै बनों बनाओ काम बिलुर जातो! ऊजरा बारीं की बातन में माई नें भी हां में हां मिलाई। माईं की बउ बिटियां भी तौ जई चाल की थीं सो उनके मुख पै संतोख औ हरख दिखा परौ, मुस्क्या परीं, सबरी ईरखा बिला गई बिनकी! मुस्क्या कें बोलीं- सांसऊं सिम्मू की है तौ-न्यारी चाल, जानें का का उल्टौ सूदौ करती रतीं। उनकी जिन बातन कों जनीमांस बिस की नाईं बुरऔ कत, बाद में उनई बातन खों गुर की नाईं गुरीलौ औ तत्त की बताउन लगत।"

मांई की बातन कों बीचईं में कटट् करकें बोलीं ऊजरा बारी बड़ी भुज्जी- बतकाव तौ तुमाऔ सई है। मगर कुल्ल बेर ऐन बने बनाए काम में मीन मेख निकार कें खोज सोऊ मिटा देतीं"

मांई- सो ऐसी काय हो परीं सिम्मू। पैलां तो ऐसी न हतीं?

ऊजरा बारी- "अरे अब तौ उननें चित्रकोट में बौ गुल खिलाओ कै का कई जाय! औ तुमनें भली कई माई! अबै की नईं। बे तौ एसियई हैं सुरू कीं। अबई हाल की उनकी करनी सुनिओ तनक, बने बनाये खों बिगारवे की कै दो बस। जौ तौ नईं बनो कै कछु और उपाव कै तारीका निकार लेतीं सो आँहां! उतै को पूरौ कमरा नसा कें धर दओ।" बड़ी भुज्जी नें दस कौने कौ मों बना कें जौ बतकाव करो औ सूटर पैरबे के लानें आँगंन के तार पै सूकन डरो कार्डियन उतार कें पैरन लगीं। फिर सूटर पैर कें बोलीं- काए बीबी जी, तुमें कबसें नईं मिली सिम्मू बिन्नू!

बीबी जी, जिनकौ नाँव राजमोहिनी हतो, आँखें सिकोड़ती, कछु सोचतीं सी बोलीं- हमें तौ तबई मिलीतीं जब अम्मा बीमार हतीं।

बड़ी भुज्जी- बीमार नोईं हतीं बाहर जा रईंतीं बाथरुमैं, सो मईं से आउतन में कमरा के द्वारे सें टकरा कें गिर परीतीं। तबई सें चक्कर आउन लगेते उनें!

बीबीजी- हओ, जौ तौ हमें भी बताओतो पंडा भैया नें! मगर एई के बाद सें बुखार आउन लगोतो अम्मा खों, तबई तो उनने सब जनन खों बुलाओतो! मगर कोऊ ढूंकबे लौ नईं गओ उतै। फौनई फोन करत रए सबरे जने! जौ न बनी कै डुकरिया खों देख आउते कै डुको जी रईं कै मर गईं।

बड़ी भाभी- बुखार की मालुम नईं चली। हमें तौ बस गिरबे बारी बात पता चलीती सो बीबीजी, बात तौ जा है कै कैऊ दफैर पैलें भी बे गिर चुकी हैं, सो लो हम तौ नईं गए देखबे, मगर जा जरुर पता चली कै सिम्मू बिन्नू गईंती, सो सामने बारी चिनबादी कों झाड़ू पोंछा औ बासन मांजबे के लंय लगा आईंती। बई अम्मा खों नहवां कें उनकी धुतिया उन्ना पछोर देतईं। नास्ता कलेऊ बई बनाउत दुपरै टिपन आउत है। ऊमै इतौ बिलात सामान होत कै बई ब्यारी कों हो जातईं।

बीबी जी- जई तौ अनीत है सिम्मू की। हम तौ भाभी, पंडा

कों लगा आएते। साधु संत भगत आदमी है, औ सबसें बड़ी बात हमाए सासरे के घर गाँव कौ जानौ चीनों आदमी है। दोई टेंम अम्मा खों गरम गरम ताजौ खाना बना कें खबाउततो। नोंनें खाना में खाना, नास्ता में नास्ता औ चाय में चाय मिल रईती! बौ तौ उनें नहवा कें चुटिया पटिया लौं कर देततो। धुतिया उन्ना चदरा तकिया के खोल फींच डारै, औ साफसफाई में चमाचम चमका देततो अम्मा कौ घर! सो देख लो, अब सिम्मू नें कैसीं भांजी मारी। ऊ चिनवादी कों लगाकें। बा चार धरन में काम करबे बारी, झर्र फर्र करकें जमालो जे गई बे गई। नागा भी खूब करतीं। मईना में पन्द्रा रोज तौ कऊँ नईं गए उनके! ऐसी नगैलयाऊ है! ऊके आने सें पंडा कों अपनी बेइज्जती सी लगन लगी सो! हमसें कै रएतै कै अब जादा दिना अम्मा के ढिगां न रैहें। मई परकम्मन में कौनऊ आश्रम है, मई रैबे की कै रओतो पंडा। बताऔ तौ भाभी, सिम्मू नें कैसौ बनो बनाओ काम बिलोर दओ।

नंद भुजाई कौ जौ बतकाव भौत देर सें सुन रईतीं कड़ा की बरिया बारी माई। उनसें न रओ गओ, बोलीं– हमनें तौ जा सुनीती कै पंडाजू भलाऊँ रसुइयाँ करकें खबाउत हैं, मगर हैं पक्के भड़या। तन तन सी चीजन पै नीयत डोल जात बिनकी। चोरी भड़याई तौ ऐसी सांतर करत कै का मजाल कै कोउ खों जना परें। जिज्जी उनकीं जा करतूत सें भौतऊ परेसान हैं, मगर राजमोहिनि बिन्नू के डर के मारें कछू कै नईं पाउतीं न मोहनी बिन्नू सें औ न पंडा सें। अबकी देर तनक करें कें जिज्जी नें उनें गरया दओतो, उनके ठाकुर जू के गरे कौ सौने कें हार चाप कें पंडा जू बगला भगत बने फिरतते। पुलस थाने को नांव सुनकें लो, अब तौ लुके लुके फिर रये। मांय सें कड़वे कौ बहानौ तलास रए सो देख लो, चिनबादी कौ बहानौ मिल गओ उनें! जिज्जी नें राजमोहिनी बिन्नू सें जे सब बातें नईं बताईं! अपनी ई बिटिया सें डरातीं हैं वे, माई की बात बीचई में काट कें मोहिनी बोल परीं– काए खों मांई, अम्मा ऐसी आहें कै अपनी बिटियन सें डराएँ? काए माई, तुम का जानतीं नईयां उनकौ सुभाव सौ बेर बे हमसें कै चुकीं कै पंडा ठरीबरे खों बुला लो इंदौर अपने पास, ऐसे चोर चमार खों नईं रखनें हमें।''

बौ तौ हम अम्मा के हांतपांव जोरत रात कै अम्मा पंडा तुमाए पास है, तौ हमोरें निश्चिन्त हैं कै चलौ कोऊ तौ है तुमाए पास। अगर ऊखों नईं राखनें तौ फिर हमोंरन में सें कोउ के ढिगां आ जाऔ तुम। चाय रामसुत भैया कें चाय कृष्णकिशोर कें चाय पवन भैया कें औ चाय हमाए लों या फिर सिम्मू के इतै! बाकी ऊ चित्रकोट में हम तुमें अकेलें नईं छोड़ सकत!

माईं – बिन्नू जा तौ तुमनें सांसी कई। ई बुढ़ापे में, बे खटिया पै परी हैं, न चल पाएँ न फिर पांए। स्टूल पकड़ पकड़ कें कैसऊँ चल फिर पाऊती हैं तन तन। बौ भी हैंडपाइप लौ कै फिर पाखाना पेसाब के लँय ऊ बायरे के हैंडपाइप के नगीचें बने बाहर के गुसलखाने लौ। सो कोऊ न कोऊ तौ एसौ भओ चाइये जो रात बिरात उनें देखै तकै राय!

मोहिनी– जई तो हमोरें उनसें कत हैं। पै तुम तौ उनकी भुजाई हौ मांई, जानतीं तौ हौ, कै अम्मा उनमें सें कत्तई नइयां जो अपने बाल बच्चन की गिरस्ती में निभाव कर लें सो आहां। बच्चन लों रैबे की कऔ तौ कन लगती हैं कै अपनों घर सो हग भर, दूसरे कौ बीता भर! कऊँ जाबे रैबे खों तैयार नईयां न बिटियन के पास औ न लरकन के पास। पुरा पाले और नाते रिश्तेदारन में हमोंरन की जर सें नाक कटवा दई ई डुकरिया नें।

माईं– तुमोरें नईं जातीं?

राजमोहिनी– हमौरें तो जात रत। पै अपनी सुबदा सें! कभऊँ हल्की भाभी कभऊँ भैया औरें कोऊ न कोऊ मईना खांड़ में जात रत तो। मगर अब तौ सब जनें सकुचन से लगे हैं। जात भी हैं तौ कौनऊ होटल कै लॉज में रुकनें परत है। माई इतनों बड़ौ उनकौ घर, मगर हर जांगा धूरा माटी देख लो, एक बई बड़ौ बारौ कमरा हतो जा में तीन चार तखत डरे रत ते, मई सब जनें परत उठत हते अम्मा के पलका के नगीचें। मगर जै हो जाए ऊ सिम्मुआ की, एसौ खोज मिटाओ कै का काँए। न उठबे की जांगा न छोड़ी परमेसरी नें न बैठबे की। घिनापन की हद्द कर दई बा नें तौ बदबू आउतरत सो अलग! तुम कब सें नईं गईं माईं चित्रकोट!

माईं– हम तौ लो बिन्नू हर अमाउस खों हो आउतते तुमाए मम्मा के संगै। पै जब सें तुमाए मम्मा गुजरातै गए, तबईं सें मुजान में आज आठेक मईना हौन चाउत, नईं जा पाए! पै देखौ अबै हमाई चंदो आबे बारी है, सो बई की गाड़ी में जैबी। चंदो खों छतुर चढ़ाउनें है कामतन में। दमादराजा मंडी के चेरमेन हो गए। बिननें मानता मानीती।

मोहिनी– तुमईं समझाइयो तनक। बे तौ सिम्मू की बातन में आ कें ओई नाच नाचन लगती हैं, जौन बा नचाउत है। पता नई ऐसी का बात है सिम्मू में, कौन सौ जादू है कै हमोंरन की बात एक तरफ और सिम्मू की बात एक तरफ! तुमई समझाइयो उनें माई।

आपुस में बतकाव चल रओतो नंद, भुजाई औ मांई में। देखतई देखत सूरज भगवान नें अपने घर की रस्ता लई, सो अंधयारी नें पाँव पसारबो सुरूं कर दए! संजा बेरा हो गईती! मोहिनी की भतीज बऊ नें कमरा सें तीन ठइयां कुर्सी निकार कें धर दईं दुगई में। कुर्सियन के संग की पिलास्टिक की टेबिल भी धर दई।

बड़ी भाबी देख रईती सो अपनी बऊरानी सें बोलीं– काये दीपका, चाय चबंदना का ब्यारी के टैम में पियाहौ सबकों!

दीपिका नें अपनी महीन आवाज में हरां कै कई– मम्मी, चाय तौ छन चुकी है। फरा बना रएते, सो तना अबेर हो परी। अबईं छिन भरे में ल्या रए चाय की टिरे।

फुर्ती सें जा रईं दीपिका कों फरमान सुना परो सासबाई कौ– चाय सें पैलां फरा धरें जाऔ अगर बन गए होंय तौ, औ तनक सौ घी गुर सोई लँय आइयो संगै! ''दादी पैलें आरती ल्यो जल्दी सें'' अपने नाने नाने हाँतन की रकेबी आंगें करती विंदो नें कई, सो सब जनीं रकेबी में धरे चार मों की बाती बारे दिया सें आरती लैन लगीं। बिंदों नें आरती टेबिल पै धर दई ती। तुलसी चैरा लों सुलग रईं अगरबत्तियन की खसबू सें पूरौ आंगन महक रओतो। ''वाभा, कैसी सुकरतन मौड़ी है! काए बिन्नू का नांव है तुमाऔ!'' मोहिनी ने कई। 'विदुषी शर्मा' हरख कें बोलीं विंदोरानी और नाचती सीं गदबद दै कें भगी बायरें तरपीं, उनकी गुईयां आ गईंती स्यात।

मोहिनी– भावी, नातिन तौ भाई भौतई नोंनीं और छबदार है, तुमाई! दीपका की जा मौड़ी भौतऊ नोंनी है।

माई- ओऽ बिन्नू, हमनें तौ लो पैलऊ पैलां देखो इयै, जब भईती, कैसी तौ लग रईती, चुखरिया जैसी हती! औ अब तौ लो एसी अपरूप कड़याई बिन्नू बाई, जैसें जगर मगर करतीं मैहरमाता कै देबी दुर्गा जू होंय। कन लगत कै बाला में है जोत, तुमारी, तुमें सदा पूजें नर नारी। बुला दइयो मोहिनी बेटा तनां पांव पर ल्यों कन्या भमानी के!

ऊजराबारी- बाद में पर लइयो, वैसें भी खेलबे कूंदबे कड़ गई सबरीं बिटियाँ, दोरे कुदाई तौ देखौ, कैसी चिल्ल पों मचा रई सबरीं। आऔ, नईंतर जे फरा ठेंडे भये जात! नातिन की बड़बाई सें हाली फूलीं भाबी कुर्सी पै बैठ गईं!''हओ बेटा, चलौ चलिये।'' माईं नें कई औ आँखन पै चसमा ठीक सें बैठार कें दुगई कुदाई चल परीं।

माईं- ओ चंदो, पैलां फैन करले बेटा, फुआ खों। हैं उतै, कै कड़ गईं क्याऊँ!

चंदो- सिरीं तौ नईं हो गईं तुम चाची, फुआ खों कां जानै ई जाड़े में। जरूरी काम तौ ज्वान जमान आदमी करत नईंया जाड़े पाले के मारें औ, तुम लगांए उनके जैबे की।

माईं- मोए का पता बेटा, कोऊ सें जा जरूर सुनीती कै पेंसन काड़बे के लानें उनें बैंकै जानें आउत हर साल, नईंतर पेंन्सन नईं मिलत। सो फुआ खों जानेंतो सागर। मई सें आउत उनकी पिन्सन परमेसरी!

चंदो- उतै तौ कृष्णकिशोर भैया लुवा गएते अपनी मैजक सें! अब तो मईनाखांड़ हौन चाउत! कालपी बारे देओर बता रयेते। चित्रकोट गए हुइयैं, सो फुआ के इतै भी गएते, तबई पता परी कै भैया गाड़ी लै कें आएते सो लुवा लै गएते बैंक के लानें। औ फुआ ऐसी जिद्दन कै बई दिना लौटबे की पसड़ फैला दईती, सो भैया औरें ऐन आदी रात में चित्रकोट छोड़ गएते बिनें।

माई- चलौ जौ तौ नोंनों रओ। मैंनें तौ बेटा रातई में तैयारी कर लईती। जे पुटरियां बोरी में धर कें गाड़ी में डार लइयो तनक। चंदो नें छोटी बड़ी दस बारा पुटरियां, खाद बारी बड़ी बोरी में डारीं औ गाड़ी तरपीं जाबे सें पैलें टेर लगाई- चाची अब सपाटे सें चलौ रस्ता भौत है, और आजई लौटनें हमोंरन खों!

गाड़ी में पैलऊँ सें समान भरोतो मुलक कौ, पै चंदो ने कैसऊँ घूंस धांस कें बोरी बना दईती।

चंदो के घरवारे देख रएते बोले- चांदनी मेरे टोकने पर भी तुम अपनी मां को चाची चाची कहती हो। ये क्या अच्छी बात है।

चन्दो- जई बात जब हम तुमसें कत कै अपनी मताई सें अम्मा या बाई या मम्मी कैबे के बजाय भाभी काए कतरत। तब तौ तुम जौ जवाब देत कै निराट छुटपन सें भाभी भाभी सुनतते सो आदत पर गई। सो हमारी सोई आदत पर गई। छुटपने सें हम भी सब जनन के मुख सें चाची सुनत रए सो हम भी अपनी बाई कों चाची कन लगे औ फिर कोउ ने न रोकी न टोकी। सो वई हमाई भी आदत पर गई। बा आदतई कैसी जो छूट परै। सो तुमाई आदत आदत है हमारी आदत कछू नई काए!

''तुमसें तौ बहस करबो ही बेकार है जो कानें सो कतीं रओ''

चन्दो-हमई नें कछू पीरे चाउर तो दए न हते कै आऔ बहसबाजी कर लो। चन्दो के ई जवाब पै मुस्क्या कें रै गए दमाद राजा।

अबै दोउ आदमन में और कछू मुहाचाही होती कै मांई आउत दिखा परी। उनै देख कें दोइ आदमी चुप हो गए।

तनकई देर में सब जनें बैठ गए गाड़ी में। दमादराजा नें गाड़ी इस्टार्ट करी और उतै मांई के मों सें चैपाई कड़न लगी- पिरबिस नगर कीजै सब काजा, हिरदय राख कोंसलपुर राजा। जै हो मोरे कामतानाथ स्वामी जू की!

रस्ता भर खेतन में ठाड़ी गोंऊ चना जवा सरसों, अरसी की फसल देख देख कें माईं कौ जी जुड़ा गओ! अबकी बेर फसलें तौ बढ़िया हैं ईसुरनाथ! किरपा करें रइयो। ओला पानी पथरन सें बरकांए राखियो भगवान! नईंतर किसान तौ जीते जी मर जैहें!

देखतई देखत बांदा कौ बजार आ गओ। बजार में एक कोद गाड़ी खड़ी हो गई! चंदो औ चंदो के घरबारे दोऊ जनें उतर गए गाड़ी सें। मांई सें भी पेसाब पानी की पूंछी, पै उननें मना कर दई। तनकई देर में रोकत रोकत पै चाय कौ गिलास पकरा गए दमाद राजा। मांई नें चाय कौ गिलास लै लओ! मांयें सें चंदो चली आ रईंती आइसक्रीम कौ कप लै कें। मांई ने देख लओ सो कन लगीं- बिन्नू अजब चाल है तुमारी। हड़रा कंप रए, ठिठुर रए ठंड के मारें, औ तुम बरफमें आगी लगा रई। बारी बेटा! तुमसें साजे तौ बरेदी भैया कड़े, ठाड़े ठाड़े चाय पी रए बिचारे।

चंदो- चाची अगर उननें सुन लई, तौ समझ लइयो फिर! हम नईं जानत! एसौ मजाक करेंगे बे, कै क्या बताएं! हमाएं रोकबे पै भी तुम अपने दमाद खों 'बरेदी भैया' कातीं, भौत बेसरम हौ सांसऊ।

माईं हंस परीं, हँसतई हंसत बोलीं- बिन्नू एक तुमाऔई आदमी नोंईं है घोड़ा गाड़ी बारौ! फुआ के सबरे दमादन लौ है गाड़ी घोड़न कौ फौज फर्राटौ। मगर पैंट बूसट पै कोई स्वाफी नईं डारत सिवाय तुमाए भतार के। सबरी सोभा बिलुर जात ई स्वाफिया सें! स्वाफी डारें बे तौ हमें आन मान बरेदी धाईं लगत, सो बिन्नू मों सें बई निकर परत! ई में हमाऔ का दोस। रोकने होय तौ उनईं खों रोकौ कै बूसट के ऊपरै बरेदियन घाईं स्वापी न डारे करें। हाऽऽऽऽ........ चंदो कों समुज में न आओ कै मताई के बोलन पै हंसै कै रोए।

सबेरे के चले सब जनें जब चित्रकोट पोंचे फुआ के इतै, तब तीन बज रएते। चंदो नें गैस पै चाय बना दई, सो चाय के संगै सबनें पूड़ी खाईं। बिसनोंटी पूड़ियन के संगै औंरा औ मिर्च कौ नओ अथानों हतो। फुआ नें भी दो पूड़ीं खा लईं। खबा पिबी के बाद सब जनें कड़ गए परकम्मन के लानें। फुआ नें दोरे की साँकर लगा लईं औं अपने पलंग पै पौढ़ गईं। घंटाक के बाद कुंडी खरक परी।

को आय! रौजाऔ तना, आ रए! खोल रए किबाड़े।

अम्मा! हम! सौम्या!! खोलौ किबाड़!

ऐंऽऽ सौम्या!! हओ बेटा, आ रए! आ रए बेटा राजा!!

किबाड़े खुल गए! सौम्या आई कै ताजगी कौ झोंका कै हालफूल की होंस!!

आउतई लिपड़ गई! ओ ऽऽ मॉम! आज तुम सपने में दिख परीं! बस तुरतईं पिलान बन गओ चित्रकोट कौ, औ लो आ गए हम!!

अम्मा- अच्छौ करो बेटा। आज सबेरे सें तरवा खुजा रओतो, सो बेटा तुम चलीं आई।

इतै उतै चकरमकर हेरतीं सौम्या अपनी अम्मा के पलंग पै बैठ गईतीं कै नजर परी बोरियन पै!

-अरे अम्मा जा बोरी कैसी है? का है ई में? कछु मंगाओ है का तुमनें? सौम्या ने पूंछी

''-आँहाँ बेटा हमनें नईं मंगाओ। बा तुमाई मांई आई है छोटी बारी। चंदो और दमाद के संगै। बेई ल्याईं जे पुटरा पुटरियाँ। खोलियो तौ तनक का कन्न ल्याईं! देखें तौ।

''हओ!'' कहकें सौम्या बोरी में से एक एक पुटरिया निकारती जांयें औ खोलती जांय! पुटरियां खोलतई खोलत बिननें कई अम्मा सें कै परीं न राऔ, बैठ जाऔ बैठ कें देख ल्यो।

पुटरियन में कोऊ में कठिया गौऊअन कौ आटा, कोऊ में दरिया, कोऊ में धुबी औ गैर धुबी मूँग की दार, बेसन औरन कौ अचार, एक डब्बा में गैया कौ घी, एक कली बारौ लासुन, हरे मौतिया धना चनन की भाजी, भटा, टमाटर..... घर कौ पिरो कड्डआ तेल, एक में धुबी जुंडी कौ सफेद आटा, मूँग उरदन की दार के पापड.......; पुटरियन में जई सब चीजें कड़ीं।

सौम्या की आँखें भरयाई। कितनों प्रैम है मांई हरन खों अम्मा सें। औ अम्मा भी तौ हमेसां उनके लानें ठाड़ी रातीं हर जांगा। चंदो सें लै कें कल्लू, अमरनाथ, बीना, बल्लो, कैऊ जनन की पढ़ाई लिखाई भई अपने इतै सें! जौ तो दोई हांतन सें होत! फिरऊ बुढ़ापे में नंद भुजाई कौ जौ प्रैम देखबे जोग है, और एक हमाई भौजाई हैं.......।

जिज्जी! ओ जिज्जी! खोलौ!

जा तौ मांई की आवाज है। आ रए माईं। कतईकत सौम्या नें सांकर खोल दई!

राम-राम मांई!

ओ बेटा! सिम्मू! राम राम बेटा, राम राम! खुसी राऔ, दूदकरुला करौ, ऐवाती पुनौती राऔ.......।असीसतीं जांये औ पांव परती जांय। कबै आ गई बिन्नू!

बस अबईं चले आ रए मांई! चंदो औ जीजा जी कां रै गए!

बेटा कौनऊ काम हतो उनें सो बे औरें तौ निकर गए उरई। परों है अवाई बिनकी! तुम तौ रुकहौ बाई!

अरे! परों तक तौ हम का रुकें, मगर हाँ अबै घंटाक में निकर जैहें। अकेले आए हैं ड्राइवर कों लैकें।

सौम्या ने आवाज लगाई ड्राइवर कों। तनकई देर में दो सिलेंडर लैकें ड्राइवर भीतर आ गओ घर के। ''इतै नईं उतै गैलरी में रख दो'' सौम्या की बात सुन कें ड्राइवर उनईं के पाछें चलन लगो। सिलेंडर धरवा कें हँसतीं भईं सौम्या बड़े कमरा में आ कें बैठ गई।

''बिन्नू जे सिलेंडर कां सें ल्याईं।'' मांई ने पूंछी।

बनारस सें ल्याये माईं, और कां सें। अम्मा नें बताई ती फौन पै कै सिलेंडर पार कें बन रई रोटी-पानी! खाली हौन चाउत! सो हमसें न रओ गओ मांई। सिलेंडर तौ हमईं ल्याउत हैं बनारस सें। जब बाबूजी हते तबईं जिद्द कर कर कें हमनें गैस धर दईती, जौ कह कें कै जा हमाई अमानत समुज कें धर लो, जब तुमौरन खों ईकी जरूरत न रैहे, सो तब हम लै जैबी।

साजौ करो बेटा तुमनें। मताई बाप की पीर मोड़ियन खों जादा होत! काए जिज्जी!

'हओ'। लरका तौ बरगए लैबेइ लैबे के साथी मीत हैं।

सौम्या- अम्मा हम जा रए अब! सौम्या की बात कौ जवाब दओ मांई नें अरे बेटाराजा, ऐसें न जाऔ पुतरिया! माईं के हांतन की जुनई की रोटी नईं खानें। छिन भरे में बन जै बेटा!

सौम्या- अरे मांई, काय खों परेसान हो रईं। अबै तौ आईं हों, और फिर तुमें का पता कै कौन चीज कां धरी? सो रान दो अबै। बड़ागाँव आबी, सो खुबा दियो!

सौम्या की बात पूरी न हो पाई, कै मांई फुर्ती सें उठीं, हैंडपाइप लौ चूलौ धरोतो, पुराने अखबारन सें चूलौ जराओ, औ लो दार की पतीली चड़ गई चूले पै। भीतर सें टमाटर ल्याईं भूंजबे के लानें। सिल लुड़िया धो कें हरे धनन में नोंन मिर्च लासुन डार कें भुंजे टमाटरन की चटनी बनाई। गरम पानी सें जुनई कौ आटा माड़ो जौ लों दरभजिया बन गईती। झट्ट सें रोटीं पईं औ दो थारी लगा कें मांई कमरा में लँय आईं। भलाऊँ सीदी सादी गंवई रसोई थी जा, पै प्रैम नैम कौ एसौ रस हतो, कै स्वाद कौ पारावार नईं।

अफर कें रसुइयां जेंई सिम्मू नें। दिन डुबइयां हतो सो जैबे की तैयारी बना लई सौम्या नें! अम्मा औ मांई सें बिदा लै कें कड़ परीं बनारस अपने सासरे के लानें!

माईं-जिज्जी रामधई तुमाई जा मौड़ी तौ साक्षात् अन्नपूर्णा है। बताऔ तौ आठ सौ कौ सिलेंडर धरबे के लानें बिन्नू चार हजार की गाड़ी करकें आईं! और इत्ते पै सबरे भैया बैन जान के प्यासे हो परे इसके! न्याव अन्याव जानें का का कत रात! तुमाई बड़ी बऊरानी फूटी आँखन नईं देखतीं सिम्मू कों! हमसें कततीं कै बने बनाए कमरा कौ खोज मिटा दओ सिम्मू नें, सो काए जा सई आय जिज्जी?

जिज्जी-कां की बातन में परीं तुम! अपनी आँखन सें तुमईं नें देखो, कै बनारस सें भगत आई बिटिया! सिलेंडर धर कें तुरतई चली गई घड़ी घंटा लौ नईं सुस्तानी! जे सबरे रांड़ें रंडुआ कोस मील सें नई आ पाउत, औ बा बिचारी हजारन खर्च करकें एक पांव पै ठाड़ी रात! हारी में, बीमारी में और राजी खुसयाली में। गिरजा, का का बताएं तुमें! हम एक नईं कैउअन बार गिरे गुसलखाने जैबे में! अबकी बार जब फिरकऊँ गिर परे, सो बुखार आउंन लगो, जी अलग घबराय, सो सबकों दै बुलाओ, पै चिरैया लौ न झाँकी! आई तौ जई मौड़ी आई! खूबईं खूब रोई! रोउत जाय, औ फौन करत जाय! तनकई देर में कामता मिस्त्री एक रेजा के संगै आ गओ! सिम्मू नें ऊसें समझा कें कई कै कमरा में ऐसी लैटरिन गुसलखानों बनाऔ कै इनकौ बाहर जाबो छूट जाय। न जे इतनी दूर बायरें गुसलखाने लों जैहें, न गिरहें, सो भैया तुम एसौ इंतजाम कर देओ कै नाली तौ खुलै बाथरूम में, औ आसानी सें एई कमरा में जे पेसाब पाखाना औ नहाबो धोबो कर लें।

-पूरे दो दिना रुकी रई, गाड़ी सें ढो ढो कें चीजें ल्याउत रई! गुसलखाने के द्वारे पै चदरा कौ परदा बना कें टाँग दओ, जी में द्वारे खोलबे बंद करबे को झंझट न राय! रात बिरात की को कय हमें तौ हर तरप सें आराम हो गओ भुजाई! तब सें लो एकऊ बार नईं गिरे हम!

मांई-काए खों गिरनें! पलका सें उतरीं सो दो डग पै गुसलखानों, चाय नहाओ धो और चाय कछू करौ! औ न बदबू न गंदगी! औ बे औरें तौ भौतऊ नाक सिकोरतीतीं!

जिज्जी-काये न सिकोरें! सिम्मू नें हमाए सामनें फौन करकें बताईती बिनें कै कमरा में गुसलखानों बनवा रए अम्मा के सुबीते के लानें, सो सबनें मौड़ी खों बातें सुनाईतीं, हमसें तक मना

करीती कै कमरा में ना बनवाइयो।
–ई पै सिम्मू नें खूब खरी खोटीं सुनाई, खूब फ्टकार लगाई सबरन कों।
–कई कै उनकौ घर है, बे चाय जहाँ चाय जो कछु बनवाएँ किसी कों क्या मतलब।
–तुमोरें जौ काए नई सोचत कै कमरा में सुबधा हो जैहै तौ अतरे रोज उनकौ गिरबो तौ बंद हो जै है!
–तुमाए इतै, तुमाए घर में तौ नई बनवा रए, उनकी जमीन, उनकी मर्जी उनकौ आराम तौ फिर तुमोरें को होत बोलबे बारे।
–तुमोंरन खों तौ खुसी भँय चइये कै चलौ सुभीते की बान बन रई, मगर उल्टौ हमई खों अदरोक लगा रए!
–को है हमोंरन में सें जी के कमरा बाथरूम सें अचैट न होंय। तब फिर अम्मा के लानें काए नहीं एसौ हो सकत!
मांई–जा तौ सौ आना सांसी है! औ जिज्जी, पंडा कों हटा कें ऊ चिनबादी कों लगवा दओ सिम्मू नें सो ई में का बात हती!
जिज्जी– अरे न पूछौ गिरजा भुजाई! ई पंडा नें जितने अत्त मूते, सो हम का बताएं। नम्बर एक कौ लबरा औ चोरी चकारी में तो इसखों कोऊ नई पा सकत। आँखन में कौ काजर लैबे बारौ है। मोए खानें सौ ग्राम आटा, औ इनखों पसेरन! हमसे कहै कै दान पुन्न कर रए, जबकें जौ पनमेसरौं टिपन कौ धंदौ चला रओतो। वौ तो एक दिना, एक आदमी आ कें बोलो हमसें– डुको, पंडाजू सें कै दइयो कै हम गाँव जा रए तो तीन नागा कर रए टिपन में!
– तब हमें जा असलियत मालूम चली, कै हमाए बहानें जौ मुलक की रसोई बना कें बेंच रओ! पै हम चुप्प रै गए! मोहिनी ई के बहाने जा जासूसी करा रई हमाई कै हमाए ढिगां को को आ रओ को जा रओ, का ल्या रहो......। अपनी जाई के एक एक लच्छन जानत हम।'
–जौ सब सुन कें माई सन्न रै गई अजरज सें मों खुलो रै गओ बोलीं–
''एंऽऽजू''
जिज्जी– हओ जू! जब ई पंडा के अत्त देखत देखत हड़ गए तब हमनें जे सब बातें फोनई पै बताईतीं सिम्मू कों। बिचारी भागी चली आई! सामनें बारी बाई– चिनबादी सें ठीक ठैराव करो। हमाए लानें टिपन लगवा दओ! सो ऐसें हम बचा पाए अपनी लूट खसोट! भुजाई चाय जो कोऊ चाय कछू कात राए, बातें बनवा लो सबसें बस। बातन के भन्ना हैं सबरे बच्चा! पै काम हमाए जई मौड़ी आउत हमेसां। बा तौ पइसा टका लौ दैबे सें नई चूकत, पै हमई रो गा कें कै देत, कै बेटा हमें बिटियन कौ नईं खानें, पाप कौ भागी न बनाऔ......।
तऊ पै कछू न कछू ल्या कें धरई देतीं बिन्नू! टी.वी., मिक्सी, स्टोप, गैस सें लै कें कपड़ा उन्ना लौ धर जातीं। मेवा मिष्ठान की बर्फी, लड्डू, सूखे मेवा लाकर कें धर जातीं। हम तौ कत कै जैसी हमाई सिम्मू है, ऊसई सबकी बिटियाँ होंय भगवान! मांई की भी आँखें खुल गई असलियत कों देख सुन कें! बे तौ जई सोच रईतीं कें एक पेट के जाए बच्चन में कितनों फरक होत।

– एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी
डी.ए.वी. कॉलेज कानपुर
128/387, वाई–1 ब्लॉक किदवई नगर कानपुर

चिट्ठी

– डॉ. हरिमोहन गुप्त

चरन छुअत हैं हमइ इते सें,
सो सब ही स्वीकारो,
कैसे दद्दा बाई उते हैं,
कैसो हाल तुम्हारो।
कैसी भइ जा साल फसल, सब....
कागज पे लिख दइयो,
साहूकार खों कछु दे पेहो,
हमको इतइ बतइयो।
सोची थी जा साल कछू तो,
तनखा बढ के मिल है,
कछू भेज दें हैंए हम तुमखों,
मन सबको बस खिल है।
लेकिन का केदें हम भइया,
महँगाई ने खा लओ,
रोजइ सोचत कछू बचा लें,
हाथ कछू नइ आ रओ।
सात हजार कमरा के दे रयए,
सात हजार खाबे के,
तीन हजार मोटर के लग रयए
बस दफ्तर जाबे के,
कपड़ा तो हम घरइ धोऊतइ,
बाहर प्रेस करा रय,
पाँच हजार ऊपर उठ जातइ,
कछू जोर नइ पा रय।
सबरी तनखा भुक हो जातइ,
का हम तुमसें कै दें,
सोचत सोचत प्रान सुखा लय,
साँची हम सब कै दें।
पर होनी खों का हम कै दें,
इते पर रहे लाले,
खूब जुगत से खरचा कर रय,
पाउन पर गय छाले।
सोची थी दिल्ली में जा कें,
रुपया खूब कमा हैं,
सबरे खरचा काट कूट कें,
रुपया इते बचा हैं।
देखो संजा के कऊँ जा के,
कोनउ जुगत लगा हैं।
दो घंटा बस उते काम कर,
कछू जोर हम पा हैं,
धीरज धरियो जा साले हम,
दस हजार पहुँचा हैं,
कछू जोर कें तुम दे दइयो,
करजा सबइ मिटा हैं।
जादा का हम लिख दें भइया,
बाई दुरूख न पाबें,
दद्दा सें अब काम बनत नइ,
बैठे बैठे खाबें।
भोजी के हम चरन छुअत हैं,
सुख से तुम सब रहियो,
चुन मुनए गुड्डू रहें प्यार सें,
आसिस मेरो कहियो।

– कोंच, जिला जालौन (म.प्र.)

'मधुकर' का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अवदान

– डॉ. उषासिंह, हरेन्द्रपाल सिंह

भारत में मुद्रण की व्यवस्था नहीं थी सबसे पहले ईस्ट इंडिया कंपनी ने मुम्बई में मुद्रण कार्य आरंभ किया 18वीं शताब्दी में मद्रास, कलकत्ता, हुगली और मुम्बई में छापाखानों की स्थापना हुई धीरे-धीरे इनका चलन बढ़ा और राजा राममोहन राय ने 1821 में ''संवाद कौमुदी'' नामक साप्ताहिक 'बंगला पत्र' के रुप में प्रकाशित कराया हालांकि इससे पूर्व भी ''समाचार दर्पण और दिग्दर्शन पत्रों का प्रकाशन सीरमपुर मिशन के द्वारा हो रहा था, फ्रि अनेक समाचार पत्र निकलना शुरु हुये हिन्दी का पहला पत्र ''उदंत मार्तण्ड'' का 1826 में प्रकाशन हुआ फिर ''सुधादर्पण'' समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ ''आनंद बाजार पत्रिका'' जैसी पत्रिकायें भी प्रकाशित हुई, कहने का आशय यह है कि सर्वप्रथम और सर्वाधिक प्रकाशन का श्रेय शुरुआत में बंगाल को कहा जाता है। 19वी शताब्दी के आते-2 अनेक समाचार पत्र और पत्रिकायें छपने लगीं पूर्व में हिन्दी के समाचार पत्रों में ही साहित्यिक सामिग्री छापी जाती थी पर साहित्यिक पत्रिकाओं के आने के बाद कवितायें और लेख इन साहित्यिक पत्रिकाओं में ही ज्यादा छपने लगे पर समाचार पत्र भी साहित्यिक कॉलम के रुप में कविताओं और लेखों को स्थान देते रहे।

साहित्यिक क्षेत्र में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में सरस्वती नामक पत्रिका का प्रकाशन किया इस पत्रिका ने साहित्यिक क्षेत्र में तहलका मचा दिया इस पत्रिका में छपना साहित्यकार अपना भाग्य मानता था और निश्चित ही इस पत्रिका में छपने वाला साहित्यकार रातों रात एक प्रतिष्ठित साहित्यकार या कवि बन जाता था।

इसी की तर्ज पर देश में कुछ स्वतंत्र रुप में और कुछ राजे राजवाड़ों की मदद से साहित्यिक पत्रिकायें छपने लगीं बुन्देलखंड के ओरछा राज्य में जिसकी राजधानी टीकमगढ़ थी साहित्यिक गतिविधियों के लिये वर्ष 1930 में वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद की स्थापना हुई इसी बीच यहां के राजा वीरसिंह देव द्वितीय ने पं.वनारसी दास चतुर्वेदी को टीकमगढ़ आने का आग्रह किया वीरसिंह जू देव द्वितीय ने हिन्दी साहित्य का ''वीरसिंह देव पुरस्कार'' घोषित कर हिन्दी को राजभाषा बनाया जो आज भी 'देव पुरस्कार' के रुप में म.प्र. शासन द्वारा दिया जाता है। उन्होंने बुन्देलखंड में बुन्देली शब्दों, कहावतों, मुहावरों, कथनों का संग्रह तैयार करने को कहा वीरसिंह देव के आग्रह पर पं.वनारसी दास चतुर्वेदी टीकमगढ़ आये उन्हें ''भोलेनाथ'' का रमणीक ग्राम कुण्डेश्वर में रहने खाने की व्यवस्था बनायी और उन्हें वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद के तत्वाधान में 'मधुकर' पत्रिका प्रकाशित करने का आग्रह किया प्रकाशक - सीताराम पाटौदिया वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद के तत्वाधान में मधुकर का प्रथम अंक 1 अक्टूबर 1940 में प्रकाशित हुआ यह एक पाक्षिक पत्रिका थी जिसके संपादक पं. वनारसीदास चतुर्वेदी थे। इस प्रथम अंक में ही हिन्दी साहित्य के ख्याति नाम ऐतिहासिक उपन्यासकार श्री वृंदावन लाल वर्मा का लेख हमारी संस्कृति के आधार एवं मुंशी अजमेरी का महाराजा मधुकर शाह तथा पं. श्याम विहारी मिश्र का योरोपीय महायुद्ध और पं.रमाशंकर शुक्ल का ''राजा करे सो न्याय'' एवं बुन्देलखंड के ग्राम गीत गौरीशंकर द्विवेदी के साथ कुल 16 आलेख प्रकाशित हुये।

बुन्देलखंड में यह कहानी बहुत प्रचलित है कि एक बार निराला ने शुरुआती दौर में अपनी कविता ''जुही की कली'' मधुकर में प्रकाशन हेतु भेजी चूंकि वह अतुकांत हिन्दी रचना थी तो मधुकर के संपादक श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने इसे ''धासलेटी साहित्य'' कहकर वापिस कर दिया और कहा कि मधुकर ऐसी रचनाए प्रकाशित नहीं करता फ्रि निराला की वही रचना 'सरस्वती' में द्विवेदी जी ने प्रकाशित की तो देश भर में जुही की कली को साहित्य समाज ने हाथों हाथ लिया।

प्रसिद्ध साहित्यकार यशपाल जैन के शब्दों में संयोग से सन् 1940 के अक्टूबर में दिल्ली छोड़कर बनारसी चतुर्वेदी के आग्रह पर कुण्डेश्वर (टीकमगढ़) चला गया वहां से हम लोग मधुकर नामक पत्र निकालते थे कुण्डेश्वर चतुर्वेदी जी के कारण राजनीति, साहित्य और संस्कृति का प्रभावशाली केन्द्र बन गया था बड़े-2 राजनेता वहां आते थे क्रांतिकारी प्रो. रंजन तो कई वर्ष तक हमारे साथ रहे थे वह सन् 1942 में अजमेर जेल से भाग आये थे और भूमिगत होकर अपना कार्य कर रहे थे साहित्यकारों और पत्रकारों में तीन परिवार स्थायी रुप से वहाँ रहते थे हिन्दी के पुराने लेखक श्री कृष्णानंद गुप्त और हिन्दी के जाने माने पत्रकार श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी कई वर्ष वहां रहे इनके अतिरिक्त अनेक विख्यात लेखक वहां आये सांस्कृतिक क्षेत्र के नामी-गिरामी व्यक्ति तो समय-2 पर वहाँ आते ही रहते थे हम लोगों ने काम भी खूब किया सबेरे का अधिकांश समय पठन पाठन तथा लेखन में ही व्यतीत होता था मधुकर के संपादन और प्रकाशन के अतिरिक्त कई महत्वपूर्ण ग्रंथों के संकलन और प्रकाशन का कार्य भी हुआ उनमें 'प्रेमी अभिनंदन ग्रंथ' विशेष रुप से उल्लेखनीय है।

इससे स्पष्ट होता है कि मधुकर के घोषित संपादक भले ही पं.बनारसीदास ही थे पर यह सब टीम वर्क के रुप में ही होता था। वषज़ 1946 में ब्रिटिश सरकार को आशंका हुई कि मधुकर की आड़ में यहाँ स्वतंत्रता संग्राम की नींव डाली जा रही है ये भांपकर यहां के राजा ने मधुकर एवं उससे जुड़े लोगों को आर्थिक मदद देना बंद कर दी मधुकर का अंतिम अंक दिसम्बर 1946 में निकला और बंद हो गया इस प्रकार मधुकर का जीवनकाल 5 वर्ष 2 माह का रहा पर इसका व्यापक असर हुआ -

हिन्दी के विकास में जहाँ ऐतिहासिक उपन्यासकार वृंदावन लाल वर्मा, मुंशी अजमेरी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, यशपाल जैन, डॉ.श्याम विहारी मिश्र, शिव सहाय चतुर्वेदी, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, प्रसिद्ध उपन्यासकार एवं पुरातत्व वेत्ता अंविका प्रसाद दिव्य, आचार्य क्षितिमोहन सेन, कृष्णानंद गुप्त, जगदीश प्रसाद चतुवेर्दी, श्रीराम शर्मा, गौरीशंकर द्विवेदी, घासीराम व्यास, वासुदेव शरण अग्रवाल, डब्लू-डब्लू ग्रिर्यसन, पं.परमानंद, राधाचरण गोस्वामी, पं.बालकृष्ण देव तैलंग, पं.बालकृष्ण शर्मा नवीन, सत्यनारायण कतिरत्न राष्ट्रीय धारा के राम नरेश त्रिपाठी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, हरिवंशराय बच्चन की कविता ''नीड़ का निर्माण फिर प्रकाशित हुई।

'मधुकर' में यह कोशिश की गई कि प्रत्येक अंक में बुन्देली भाषा, बुन्देली ग्राम-गीत, मुहावरे और शब्द संग्रह के लेख आवश्यक रुप से शामिल किये जाये इस संबंध में बुन्देलखंड - पं.गौरीशंकर द्विवेदी, बुन्देलखंड की कहानियां, शिवसहाय चतुवेदजी, बुन्देलखंडी के कुछ शब्द - नाथूराम प्रेमी ईसुरी की फागें - गौरीशंकर द्विवेदी, बुन्देलखंडी शब्द संग्रह-शिवसहाय चतुवेर्दी, ग्राम साहित्य के संग्रह की उपयोगिता - लक्ष्मीनारायण मिश्र, बुन्देलखंड के ग्राम गीत - दुर्गा प्रसाद समाधिया, बुन्देलखंडी बुझओले या पहेलियां - शिवसहाय चतुवेर्दी, बुन्देलखंडी की पहेलियां-बृजविहारी लाल खरे, बुन्देलखंड की कहावतें - हरगोविंद गुप्त, बुन्देलखंड भाषा का शब्दकोश और इसकी तैयारी कृष्णानंद गुप्त, बुन्देलखंडी बुझौवल - कु. शकुन्तला देवी, बुन्देलखंड की साहित्यिक संस्थायें-गौरीशंकर द्विवेदी, बुन्देलखंड का शब्दकोश-प्रयाग नारायण त्रिपाठी ग्राम्य गीत के रुप में बुन्देलखंड के लोक कवि 'ईसुरी' की फाग का वर्णन देखिये -

1. करकैं नेह टोर जिन दैयो, दिन दिन और बढ़ैयो।
   जैसे मिले दूध में पानी, ऊसैं मने मिलैयो।
   विथुरे डरे केस अनगांथे, आज लाड़ली धोये।
   बूंदा चुअत नितंबन ऊपर, कम से गये निचौये।
   मधुकर वर्ष 2 अंक 1 अक्टूबर 1941 पृष्ठ 18, 19

मधुकर के संपादक को जो बुन्देली शब्दों, कहावते, मुहावरों, लोकोक्तियां आदि का जो संग्रह प्राप्त हुआ वह अलग से संग्रहित किया गया जिसे बाद में एक व्यवस्थित रुप दिया जाना था पर वह नहीं हो सका।

मधुकर में उन लेखों को भी सदैव महत्व दिया गया जिसमें बुन्देलखंड की सांस्कृतिक विरासत झलकती हो जैसे दीवान हरदौल जू-रामराजा डॉ. श्याम बिहारी मिश्र, बुन्देलखंड की रसिकता, संपादक - पं. बनारसी दास चतुवेर्दी, बुन्देलखंड के जैन तीर्थ - शिवसहाय चतुवेर्दी, खजुराहो, आल्हा की ऐतिहासिकता और महत्व कु. महेन्द्रपालसिंह, कौआ, सिंहा-व्यास, आल्हा की साखी गोविंददास वर्मा मधुप बुन्देलखंड वावनी सीयाराम रुसिया, नौरता - गोविंद प्रसाद वर्मा, मधुप, देवता- प्रतिपाल सिंह जूदेव - बुन्देलखंड का कवि ईसुरी - कृष्णानंद गुप्त, बुन्देलखंड में बच्चों के खेल - रामसेवक रिछारिया, वैवाहिक ग्राम गीत - राम भरोसे पाठक, बुन्देलखंड की संस्कृति - राधाचरण गोस्वामी, बुन्देलखंड की रुढ़ियां - चंद्रभान कौर्मिक्षत्री आदि का वर्णन मधुकर के विभिन्न अंकों में स्पष्ट दिखायी देता है। जो आज भी सांस्कृतिक धरोहरों के रुप में विद्यमान है।

मधुकर में बुन्देलखंड से संबंधित इतिहास, धरोहरों, विरासतों और उसके भोगोलिक लेखों की भी खूब भरमार रही जिससे बुन्देलखंड की एक तस्वीर लोगों के सामने सहज ही खिंच जाती है। यथा - बुन्देलखंड के जैन तीर्थ - शिवसहाय चतुवेर्दी, बुन्देलखंड इतिहास के साधन - कृष्ण बल्देववर्मा, कालिंजर के दर्शन, भीमकुंड की यात्रा, महाराजा छत्रसाल, जटाशंकर की यात्रा - राधाचरण गोस्वामी, बरुआसागर की नवनिधियां - रामसेवक रिछारिया, आधुनिक अहार नारायणपुर - ठाकुरदास जैन, जमडार के गीत पर - पं. बनारसीदास चतुवेदर्दी, बुन्देलखंड का भूगोल और प्राइमरी स्कूलों के लिये उसकी आवश्यकता - कृष्णानंद गुप्त, हमीरपुर और उसके कुछ अज्ञातकति, बुन्देलखंड का इतिहास - अम्बिका प्रसाद दिव्य, बुन्देलखंड की सीमायें - कु. प्रतिपालसिंह जूदेव, ओरछे की चित्रकारी - अम्बिका प्रसाद वर्मा वर्तमान में प्रतिपाल सिंह जूदेव का बुन्देलखंड का इतिहास कई भागों में प्रकाशित हो चुका है जिससे इतिहास, भूगोल, सामाजिक दशा, जनकल्याण, कवि और उनका साहित्य, भूगोल सब कुछ उपलब्ध है।

इसके अतिरिक्त मधुकर के विभिन्न विषयों पर विशेषांक भी समय-समय पर निकाले गये जो इस प्रकार हैं -

1. बुन्देलखंड प्रांत निर्माण विशेषांक-7-16 1 मई 16 सितम्बर 43
2. बुन्देलखंड परिषद विशेषांक वर्ष 3-अंक 19-20 जनवरी 44
3. जनपद आंदोलन विशेषांक वर्ष 4 अंक 1-10 अप्रैल-अगस्त 49
4. बुन्देलखंड साहित्य सम्मेलान विशेषांक वर्ष 4 अंक 17-20 दिसम्बर 1944-जून 1945
5. पत्रकार कला विशेषांक वर्ष 5 अंक 13-14 फरवरी 1946
6. रेखा चित्रांक वर्ष 6 अंक 2 दिसम्बर 1946

अंत में कहना न होगा कि मधुकर पाक्षिक के माध्यम से उसने व्यहारिक जीवन, सामाजिक और साहित्यिक जीवन, ऐतिहासिक और भौगोलिक एवं सांस्कृतिक जीवन को बहुत प्रभावित किया तथा साहित्य की परंपरा को बनाये रखा।

इसके संबंध में कुछ महत्वपूर्ण सम्मतियों को देखा जा सकता है।

शिवपूजन सहाय राजेन्द्र कालेज छपरा

''मधुकर एक अमूल्य निधि है हरेक पाती पढ़ने योग्य है, ऐसे पत्र हरेक ठिकाने से निकलें तो अच्छा हो उसमें संपादक की सुरुचि की छाप है। प्रत्येक अंक अनमोल है मेरे संग्रहालय की शोभा बढ़ गई (मधुकर वर्ष 2 अंक 21 1 अगस्त 1942 में पत्र प्रकाशित)

रामनाथ पांडे प्रोफेसर सेंट एण्ड्रुज कालेज गोरखपुर -

मधुकर का 2/5 अंक दिसम्बर 1941 का मिला आपके उददेश्य आदर्श है मधुकर के इस एक ही अंक को देखकर इस प्रकार के पत्र की उपादेयता स्पष्ट हो जाती है मधुकर के लेखों में सब एक से एक बढ़कर है (मधुकर वर्ष 2 अंक 13 1 अप्रैल 1942 में प्रकाशित)

विशाल भारत कलकत्ता -

गत डेढ़ वर्ष से मधुकर पं. बनारसी दास चतुवेर्दी के संपादकत्व में निकल रहा है। यद्यपि मधुकर का क्षेत्र मुख्यतया बुन्छेलखंड है तो भी उसके पिछले इक्कीस अंको से हमारी धारणा तो यह है कि सांस्कृतिक, साहित्यिक और उपयोगिता की दृष्टि से मधुकर हिन्दी में अपने ढंग का निराला ही पत्र है और इस दृष्टि से मधुकर का क्षेत्र काफी व्यापक है। (मधुकर वर्ष 2 अंक 16 नबंवर 1941 में प्रकाशित)

हालांकि टीकमगढ़ में लोकवार्ता का त्रैमासिक प्रकाशन जून 1944 से लगातार हो रहा था जिसके संपादक कृष्णानंद गुप्त थे जिनके लेख मधुकर के लगभग प्रत्येक अंक में प्रकाशित होते थे जिसमें भाषाविद डॉ. सुनीत कुमार चटर्जी, महादेवी वर्मा की कवितायें भी प्रकाशित हुई विंध्यवाणी साप्ताहिक एवं वीर बुन्देल मासिक का प्रकाशन भी टीकमगढ़ में होता रहा पर जो ख्याति पं. बनारसी दास चतुवेर्दी एवं उनकी टीम के द्वारा मधुकर को प्राप्त हुई वैसा किसी को भी नहीं हो पायी अंत में कह सकते हैं। कि मधुकर ने हिन्दी साहित्य व बुन्देली के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- शास. कन्या महा. टीकमगढ़ (म.प्र.)

'जो संसार ओस कों बूँदा' कहने वाले जनकवि ईसुरी पर सार्थक पुस्तक

– प्रो. स्मृति शुक्ल

बुन्देलखंड अंचल लोक संस्कृति को अपनी फागों में जीवंत करने वाले, प्रेम-श्रृंगार की निकुंठ अभिव्यक्ति करने वाले लोक कवि ईसुरी का काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। ईसुरी की फागों में श्रृंगार के अतिरिक्त समाज के श्रमशील व्यक्तियों के प्रति आस्था के भाव और जीवन की नश्वरता को भी अनुगूँजे हैं । जब ईसुरी कहते हैं –'बखरी रैयत है भारे की / दई पिया पियारे की / जो लो चाहे राखे उमें / जोन दिना चाहे निकारे / यहाँ ईसुरी जीवन को 'भाड़े की बखरी' कहते हुए संसार के प्रति गहरी आसक्ति रखने वाले सांसारिक जीवों को जीवन के अंतिम सत्य और मनुष्य की अंतिम नियति से परिचित कराते हैं । ईसुरी जिस लोक में जन्में, पले-बढ़े उसका वास्तविक चित्रण अपनी फागों में किया उन्होंने अपनी अनुभूतियों पर किसी प्रकार का मुलम्मा नहीं चढ़ाया। ईसुरी ने अपने जीवन में षड़यंत्र, मान अपमान के क्षणों को भोगा था और अपनी फागों में ऐसी घटनाओं को मार्मिक रूप से अभिव्यक्त किया है। ईसुरी ठेठ और लोक संस्कृति में जन्मे थे, उन्होंने जीवन संघर्षों से इल्म प्राप्त किया था, संवेदनाओं से उनका हृदय आपूरित था इसलिये उनकी फागों में स्वभाविकता सरलता, कोमलता और विभिन्न भावों की पारदर्शी अभिव्यक्ति के साथ अनुभूति की तीव्रता है।

जनकवि ईसुरी पर अब तक अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी फागों का संकलन भी श्री कृष्णानंद गुप्त, श्री लीलाराम, श्रीराम प्रसाद आर्य ने किया है । आज ईसुरी के काव्य के विविध पक्षों पर अनेक विश्वविद्यालयों में शोधकार्य हो रहे हैं । ईसुरी पर प्रथम शोध कार्य डॉ. एन.आर. चैरसिया ने अवधेश प्रताप विश्वविद्यालय रीवा से किया था । उन्हें 'बुंदेलखंड का लोक कवि ईसुरी: जीवन और साहित्य' विषय पर 1976 में शोध-उपाधि प्राप्त हुई थी ।

बहुत विलम्ब से लगभग बाईस वर्षों बाद यह शोध प्रबंध पुस्तककार के रूप में प्रकाशित हुआ है। षोध-प्रबंध एक निश्चित साँचे में कुछ खास प्रतिमानों को निर्धारित कर लिखा जाता है। शोध-प्रबंध को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित कराने के पूर्व चौरसिया जी ने कुछ शोध सामग्री को अलग किया है और शोध प्रबंध को पुस्तक का स्वरूप प्रदान किया । लोक कवि ईसुरी के जीवन परिचय से पुस्तक प्रारंभ होती है। ईसुरी की फागों में अंतर्निहित साक्ष्यों की खोजकर और बाह्य साक्ष्यों के आधार पर एन.आर. चैरसिया ने ईसुरी का जीवन वृत्त प्रस्तुत किया । ईसुरी का जन्म मेंड़की नामक ग्राम में हुआ था लेकिन उनकी कर्मस्थली बगौरा नामक ग्राम था । इस तथ्य को चौरसिया जी ने स्थापित किया और इसके पक्ष में ईसुरी की अनेक फागों को रखकर तार्किक रूप से अपना मत रखा । एन.आर. चैरसिया शोध कार्य के दौरान बगौरा जाकर 95 वर्षीय वृद्ध श्री दीनदयाल मिश्र तथा धवर्रा निवासी श्री भूपत सिंह से विस्तार से बातचीत करके लोककवि ईसुरी के जीवन के अनेक अनछुए पहलुओं की खोज की । इसी बातचीत से यह बात पता चली कि ईसुरी की फागों का जन सामान्य में प्रचार-प्रसार सुन्दरिया और गंगिया नाम की नर्तकियों ने गा-गाकर किया । ईसुरी की जन्मकुंडली भी चौरसिया जी को प्राप्त हुई है। इस कुंडली के आधार पर ईसुरी का जन्म संवत् 1898 चैत्र सुदी दसमी तिथि दिन गुरु वार को हुआ था । ईसुरी का मूल नाम हरलाल था वे उपनाम ईसुरी के नाम से रचनाएँ करते थे । ईसुरी सहज-सरल और विनम्र होने साथ अत्यंत स्वाभिमानी व्यक्ति थे।

ईसुरी के फागें बुंदेली लोक संस्कृति की पयार्य है । डॉ.आर.एन. चैरसिया ने ईसुरी की फागों का वर्गीकरण करते हुए लिखा है कि ईसुरी ने छन्दयाऊ, सखयाऊ, ढपकी झूलना, खड़ी फागें, चौकड़िया फागें और लपेटा की फागें लिखी इन फागों में रामअवतार, कृष्ण-अवतार, प्रकृति, प्रेम, श्रृंगार और दर्शन आदि विशयों को लिया गया है। ईसुरी ने रजऊ के सौन्दर्य के इतने मनोरम षब्द चित्र उकेरे हैं जो पाठक के हृदय में बस जाते हैं । जैसे –

हम खां बिसरत नई बिसारी, हेरन, हँसी तुम्हारी ।
जुवन विसाल, चाल मतवारी, पतरी कमर इकारी ।।

संयोग श्रृंगार के अत्यंत हृदयस्पर्शी चित्रों के साथ डॉ. एन.आर. चौरसिया ने विप्रलंभ की सभी शास्त्रीय दशाओं को ईसुरी की फागों में खोजा है।

ईसुरी की फागों में अनुप्रास, उपमा, रूपक, स्वाभावोक्ति, अथार्दान्तरन्यास, निदर्शन विशेताए विपर्दा, अन्योक्ति, अतिश्योक्ति आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है । फागों के अतिरिक्त कुंडलियाँ, (मात्र पाँच) घनाक्षरी, आदि छंदों का प्रयोग किया है। डॉ. आर.एन. चौरसिया ने अपनी पुस्तक 'बुंदेली लोककवि ईसुरी' में ईसुरी को फागों में लयात्मक, ध्वन्यात्मकता के साथ संगीतात्मक पक्ष की भी खोज की है और चौकड़िया फागों की स्वरलिपियाँ भी प्रस्तुत की है।

समग्रतः डॉ. एन.आर. चौरसिया ने बुंदेली के कवि ईसुरी के काव्य का गहन अध्ययन कर इस पुस्तक को रचा है। इस पूरे कार्य में उनकी दृष्टि शोधपरक रही है इसलिए उन्होंने ईसुरी के जीवन के अनेक अनुद्घाटित पक्षों का उद्घाटन किया है । वे कौन सी स्थितियाँ थी, कौन से व्यक्ति थे, कौन सी घटनाएँ थीं जिनसे कवि को काव्य सृजन की प्रेरणा मिली । इन सभी तथ्यों का खुलासा इस पुस्तक में किया गया है। ईसुरी की कल्पनाशक्ति, अनुभूति की तीव्रता, भाशिक सामर्थ्य नाद सौन्दर्य लयात्मकता और लोक जीवन के विविध रंगों से अनुरंजित होकर उनकी फागों में विलक्षण भाव-सौन्दर्य का जो शब्द चित्र बनता है वह पाठक को अनुभूतियों की अतल गहराईयों तक ले जाता है। बुंदेली संस्कृति के पुष्पों और लोक जीवन के सौरभ से सिक्त और रजऊ के सौन्दर्य से अनुरंजित ईसुरी के काव्य का अध्ययन कर डॉ आर.एन. चौरसिया ने इस पुस्तक का प्रणयन किया है । इस पुस्तक में उन्होंने ईसुरी के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखा है कि ''बुंदेली लोक काव्य धारा में ईसुरी ने क्रांतिकारी परिवर्तन किया । उन्होंने जनमानस के अंतस में पैठकर उसे आल्हादित किया है। ईसुरी को मानव मन का ज्ञान था इसलिये उनकी फागें जनमानस में इतनी लोकप्रिय बन पाई ।''

डॉ. एन.आर. चौरसिया की यह पुस्तक निश्चित ही ईसुरी को समग्र रूप में विश्लेशित करती है और अनेक नवीन और मौलिक तथ्यों को प्रस्तुत करती है । प्रो. बहादुर सिंह परमार ने इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि 'ईसुरी के काव्य में बुंदेलखंड अंचल की लोक संस्कृति के मुँह बोलते चित्र हैं ।'' इन सभी चित्रों की विषयवार प्रदर्शनी डॉ. एन.आर. चौरसिया ने अपनी इस पुस्तक में लगा दी है। ईसुरी के काव्य के सभी पक्षों पर गंभीर रूप से विचार करने वाली यह पुस्तक निश्चित ही हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है ।

– ए-16, पंचशील नगर
नमर्दा रोड, जबलपुर-482001
मो.नं. 99934169374

हिंदी कथा साहित्य में बुंदेलखंड की मानवीयता

- डॉ राजेंद्र सिंह चौहान

बुंदेलखंड की लोक संस्कृति भारत के अनेक जनपदों की लोकसंस्कृति से अधिक प्राचीन है। लोकसंस्कृति जीवन का प्राणधार होती है। जीवन से जुड़ा ही साहित्य होता है और साहित्य में वही प्रतिबिम्ब होता है जो समाज मे घटता है। इसलिए संस्कृति समाज की आत्मा होती है बुंदेलखंड की अंचल के हिंदी उपन्यास कारों ने अपनी रचनाओं मे बुंदेली लोकसंस्कृति का प्रकटीकरण प्रतयक्ष व परोक्ष रूप से किया है। अतः इन्हीं उपन्यासकारों के उपन्यासों मे बुंदेली लोकसंस्कृति के एक तत्व मानवीयता का विवेचन संक्षिप्त रूप से करते है

बुंदेलखंड की जो सामूहिकता का आधार है वह आपसी प्रेम सम्बन्ध भी है इस अचल के जन का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व ही सामूहिकता है। इसी कारन वह जन समुदाय कहलाता है समूहोकता तभी आती है जब व्यक्ति के अंदर मानवीय गुण हो अगर मानवीयकर्ता के बिना सामूहिकता आती है तो वह विनाश की तरफले जाती है। मानवीय गुणों माँ सच्चाई ईमानदारी करुणा अहिंसादया दान धर्म प्रेम वचनबध्हता निस्वर्थभाव आदि आते है। इन्ही मानवीय गुणों मे प्रेम को देखे तो माता-पिता भाई बहन पति पत्नी मां बेटे मां बेटी और दोस्ती आदि रिश्ते में प्रेम का औदात्य देखने को मिलता है ज्ञान चतुर्वेदी के बारामासी उपन्यास मे बिन्नू के बीए उत्तीर्ण करने पर जहां भाभी शीला ताना मारती है उसके अधिक पढाई को लेकर वही अम्मा खुश है। अलबत्ता अम्मा बहुत खुश है वे दे तक बिन्नू का हाथ अपने हाथ मे लेकर बैठी रही स्पर्श की मौन भाषा को बिन्नू के अलावा कौन और पढ़ सकता था। यह मां बेटी का अंतरंग प्रेम था जिसकी भाषा परिवार के अन्य सदस्य नहीं पढ़ सके। मैत्रयी पुष्पा के अल्मा कबूतरी-उपन्यास में राम सिंह कबूतरा अपनी बेटी की रक्छा के लिए अपने प्राणों को भी खो देता है। क्योंकि वह नहीं चाहता उसकी बेटी को किसी प्रकार का नुकशान हो। उसी उपन्यास में कदमबाई अपने राणा के लिए कितने कष्ट झेलती है कि इसको स्वयं राणा तक उतनी गहराई से महसूस नहीं करा पता।

वृंदावनलाल वर्मा के विराटा कि पद्मिनी उपन्यास में लोचन सिंह वचनबद्ध ही था राजा के प्रति वरना वह कब का उस समूह से अलग हो जाता जिसमे मंत्री जनार्दन की स्वारथी वृत्ति और धूर्तता काम करती है। उसने ईमानदारी के साथ अपना कार्य किया भीष्म पितामह कि तरह अल्मा कबूतरी मे राणा और करन कि दोस्ती भी मानवीय गुणों एक अच्छा उदाहरण है। जहां कबूतरा प्रति के लोग कज्जा यानी सभ्य कहे जाने वालो को स्वार्थी, मतलबी समझते है वही कज्जा कबूतरा जाति को हेय दृष्टि से देखते है। इन्से परे जाकर राणा और करन दोस्ती करते हुई। दोनों कि निश्छल भावनाये है कही ईसुरी फाग मे आबादी बेगम ने जिस तरह लोक कवि ईसुरी को संरअन मे रखा उसमें उसकी निश्छलता एक शासिका होने का धर्म अदा करती है। मैत्रयी पुष्पा कें एक और उपन्यास बेतवा बहती रही में विशम्भर सिंह के अंदर ये मानवीय गुण ही तव जिनके कारण उन्होंने अपने पडोसी कि हर संभव मदद करते है "जहां पडोसी मोहमन सिंह का लड़का नजीत अपनी बहन कि शादी में किसी भी तरह कि सहायता देने से स्पष्ट रूप से मना कर देता है वही बड़े भाई कि तरह विशम्भर सिंह आगे आकर सहायता करते है" वे मोहन से कहते है कि मोहन सिंह हमने रिश्ता अपने दोनों हाथन कि ताकत पै करो है। अजीत के भरोसे हम शत्रुजीत के द्वारे नहीं गए थे सर्वेदमन कौ हाथ अपने बल पै माँगौ है। एक दूसरे के सुख दुःख मे मदद करना मानवीयता के लक्षण है। अपने यहां ऐसी मान्यता भाई कि नंसा नहीं कब किस रूप मे ईस्वर आ जाए इसलिए गरीबो दीन दुखियो कि अगर मदद नहीं कर पाते तो उन्हें किसी प्रकार का दुःख न पहुंचाए गोविन्द मिश्र के उतरती हुई धुप उपन्यास मे इसी भाव को रेखांकित किया गया है जब नायक रिक्शे वाले को पूरे पैसे नहीं देता और शोर शरावा भी जरूर करता है। उस खेल मे उसे मजा आता जब रिक्शा वाला उसे गरियाता रहता फिर हार कर चला जाता है। इस पर नायिका कहती है गरीबो का दिल न दुखाया करो इनकी है बुरी होती है।

अपने बुंदेलखंड मे हाथी से लेकर चींटी तक को मरना पाप जघन्य अपराध समझा जाता है। अल्मा कबूतरी उपन्यास में जब पुलिस का कहर से कबूतरा जाती के लोग मारे जाते है। जब यह कहर शांत होकर बर्बाद छोड़ गया तब राणा भीकम से कहता है जमुनी मर गई भीकम कैसे जैसे बुलबुल मरी थी. बच्चा तोते कि तरह मर गया। चोंच खोलकर पंखो के ढेर कि तरह।

राणा के मां मे इतने गहरे तक बुलबुले और तोते कि मौत समै गयी थी कि हर मौत मे वे ही नजर आते थे। जिस प्रकार एक घटना ने राजकुमार सिद्धार्थ को महात्मा बुद्ध बना दिया लेकिन राणा को वह आधार भूमि नहीं मिल पायी परन्तु उसके अंदर मानवीय गुण तो थे। संवेदनशील तो था। लोक का प्रत्येक भाई लड़का हर लड़की का भाई है बहन हर भाई को बहन यह समाजिक समरसता है जो आज खो रही है। नैतिक पतन की ओर जा रहे है गोविन्द मिश्र के "वह अपना चेहरा उपन्यास मे इसको बताया गया है की परायी स्त्री के साथ सोने वाला नई मे जाते है" मैत्रयी पुष्पाके उपन्यास इदन्नमम की मंदा मे वे गुण ही तो थे जो मानवीय गुणों की परिधि मे आते है। इन्ही गुणों के चलते वह गांव वालों आसपास के गांव वालो के लिए एवं सहरिया जनजाति समाज के लिए संघर्ष करि है। उनके दुःख दर्द मे शामिल होती है। इस कारण समाज उसे मनाता है। व्रंदलाल वर्मा के गढ़ कुंडार उपन्यास के दिवाकर और तारा तो एक प्रेम का आदर्श स्थापित करते है। दोनों युद्ध और वैभव त्यागकर ऐसे मानव जीवन जीने के लिए व्यग्र है जिसमे त्याग समपर्ण और सेवा है"

बुंदेलखंड क्षेत्र मे राजाओ और जमीदारो के प्रति जन समुदाय आदरभाव आज भी है। इसलिए यहां महाराज व् जू सम्बोधन का प्रयोग आदर सूचक के रूप मे जन मानस द्वारा किया जाता है । जबकि राष्ट्रीय स्तर पर यह प्रवृति समाप्त हो चुकी है। इस प्रकार हम देखता है जनमानस में मानवीय गुण आज भी जिन्दा है तो उपन्यासकारों ने उन्ही गुणों को उपन्यासों मे दर्शाया है द्य

सन्दर्भ सूची -

1.मध्यदेशीय लोक संस्कृति .संपादक.डॉ नर्मदा प्रसाद गुप्त

2.ज्ञानचतुर्वेदी बारामासी उपन्यास पृ.152

3.मैत्रयी पुष्पा, बेतवा बहती रही उपन्यास पृ. 33

4.गोविन्द मिश्र, उतरती हुई धूप उपन्यास पृ. 98

5.मैत्रयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी उपन्यास पृ. 45

6 .गोविन्द मिश्र, वह अपना चेहरा उपन्यास पृ. 98

-शास.नवीन महाविद्यालय, चंदला

बुन्देली धरोहर : खण्डेह के मन्दिर

- डॉ. आशुतोष त्रिपाठी

यूँ तो बुन्देलखण्ड को भारत का ह्रदय कहा जाता है, चूँकि यह क्षेत्र पौराणिक, ऐतिहासिक तथा भौगोलिक दृष्टि से सदैव आकर्षण का केन्द्र रहा है पर सरकारों की उपेक्षा के चलते बहुत सी ऐसी जगहें हैं जिनके बारे में लोग कम ही जानते हैं। ऐसे ही उत्तर प्रदेश के हिस्से के बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत जिला हमीरपुर है, इसी जिले के ब्लॉक मौदहा में अक्षांश 25.34 एन देशान्तर 80.11 ई पर स्थित है ग्राम खण्डेह। गाँव तक सड़क मार्ग व रेल मार्ग दोनों से पहुँचा जा सकता है। कानपुर बाँदा (एन.सी.आर.) में अकोना रेलवे स्टेशन ही खण्डेह ग्राम का स्टेशन है। यहाँ से खण्डेह गाँव तक का रास्ता पक्का बना हुआ है। स्टेशन से खण्डेह ग्राम के दर्शनीय स्थल लगभग दो फर्लांग पर होगें, स्टेशन से गाँव तक पूरी आबादी है। सड़क मार्ग मौदहा कस्बे से होकर जाना होता है। मौदहा से ग्राम खण्डेह लगभग 15 किलोमीटर की दूरी में है। मौदहा कस्बा कानपुर सागर रोड में हमीरपुर व कबरई के मध्य में स्थित है। एक रास्ता बाँदा कबरई मार्ग के मध्य मटौंध से मौदहा जाने वाले मार्ग से भी ग्राम खण्डेह पहुँचा जा सकता है।

आज ग्राम खण्डेह की आबादी लगभग 12 हजार है यहाँ के लोगों का जीविकोपार्जन का मुख्य साधन खेती है। ग्राम खण्डेह पूरे चित्रकूट मण्डल में 'दुबे का खण्डेह' कहलाता है, जिसका नाम सरकारी जिला गजेटियर्स में भी आया है। सन् 1909 के बाँदा गजेटियर्स के पृष्ठ 108 में ग्राम खण्डेह में प्रशासनिक व्यवस्था हेतु परगना होने का जिक्र आया है। सन् 1878 में ग्राम खण्डेय का इलाका नाना गोविन्दराव द्वारा अंग्रेजी शासन को सौंप दिया गया और ये भाग महोबा परगना में शामिल कर दिया गया। इस प्रकार पुरातन इतिहास से इस गाँव का जिक्र न केवल अंग्रेजों के जमाने में मिलता है वरन् उसके पूर्व मुगल सल्तनत तथा उसके भी पूर्व आर्यो के जमाने में इस गाँव का तथा इससे जुड़े गैर आबाद लेकिन रेवन्यू विलेज अकोना के स्थायित्व का ज्ञान होता है। विगत तीन सौ वर्षों के अनदर इस खण्डेय गाँव के इतिहास को झाँक कर देखा जाय, तो अत्यधिक प्रतिभाशाली एवं विलक्षण बुद्धि तथा सूझबूझ वाले व्यक्ति श्री हठी दुबे का नाम उभरकर सामने आता है, जिनके बारे में भी यू.पी. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर में नाम मिलता है। स्व. हठी दुबे द्वारा अर्जित बहुत बड़ी जायदाद एवं सागौन के बाग का मालिकान हक उनके वारिशान को भी मिला है। वह सम्पत्ति पुश्त दर पुश्त आज तक चली आ रही है। स्व. हठी दुबे के सगे भतीजे स्व पं. चन्दीदीन दुबे भी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उनमें धार्मिक भावनाओं के प्रति अटूट समर्पण था और ये धर्म के प्रति झुकाव के साथ कलात्मक रुचि से ओत-प्रोत थे, जिसका आंकलन गाँव में मौजूद मन्दिरों के देखने से स्वत: ज्ञात हो जाता है। इन मन्दिरों का जिक्र 1909 के बाँदा गजेटियर्स में पृष्ठ 263 में मिलता है। ये मन्दिर अत्यधिक कलात्मक अद्‌वितीय कौशलपूर्ण कारीगरी का प्रतीक हैं। स्व. हठी दुबे के सगे भतीजे द्वारा निर्माण कराये गये। मन्दिरों का निर्माण सन् 1850 से 1902 तक माना जा सकता है। इनमें से एक मन्दिर श्री रामजानकी लक्ष्मण जी का है तथा दूसरा मन्दिर भगवान शिव जी का है, जिसमें भव्य शिवलिंग की मूर्ति स्थापित है। ये दोनों मन्दिर गाँव के सबसे बड़े दो जलाशयों (तालाब) के किनारे बनवाये गये हैं। इनकी कला में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि बुन्देलखण्ड में पाये जाने वाले बहुत ही साधारण पत्थर पर तरास कर तरह-तरह की जालियां, मूर्तियां, बारीक नक्कासी, मण्डप, खम्भे तथा महराबें गढ़ी हैं। पं. चन्दीदीन दुबे की सन् 1902 में निधन के पश्चात् सन् 1942 तक श्री रामजानकी लक्ष्मण जी का मन्दिर वीरान पड़ा रहा, इस कारण मन्दिर को नुकसान भी पहुँचा है, परन्तु सन् 1942 में चन्दीदीन दुबे जी के पौत्र श्री सुखदेव जी सहाय दुबे, जो एक सूझ-बूझ रखने वाले तथा पैतृक सम्पत्ति की रक्षा करने, उसको संवारने तथा उसको और बढ़ाने में रुचि रखते थे, ने इसका शेष बचा निर्माण पूर्व से गढ़े-अधगढ़े तराशे गये पत्थरों से करवाया तथा शिव मन्दिर के भी अधूरे कार्य को इसी दुबे परिवार के हिस्सेदार बाजपेयी परिवार ने पूरा करवाया था। ये दोनों मन्दिर अपनी विलक्षण कारीगरी, नक्कासी के लिये जिले के साथ ही काफी दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। इन मंदिरों के जैसी नक्कासी दक्षिण में कर्नाटक प्रदेश में तथा राजस्थान के जयपुर, उदयपुर, अजमेर, जैशलमेर में ही विशेष रूप से मिलती है। दुबे परिवार के लोग बताते हैं कि हमारे पूर्वजों ने इन मंदिरों के बनवाने के लिये इन्हीं उपर्युक्त जगहों से कारीगरों को बुलवाया था जिन्हें उस समय चांदी के कम से कम बीस रुपया या अधिक से अधिक चांदी के ही साथ रुपया प्रतिदिन पारिश्रमिक दिया जाता था बुन्देलखण्ड के साधारण पत्थर जो थोड़ी-सी ठोकर लगने से टूट जाता है उस पर ऐसी कारीगरी दिखायी गयी है, जो साधारणता संग-ए-मरमर/संग-ए-मूसा में ही करना सम्भव प्रतीत होता है। यह कलात्मकता श्री रामजानकी मन्दिर में तो अपनी पराकाष्ठा को छूती हुई प्रतीत होती है। उस समय के बनवाये पूरे मंदिर में स्थान-स्थान पर सभी के वाद्‌य यंत्रों को लिये हुए कलात्मक एवं भावपूर्ण मुद्रा में नर्तकी की मूर्तियाँ तराशी गयी हैं। इन मंदिरों में शायद ही ऐसा कोईस्थान हो जो खाली पड़ा हो, बेलों, पत्तियों, फूलों, पक्षियों तथा किनारे की डिजायनों से भिन्न प्रकार के रूप में देखने को मिलते हैं, विभिन्न प्रकार के जानवरों की अलग-अलग मुद्राओं को तथा तमाम देवी-देवताओं की मूर्तियों को तराशा गया है। मंदिर की छत से लगी हुई कार्निस तथा नीचे की लगी गोट में तरास कर रामायण, भागवत एवं महाभारत आदि पौराणिक ग्रन्थों की सर्वमान्य घटनाओं को बहुत ही सुन्दर और सुडौल ढंग से उकेरा गया है। आश्चर्यजनक बात यहै कि भिन्न-भिन्न पत्थरों को मिलाकर पूरे मन्दिर के निर्माण को इस प्रकार किया गया है कि पत्थरों के जोड़ों को कोई माप नहीं सकता। सारा मन्दिर एक दृष्टि में एक ही पत्थर का बना हुआ प्रतीत होता है। मन्दिर में प्रयुक्त पत्थरो को जिला चित्रकूट (कर्वी) के ग्राम खोह के पहाड़ों से बैलगाड़ियों के द्वारा लाया जाता था।

गाँव के दक्षिण पूर्व दिशा में कलार तालाब से लगा हुआ चंदीदीन दुबे द्वारा सादे पत्थर पर इस भव्य मन्दिर का निर्माण कराया गया था। गर्भगृह के परकोटे (परिक्रमा) में भी कई देवी देवताओं की

दर्शनीय मूर्तियाँ लगी हुई हैं, जो स्वयं में जीवन्त सी प्रतीत होती हैं। मन्दिर के गर्भगृह के परकोटे के पूर्व दिशा में श्री गणेश जी की चतुर्भुजी प्रतिमा स्थापित की गयी है जो कि सफेद संगमरमर से निर्मित है। इसी के दक्षिण दिशा में चतुर्भुजी माँ काली देवी, काले संगमरमर की प्रतिमा है, गले में मुण्डों की माला, विशाल नेत्रों वाली और श्री शंकर जी के ऊपर खड़ी अद्‌वितीय जीवन्त सिद्ध प्रतिमा है।

गाँव में स्टेशन रोड पर उत्तर-पश्चिम दिशा में सिरसी तालाब से मिला अद्‌वितीय सादे पत्थर में गढ़ा हुआ शिवाला बना हुआ है, जिसका प्रवेश द्वार लगभग पाँच फिट ऊँचा, दोनों ओर नगाड़ खाने, मन्दिर के अन्दर तहखाना, हमामखाना दर्शनीय है। मन्दिर के अन्दर अद्‌वितीय कलात्मक तुलसी धारा रखा हुआ है। विशाल शिवलिंग के दर्शन मंदिर के सामने के मैदान से होते हैं। मंदिर के उत्तर दिशा में श्री राम दरबार का मन्दिर बना हुआ है, जिसमें चूने की छपाई के बाद, बेलबूटा बनाये गये हैं। गर्भगृह के चारों ओर दो परकोटे बने हुए है, प्रथम परकोटे में बारीक नक्काशी के साथ लगभग पच्चीस फुट ऊँचे खम्भे अपनी ओर बरबस आकर्षित करते हैं, जिनमें द्वारपाल आदि के चित्र भी उत्कीर्ण किये गये हैं। गर्भगृह के चारों ओर जलकुण्ड बना हुआ है। गाँव में ही किलागढ़ी (गुर्जनवाली) के निर्माण कार्य को हठी दुबे जी के द्वारा करवाया गया था। दुबे जी ने पूरे गाँव की सुरक्षा हेतु चारों ओर से ऊँची दीवार गुर्जों सहित बनवाया थी जिसके अवशेष आज भी विद्‌यमान हैं।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि खण्डेय के ये मन्दिर अपनी कलात्मकता, शिल्प के बेजोड़ नमूने हैं तथा उत्तर-प्रदेश की एक अमूल्य धरोहर के रूप में हैं। प्रसन्नता का विषय है कि इन्हीं विशेषताओं को दृष्टिगत रखते हुए 'भारतीय पुरातत्व विभाग' ने इनकी सुरक्षा, एवं संरक्षण का दायित्व अपने हाथ में ले लिया है। जिससे इनके सुरक्षित रहने में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है।

– झलोखर, हमीरपुर (उ.प्र.)

बुन्देली बाला का मेला

– डॉ. ए.के. जड़िया

धेला डार कधेला डारें, धन्नो जाती मेला।
अलबेले जीवन में बगरो, जौवन वारौ मेला।।
आँखें चपल हिंडोरा जैसी, बातन, भरी मिठाई।
हमरी बातन सें बाहर है, वा तनकी तरुणाई।।
टिकुली तौ टिक ली ललाट पै, फेंक रई उजियारौ।
चुटिया छुटिया कसी कस्यो, आँखन में कजरा कारौ।।
कसी कंचुकी ऐसी, जैसें ठिलो ठसाठस मेला।
हरकत करत शरीर रिलत जैसें मेला कौ रेला।।
घूमत घनी निगत चकरी सी, भौरी सी भन्नावै।
गुदना गुदों प्रेम कौ ऐसौ, अमिट रूप दरसावै।।
कटि पै करत करधनी क्रीड़ा कानन झुमका झूमें।
धन्य भये वे ककना जे अँगना के अँग अँग चूमें।।
नूपुर की झनकार कान के लानें भई कटारी।
सुतिया गाँसें गरौ सुनारी लादें फिरत सुनारी।।
रोली की बिंदिया कपोल पै रोली की अरुणाई।
केशर की गर्मी सी औ हरदी की गजब गुराई।।
चंदन की खुशबू पाँवन में लगत महावर ऐसौं।
विरही को माहुर सौ प्रेमी हेतु महा वर जैसौ।।
चंदन, केशर, रोली, हरदी की अनुपम छवि छाई।
ऐसी छवि बनि आई लादें फिरत सबै बनियाई।।
सबरौ मेला लादें, मेला जात कौन से कारन।
कै गैलन गैलन छैलन कौ मन कौ रूप बिगारन।।
जौ बन बैठ्यो जौवन-मेला चार दिना के लानें।
आहै जरा जरा में ही जा लगी हाट उठ जानें।।

– हरिहर मार्ग, हरपालपुर
जिला-छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9755154703

बुन्देली त्योहार

– गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त

परब अनोखे ई जलनी के, देत हैं नोंनीं हमें सलाय
हिलमिल रओ उर गम्म खाव सो टर जै आउत भई बलाय
आठ बार तेहार होत नौं, जा साँची कहबें कानांत
पूजा पाठ उपास तिरास में, परखत मानुस परै ना भाँत
चैत धुरैड़ी भाई दोज उर, पजनूँ पूनों बा मनती
गनगौरा तिसुआ रंग पाँचें, कड़ें जवारे बासंती
अकती भर बैसाकन बीचाँ, आसमाई की पूजा होय
उर हरायते पूजें अमावस, कुहरी खा परसादी सोय
लगै जेठ हरयाली मनवै, रहें निर्जिला ग्यारस कात
ऐई दिनन में गंगा दसरव, घर घर होत बरा बरसात
चढ़ै असाड़ी फिन अठवाई, देवशयनी ग्यारस के पैल
रथ यात्रा गुरु पूनों सांचऊँ, काट देत अग्यान कौ मैल
वन देवी उर वन के देवता, सबखों पूजन जावै गाँव
बाराजीत कुनघुसूँ पुजत है, जे नोनें तेहार बताँव
आद्रा परब औ कुठला पूजन, बुबें कजलियाँ झूला झूल
तीज सावनी नाग पंचमी, राखी पूनों जाव नें भूल
भादों सिरें कजलियाँ हरचट, गैया-बछिया तीजा पूज
जल बिहार कौ मेला देखें, और कनैया आठें बूज
रिस-पाँचें संतान सप्तमी, जनी नें भूलें करबौ तँत
मौर सिरत है छट खों जानों, चौदस खों बे पुजें अनँत
लगें करये दिन क्वाँर के बीचाँ, हाँती माटी बारे आत
मामुलिया फिन सुअटा खेलें, खेल नौरता खूब पुसात
कड़ें जवारे मनें दसैरा, पान खांय ई दिना सबइ
छेंकुर पूजें नीलकंठ लख, शरद पूनमा होय तबइ

– 769, गली नं. 17,
जे.डी.ए. मार्केट के पीछे, शांतिनगर,
दमोह नाका, जबलपुर (म.प्र.)
मो. 8225036728

बुन्देली के क्षेत्रीय रूपों का तुलनात्मक अध्ययन : वाक्य सामग्री

- डॉ. श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'

प्रस्तुत वाक्य सामग्री में बुन्देलखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली बुन्देली भाषा के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। हिन्दी से अन्यान्य क्षेत्रों में बोली जाने वाली बुन्देली भाषा में अनुवाद कर उसका तुलनात्मक रूप यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें आये कर्मकारकीय प्रत्यय: कौं, खों, खौं, खाँ, कुँ कौं भविष्यत् कालिक प्रत्यय : ग,-ह,-बी, संज्ञा प्रतिपादिक: ओ, औ तथा संकेत वाचक सर्वनाम: जाय-बाय, इऐ-उऐ, ऐहै- ओहै आदि के क्षेत्रीय प्रयोगों को देख और समझकर हमारी बुन्देली में लेखन शैली तो परिष्कृत होगी ही, साथ ही भाषा को मानक रूप प्रदान करने में सहायता मिलेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। यह बुन्देली साहित्य साधकों के लिए विशेष उपयोगी सामग्री है।

बुन्देलखण्ड के कुछ प्रमुख क्षेत्रों की तुलनात्मक वाक्य सामग्री

हिन्दी (इसका अनुवाद उसी क्रम पर दर्शाया गया है)

1. आप चाची जी के यहाँ गये थे?
2. दो थप्पड़ों में आपका मुँह सीधा हो जाएगा।
3. विवाह में आपको चलना पड़ेगा।
4. नुमायश में हम तुम भी चलेंगे।
5. अपनी रजाई कहाँ भूल आये?
6. ये हल अपने ही हैं।
7. जिसमें ताकत हो, सामने आए।
8. वर्तन में क्या रखा है?
9. वहॉं कौन-कौन है?
10. देखो वह कौन जा रहा है?
11. क्यों चले आ रहे हो?
12. किसी से कुछ मत कहना?
13. उसके यहाँ किस पर बैठोगे?
14. तुम्हें कितनी चाहिए?
15. तुम किस दर्जे में पढ़ते हो?
16. वह कहाँ गया था?
17. यह औरत लड़के वाली है।
18. दिखलाओ, भला, इसको।
19. अगर तू जाता हो तो जा।
20. तू कहाँ से लौट पड़ा?
21. तुम क्या खाली बैठे हो?
22. ये नौकर किस सेठ का है?
23. मेरी कलम यही है।
24. दूध दुह लो।
25. दूध दुहा जा रहा है।
26. मैं उससे सब कुछ कह दूँगा।
27. हमारे साथ बद्रीनाथ चलोगे?
28. यह ठाकुरों की बस्ती है।
29. तू अपना नाम बतला।
30. हम तुम्हारे लिए रुके हैं।

बुन्देली भाषा (क्षेत्र मुस्करा हमीरपुर उ.प्र.)

1. तैं काकी ख्याँ गओ तो?
2. दो थापरन मैं तोओ मूँ सूधौ हो जैहै।
3. ब्याव मैं तुम खाँ चलनें परह्यै।
4. नुमास दिखन हमउँ तुम्हउँ चलहन।
5. अपनी सुपेती काँ भूलयाए?
6. ई हर अपनईं आँय।
7. जेम्हैं तागित होय सो साम्हूँ आबै।
8. बासन में काय घरो है?
9. उतै को को है?
10. देखौ ऊ क्वाय जात है?
11. काये खाँय चलो आउत हत?
12. कोऊ सैं कुछू न कैहित।
13. ओखे इतै काए पै बैठहित?
14. तुम्हैं कित्ती चाहुनैं?
15. तैं कौन दरजा माँ पढ़त हत?
16. ऊ काँ गओ तो?
17. या बइयर लरकौरी है।
18. दिखाऔ भलाँ ए खाँ।
19. जो तोहै जानै होय ता जा।
20. तैं काँ सैं लौट याओ?
21. तैं सरतारौ काए बैठो हत?
22. ई मँजूर कौन सेठ के आँय?
23. मोई किलम एई आय?
24. दूद दोह ले।
25. दूद दुभ रओ।
26. मैं ओसैं सब कुछू कह दै हौं।
27. हमाये संघै बद्रीनाथ चलहत?
28. यौ ठाकुरन कौ गाँव आय।
29. तुम अपनो नाँव बताव।
30. हम तुम्हाए लानैं आय ठाडे हन।

बुन्देली भाषा (क्षेत्र लखनवाँ जिला, छतरपुर)

1. तुम काकी के इतै गए ते?
2. दो रापटन में तुमाव मूँ सूदौ हो जैय।
3. ब्याव मैं तुमै चल्नैं आय।
4. नुमासै हम तुम चलबू।
5. अपनी ख्वार कॉ छोरयाये?
6. जे हर हमायई आय धरे?
7. जीमें हिम्मत होय सामनै आ जाय।
8. बासन में का धरो?
9. उतै को को है?
10. ऊ क्वाय जात, दिख तौ?
11. काए खौं चले आउत?
12. काऊ सें कछू न कइयो।
13. ऊ के इतै काए पै बैठौ?

14. तुमें कितेक चानैं?
15. तुम कौन दर्जा में पड़त, भइया?
16. ऊ काँ गओ तो?
17. जा लुगाई लरकौरी है?
18. दिखाऔ भइया हमैं दिखनै।
19. तो खों जानै होय तौ चले जाव।
20. तुम काँसै लौटयाये?
21. तुम कैसे सरताए बैठे?
22. जे चाकर कौन बनियॉ के आँय?
23. हमाई किलम जेई आय।
24. दूद लगा लो।
25. दूद लग रओ।
26. हम उनसैं सब कछू कै दैबू।
27. हमाए संगे बद्दीनरान तौ न चलौ?
28. ठाकुरन कौ गाँव आय जौ।
29. तुम अपनौ नाँव बताऊ।
30. हम तुमाए लानै आय बने रए।

बुन्देली भाषा (अशोक नगर, गुना म.प्र.)

1. तुम काकी जू कें गए ते का?
2. दो थापरन मैं तुमरो मों सूदो हों जायेगा।
3. ब्याव मैं तुमै चलनै परैगो।
4. नुमास मैं अपन सब चलैंगे।
5. अपनी गलेफ (फर्द) काँ भूल आए?
6. जे अपनेई हर हैं।
7. जे मै तागत होय सामूँ आय।
8. बासन में का धरो है।
9. माँ को-को है?
10. दिखैं तो सई बौ को जा रओ?
11. काए खों चले आ रए?
12. कोई सैं कछू मत कइयो।
13. बाके झाँ काए फै बैठोगे?
14. तुमैं कित्ती चइए?
15. तुम काँ के दरजा में पड़त हौ?
16. बौ काँ गओ तो?
17. जा बइयर बेटाबारी है।
18. अच्छा दिखाव जाय।
19. तू जाता होय तौ चलो जा।
20. तू कां सै लौट रओ?
21. तुम का बैसेई बैठे हौ?
22. जे आदमी कां के सेठ के है?
23. जेई मेरी कलम है।
24. दूद लगा लो।
25. दूद लग रओ है।
26. मैं बा सैं सब कछु कै दउंगो।
27. हमरे संग बद्रीनाथ चल हौ?
28. जा ठाकुरन की बस्ती है।
29. तू अपनौ नाँव बता।
30. हम तुमाई बाट देख रए।

बुन्देली भाषा (क्षेत्र कबरई हमीरपुर उ.प्र.)

1. अपुन काकी कै इतै गए हते?
2. दुय थप्पड़न माँ तुम्हार मौँ सूधो हो जै है।
3. अनुपलब्ध।
4. नुमास माँ हम तुम (अपुन तुपन) सोउ चलबी (चलि है)
5. अनुपलब्ध
6. ----,,----,,----
7. ----,,----,,----
8. ----,,----,,----
9. ----,,----,,----
10. ----,,----,,----
11. ----,,----,,----
12. ----,,----,,----
13. ----,,----,,----
14. ----,,----,,----
15. ----,,----,,----
16. ----,,----,,----
17. ई मेहरिया लरकौरी है।
18. अनुवाद अनुपलब्ध
19. ----,,----,,----
20. ----,,----,,----
21. ----,,----,,----
22. ----,,----,,----
23. ----,,----,,----
24. ----,,----,,----
25. ----,,----,,----
26. ----,,----,,----
27. ----,,----,,----
28. ----,,----,,----
29. ----,,----,,----
30. ----,,----,,----

बुन्देली भाषा (क्षेत्र पाली जिला झाँसी उ.प्र)

1. तुम काकी के इतै गए ते?
2. दो थापरन मैं तुमाव मौँ सूदो होजै।
3. ब्याव मैं तुमै चल नै आय।
4. नुमास मौं अपन तपन सोउचलनबू।
5. अपनी रजाइ कितैं भूल आए?
6. जे हर अपनेई आँय।
7. जी में जोरहो बै बौ हमाए सामैं आबै।
8. बासन मैं का धरे है?
9. उतै को को है?
10. देखौ, बौ को आ जा रओ?
11. काए खों चले आउत?
12. कोऊ सें कछू नइँ कइयो।
13. ऊ के इतै काए पै बैठो?
14. तोय कितेक चानैं?
15. तूँ कै दरजा में पड़ रओ?
16. बौ काँ गओ तो?
17. जा लुगाई मौड़ाबारी है।
18. दिखइये रे नाँय ई खों।
19. कजंत तैं जात होय तो जा।
20. तूँ कितै सैं लौट आओ?

21. तुम का ठलुआ बैठे हो?
22. जे नौंकर कौन सेट के आँ?
23. मोरी कलम जेइआ।
24. दूद लगा लो।
25. दूद लग रओ।
26. मै ऊसैं सब कछू कै दैयौं।
27. मोरे संगे बदरीनाथ चलौ।
28. जा ठाकुरन की बसती है।
29. तुम अपनौ नाँव बताव।
30. मैं तुमाय लानै रुके हौ।

बुन्देली भाषा (क्षेत्र कुरकुरू जालौन उ.प्र.)

1. तुम कक्को के इतै गये ते?
2. दो थापरन में तुमाओ मौ सीदौ हो जै।
3. ब्याव में अपुन कोंचलनै पर है।
4. नुमास में हमकं तुमकं चलिये।
5. अपनी गलेफ (सुपेती) कितै भूल आये?
6. जे हर अपनें ई हैं।
7. जीमै तागित होय सो अँगाऊ जा जाय।
8. बासन में का धरो?
9. उतै को को है?
10. देखौ, बौ को जा रओ।
11. काये चले आ रये?
12. काऊ सें कछू नई कइयो।
13. बाकेहिनाँ (इतै) काये पै बैठ हो?
14. तुमें किती चईये?
15. तुम कै दरजा में पढ़त ?
16. बौ कितै गओ हतौ?
17. जा जनी लरकौरी है?
18. भलें नेंक जाय दिखाव।
19. तें जात होय तौ जा।
20. तें कितै से लौट परौ?
21. तुम का सरते बैठै?
22. जै नौकड़ की सेट के हैं?
23. हमाई कलम जई है?
24. दूद दो लेव।
25. दूद दोव जा रओ।
26. हम बासें सब कछू कै दें।
27. हमाये संगे बद्दरी नाथन चल हौ?
28. जो ठाकुरन की बस्ती है।
29. तैं अपनौ नाँव बता।
30. हम तुमायें लानें रुके।

बुन्देली भाषा (क्षेत्र सागर बेड़ा खुर्द -होशंगाबाद)

1. का तू काकी खाँ गव थो?
2. दो तमाचे में तेरो मो सीधो हो जाहे।
3. बिहाव में तुम्हे चलनो पड़े।
4. मेले में अपन चल्हेंगे।
5. अनुपलब्ध
6. ----,,----,,----
7. ----,,----,,----
8. ----,,----,,----
9. भाँ कौन कौन हैं
10. अनुपलब्ध
11. ----,,----,,----
12. ----,,----,,----
13. ----,,----,,----
14. ----,,----,,----
15. तू कौन सी किलास में पढ़े है?
16. बौ कहाँ गव थौ?
17. अनुपलब्ध
18. दिखो तो जा हे।
19. तोहे जानो हो तो जा।
20. अनुपलब्ध
21. ----,,----,,----
22. ----,,----,,----
23. ----,,----,,----
24. ----,,----,,----
25. दूद लग रव है।
26. अनुपलब्ध
27. ----,,----,,----
28. ----,,----,,----
29. ----,,----,,----
30. ----,,----,,----

- पता- 1001, श्रीवास्तव निलय
चुरखी रोड, वेघौरा, उरई (जालौन उ.प्र.)
पिन-285001
मो.07408439308

गीत

- मधु गौड़ 'दिव्या'

करकें कै हाँ सोलाँ सिंगार गोरी
खेलैं बलम संग होरी
नींद से जागी भओ भुनसारो
नैनन भीतर कजरा डारो
नैनन में कजरा लगाय गोरी
मों से करैं बरजोरी। खेलैं बलम .....
अंग अबीर गुलाल मले हैं
संग में नैनन बान चले हैं
घुँघटा में मुखड़ा छुपाय गोरी
हेरैं पिया खाँ चोरी-चोरी। खेलैं बलम .....
गोरे मौं लट कारी लटके
काय तुम डारे पट घूँघट के
चंदा सों मुखड़ा दिखाव गोरी
बाँधो मो से नेह डोरी। खेलैं बलम .....

- स्वामी प्रणवानंद होम्योपैथिक महाविद्यालय
छतरपुर (म.प्र.)

भइया दूज की "कानियाँ"

- कु. रामकिशोरी गुप्ता

देश के अन्य भागों की भाँति बुन्देलखण्ड सभी तीज-त्यौहार, उत्सव-उपासना, पूजा-प्रार्थना का क्षेत्र है। विक्रम पंचांग के अनुसार यहाँ सप्ताह, पक्ष और महीना नहीं जिनमें कोई तीज त्यौहार नहीं होता। यहाँ पर तीज-त्यौहारों को आस्था, उमंग, आनन्द के साथ मनाया है। बुन्देली संस्कृति आशा और आनन्दमयी होने के साथ ही साथ समाज तथा परिवार को एकता और समरसता के धागे में पिराये हुये है। इन उत्सव तीज त्यौहारों में लोक चेतना और लोक संस्कृति के दर्शन होते हैं। अत: इन तीज त्यौहारों की बुंदेलखंड के प्राण कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। तीज त्यौहारों की पूजा-अर्चना के पश्चात् लोक गीत गाने की अथवा लोककथाएँ कहने की परम्पराएँ है, जिनमें लोक धर्म के दर्शन होते हैं।

बुन्देलखण्ड में महिलाएँ कुछ त्यौहार अपने अखण्ड सुहाग की कामना से मनाती हैं जैसे- गनगौ (गणगौर), बरा-बरसात (वट-सावित्री), माँ-लक्ष्मी (महालक्ष्मी) करवाचौथ। यद्यपि करवा चौथ व्रत दस पन्द्रह वर्ष से ज्यादा प्रचलित हुआ है इसके पूर्व इतना अधिक नहीं। कुछ त्यौहार पुत्र-प्राप्ति की कामना जैसे-पजूनें पूने (चैत्र पूर्णमासी)हनुमान जयंती वाराजीत (आस माई) हरछट, सन्तान सातें, गौवत्स द्वादशी। राखी, भइया दूज भाई-बहिन के निष्कपट प्रेम के प्रतीक त्यौहार हैं।

कार्तिक अमावस्या के बाद शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि और फाल्गुन पूर्ण मासी के बाद चैत्र कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि "भइया दूज" के नाम से मनाई जाती है। अत: सालभर में तीन पर्व चार चार माह के बाद (सावन कार्तिक फाल्गुन) होते हैं। सावन में बहिन बेटी को मायके बुलाया जाता है। जहाँ पर वह खुशी-खुशी अपने भइया-भौजाई की राखी बाँधती है। भइया दूज पर भइया बहिन की ससुराल जाकर टीका लगवाता है।

कार्तिक भइया दूज को यम-दुतिया भी कहा जाता है। इस दिन मथुरा में विश्राम घाट पर भाई बहिन का हाथ पकड़कर यमुना में स्नान करने का विशेष फल है। कहते हैं कि जब यमराज अपनी बहिन यमुना के घर गये, बहिन यमुना ने भाई का बड़ी खुशी से स्वागत सत्कार किया। विभिन्न प्रकार के पकवान बनाकर प्रसन्नता पूर्वक थाली सजाकर भैया यमराज का हल्दी चावल से तिलक किया उपहार में नारियल और मिठाई दी भोजन कराये। भइया यमराज ने बहिन यमुना से बरदान माँगने के लिये कहा। बहिन यमुना ने वर माँगा-आज के दिन जो भइया बहिन यमुना में हाथ पकड़कर स्नान करें, पूजन करें तथा दीपदान करें, उन्हें यमलोक के दर्शन न करना पड़े। यमराज ने "एवमस्तु" कहा। इस प्रकार सभी बहिनें अपने भइया की दोज के दिन प्रतीक्षा रत रहती हैं। यदि भाई न पहुँच पाये तो नारियल पर ही हल्दी चावल लगाकर रख लेती हैं जब कभी भाई के मिलने पर वह नारियल और मिठाई भेंट कर देती हैं। जिनकें भाई टीका करानें पहुँच जाते हैं। वे बड़ी प्रसन्न होकर स्वागत सत्कार करती है। टीका लगाकर भोजन कराती हैं। अपने भाई की कुशलता की कामना करती हैं।

दोज की प्रात: घर के बाहर मुख्य दरवाजे के दोनों ओर गोबर की दोजें बनाई जाती हैं। दोजन के पास ही किरकिटा, कटइया और थोड़ा-सा गोबर रख दिया जाता है जिसे अतत् पड़इया कहते हैं। क्षेत्रानुसार कहीं कहीं पर गोबर से ही चूल्हा चक्की, ग्वालन बनाने की प्रथा है।

महिलाएँ नहा- धोकर पूजन हेतु परम्परानुसार प्रसाद बनाती हैं या अठवाई, चावल की खीर या दूधभात एक कटौरी में रखती हैं। थाली में हल्दी, चावल, रोरी, फूल, दूब,अगरबत्ती, होम के लिए घी, कलश चौमुख दीपक रखकर अपना सोलह श्रृंगार करके तैयार हो जाती हैं। रूई की लम्बी-लम्बी झालर सी बनाकर बीच-बीच में हल्दी लगाकर पतला करती हैं। ये लड़ियाँ पूजा की थाली में रख लेती हैं। मसूर का रखना पूजा में अनिवार्य होता है। दोज के चारों ओर आटा से चौक पूर कर विभिन्न रंगों द्वारा सजा देती हैं।

परिवार की बहू-बेटी एक साथ बैठकर पूजा करती हैं। विधिवत दोज पर जल छिड़क कर हल्दीचन्दन चावल, रोरी, फूल चढ़ाकर प्रसाद अर्पण करती हैं। रुई के बनाई गई लड़ियों को गोबर लगाकर दीवाल पर चिपका दी जाती हैं। कोई-कोई दोजों पर ही देती हैं। गोबर से बनाई गई अतूत पड़इया को हल्दी चावल आदि चढ़कार कच्चा दूध उड़ेलती है, फिर मूसर पर हल्दी चावल लगाकर पूजन करने वाली सभी महिलाएं एक साथ पकड़कर कटइया, किरकिटा, गोबर पर घालती हुई कहती हैं- "जो कोऊ मोरे भइया (अपने भाइयों के नाम लेकर) खों बुरइ नजर सें देखे, बुरव सोसे, ऊको मों(मुहँ)ऐंसइ कूटों, ऐंसइ दुचलों"। कुछ महिलाएँ कहती हैं- "हमाय भइया खों बुरई नजर से देखबें बारे की आँखन में राइ नोन परे, भइया की अलाय-बलाय ओई के ऊपरें जावे।" आरती के करके कहानी कही जाती है। एक महिला कहानी कहती है, एक हूँका देती है। सभी महिलाएँ हाथ में चावल फूल लेकर कहानी सुनती हैं। कानियाँ इस प्रकार हैं-

ऐसें -ऐसें एक गाँव में सात बैनन कौ एक भइया हतो, तो अपनी छोटी बैन खों भौतई लाड़लो हतो। एक दिना ऊनें अपनी मताई सें कई कि मताई अबकी दोज के दिना मोय अपनी हल्की बैन सें टीका करावे ऊकी ससरार जानें। ऊकी मताई बोली, -"बेटा तें अबै छोटो है तनक बड़ो हो जा फिर जइओ। लरका ने तो जिद करी। मताई ने डरवाओ कि गैल में डाँग परत है, शेर तिदुआ मिलें नदी-नरवा परत हैं। अकेलें लरका ने मताई की एक न मानी उर चलन लगो। जैसई वो घर सें जान लगो सो दोरे कौ दरोंदा गिरन लगो। भईया ने कई मोय दोज के दिना अपनी बैन सें दोज कौ टीका लगवा आन दें उर वो चल परो। आगे चलो डॉग में होकें जा रओ हतों शेर दहाड़त मिलो, शेर ऊ पै खाबे खों दौरो, ऊने शेर सें कई मोय बैन सें टीका करा आन दें फिर तैं मोय भख (खा) लियो। भइया खाँ सनक हती कि कैसें कैं बैन के घर पोचों वो तो अपनी धुन में जा रवो तो। गैल में नदी नरवा तौ परतई हैं सो नदिया भरभरात आ गई उर बुबा (बहा) ले जान लगी, जेई बात ऊने नदिया सें कै दई। भइया अपनी प्यारी बैन के घरै पोंच गवो। भइया खों देखकें बैन भौत खुस भई, हाली फूली फिरबै उर कहबै

मोय प्यारो भइया टीका लगवावे खाँ आवों। बैन दौरी-दौरी कुम्हेड़ी वारी परोसन कें गई। उनसे कन लगी आज मोय प्यारो भइया आ गवो है बताओ मैं का-का कर लऊँ? परोसन को सुभाव एसई हतो वे तो ईसें चिढ़त हतीं सो ऊने के दई तैल सें आँगन लीप लो, घी में चाउर (चावल) चुरे लो, दूद में लुचई काड़ लो। अब का भओ बैन तो हती भोरी-भारी घरै,आकें आगन तेल सें लीपो। घी में चाउर डारे वे चटपटान लगें लुचई दूद में डारी सो वे लहरयान लगे। बैन दूसरी निवारी वारी परोसन के घरै जाकें कन लगी कि आज मोय भैया आव है। मैंने घी में चाउर डारे वे चटपटा रये, दूद में लुचई डारी वा लहर आरई बताव मैं का करों। निवारी वारी परोसन कौ सुभाव अच्छो हतो सो उनने अच्छी तरा से कई आँगन गोबर से लीप लियो, दूद में चाउर की खीर बना लियो, घी में लुचई बनाइयो। भइया खाँ सारोट पै बैठा कें हल्दी चावल सें टीका कर दियो नारियल उर मिठाई दे दियो। पछाई कैं टाठी परस कें प्रेम से जिमा दियो। बैन झट सें घरै आई। ऊनें झट सें गोबर सें आँगन लीप लवो। दूध में चाउर की खीर, लुचई घी में काड़ लई। नोंने खुसी-खुसी भैया खाँ सारोंट पै बैठा कैं हल्दी सें टीका करो नारियल मिठाई दई। प्रेम सें टाठी परस कें भोजन करा दये। दोज के दूसरे दिना भइया जान लगो। सो बैन ने गैल के लाने लुचई बनाई उर अथानों लओ एक कपड़ा में लुचई बाँध कें भइया खाँ गहा दई।

भइया ने अपने घर की गैल धर लई। एक लुचई पछाई की जोन हती व कुत्ता खों डार दई, लुचई खातईं कुत्ता मर गवो। अब तौ बैन ने अकबका कें दौर लगाई गैल में जोर सें चिल्लात जाय ओ भइया वो कलेबा जिन खइयों। भइया ने कलेवा एक पेंड़ सें बाँधकें पानी भरवे कुआ पै चलो गवो। पानी कौ लोटा भरकें आतन देखकें जोर सें कन लगी ओ भइया वो कलेवा जिन करियो। भइया ने कई वो धरो तोरौ। कलेवा, मैंने अबे नइ करो, तोरो जी ऊ कलेवा में धरो। बैन कन लगी, ऐसी बात नइयाँ। मैंने पछाई की लुचइ कुत्ता खाँ डार दइ, कुत्ता लुचइ खातन मर गवो जौ देखकें मैं दौरी। ऊ कनक में अँधयारे में कोनउ साँप कौ बच्चा पिस गवो तो।

भइया नें कई कैं बैन तुम मोय काँ काँ बचाव, मोरी तो अलफ है। जब मैं टीका करावे की सोस कें घर सें चलो तो तव दिरौंदा गिरने लगो। मैंने दरौंदा से कै दई मोय अपनी बैन सें टीका लगवाने है। गैल में डाँग सें शेर दहाड़त भयो आ गवो। नदिया भरभरात बहा लै जावें खों आतन देख मैं वे ऊसें गिनती करी कै मोय दोज कौ टीका करा कें लौट आन दे। इत्ती सब बातें भइया की सुनकें बैन ने भइया सें कइ कि भइया तुम घर वापस ज जाव। मोय घरै चलो मैं तोय संग चलों। भइया बैन की ससरार फिर सें आ गवो।

दूसरे दिना बैन ने एक सोने की ईट, जवा कौ पूरा(घास) सुहाग को सामान, घँघरिया फरिया अपनें संग में घ्रर के भइया खों संग में लुवाओ और चल दवो। जंगल में से शेर दहाड़त देख जवा को पूरा फेंक दओ, आगे चली सो नदिया आ गई। बैन ने नदिया की पूजा करी घँघरिया फरिया, सुहाग कौ सामान चढ़ा कें विनती करी नदिया शान्त हो गई। बैन भइया घर के भीतर घुसवे खाँ गये सो दरोंदा गिरन लगो बैन ने सोने ईंट की खुरस दई।

भइया की सगाई पताई बारे आन लगे। कोनउ जोशी ने बता दइ ती कि तुमाय भइया की एक करीं अलफ है सो तुम सब उल्टे-उल्टे काम करियो, भइया खाँ दिन -रात गारीं दइयो। अब तो बैन सिर्रन पागल बन गई। सगाई हो गई, भइया खों तनक सी बात पै लड़वै गारीं देवै। लगुन आई सो बेन कन लगी पैलऊँ लगुन मोय हाथ पै धरी जै है पछाई कें भइया के हाथ पैं। भौत जिद करबे जौ सब देखकें रिश्तेदार परोसी कन लगे धर दो बा तौ सिर्रन है। सब नेंगचार तैल आदि की बेरां पैलां बैंन के नेंगचार तैल आदि चढ़ावे फिर भइया को। दूल्हा निकासी के बेरा बोली निकासी पछाई के द्वारें सें हुइये। जिद करत देख पागल सिर्रन की कहकें निकासी हो गई। बरात बिटिया के दोरे पोंची सो बैन कन लगी पैला द्वार चार हमाय पछाई के। भइया के चढ़ाव चढ़ती बेंरा बैन झपक गई। सब बराती कन लगे जल्दी सें भाँवरें पार दो कन्यादान हो जान दो कऊँ बैन जग जै है तो भाँवरन के लाने वा जिद्द करै। जैसइ भावरें परन लगीं दूल्हा मुरझा (बेहोश) गओ। सब ने कई पैला बैन खॉ जगाओ वा कछु जानत हुइये। बैन खॉ जगाओं। बैन कन लगी पैला भाँवर मोरे संगे पछाई कें भइया के संगे परें। भॉवरे परन लगी दूल्हा नोंने हो गवो। बहू की विदा हो कें घरै आगई। परम्परानुसार दई देवता पूजन नेंगचार हो गए। बैन खों भइया की अलफ के बारे में मालूम हती कि भइया की जा अलफ बड़ी कठिन है। बैन कन लगी हम तो भइया भौजाई के संगे उनई के कोठा में सोंयँ। घर के सब जनें समझा कें हार गए। अकेलें पागल बैन ने काऊ की एक न मानी। अन्त में बूढ़ी बाई बोली नई मानत सो जान दो परी रेहै एक कोने में, भइया भौजाई तो सो गए। बैन खों नीद काँ धरीती, बा तो चारऊ तरपै सें देख रइती। जैसई ऊनें नागिन खो देखो कि नागिन डस वे आ गई। बैन ने भैया की कटारी सें ऊके गतरा-गतरा कर दये उर पूजा की थारी से ढाँक के बायरे कड़ आइ। ढोलक उठाकें नाचन गान बजान लगी और लगी खूबई असीस दैबे। सबरे रिश्तेदार कहबें सो जाव काल गाइओ बजाइओ। भुन्सारें बैन जल्दी से उठकें आइ और कन लगी- ''हम पागल सिर्रन नइयाँ। हमनें मताई कौ पूत, भौजाई कौ सुहाग और अपने वीर को राखो। चलो भीतर कोठा में देखो''। सब रिश्तेदार खों कोठा में लुवा जाकें पूजा थारी उठाकें नागिन के गतरा-गतरा दिखाये। ''हमें एक जोशी ने भइया की अलफ के बारे में बता दई ती सो हम पागल सिर्रन बन गए हते''। किस्सा हती सो पूरी हो गई।

सभी महिलाएँ हाथ में लिये हुए चावल और फूल दोज पर चढ़ाउती हैं। अपने-अपने भइयन की कुशल मंगल की प्रार्थना करती हैं। बहिनें भइया को हल्दी चावल से टीका करकें नारियल मिठाई देती हैं। भइया बहिन को भेंट अपनी सामर्थ अनुसार राशि देता है।

व्रत: पर्व त्यौहार की परम्परा हमारी संस्कृति के ऐसे फूल हैं जो हर ऋतु के खिलते हुए अपनी सुगंध बिखेरते हैं। त्यौहार जीवन में खुशी का संचार, सम्बधों की मिठास, उनकी आवश्यकता और महत्व का संदेश देते हैं।

रक्षा बंधन भाई द्वारा बहिन की रक्षा का पर्व है तो भइया दोज बहिन द्वारा दिया हुआ आशीर्वाद भाई के लिए रक्षा कवच है।

- मधुवन-फेसन. ३ म.न.४३, इन्दपुरी कालौनी
डा०राय के नर्सिंग अस्पताल के पीछे
टीकमगढ़

व्यंग्य नाटिका-

लाल बत्ती गाड़ी

- डॉ. सुरेश 'पराग'

पात्र- परिचय-

लल्ला: बीस साल का आवारा किस्म का लड़का

माँ: लल्ला की माँ, जो अपने बेटे को बहुत प्यार करती है।

पिता: नेता, जो समाज सेवा में व्यस्त रहते हैं। बेटे के अवारापन से परेशान रहते हैं।

सहायक पात्र: कुछ ग्रामीण

(शयन कक्ष का दृश्य लगभग बीस वर्ष का एक युवक, गहरी नींद में सो रहा है, उसके चेहरे पर मुस्कान थिरक रही है। माँ का प्रवेश अत्यन्त नाटकीय लहजे में लाड़ दिखलाते हुए)

मां: हाय! हाय!! कैसो मुस्कारओ हमाओ लल्ला! हम तो तरस रये बीस साल सें ऐसी मुस्कान देखवे के लाने, कहूँ नजर न लग जाय (थोडी देर देखते रहने के बाद लल्ला... उठो दस बज गई चाय पी लो फिर सो जाइयो।)

बेटा: नीद में कुनमुनाते हुए ऊँ......... ऊँ...... तनक और सो लेन दो बाई बड़ो अच्छो सपनों देख रहे पूरो हो जाय फिर उठ जेवी।

मां: ठीक है लल्ला तनक और सो लो सपनो पूरो हो जाय फिर जगा लेवी। (स्वगत) सॉसऊ कोनऊँ सुहानो सपनो देख रओ लल्ला ऐसी मुस्कान पेलाँ कभऊँ नहीं देखी।

पिता: (शयन कक्ष के द्वार से लगभग चिल्लाते हुए खीझ भरे स्वर में) का भओ भागवान ? अबे तुमाए लल्ला को सकारो नईं भओ....का.....?

माँ: (शयन कक्ष के द्वार पर आते हुए) गरो काए खाँ फार रए? उठ जैहे तनक देर स? रोज तो नौ बजे तक उठई जातती आज पेली बार दस बजे तक सोओ है। अबै तो बच्चई है। तनक और सो लेन दो।

पिता: (पूर्ववत खीझते हुए) हओ, बच्चई तो है। बच्चा न होतो तो पाँच साल से दसवीं फेल न होतो। सिगरिट पीवे, सराब पीवे के लाने बच्चा नइयां फिल्में देखवे, नाचवे के लाने बच्चा नइयां पढाई करबे के लाने बच्चा है। ईने तो हमाई इज्जत माटी में मिला दई। पता नई कबै पास कर है दसवीं?

मां: कर लैहे, कभऊँ न कभऊँ करई लैहे। इतनी बड़ी जिन्दगानी डरी दसवी पास करवे के लाने कभउँ न कभउँ तो करई लैहे। का जल्दी है? तुम पढ़ाई खां लेके उसे कछू न कहो करे। जमानो ठीक नइयाँ कछू ऊँच नीच हो जाय तो पछताने परहे। फिर जिनने पास कर लई वे कौन कलटटर बन गये।

पिता: दूसरे बनते चाहे न बनते कुँवर पढ़ लिख लेते तो कछू न कछू बनई जाते।

मॉ: बड़े आये बनावे वाले, ऐसई होतो तो अबै तक सिपारस करकें दसवी पास करा न लेते। दुनियाँ भर के काम कराउत फिरत, अपने लड़का खाँ दसवी पास न करा सके। कौन काम की तुमाई नेतागीरी। तुमाए संग के नेता गॉव की पंची से लेकें, विधायक मंत्री तक बन गये। जिनके घरे टूटी साइकिल न हती वे कारन में चलन लगे एक तुम हो के.......

पिता: देखो..........! तुम हमाई नेतागिरी के विषै में कछू न कहियो, हम ऐरा गेरा नेता नोहीं, हमाई गिनती ईमानदार, ओर सच्चे समाज सेवकन में होत। हम गलत काम के लाने सिपारिस नई कर सकत। पास होने होय तो अपनी मेहनत के बलपै होय, नइयाँ सड़त रहे ऐसई। ऐसी सन्तान होने से तो सन्तान न होवो साजो।

माँ: कभऊँ पाँच मिनट ऊके संगे बैठके प्रेम से बातें करी हैं तुमने के ताव दिखावे भर के बाप हो।

पिता: ऊने कभऊँ बाप को सम्मान दओ है हमें कै हमाई कमाई से गुलछर्रे उड़ावे भर के लाने लड़का है। हमाए हार छोड़बे के बाद साहब जादे को सकारो होत। और रात में हुमाए सोने के बाद लौटत है नशा में घुत भॅजत-भॅजत। कितने बजे बात करिए? कौन मो से बात करिए। आजई देख लो मन हतो कछू बात करते अकेले ग्यारा बज रही। अबै सकारो नई भओ। हमें एक प्रोग्राम में जाने मंत्री जी आवे बारे हैं।

मां: तुम जाव, अपनी नेतागिरी देखो। घर की चिन्ता न करो, हम संभार लेवी।

पिता: तुमइं संभारत होती तो वो आज जे दिन न देखने परते।

मां: तुम जावतो, दिमाक न चाटो। इतै जोन हूहै सो होत रहन दो।

(पिता का प्रस्थान)

लड़का: (विस्तर पर उसनीदे स्वर में) बाई...... !
माता जी ....!! हमाई प्यारी मम्मी...........!!

मां: (उतावली दिखाते हुए) ....आ...........आई, लल्ला आगई बेटा..............!! (पास आकर) लल्ला बेड टी बना दूँ सी.डी.चला दयें का देखहो, फिलम कै गाना सुनने??

लड़का: (विस्तर से उठकर) माँ के पैर धूते हुए परनाम माता जी।

माँ: (खुशी से)हाय......!! आज लल्ला ने हमाए पॉव परे, जुग-जुग जियो बेटा, जुग-जुग जियो, लो बेड-टी पीलो सी०डी चला दए ?

लड़का: नई बाई, आज न बेड टी पीवी न गाना सुनवी न फिल्म देखवी। पेलाँ, नहावी, फिर मंदिर जेवी, भगवान की पूजा करवी। मस्जिद जेवी, खुदा की इबादत करवी, गुरूद्वारा जाके वाहे गुरू की ड्योढी में माथा टेकवी और हॉ चर्च भी जेवी ईशा मसीह के दरसन करवे।

मां: (कृत्रिम घबराहट के साथ) का बात है लल्ला? तुमाई तबियत तो ठीक है। डॉक्टर बुलाएँ का? नींद पूरी न भई होय तो तनक और सो लो।

लड़का: नई बाई, कोऊ खां, बुलावे की जरूरत नइयाँ हम एकदम ठीक हैं।

मां: हमें तो चिन्ता हो रही, लल्ला आज सकारे सें उठकें तुमने सिगरट नई पी, बेड.टी.तक नई पी। अबैतक, तनकउ नई चिल्लाये, गारी भी नई निकरी तुमाए मों से इतनी देर से मीठी- मोठी बातें करे जा रये। लल्ला हमें तो डर लग रहो काऊँ ने कछू करा तो नई दओ..........।

लड़का: डरावे की कोनऊ बात नइयाँ। हम बिल्कुल ठीक हैं (बात बदल कर) दद्दा चले गये का?

माँ: हओ। मंत्री जी के प्रोगराम में जाने तो।

लड़का: बाई तुम दद्दा सें कहियो वे हमाई चिन्ता छोड़ देवे उने हमसे कोनउँ सिकायत न रैहे।

मां: लल्ला........! तुमाई नोंनी नोंनी बातें सुन के हमें भौत अच्छो लग रओ। अकेले डर भी लग रओ कछू हम सपनो तो नई देख रहे........?

लड़का: सपनो..........? हाँ बाई आज हमने सपनोई तो देखो है। (गाकर) बाई हमने एक सपनो देखो.... सुन्दर सो..... टयारो सो नोनों सो, एक सपनो देखो...... !

मां: (उत्सुकता से) कैसो सपनो लल्ला.....। हमे भी तो बताव....।

लड़का: बतावी बाई.... तुमे भी बतावी दद्दा खॉं बतावी... सबखॉं बतावी पै अबै नई, पैलो तो नहावी मंदिर जैवी मस्जिउ जैवी, गुरूद्वारे जैवी और चर्च भी जैवी, (गाते हुए वाथरूम की तरफ जाता है) हाय...... हमने एक सपनो देखो........... प्यारो सो..... सुन्दर सो नोनो सो।

मां: (आँगन में तुलसी घर के पास खड़ी होकर प्रसन्नता से) हे! तुलसी मैया, हे भगवान भोले नाथ तुमाई जै होय...! तुमने तो चमत्कारई कर दओ। (गाती है) ऊँ जय शिव ओंकारा स्वामी जय शिव ओंकारा ब्रम्हानंद सदा शिव अर्धागी धारा (घन्टी बजाती है) लड़का भी पीछे से आकर स्वर में स्वर मिला कर गाता है।

(भजन पूरा होने के बाद)

लड़का: अच्छा बाई हम जा रहे, लौटबे में देरी हो जाय तो चिन्ता न करियो।

माँ: (व्याकुलता से) अरे चाय तो पी लो कछू खालो।

लड़का: (दूर जाते हुए) नई बाई, आज से चाय बंद सिगरट बन्द, सराब बन्द । सबरे एब आज से बन्द बस तुम आसीरवाद देव के हमाओ सपनो जल्दी से जल्दी पूरो होय।

मां: जुग-जुग जियो मोरे लल्ला! तुमाओ सपनो जल्दी से जल्दी पूरो होय।

लड़का: अच्छा बाई... हम तो चले सपनो सच करवे (गाने के अंदाज में) हम तो चले कोउ रोके न रस्ता............!

(नेपथ्य से दूर जाती हुई गाने की आवाज)

मां: हमें नई पता लल्ला तुमने का सपनो देखने? अकेले तुमाई मीठी मीठी बातें सुनकें हमाओ सपनो तो पूरो हो गओ। सालन बाद - घर में खुशी लौटी है, आज हम पूरे घर खाँ फुलन से सजावी पूरे घर खाँ दियन सें जगमगा कें दिवारी मनावी। हे तुलसा महरानी तुमाई जै होय! हे भोले नाथ ऐसई कृपा बनाए राखियो।

(द्रश्यान्तर)

(शाम का समय नेता जी घर में प्रवेश करते हैं तो घर को फूलमालाओं से सजा और दीपों से जगमागाता देख कर चौंक जाते हैं। पत्नी भी सुन्दर वस्त्रों में सजी सॅवरी उन्हीं की प्रतीक्षा कर रही थी।)

पिता(नेता): जो हमाओई घर आय के हम भूल सें काऊ और के घर में घुस आये। और जे तुमई आव के कोनउॅ हूर की परी?

माँ-(पत्नी): हओ हँस कर जे हमई आँय तुमाई धरम पत्नी तुमाई हूर की परी और तुम अपनेई घर में आये कोऊ दूसरे के घरे नईं घूसे।

पति(नेता): अकेलें जा सजाबट, जे मिठाई ? कोनऊँ लाटरी खुल गई का?

मां (पत्नी): नई कोनउॅ लाटरी माटरी नईं खुली?

पिता: तो तुमाओ लल्ला दसवीं पास हो गओ का?

मां: नई लल्ला दसवीं पास भी नई भओ। न ऊहे अब दसवीं पास करवे की जरूरत आय।

पिता: फिर का बात हो गई?

मां: बात जा है के आज सें अपनो लल्ला सुधर गओ है।

पिता: तुमाई तबियत तो ठीक है? ग्वालियर तो न ले जाने पर है??

मॉं: (तुनक कर) ग्वालियर जाँय हमाए दुस्मन। तुमे भी जानके अच्छो लग है, आज तुलसा- माता की ऐसी किरपा भई के लल्ला ने, सकारे उठकें न सिगरट पी, न गारी दई, न चिल्लानो वो नहा कें मंदिर गओ, कैह रहो तो कै मस्जिद और गुरू द्वारे भी जाने।

पिता: पर ऐसो कैसें हो गओ?

माँ: बता रहातो कोनउ सपनो देखो है?

पिता: कैसो सपनो?

मॉं: जो तो नई बताओ। केह गओ के लोट के बतावी।

पिता: हमें लगत सपनो लल्ला ने नई तुमनें देखो है। तुम अपनी खुली आँखने सो सपनो देख रही हो। लल्ला के बारे में सोच-सोच के तुमाओ दिमाक ढीलो हो गओ।

(लड़का प्रवेश करके)

लल्ला: नई दद्दा, बाई, बिल्कुल ठीक हैं। वे जोन कै रई, बिल्कुल ठीक कै रई। अब हम बदल गये। आजभर के लाने नई हमेशा से के लानें। अब हमसे तुमे कोनउॅ सिकायत न रैहे।

मॉं: देखो, हम कहत ते न? हमाओ लल्ला बदल गओ है। अकेले तुम मानतई न ते। चलो लल्ला कछू खा लो। फिलम इलम देख लो फिर सो जइयो।

लल्ला: नई बाई टी.वी. देख कें भौत जिन्दगी बरबाद कर लई। भौत हो गओ। ईमें कछू नई धरो। अब हम पैलॉं दद्दा संगे बैठके आंगे की प्लानिंग बनावी। रायायन पढ़वी फिर व्यारी करवी।

पिता: लगत तुम सही में बदल रहे हो।

लल्ला: बदल नई रहे, बदल गये है पूरी तरां से।

पिता: पै इतनो बड़ो परिवर्तन अचानक कैसे हो गओ?

लल्ला: परवरतन के लाने एक दिन नई, एक मिनट भौत होत कबीर दास कै गये पल में परलै हो जात। इसी हमें जोन करनें अबई ओर एई पल में करो चाहिए। काल की कीनें देखी?

माँ: (खुश हो कर) कैसी ज्ञान की बातें कर रहो हमाओ लल्ला कहूँ नजर न लग जाय?

पिता: पर जो सब भओ कैसे?

लल्ला: सपने सें।

पिता: (प्रश्न वाचक स्वर) कैसो सपनो?

माँ: लल्ला जल्दी सें बताव तुमने कैसो सपनो देखो?

लल्ला: बाई आज हमने सपने में खुद खाँ (बात बदलकर) नई बाई पैला तुम हमाओ मों मीठो कराव, हम मीठे मों से तुमें खुश खबरी सुनावी।

माँ: लेव लल्ला मों मीठो करलो। हमने तो इतनी मिठाई मंगा लई के पूरे पुरा को भी मीठो कराबी।

लल्ला: पूरे पुरा नई बाई पूरे गाँव में बटवाने पर है समझ लो तुमाए दुख के दिन दूर हो गये।

पिता: (खींझते हुए) पर तुमने सपने में का देखो?

लल्ला: दद्दा आज हमने सपने में देखो है कै हम लाल बत्ती गाड़ी में बैठे हैं।

माँ: (प्रसन्नता से)साँसी कै रए लल्ला? तुम लालबत्ती गाड़ी में बैठे?

लल्ला: हाँ बाई हमने देखो के हम लाल बत्ती गाड़ी में बैठें और सेकरन जने फूल माला लये हमाओ स्वागत कर रहे। हमाई जै के नारे लगा रहे।

पिता: सो इसे का हूहै?

लल्ला: इसे जो हूहै कै समाज में इज्जत पावे के लाने अब हमें दसमी पास करवे की जरूरत न पर है।

पिता: कैसें?

लल्ला: हम बिना दसमी पास करे नेता बनबी फिर मंत्री बन जैवी।

पिता: लगत तुम सही में पागल हो गये।

माँ: (नाराज होकर) ए....ओर चाहे जो कहियो हमाए लल्ला खाँ पागल न कहियो?

पिता: सपने में लालबत्ती गाड़ी में बैठो देखके, इतनौ खुश होबो पागलपन नोही तो और काय......?

लड़का: न मानवी, आय की कोनउं बात को बुरओ न मानवी, न चीखवी, न चिल्लावी, न बदले में आप खाँ पागल कैहवी। पै इतनो जरूर कैहवी के काल तक हम भौत टेन्शन में हते। दसमी पास करवे की चिन्ता हती। पै जब से हमनें सपनो देखो है हमाओ टेसन दूर हो गओ। हमाई चिन्ता दूर हो गई हमाई समझा में आ गओ के मंत्री बनवे के लाने दसवी पास करवे की नई बोट बैंक बढ़ावे की जरूरत है। वो हमने शुरू कर दओ है आप देख लइयो जोन काम आप बीस साल में नई कर पाए वो हम बीस मइना में पूरो कर के दिखा दैवी।

माँ: सांची कै रये लल्ला हमें पूरो भरोसो है तुम जोन कै रये ऊहे पूरो करकें दिखाहें।

पिता: तुमाए करम करकें दिखाहें। पढाई न कन्ने परै ईके लाने जा सब नौटंकी कर रहो।

लल्ला: न मानवी आप की कोनउं बात को बुरओ न मानवी। आप भर की काये, कोऊ की बात को कभऊँ बुरओ न मानवी। बुरओ मानवी तो बड़े कैसें बनवी। जनता को दिल कैसे जीतवी। लालबती गाड़ी में कैसे बैठ पावी। आप खां पतो नइयाँ आज हम मंदिर गयेते। मंदिर भी गये ते गुरू द्वारे गये। चर्च में जे के यीशु के संगै कान्फ्रेस करी। लौट के हिन्दुअन से मिले मुसलमानन से मिले, ईसाइयन से मिले गरीबन से मिले अमीरन से मिले। सब को दिल जीतो। लालबत्ती गाड़ी बैठवे के लाने और कौन योग्यता चाहिए?

माँ: जुग-जुग जियो लल्ला। हम न जानत ते के हमाए लल्ला में इतनी बड़ी योग्यता भरी है। हम अबई पुरा बालन खाँ बुलाके तुमाएई हॉतन से मिठाई बॅटवावी (माँ मुहल्ले वालों को बुलाने चली जाती है। थोड़ी देर में मुहल्ले वाले इकट्ठे होने लगते हैं)

समूह स्वर: मिठाई कौन खुशी में बटवाँ रही लल्ला की बाई?

माँ: अरे..........! आज हमाए लल्ला नें खुद खाँ सपनन में लालबत्ती गाड़ी में बैठो देखो है। हजारन जने फूलमालन सें लल्ला को सुवागत कर रहे है है जै-जै कार कर रहे है। लल्ला भौत जल्दी मंत्री बनवे वालो है ऐई खुशी में।

समूह स्वर: बधाई होवे लल्ला की अम्मा भौत-भौत बधाई होवे। अकेले लल्ला मंत्री बन जाय तो हमें न भूल जइयो।

माँ: आप औरन खाँ कैसे भूलवी आपई सब जनें तो लल्ला खाँ मंत्री बनाहो (पति से) लेव लल्ला के दद्दा तुम भी बॉटो न मिठाई। तुम काये मौ लटकाए ठाड़े काये तुमें लल्ला की खुशी नई सुहा रही।

पिता: (स्वर को सामान्य रखने की कोशिस करते हुए) जो तो पागल हतोई लगत तुम ईसें जादाँ पागल हो गई हो।

माँ: (गुस्से में)ए .... पागल न कहियो और चाहे जो कहियो।

लल्ला: नई बाई बुरओ न मानियो बिल्कुल बुरओ न मानियो। आगे बढ़ने तो छोटी-छोटी बातन खाँ सेहवे की आदत डारने पर है।

माँ: तुम सही कै रहे लल्ला। हमें पूरो भरोसो है कै तुम भौत जल्दी अपने सपने खाँ पूरौ कर लेहौ।

कल्ला: (गाने के अन्दाज में) हाय हमने एक सपनो देखो है...... प्यारो सो सुन्दर सो... नोनो सोय!

(गाकर) सच भये सपने सारे.... जागे भाग हमारे....

पति: (पति से) तुम सोई गाव न? तुमे लल्ला की खुशी नई सुहा रई का?

पिता: (बुझे-बुझे स्वर में) हओ अब तो गानई पर है, जनम दओ है तो निभानइं पर है। (पत्नी के साथ, किन्तु उसकी ताल से हट कर) सच भये सपने सारे जागे भाग हमारे (लल्ला माँ, पिता, सब नाचते हैं, गाँव के लोग भी मिठाई खाते हुए नाचते हैं) (नाटक पूरो- भओ)

- देवेन्द्र नगर पन्ना म.प्र.
पिन 488333
मो. 9406744415

दरकन

– भास्कर सिंह माणिक

छोटे राजा दालान में बैठे- बैठे कछू सोचई रये ते कि ओई टेम पहलवान सिंह आ जात 'राजा साहब राम-राम' राम-राम पहलवान सिंह राजा साब तुमाय मोड़ा की सगाई तो पक्की हो गई और तुमने काऊ को बताओ तक नईयाँ ऐसी का बात छोटे राजा ने बात को सुनतई जबाब दओ हमाये प्रताप की अब सगाई का भई अच्छा बीस लाख हबेली में पैलेई धर लये और कैरये सगााई का भई, चलो ठीक है ब्याओ कब को है कछू रुक कें सोचत भये उत्तर दओ फागुन की पांचे को और मोड़ी कैसी है पढ़ी लिखी है कै नई, सुन्दर तो हुए। हाँ सुन्दर है शहर की है और पढ़ी लिखी भी है। अच्छा राम-राम हम चलवी, तनक ठहरो पहलवान सिंह एक बात तो रैई गई बो का बात है एक दिना चल के घोड़ा, बाजे, दिलदिल घोड़ी और का का होत सो तुम चल के करवाउनें।

अरे राजा साब कां राजा भोज और कां गंगू तेली। जे बातें छोड़ो अब न कोऊ नाहर सिंह और न कोऊ घसीटे। आप कै रये तो कैसे आपकी बात टार दे। तो कालई चलने लुगाई सें कै दईयो। लुगाई से काये अरे पहलवान सिंह कभऊ घरऊ के बारे में भी सोच लेओ करो। अपनु का जाने उन्ना- लत्ता में तुमाई लुगाई हो जे और हमाई।

ओ मानकुंवर हमने पहलवान सिंह से कै दई काल बजारे चलने है और ऊ से ऊ की लुगाई को भी बुला लओ। मानकुंवर खावे को बना रईती चौका में बैठी-बैठी छोटे राजा को कोनऊँ उत्तर न मिलो तो वे भीतर गये का देखत कि मानकुंवर मनई मन कछु बड़ बड़ा रईती' मानकुंवर, मानकुंवर सुन रई के नई' मानकुंवर ने पाछे मुड़ के देखो। अरे तुम का बात है, कछू नई। कछू तो बाजारे चलने अब किरते दिना रे गये, तुम कै तो सई रये। हमने पहलवान और ऊ की लुगाई सें कैदई का के रये ऊ की लुगाई सें केदई 'हओ' का तुम ऊ के घरे गयते। नई वो इते से निकरौतो सो बुला लओतो कछु देर चुप रे के मानकुंवर ने कई जो तुमने नोंनो करो। काय सें दुलारी हर काम-काज में जानत समझत है लेकिन? लेकिन का 'वो आ जे के नई' काये ऐसी काये कैरई दुलारी गाँव की प्रधान है जानें ऊ के ऐंगर टेम हुये के रई टेम हुये के नई का मतलब में ऐसेई के रईती। नई कछू बात तो है। अरे जमानों बदल गओ आज सबई अपय-अपय घर के राजा हैं की कै लाने को टेम निकारता मानकुंवर पहलवान हमाओ बचपन को संगी है और हम एक दूजे की सब जानता तुम तो सब चलो तुम के तो नींकी रये। हम रुपईया उठा के ले के आउत हैं।

सन्दूक खोलतई मानकुंवर हड़बडां जात 'काये, काये ओ प्रताप के बापू तनक इते तो आओ' छोटे राजा कमरा में घुसत हैं और सन्दूक देखतई सब कछू जान जात, फिरऊ मानकुंवर से पूछन लगत 'काये का हो गओ' मानकुंवर रोआंसी हो। जात काये हमनें रुपईया इतेई तो रख दयेते। जा में बीस के आठई रै गये। छोटे राजा ने मानकुंवर को ढाँढस बंधाओ। जो हो गओ सो हो गओ। सो कैसे, देखो मोड़ा बराबरी को हो गओ जादा कछू कै हो तो वो जबाब दे दे तो का कर जो तो हम जानत हैं खावे पीवे के लाने ले गओ हुए मानकुंवर चुप हो जात अब का सोच रई। चलो पहलवान हमाई रास्ता देख रओ हुये अगर प्रताप को जरूरत हती तो हम सें कै देतो। दो चार हजार दै। देती। जाने तो नास मेट दओ। अब का हुए? उन्ना-लत्ता गानो गुर्रिया, साज श्रृंगार को सामान और छोटी-बड़ी मुलककी चीजें लेने इत्ते रूपईया से का होने तुम काय चिन्ता में जर रई। अबे हम तो हैं। उठो मों धोलो और बाजारे चले।

राजा साब आप आ गये चलो चलिये। अरे पहलवान सिंह हमाये प्रधान जू काँ हैं। राजा साब लो मैं आ गई। छोटे राजा दुलारी को देख के हक्के बक्के रै जात। का देख रये राजा सब दुलारी ने चुटकी भरी। छोटे राजा आँखें झुका कें मुस्का देत। कछू नई। कछू तो। नई-नई कछू नई कै डारो नई मन में लगी मन में रै जे। बात को काटत भये मानकुंवर टोक देती है। दुलारी संजा इतेई करने का चलवे को मन नईयां का? चलो चलिये रस्ता में हंसी ठिठोली करत भय बाजार में पहुंच जात। खरीददारी करत है। ईके पांछे सोनार की दुकान पै पोंच जात। वेंदी, झुमका, तोड़िया बिछिया, कमरबंध, चूड़ी कंगना तय हो जात लेकिन राजा साब पहलवान सिंह कें ऐंगर सरक के खुसुर-फुसुर करन लगत ताकि कोऊ दूसरो न सुन पाये।

राजा साब का कै रये। बीस में आठई रै गये। सो कैसे? प्रताप चुपके-चुपके रुपईया निकारत रओ और खावे पीवे में उड़ाउत रओ खावे-पीवे में इत्ते रुपईया खरच नाय हो सकत तुम तो जानत हो तुम सें का छिपो, खावे-पीवे के अलावा जुआ और का के दें जवान लरका है। तुम चिन्ता न करो। कित्ते रुपईया कम पर रये कित्ते का? सात-आठ हते वे खरच हो गये। जेवर। खेती से हरे हरे तुमाओ पईसा लौटा दे। अवे हमाई नाक बचा लो। कैसी बात कर रये। तुमाई लाज सो हमाई लाज। आखिर में हम बचपन के संगी हैं। आज कामें न आये तो कबै कामें आये। बाजार से घरै वापिस लौटत है और रास्ता में फिर वही हंसी ठिठोली होन लगत। अरे

पहलवान तुमने तो हमाई नाक बचा लई। कैसी बातें कर रये। तुमाई नाक सो हमाई नाक हां-हां सो काये नई। काल के दिना कईयो तुमाई लुगाई सो हमाई। मानकुंवर दुलारी छोटे राजा और पहलवान सिंह ठहाका दै के हंस परत ओई टेम रस्ता में पहलवान को लरका पप्पू आ जात। बापू का बात है आज तौ भौत हंस रये। कछू नई बापू हम बाजारे जा रये कोनऊँ काम तो नईयाँ नई कोनऊँ काम नईया। तुम जाओ।

ब्याओ के कछू दिनन बाद छोटे राजा के घर पै पहलवान को लरका पोंचत। मानकुंवर द्वारे पै ठांड़ी मिल जात। कक्को पाँव छुअत। खुश रओ। कक्को प्रताप भैया काँ है। कितऊ डरे हुए। काये का काम पर गओ प्रताप सें। कछू नई कक्का। परोस के गाँव में मेला लगो है सो सोची ती कऊँ प्रताप भैया और भौजी जा रई होय मैंने सोची पूछ लें। पप्पू प्रताप की छोड़ो तनक कर गृहस्थी को सामान आउनेंसो तुम अपय संगै भौजी को लय जाओ। पप्पू तनक हिचकिचात है कक्को अगर प्रताप भैया संगै चलते तो नीको लगतो। लला तुम काये घबरारयो। कक्को आप कैरई तो लुवा लय जारओ।

ज्ञानवती और पप्पू को घर से निकरत छोटे राजा देख लेत। वे खेत से सीधे घरै आत और मानकुंवर से पूँछत। पप्पू के संगै ज्ञानवती दुलईया कौं गई। हमनै मेला देखवे को भेज दओ। काये? ऊ को तनक-तनक मन बट जाये। का के रई। दुलईया जब सें आई। तब से अबै तक कऊँ गई नईयाँ। वा को कोनऊँ दिना ऐसो नई निकरत जी दिना रुपईया खरच न होय और तुमने ऊ को मेला भेज दओ। बड़े घर की मोड़ी है और पढ़ी-लिखी बिटिया शहर की है। सौक श्रृंगार तो करवी। सौक श्रृंगार करवी मोई करम टूटी जा रई काम करत-करत। जो तो हमऊ समझ रई लेकिन हमाये लला करम के होते तो का नई हती। जुआ खेलने, दारू पीने और घर में लड़ने। एकऊ दिना नोंने ढंग नई बोलो दुलईया सें। सो तो है। एकाद लरका बिटिया हो जाये अपने आप झुक जे। ठीक कै रई।

मेला मे ज्ञानवती जा दुकान से वा दुकान, वा दुकान से जा दुकान चीजें देखे और मन मसोस रै जाय। जो सब पप्पू देखत रओ। भौजी का बात है। कछू लओ नईयाँ। एक दुकान से पप्पू ने गजरा उठाओ। देखो भौजी जो गजरा तुमाये ऊपर कित्तो नींको लग रओ। ज्ञानवती मुस्का देती है। नई रन दो जो पांच सौ रुपईया को है, भौजी काये घबराई का हम तुमाये नईयाँ। काये इत्तो सोच रई। ज्ञानवती कछू नई कत। पप्पू सें सबई चीजें खरीद लेत जो-जो ज्ञानवती ने दुकानन में देखीती। भौजी जो लेओ और सुनो कक्को से कै दईयो हमाये बापू हमें रुपईया दे गये तें ओई सें सामान खरीदो। का कै रये। भौजी इत्तो न सोचो। इते अपनो के रई और गैरन घाई बतया रई। ज्ञानवती मना करत है। पप्पू समझावे की कोशिश करत भौजी तुमें मोई सों अब कछू न कईयो। ज्ञानवती के हांतन में झोला देख के पूँछत दुलईया इत्तो मुलक कौ सामान। इत्ते रूपईया कौं से आये। हमने तो नई दयेते। तोरे ऐगर कां से आये। अम्मा मोरी बापू मोय दे गओ तो पप्पू कौं गओ। अवे हेई तो हतो। कोनऊँ बात नईयां घरै चलो गओ हुये।

(एक दिन दोफारी में पप्पू छोटे राजा के घर पै पोंचो द्वारे की कुंडी शांकलो) किवारे सें ठोक कें बजाई। ज्ञानवती नें द्वारो खोलो। अरे तुम! का काम है 2 कछू नई। कछू तो सोचीती कक्को से बतया आयें। अम्मा तो बापू के संगै कितऊ गई है। तो का मोय पानियाऊँ नई पिवाओ। कैसी बात कर रये? आओ बैठो। ज्ञानवती पानी लै के आत और पप्पू को देन लगत। पप्पू गढ़ई के संगे ज्ञानवती को हांत पकर लेत। ज्ञानवती हरे से हांत हटा लेत। भौजी आज तो तुम केहेर ढा रईं। का बक रओ। जो तुमें देख ले सो पगला जे। कैसी बातें कर रये। साँची कै रओ। भौजी ऊपर से नेचें तक गुलाब जैसी महक रई। बेकार की बातें न करो। तुम जाओ। ज्ञानवती जैसेई भीतर के लानें मुड़ी। पप्पू ने ऊ को पकर लओ और जो नई करे चईये तो सो कर डारो। भौजी का कर दे तुम इतनी सुन्दर हो कि हमसें नई रओ गओ लेकिन जो राज हमाये और तुमाये बीचई में रे है। इतनी कै कें पप्पू चलो जात।

एक दिन ज्ञानवती की तबियत बिगड़ गई। छोटे राजा नें डाक्टर को बुलाओ। डाक्टर ने देख-दाख के छोटे राजा को बताओ। राजा साब बहू माँ बनने बाली है। जा की देख-रेख नौने ढंग सें करियो और सरकारी अस्पताल में ले जा के टीका-मीका लगवा दईयो। जैसो-जैसो हमने बताओ वैसो-वैसो तुमें करने। डाक्टर के जाते ही छोटे राजा ने मानकुंवर सें कई। अरे सुनरई डॉक्टर बाबू का कै रये ते। हाँ हमने सब सुन लई।

सई टेम पै बच्चा भओ। घर में खुशियॉं मनाई जा रईती। ओई टेम पप्पू निकरो। प्रताप अपने द्वारे पै बैठो-बैठो कछू गुनगुना रओतो। पप्पू ने जान बूझ कें व्यंग करत भय प्रताप सें कई। प्रताप भैया बधाई होय बधाई होय। प्रताप नें झुझला कें पप्पू सें कई 7 काये की बधाई। अरे भैया तुम बाप बन गये, और कै रये काये की बधाई? का कई? का कै रये? दुबारा कईयो। यह बात मानकुंवर सुन लेती है और प्रताप को पप्पू की बात सुनकर अचम्भा लगता है। वह उठकर कमरा में चलो जात लेकिन पप्पू की बात प्रताप को भीतर सें झकझोर देत। पप्पू जो का कै रओतो जो कैसें हो सकत? अबे तक हम एकऊ दिना नइ? नई जो गलत ऐसो कैसे हो सकत? कऊँ हमाये बापू? नई हमाये बापू ऐसे नईयां। कऊँ मायके से तो नई? नई। तो पप्पू ? ऐसो कैसे हो सकत? सोचत सोचत प्रताप अपनी मुड़ी पकड़ लेत है। नई हम से तो नई? जरूर कोऊ और? कबै और कैसे? जब प्रताप अपनी गुत्थी सुलझाने में लगो तो मानकुंवर प्रताप की बैचेनी भाप लेती है लेकिन कछू कत नईयां और उनई पाँव कमरा लौट आत।

प्रताप की उथल-पुथल बड़तई जा रई ती। मानकुंवर ज्ञानवती के कमरा में जात और बच्चा को उठा लेआउत। इते प्रताप अपनी गुत्थी को जित्तो सुलझावे की कोशिश करत उत्ती और उलझ जात। जो भओतो कैसे और काय? कऊँ न कऊँ हमाई? नई। ई में कऊँ न कऊँ हमई तो नईया। प्रताप जई चिन्ता में अपने आप से प्रश्न पे प्रश्न करत जा रओ तो। बच्चा को ले के मानकुंवर प्रताप के कमरा में घुसती है। लला,लला प्रताप। प्रताप पीछे मुड़ के देखत। अम्मा तुम। मानकुंवर कछू नई कत बच्चा को प्रताप की तरफ बड़ा देत। प्रताप बच्चा को तो ले लेत लेकिन प्रताप की आँखन सें आंसू टपक परत। मानकुंवर प्रताप की मुड़ी पै हात फेरन लगत। लला अब पांछे की न सोचो। अब आगे की सुध लेओ।

- मालवीय नगर, बजरिया कोंच
जनपद - जालौन (उ.प्र.)पिन-285205
मो. 09936505493

बुंदेली गज़ल

- महेश कटारे 'सुगम'

नईंयाँ खीर पुड़ी तौ नईंयाँ
ऊ बिन बात अड़ी तौ नईंयाँ
दौलत है जा बात अलग है
भेजे मनौ चड़ी तौ नईंयाँ
नईंयाँ ताती तौ का हो गऔ
बासी और सड़ी तौ नईंयाँ
मौ पै आ गयी हमनें कै दई
मन में परी गुड़ी तौ नईंयाँ
तुम कौनऊँ खौं चाट न लैहौ
सुगम मान्स रबड़ी तौ नईंयाँ

ताती=ताजी/मनौ=मगर/भेजे=दिमाग/गुड़ी=गांठ/मान्स=आदमी

बुंदेली गज़लें

– महेश कटारे 'सुगम'

(१) बुंदेली चीजों के विस्मरण को स्मरण करते हुए

नांद, हंडा और गुंड, कलसिया भूलई गए
टाठी, गड़ई, कटोरा, बिलिया भूलई गए
हंडिया, चटुआ, थपा, बोगना, गंगालें
थरा, डेगची और बटुलिया भूलई गए
कुपरा, बेला,चमचा, फुँकनी और कल्ले
गागर, चैला, दिया, चपुलिया भूलई गए
खोबा, पोली, पाई, गज, दर्जन, अंगरा,
मानी, बोरा, सेर, कुरैया भूलई गए
पिरा, कनारी, पिरिया, पेवला और गुट्टा
बंडा, कुठिया और मदुलिया भूलई गए
कोंडो, गुरसी, चूले, चकिया, पौर, अटा
छानी, मानी, डड़ा, सकुलिया भूलई गए
ठनका, अरा, अरगनी, कथरी और पल्ली
किटुआ, डंगरा, मकुई, कचरिया भूलई गए
खेत जुतत, बखरत्ते, फसलें ऊगत्ती
हर, बक्खर और जुआँ, पगहिया भूलई गए
हार, हरैया, पचकूँड़ा, मेंड़े, बारी
कोदों, कुटकी, समां, सनैया भूलई गए
मेढ़ा दांय, पचासी, ढबुआ, पचा, टटा
खरयानन के सूप, तिबरिया भूलई गए
ठाठ, बड़ेरे, म्यारें, कुरवा और खपरा
घर की सबरी छान छपरिया भूलई गए
चूंन, चना, मेंथी, तिल, फूलन के लङुआ
संक्रात के घुल्ला, गुजिया भूलई गए

(२) बुंदेली गज़ल

खा खा माल मदूला हो गए
भुंजी मका के फूला हो गए
आँगन में भींटें उठ गईं हैं
घर घर में घरघूला हो गए
काटत फिरत और की टांगें
आरी और बसूला हो गए
सूनी डार भई बरिया की
सुर्त पुरानी झूला हो गए
साँची बात तनक जो कै दई
सुन कें आग बबूला हो गए
आशीषें तौ बांझें हो गईं
झूठे दूध करूला हो गए
रोज बारातें सीं निकरत हैं
बिना व्याह के दूला हो गए

मदूला=भारी भरकम बर्तन/भींटें=दीवार/घरघूला=घरोंदे/बसूला =लकड़ी काटने वाला औजार / बरिया =बरगद /सुर्त =याद /करूला =कुल्ला /दूला =दूल्हा

(३) खूब अफर कैँ खालो गुंइयां

खूब अफर कैँ खालो गुंइयां
दार अथानौ भटा गकरियां
पातर दोंना भरे भरे हैं
खुशबू मारे पत्ती धनियां
लडुआ बने मलीदा वारे
सँगै धरी अचारी अमियाँ
असली घी को छोंक लगौ है
ज़ीरौ प्याज लोंग लहसुनियां
फूलत हैं पेटन में जाकें
जगा राखियौ खाती बिरियाँ
मींड़ मींड़ कैँ खाओ मजे सें
सुगम भलें छब जाएँ अंगुरियां

अफर=पेट भर/गुंइयां=दोस्त/भटा=बेंगन/गकरियाँ=बाटियाँ /लडुआ =लड्डू/मलीदा=बाटियों के चूर्ण में घी, गुड मिश्रण/अथानौ=अचार /पातर दोना=पत्तों के बनाये गए पात्र/खाती बिरियां=खाते वक्त/ मींड़, मींड़=मसल मसल कर/छब =भिड़ा/अंगुरियां=उंगलियां

हुरयारन खाँ सीख

– डॉ. सत्या घोष

भौत पैलां की बात है जब छतरपुर में फूला देवी के मंदिर में बालक महाराज रात ते। होरी कौ त्यौहार हतो। लकरन खाँ तौ हुरयारे की बातें सूझतईं हैं। सो जोई कींच-गिराये कौ उपद्रव कर रये ते तबईं एक ने कई चलौ बालक महाराज के इतै चलकें उनई के सगै होरी खेलबी। जौ सुनकें एक सियाने ने हटको कै सिर्री हौ का, उतै न जाव। पै लरकन की सूद, वे तौ चलेई गये।

उतै पौंचे तौ महाराज जी विराजे-मुस्कया रये ते। सब लरकन खाँ देखकें कन लगे – 'भले आये, अपुन औरन के लाने जे गुजियाँ धरीं सौ पा लेव।' लरका बारे तौ उतै लहटेई हते सो तुरतईं गुजियाँ खान लगे। इतनेईं में बालक जी कौ प्रवचन शुरू हो गवो। वे समझाउन लगे – ''जिन्दगी कौ रहस बड़ो गैरौ है। देखौ, ई के पैलां तुम सबई जनन ने दिवारी मनाई ती। दिवारी के दियन के उजयारे में जिन्दगी कौ रहस न जान पाये सो अब होरी जराई। पै ऐई में झुलसन लगे सो खीज में साजौ सौ रँग भूल कें ई गिलाव-गिलौंच में उरझ गये। आज कौ दिन आनंद कौ आय। गले मिलौ खुसी मनाव, आपसी दुस्मनी भूलकें अपनेपन के अमरत खाँ पियो। रंग डारने है तौ जे तुमाये सामने छेवला के पेड़े लगे ना इनके फूलन कौ रंग बनाकें डारौ तौ मजा भी आहै और लपटउ न लगहै।''

लरकन की समझ में आ गई उनने ऐई सीख के परचा छपवाये ओई में जे लेने भी लिख दईं –

पंथ के कन्टक आज जलाओ, मिलकें बोलो होली है।
सुमधुर सरल सनेह सजाओ, रंग नगर की बौली है।
आज सभी को गले लगाओ, ये बच्चों की बोली है।
सच मानों ये होली है, सच मानों ये होली है ।।

– घोषयाना, छतरपुर (म.प्र.)

22 वें बुंदेली उत्सव-2018 का प्रतिवेदन

- अतीन्द्रमणि त्रिपाठी

बुंदेलखंड की लोक संस्कृति कला को सहेजने एवं उसको संबल प्रदान करने के लिए 6 दिवसीय कार्यक्रम बुंदेली उत्सव 2018 का विगत वर्षो की भांति अत्यंत हर्ष उल्लास के साथ 17 फरवरी 2018 को दोपहर एक बजे पर्यटक ग्राम बसारी में भव्य शुभारंभ किया गया । सांस्कृतिक उत्सव नई पीढ़ी को लोक कला एवं चित्र पारंपरिक व्यंजन खेलकूद भेषभूषा बुंदेली नाच गाना आदि से परिचित कराता है । मुख्य अतिथि के रुप में पधारे नेता प्रतिपक्ष मध्यप्रदेश विधान सभा श्री अजय सिंह जी राहुल भैया ने इस अवसर पर उद्घाटन का शुभारंभ करते हुये महाराज छत्रसाल के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित किया । इस अवसर पर रंग बिरंगे गुब्बारे एवं कबूतरों को आकाश में छोड़ा गया और बारूदी गोलो की ध्वनि के साथ 22वें बुंदेली उत्सव का आगाज हुआ । इसी क्रम में संस्थान के अध्यक्ष श्री आदित्य शंकर बुंदेला जी द्वारा मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के स्वागत के साथ स्कूली बच्चों द्वारा मंच पर बधाई दीवारी जैसे लोक नृत्य एवं लोक गीतों की प्रस्तुतियाँ दी गई। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रुप में पधारे नेता प्रतिपक्ष श्री अजय सिंह राहुल भैया ने बुंदेली उत्सव की सराहना करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि बुंदेलखंड के इस अंचल में लोक संस्कृति के संरक्षण के लिए 22 वर्षों से अनवरत चल रहे बुंदेली उत्सव को राष्ट्रीय पहचान मिलनी चाहिए। यह एक ऐसा उत्सव है जहाँ लोग संस्कृतियों को बचाने और उन्हें विकसित करने के लिए प्रयासरत हैं। उन्होंने संस्थान के संरक्षक श्री शंकर प्रताप सिंह बुंदेला मुन्ना राजा जी को बधाई देते हुए कहा कि उनकी मेहनत लगन से बुंदेली संस्कृति भाषा और खेलों को बढ़ावा देने का जो प्रयास किया जा रहा है। वह एक मिशाल है । पर्यटन नगरी खजुराहो के समीप होने के वजूद प्रदेश सरकार इस उत्सव को कोई सहायता ना देकर इस उत्सव के साथ साथ बुंदेलखंड के साथ अन्याय कर रही है। इस उत्सव में आयोजित करने व प्रचार प्रसार सरकार की ओर से लोगों तक पहुँचाया जाए तो समूचे बुंदेलखंड पर्यटक को लाभ होगा। उद्घाटन समारोह में बुंदेली विकास संस्थान के संरक्षक माननीय शंकर प्रताप सिंह बुंदेला मुन्ना राजा जी ने मुख्य अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत भाषण देते हुए कहा कि माननीय अजय सिंह जी इन 22 वर्षों में लगभग 20 बार इस उत्सव में हिस्सा ले रहे हैं उनका प्रेम सदैव उत्सव को मिलता रहा है उन्होंने कहा कि इस मंच का राजनीतिक इस्तेमाल नहीं करते साथ ही उन्होंने इस मंच के माध्यम से नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह जी राहुल भैया से अपील की कि बुंदेलखंड के किसानों पर सूखे और ओलावृष्टि की दोहरी मार पड़ी है। इनको सरकारी लाभ नहीं मिल पाया है अतः वे इसे विधानसभा में उठाएँ। उन्होंने युवाओं को संदेश देते हुए कहा कि आधुनिकता की चकाचौंध में भले ही वह कितने खो जाएँ लेकिन पुरानी संस्कृति के प्रति सम्मान रखना चाहिए।

इस अवसर पर बुंदेली उत्सव के मंच पर इस वर्ष बघेली साहित्य सेवा में जीवनपर्यंत काम करने वाले बुजुर्ग साहित्यकार श्री देवी शरण ग्रामीण जी को डॉक्टर हरगोविंद सिंह हेमल स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। विगत वर्षों की बात इस वर्ष भी पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले प्रिंट मीडिया से चयनित श्री वेद प्रकाश चतुर्वेदी जी एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से चयनित डॉक्टर नरेंद्र सिंह परमार जी को डॉक्टर हरी राम मिश्र सम्मान 2018 से सम्मानित किया गया। सम्मान में सम्मान पत्र, शाल, श्रीफल एवं 3100 रुपए की राशि भेंट की गई । सम्मान पत्र का वाचन वरिष्ठ साहित्यकार श्री सुरेंद्र शर्मा 'शिरीष' जी द्वारा किया गया।

17 फरवरी उत्सव के प्रथम दिन कार्यक्रमों की श्रृंखला में रंगोली एवं लोक चित्रकारी प्रतियोगिता बुंदेली पोशाक आदि का प्रदर्शन चित्र बाल कलाकारों द्वारा किया गया जिसमें डी लाइट पब्लिक स्कूल छतरपुर एस.बी.आर. स्कूल बसारी शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बसारी आदि के छात्र सम्मिलित रहे । कार्यक्रम के इसी क्रम में प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी बुंदेली स्मारिका पत्रिका बुंदेली बसंत 2018 का लोकार्पण किया गया । तत्पश्चात दंगल और गिल्ली डंडा की प्रतियोगिताएं आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहीं । दंगल में अंचल के अलावा देश के विभिन्न प्रांतों के नामी पहलवानों ने हिस्सा लिया। रंगोली प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल द्वारा प्रथम द्वितीय तृतीय पुरस्कार वितरित किए गए।

18 फरवरी उत्सव के दूसरे दिन बुंदेली पारंपरिक खेलों की धूम रही चौपड़ कबड्डी गिल्ली डंडा रस्साकशी प्रतियोगिताओं ने जहाँ लोगों को रोमांचित किया वहीं आधा दर्जन से ज्यादा बुंदेली सिनेमा का प्रदर्शन पर्दे पर धूम मचाया। दूसरे दिन के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे श्री देवेंद्र प्रताप सिंह जी ने अपने संबोधन में कहा यह उत्सव बुंदेलखंड की शान का प्रतीक है और उत्सव के माध्यम से पूर्व विधायक श्री शंकर प्रताप सिंह बुंदेला मुन्ना राजा जी ने संस्कृति को सहेजने का महान कार्य किया है । दूसरे दिन की शुरुआत खेलकूद प्रतियोगिताओं से हुई सबसे पहले कबड्डी में भिंड बरेठी बसारी गाजीपुर शिकारपुरा की टीमों ने दांव पेज दिखाए । इसके बाद जो प्रतियोगिता में टीकमगढ़ जिले के ग्राम गुना से आए विक्रम सिंह जी महेंद्र जी छतरपुर से रामबाबू ताम्रकार जी विनोद सुमित जी दरबार से श्री कमलेश अग्रवाल जी कपिल अग्रवाल जी देवरिया से संजय पाठक जी जितेन सिंह ने अपनी चाल चली ।

उत्सव में दूसरी ओर उत्सव में बुंदेली सिनेमा का भी प्रदर्शन किया गया बुंदेली फिल्मों ने जमकर धूम मचाई। यहाँ लगे प्रोजेक्टर पर बसंती तोरे कारणए खाटू श्याम की महिमाए डरविन का बंदरए हनीमून द मिस्ट्री फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। उक्त कार्यक्रम के पश्चात बसारी के स्टेडियम में तालियों की गूँज के साथ रस्साकशी प्रतियोगिता भी शुरू हुई जिसमें क्षेत्र के आधा दर्जन टीमों ने हिस्सा लिया । इस अवसर पर संस्थान के संरक्षक श्री शंकर प्रताप सिंह बुंदेला मुन्ना राजा जी ने कहा कि विगत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष ज्यादा बड़ी संख्या में युवाओं के दल उत्सव को देखने आ रहे हैं, जो कि एक अच्छा संकेत है। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत संस्थान के अध्यक्ष आदित्य शंकर बुंदेला जी द्वारा किया गया।

19 फरवरी बुंदेली उत्सव कार्यक्रम के तीसरे दिन कबड्डी चौपड़ प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबले के साथ.साथ बैलगाड़ी दौड़ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया । कबड्डी प्रतियोगिता में जहाँ भिंड के जवानों ने गाजीपुर की खिलाड़ियों को पटखनी देकर फाइनल मुकाबला अपने नाम कर लिया तो वहीं ग्राम बादनी की किसानों और बधियन ने बैलगाड़ी दौड़ प्रतियोगिता जीतकर अपने नाम कर लिया। इस गाँव के रमेश यादव प्रथम जितेंद्र यादव द्वितीय और कोमल यादव तृतीय स्थान पर रहे ।

उक्त दिवस में सायंकालीन कार्यक्रमों में बधाई कछियाई दिवारी बुंदेली पोशाक अहिरवार की बैठक, बुंदेली कीर्तन, कहरवा गारी बन रही लमटेरा सैर ख्याल दादरा की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम के प्रारंभ में संस्थान के अध्यक्ष श्री आदित्य शंकर बुंदेला जी द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया तत्पश्चात कार्यक्रम में उत्सव के मंच पर बुंदेली लोक नृत्य एवं गायन की धूम रही। सबसे पहले सागर से आए लखनलाल समूह ने बधाई नौरता छतरपुर के स्वर्ण मंदिर स्वरूप ने बधाई नृत्य प्रस्तुत किया तदोपरांत श्रीमती रज्जू राजा व बलवीर सिंह टीकमगढ़ ने दादरा की प्रस्तुति दी । बेटी बाई एवं सखियां मक्खी बाई एवं सखियां द्वारा लोक गायन गारी में तीखे अंदाज प्रस्तुत किए। इसी तरह भगवान दास एंड पार्टी ने दिवारी सपना रंगमंच एवं चंदू रैकवार द्वारा बुंदेली कीर्तन की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर बहादुर सिंह परमार एवं आकाशवाणी के बुंदेली उद्घोषक जगदीश जी द्वारा किया गया । आज ही उक्त कार्यक्रम के दौरान बुंदेली इतिहास में उत्कृष्ट योगदान के लिए श्री सुधा चौहान को दीवान प्रतिपाल सिंह स्मृति सम्मान 2018, डॉ वीरेंद्र निर्मल जी को लोक साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए राव बहादुर सिंह बुंदेला स्मृति सम्मान 2018 से सम्मानित करते हुए शाल, श्रीफल, 3110 सम्मान राशि भेंट की गई। सम्मान पत्र का वाचन श्री जगदीश गंगेले जी द्वारा किया गया ।

20 फरवरी 22 वें बुंदेली उत्सव की चौथे दिन कार्यक्रम की शुरुआत अश्वनृत्य प्रतियोगिता से हुई इस अवसर पर बुंदेलखंड क्षेत्र के सुदूर गांव से घुड़सवार अपने अपने घोड़ो के साथ पारंपरिक वेशभूषा में इसमें सम्मिलित हुए इस अवसर पर ग्रामीणों एवं क्षेत्रवासियों ने घोड़ों के करतब और उनके नाच का भरपूर आनंद लिया। कार्यक्रम के दूसरे और बुंदेली व्यंजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्रीय महिलाओं द्वारा बुंदेलखंड में भूले बिसरे विविध पकवान जो पारंपरिक हैं उन सभी पकवानों की प्रदर्शनी लगाई गई जिस में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों द्वारा बुंदेली पकवानों का स्वाद भी चखकर आनंद लिया गया। दूसरी ओर सायंकाल में दलदल घोड़ी बहरूपिया गोपी गायन कार्तिक गीत आल्हा बिलवारी काडरा रावला ढिमरयाई अलगोजा आदि की शानदार प्रस्तुतियां विभिन्न क्षेत्र के कलाकारों द्वारा दी गईं। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री त्रिलोक सिंह बुंदेला एवं देवेंद्र सिंह बुंदेला जी द्वारा की गई कार्यक्रम का संचालन श्री शिवेंद्र शुक्ला एवं बहादुर सिंह परमार द्वारा किया गया ।

21 फरवरी बुधवार कार्यक्रम के आखरी दिन बुंदेलखंड के क्षेत्रीय शस्त्र धारियों द्वारा निशानेबाजी प्रतियोगिता का प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक द्वारा सटीक निशाने लगाए गए। बुंदेलखंड के सुदूर क्षेत्र के द्वारा भी अपने अपने निशाने लगाए गए बुंदेली उत्सव के समापन समारोह लोक नृत्य राई के साथ हुआ इस अवसर पर सायं सात बजे फाग का आयोजन किया गया। तत्पश्चात पारंपरिक राई का भी आयोजन किया । जिस पर ग्रामीण जनों ने खूब आनंद लिया ।

चलकें भइया रे

– डॉ. शिवाजी चौहान

भ्रष्टाचार मिटावने चलकें भइया रे
साजी सीख सिखावनें चलकें भइया रे
गौतम गाँधी के अनुवायी
न्याय नीत में प्रीत लगाई
जीवन जोत जगावनें–चलकें भइया रे।१
अपनिन के ना दोष दिखावें
एसन खों समझावनें चलकें भइया रे।२
देस के हित खों नीचौ जानें
अपनों हित ऊँचौ पैचाने
भ्रम कौ भूत भगावनें चल कें भइया रे।३
अपराधन खों जितें बढ़ावा
देकें जो कर रए दिखावा
ऐना उनें दिखावनें चलकें भइया रे।४
बहुअन पै जो रत रोपतयानों
खूनी जो दहेज कौ दानौ
जाकौ गरो दबावनें चलकें भइया रे।५
फैले आतंकी हत्यारे
करने हैं उनके मौं कारे
अपनों देस रखावनें चलकें भइया रे।६
गलन गलन बढ़ रए सराबी
होत घरन की खूब खराबी
दारू बन्द करावनें चलकें भइया रे।७
गाँउन गाँउन धाँधलगर्दी
गर्रानी है गुंडागर्दी
जापै काबू पावनें चलकें भइया रे।८
चिरत नित्त धरती की छाती
ऐइसें बा कँप कँप जाती
जौ चिरबौ रूकवाउनें – चलकें भइया रे।९
पसू पखेरू बिरछा कट रए
प्रकृति के संतुलन बिगर गए
पौधा नए उगावने चलकें भइया रे।१०
पेटन में जो कन्या मारें
बहिष्कार उनके कर डारें
दण्ड उनें दिबवावनें चलकें भइया रे।११
भौतइ सरग धरे मैंहगाई
डसवे नागिन बनकें आई
जाकौ फन दुचवावनें चलकें भइया रे।१२

– गुरसरांय (झाँसी)

नईं-नईं पोथीं अपुन के लानें

- सपने हाशियों पर डॉ० वीरेन्द्र निर्झर प्रकाशक- स्व स्ति प्रकाशन, बुरहानपुर कीमत 200
- बुन्देली विविधा-डॉ.गंगा प्रसाद बरसैयाँ प्रकाशक- अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली कीमत 250
- बुन्देल विभूति- डॉ.गंगाप्रसाद बरसैयाँ अभिनंदन ग्रंथ- सं० रीता गुप्ता, सरोज गुप्ता व बहादुर सिंह परमार कीमत-999 प्रकाशक अनुज्ञा बुक्सा, दिल्ली
- किशोर पुष्पांजलि-रामकिशोर नगरिया प्रकाशक-बुन्देली साहित्य प्रकाशन, छतरपुर कीमत 50
- बुन्देली चौकड़िया सागर-डॉ.दयाराम वर्मा 'बेचैन' प्रकाशक - डॉ.एस.पी.वर्मा, उरई कीमत 150
- मधुप्याली- डॉ. दयाराम वर्मा 'बेचैन' प्रकाशक-डॉ.एस.पी.वर्मा,
- उरई यथार्थ के धरातल पर- प्रो.देवेन्द्र कुमार शर्मा प्रकाशक- आकृति ग्रा फिक्स, छतरपुर कीमत 199
- काव्य कल्पतरू- पं.रामकृपालु मिश्र सं.-डॉ हरिसिंह घोष प्रकाशक- रामशरण मिश्र, छतरपुर कीमत 200
- रघुनाथ विनय शतक- मकुन्दलाल तिवारी प्रकाशक- मकुन्द काउंडेशन, महोबा
- शरद: शतम्- जनभावन सुमन प्रकाशन- मकुन्द फाउडेशन, महोबा
- गठेवरा युद्ध- जगदीश कुमार कुशवाहा 'प्रबोध' प्रकाशक- रचनाकार स्वयं कीमत 51
- लोक देवता हरदौल (महाकाव्य)-डॉ. एम.एल.प्रभाकर प्रकाशक- अध्ययन पब्लिशर्स, नई दिल्ली की मत 795
- रतनगढ़ माता माडूला- डॉ० एम.एल.प्रभाकर प्रकाशक- अध्ययन पब्लिशर्स नई दिल्ली कीमत 350
- ततूरी (कथा संग्रह)-डॉ. शिरोमणि सिंह 'पथ' प्रकाशक-संदर्भ प्रकाशन, भोपाल कीमत 250
- करेजे की पीर (बुन्देली नन्नी कानियाँ)- लक्ष्मी शर्मा प्रकाशक- एम.के.प्रकाशन, जबलपुर कीमत 150
- भौर को उजयारो (बुन्देली उपन्यास)-लक्ष्मी शर्मा प्रकाशक- पाथेय प्रकाशन, जबलपुर कीमत 250
- मायको बिसरत नईयाँ (बुन्देली कथा)- लक्ष्मी शर्मा प्रकाशक- एम.के.प्रकाशन, जबलपुर कीमत 200
- कह रहीम कैसे निभै- सुरेन्द्र सिंह कुशवाहा प्रकाशक- लेखक स्वयं, उरई
- हैली कुटटी जान- डॉ० रामस्वरूप ढेंगुला प्रकाशक- निशा पब्लिकेशन्स, दिल्ली कीमत 495
- पं. बनारसी दास चतुर्वेदी,-आत्माराम शर्मा प्रकाशक-गर्भनाल न्यास, भोपाल कीमत 250
- बुन्देलखंड की शौर्य गाथाएं -श्रवण सिंह सेंगर प्रकाशक- नगेन्द्र प्रतापसिंह सेंगर, गुर सरॉय कीमत 351
- चौकड़िया की मड़िया- आशाराम त्रिपाठी कीमत -100
- अँजुरी के फूल- आशाराम त्रिपाठी
- बेताल की चौकड़ियाँ- दीनदयाल तिवारी ' वेताल' प्रकाशक- धर्मोदय साहित्य प्रकाशन, सागर मूल्य 1000
- सुरभि (गौरक्षण एवं संवर्धन)-डी.पी.शुक्ला प्रकाशक- सरस्वती सहित्यसंस्थान, 333/30 पुराना अल्लापुर इलाहाबाद मूल्य 375/-
- जल बिच मीन प्यासी- पं० राम स्वरूप पाण्डेय प्रकाशक- विकास उपन्यास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स गोविन्दपुरा भोपाल मूल्य-अंकित नहीं
- क्या लाल मेरा घर आयेगा- राम सेवक शाक्यवार प्रकाशक- प्रतीक प्रकाशन, आर.के.पुरी ग्वालियर
- भारत संस्कृति का दर्पण है- राम सेवक शाक्यवार प्रकाशक- प्रतीक प्रकाशन, ग्वालियर
- आदि से बुन्देलखण्ड है- राम सेवक शाक्यवार प्रकाशक-प्रतीक प्रकाशन आर.के.पुरी ग्वालियर मूल्य 250/-
- त्रयोदश ज्योतिर्लिंगम् श्री कुण्डेश्वर -राम सेवक शाक्यवार प्रकाशक- प्रतीक प्रकाशन आर.के.पुरी.ग्वालियर मूल्य 150/-
- आंसुओं की धार (नारी पीड़ा) - राम सेवक शाक्यवार प्रकाशन- प्रतीक काव्य प्रकाशन,आर.के.पुरम ग्वालियर मूल्य 250/-
- पत्नी शास्त्र फुलवतियाँ पत्नी चालीसा सहित-राम सेवक शाक्यवार प्रकाशक- प्रतीक प्रकाशन आर.के. पुरम ग्वालियर मूल्य 150/-
- स्वयं सिद्धा - राम सेवक शाक्यवार प्रकाशक-प्रतीक काव्य प्रकाशन आर.के. पुरम, ग्वालियर, मूल्य 250/-
- तर्पण कहानी का काव्य रूपान्तारण- राम सेवक शाक्यवार प्रकाशक- प्रतीक प्रकाशन आर.के. पुरम ग्वालियर मूल्य 250/-
- नवागढ (नंदपुर)इतिहास -ब्र. जय कुमार जैन 'निशांत' प्रकाशक- श्रीदिगंबर जैन युवक संघ, विद्यासागर नगर नि.दि. रोड इन्दौर मूल्य 30/-
- बुन्देलखण्ड की उपकाशी खिमलासा (इतिहास, स्थापत्य एवं संस्कृति के दर्पण में)-केशव रावत प्रकाशक- केशव प्रसाद रावत 4-5 चाँदोकर कम्पाउण्ड खिमलासा जिला सागर म.प्र. मूल्य 100/-
- महिमावान् मड़फा क्षेत्र- डॉ. हरि ओउम् तत्सत् ब्रह्म शुक्ल प्रकाशक- साधना सदन नया बेरहना, इलाहाबाद 211005 मूल्य 200/-
- मानवता की राहें- पं. ओम प्रकाश तिवारी 'ओम' प्रकाशक - अल्पना प्रकाशन इलाहाबाद 211006 मूल्य 375/-
- लुक-लुक की बीमारी- राजीव नामदेव राना लिधौरी, प्रकाशक- (व्यंग)साहित्य संस्थान पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद 211006 मूल्य 400/-
- बुन्देली जस दुर्गा सप्तशती का बुन्देली उलथा - अनुवाद प्रभुदयाल श्रीवास्तव 'पीयूष'
- प्रलम्बिका- डॉ. परशुराम शुक्ल 'बिरही' प्रकाशक- रजनी प्रकाशन वेस्ट शांतिनगर दिल्ली 110051 मूल्य 150/-
- ओरछा राज्य में स्वतंत्रता आन्दोलन- अभिनंदन गोइल प्रकाशक- मनीष प्रकाशन भोपाल म.प्र. 462003 मूल्य 150/-
- सारा देश मौन है- स्वामी प्रसाद पस्तोर प्रकाशक- पहले-पहल प्रकाशन, भोपाल म.प्र. मूल्य150/-
- प्रभा- (कविता संग्रह)-केशव प्रसाद रावत प्रकाशक- केशव प्रसाद रावत 4-5 चाँदोकर कम्पाउण्ड खिमलासा-सागर मूल्य 100/-
- घना- धनईंया- राधा चरण गुप्त 'चरण' प्रकाशक- निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स शाहगंज आगरा मूल्य 250/-
- राष्ट्रीय काव्य धारा और दिनकर-आस्था सिंह एच.पी.सिंह सम्पाड डॉं ऊषा सिंह प्रकाशक- हर्षबर्द्धन पब्लीकेशन प्रा.लि.गनेश जिला.वीड 431126 मूल्य- 300/-
- पोरच जादौन क्षत्रियों का प्रामाणिक इतिहास-हरेन्द्रपाल सिंह- डॉ ऊषा सिंह प्रकाशक- कृष्णा कम्प्यूटर्स सागर म.प्र.मूल्य-400/-
- सामाजिक परिवर्तन के विविध स्वरूप- हरेन्द्र पाल सिंह डॉ. ऊषा सिंह प्रकाशक- किसेन्ट पब्लिशिंग कारपोरेशन दतिया गंज दिल्ली मूल्य 475/-
- कालंजर- प्रबोध- डॉ. हरिओम तत्सत् ब्रह्मशुक्ल प्रकाशक- ब्रह्मर्षि शुक्ल, साहित्य सदन प्रकाशन बाँदा उ.प्र. मूल्य 200/-
- प्रकाशक किसेन्ट पब्लिशिंग कारपोरेशन दरियागंज दिल्ली मूल्य 375/-
- आपके शहर में (उपन्यास) यदुकुल नंदन खरे प्रकाशक- म.प्र. लेखक संघ जिला- शाखा टीकमगढ़ मूल्य 300/-
- साहित्यिक बट बृक्ष(व्यंग)- राजीव नामदेव राना लिधौरी बर्जिन

BUNDELI VIKAS SANSTHAN, CHHATARPUR (M.P.)
INCOME & EXPENDITURE A/C FOR THE YEAR 2017-2018

EXPENDITURE	Rs.	Rs. (R)	INCOME	Rs. (R)
Bundeli Utsav Expenses		17,30,138.00	From Jan Sahyog	24,75,400.00
Medical Camp. Exp.	12,130.00			
Hasya Kabi Sameelan	48,328.00		Membership Fees	4,680.00
Plantation Expenses	18,850.00			
Agriculture Trainning & Seed Di	17,450.00	96,758.00	Smarika Advertisement	2,80,800.00
			Interest From Bank	9,372.00
Other Expenses				
Salary	2,76,000.00		Fortune stone Ltd. Chhatarpur	1,00,000.00
Honararium	1,40,800.00			
Audit Fees & Income Tax	5,000.00			
Misc Exp.	32,455.00			
Stationary & Printing	28,300.00			
Teaching learning Exp.	57,780.00			
Ismarika Printing Exp.	1,85,000.00			
Postage	8,340.00			
Sangosthi (Meeting)	52,460.00	7,86,135.00		
Add Excess of Income		2,57,221.00		
TOTAL Rs.:		**28,70,252.00**	**TOTAL Rs.:**	**28,70,252.00**

Cretificate from management
Certified that above income & expenditure is correct.

AUDIT REPORT
As per our report on Balance Sheet.

President **Secretary** **Sagar : 25-06-2018**

R.V. Agrawal
Chartered Accountants

BUNDELI VIKAS SANSTHAN, CHHATARPUR (M.P.)
RECEIPTS & PAYMENTS A/C FOR THE YEAR 2017-2018

RECEIPTS	Rs.	Rs. (R)	PAYMENTS	Rs	Rs. (R)
			BUNDELI UTSAV EXPENSES		**1,730,138.00**
OPENING BALANCE			Medical Camp. Exp.	12,130.00	
Cooperative Bank (46)	5,594.00		Hasya Kabi Sameelan	48,328.00	
Canara Bank (S/A) 1608	1,081,170.00		Plantation Expenses	18,850.00	
F.D.R. Canara Bank	800,000.00	1,886,764.00	Agriculture Traning & Seed Dis.	17,450.00	**96,758.00**
			OTHER EXPENSES		
From Jan Sahyog		2,475,400.00	Salary	276,000.00	
			Honararium	140,800.00	
			Audit Fees & Income Tax	5,000.00	
Membership Fee		4,680.00	Misc Exp.	32,455.00	
			Stationary & Printing	28,300.00	
Smarika Advertisement		280,800.00	Teaching learning Exp.	57,780.00	
			Ismarika Printing Exp.	185,000.00	
Interest From Bank		9,372.00	Postage	8,340.00	
			Sangosthi (Meeting)	52,460.00	**786,135.00**
			Construction		
Fortune Stone Ltd. Chhatarpur		100,000.00	Building Construction		**220,750.00**
			Loan Return to Swami Pravanand Homeo College		**1,100,000.00**
			CLOSING BALANCES		
			Co-operative Bank (46)	5,594.00	
			Canara Bank (S/A) 1608	17,641.00	
			F.D.R. Canara Bank	800,000,00	**823,235.00**
TOTAL Rs.:		**4,757,016.00**	**Total Rs.**		**4,757,016.00**

Certified that the above statement is correct.

AUDIT REPORT
As per our report on Balance Sheet.

President **Secretary** **Sagar : 25-06-2018**

R.V. Agrawal
Chartered Accountants

BUNDELI VIKAS SANSTHAN, CHHATARPUR (M.P.)
BALANCE SHEET AS AT 31-3-2018

FUNDS	Rs.	Rs. (R)	ASSETS	Rs.	Rs. (R)
Society Fund			**Fixed Assets**		
As per L.BS	6,323,596.00		Land (As per last B.S.)		308,646.00
Add The year	257,221.00	6,580,817.00	Building Construction	2,743,339.00	
			Add this year	220,750.00	2,964,089.00
Loans & Deposit			**Virasat Dwar Construction**		1,498.800.00
Nehru Yuva Club Basari		132,216.00	**Furniture (As per last B.S.)**		9,597.00
			Dead Stock (W.D.V)		8,666.00
			Loan Return to Swami Pravanand Homeo College		1,100,000.00
			CLOSING BALANCES		
			Cooperative Bank (46)	5,594.00	
			Canara Bank (S/A) 1608	17,641.00	
			F.D.R. Canara Bank	800,000.00	823,235.00
TOTAL Rs.:		**6,713,033.00**	**Total Rs.**		**6,713,033.00**

We certify that receipts & Utilization of funds & Closing Balance (as above) are correct.

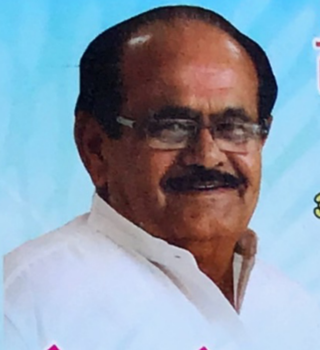
AUDIT REPORT
W/e have checked (enclosed) receipts and utilization a/c and Balance Sheet as on 31-03-2018 if any we certify

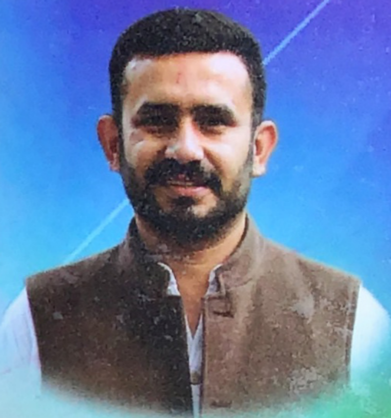
President **Secretary** **Sagar : 25-06-2017** *R.V. Agrawal*
Chartered Accountants

बुन्देली लोक संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन हेतु आयोजित

तेइसवें "बुन्देली उत्सव - 2019"

में पर्यटक ग्राम बसारी (बुंदेलखण्ड) में पधारे
अतिथियों एवं कलाकारों का हम हार्दिक अभिनंदन करते हैं।





योजनायें :

1. पात्र हितग्राहियों का वृद्धावस्था पेंशन का लाभ दिलाना।
2. रोजगार गारंटी योजना के तहत हर हाथ को 100 दिन के काम की गारंटी
3. समग्र-स्वच्छता अभियान के तहत शौचालयों का निर्माण करवाना।
4. भू-जल संवर्धन के लिए वृक्षारोपण करवाना।
5. कपिल धारा योजना के तहत कूपों का निर्माण करवाना।
6. शासन की मंशानुरूप गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वालों को योजनाओं का लाभ दिलाना।

अपील:

1. जन्म-मृत्यु का पंजीयन अवश्य कराएं।
2. नगर को साफ स्वच्छ और हरा बनाएं रखने में मदद करें।
3. पानी अमूल्य है कृपया इसे बर्वाद न करें।
4. बच्चों को नियमित स्कूल भेजें।



जे.एस. तिवारी
सीईओ

श्रीमती चंदा राजा
उपाध्यक्ष

श्रीमती ऊषा अहिरवार
अध्यक्ष

सौजन्य से -

जनपद पंचायत, राजनगर

जिला-छतरपुर (म.प्र.)